श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला, ग्रन्थांक-२८.

प्राकृत-पाठमाला

रचयिता

युवाचार्य श्री नागचन्द्र जी स्वामी के शिष्य

मुनि श्री रत्नचन्द्र जी स्वामी

अनुवाद-कर्ता

पं० श्री श्यामलाल जी ओझा शास्त्री

प्रकाशक

श्री गणेश स्मृति ग्रन्थमाला, बीकानेर

(श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित)

रांगड़ी मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक —

श्री गणेश स्मृति ग्रंथमाला

(श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा

[illegible] मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण

श्री महावीर जयन्ती

(चैत्र शुक्ला १३, सं. २०३१)

मूल्य — पन्द्रह रुपया (१५ रु.)

मुद्रक —

जैन आर्ट प्रेस

(श्री [illegible] भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वार

रांगड़ी मोहल्ला, बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

भारतीय आर्य-भाषा परिवार में प्राकृत भाषाओं का असाधारण महत्त्व है। इन मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओं में प्रचुर साहित्य-रचना भी हुई है, जो भाषा-वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन की दृष्टि से परमोपयोगी है। अनेक विद्वानों ने इनके व्याकरण प्रस्तुत किए है। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इस साहित्य-सामग्री का यथोचित अध्ययन अद्यावधि नहीं हो पाया है, जिसकी नितान्त आवश्यकता है। इन्ही से आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का विकास हुआ है। अतः यह निर्विवाद है कि इन प्राकृत-अपभ्रंश भाषाओं के समुचित अध्ययन बिना आधुनिक आर्य भाषाओं—हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला आदि का अध्ययन पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

हर्ष का विषय है कि पिछले कुछ समय से हमारे देश के विद्वानों ने प्राकृत भाषा-साहित्य की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया है और विश्वविद्यालयों में भी इस दिशा में अध्ययन चालू हुआ है।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षा बोर्ड ने अपनी परीक्षाओं में प्राकृत भाषा के अध्ययन को विशेष स्थान दिया है। परन्तु

इस विषय में समुचित पाठ्य–पुस्तक का अभाव सदैव खटकता रहा है। इस कमी की पूर्ति-स्वरूप 'प्राकृत पाठमाला' का हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित किया गया है।

काफी समय पूर्व युवाचार्य श्री नागचद्र जी स्वामी के शिष्य मुनि श्री रत्नचद्र जी स्वामी विरचित 'प्राकृत पाठमाला' का श्री अगरचंद भैरोंदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था, बीकानेर द्वारा प्रकाशन हुआ था। परन्तु वह प्रकाशन गुजराती भाषा में होने के कारण हिन्दी-भाषी छात्र-छात्राओं के लिए यथोचित रूप में उपयोगी सिद्ध नही हो रहा था। ऐसी स्थिति में उपर्युक्त ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर अत्यन्त आवश्यक प्रतीत हुआ। फलस्वरूप पं. श्री श्यामलाल जी ओझा द्वारा हिन्दी में रूपान्तरित 'प्राकृत पाठमाला' का यह सस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस ग्रन्थ का प्रकाशन श्री हितेच्छु श्रावक मण्डल, रतलाम द्वारा संघ को साहित्य प्रकाशन हेतु प्रदत्त निधि से किया गया है। एतदर्थ मण्डल के सभी सदस्यों का हृदय से आभार स्वीकार किया जाता है।

बीकानेर
श्री महावीर जयन्ती
(चैत्र शुक्ला १३, सं २०३१)

मंत्री
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ-
बीकानेर (राजस्थान)

प्रास्ताविकम्

प्राचीन आर्य पुरुषों का अनुभव जिस भापा के गर्भ मे व्यवस्थित हुआ है और हजारों वर्ष व्यतीत होने पर भी जो टिका हुआ है, उस भाषा का स्वरूप जानने के लिए मुमुक्षु-वर्ग में इच्छा का होना स्वाभाविक है । भारतवर्ष के आर्य तत्त्वों को वहन करने वाली मुख्य रूप में दो भाषाएं है—संस्कृत और प्राकृत । सस्कृत भाषा के दो भेद हैं—वैदिक और लौकिक अथवा प्राचीन एवं अर्वाचीन संस्कृत । ऋग्वेदादि की भापा वैदिक अथवा प्राचीन संस्कृत है और महाभारत आदि की भाषा लौकिक अथवा अर्वाचीन संस्कृत है । खासकर कौमार तथा पाणिनि आदि विद्वानों ने व्याकरण को बनाकर भाषा का संस्कार करके नियमबद्ध बना दिया तब से संस्कृत नाम से यह भाषा प्रसिद्धि में आई हो और वैदिक भाषा का विशेषण बाद में लगाया गया हो ऐसा प्रतीत होता है । संस्कृत भाषा मुख्य रूप से साहित्य में ही व्यवहृत हुई है, इसलिए उसमें विशेष फेरफार नहीं हुआ है तथा यह एक रूप से ही रह गई है । इसमें कुछ

अवान्तर भेद नहीं हुआ और संस्कृत भाषा लौकिक एवं वैदिक रूप में व्यवहृत होने लगी।

संस्कृत की सहचारिणी दूसरी भाषा प्राकृत के नाम से प्रसिद्ध है। प्रकृति शब्द से तद्धितीय 'अण्' प्रत्यय लगाने से 'प्राकृत' शब्द बना है। प्रकृति शब्द का अर्थ स्वभाव अथवा निसर्ग है। इसलिए प्राकृत शब्द का शक्यार्थ स्वाभाविक अथवा नैसर्गिक होता है। अतः शब्दार्थ के प्रमाण से प्राकृत भाषा का अर्थ हुआ स्वाभाविक या नैसर्गिक भाषा। तात्पर्य यह है कि जिस भाषा को काट छाँटकर संस्कृत नही किया गया है, किन्तु जिस प्रकार से साधारण लोगों में भाषा बोली जाती है उसी तरह से उसका स्वरूप रह गया हो, वह प्राकृत भाषा है। प्राकृत शब्द का साधारण अथवा असंस्कृत अर्थ भी कोष में पाया जाता है। इसके अनुसार संस्कार के बिना ही साधारण लोगों में बोली जाने वाली जो भाषा है वह प्राकृत भाषा है, यह भी अर्थ हो सकता है। इस मत के अनुसार प्राकृत भाषा सस्कृत भाषा की पुत्री नहीं किन्तु माता है। अर्थात् प्राकृत भाषा का जन्म संस्कृत भाषा से नहीं हुआ है किन्तु संस्कृत भाषा (वैदिक भाषा को छोड़कर) प्राकृत भाषा से ही सस्कृत होकर उत्पन्न हुई है। ऊपर कहे अनुसार संस्कृत भाषा यदि प्राकृत से उत्पन्न हुई तो वैदिक भाषा भी वैदिक समय

में बोल-चाल की ही भाषा होनी चाहिए, यह भी कहना कोई अयुक्त नही होगा। अर्थात् वेद की भाषा को प्राचीन सस्कृत भाषा कहने की अपेक्षा प्राचीन प्राकृत कहा जाय तो कोई विरुद्ध नहीं होगा।

इस मत के समान ही एक दूसरा मत भीं उपस्थित होता है। वह कहना है कि—"प्रकृति. संस्कृतम् तत्र भवम्, ततः आगतम् वा प्राकृतम्" अर्थात् सस्कृत से उत्पन्न या सस्कृत से आयी हुई भाषा को प्राकृत कहते है। तात्पर्य यह है कि सस्कृत भाषा ही कुछ विकृत होकर प्राकृत भाषा बन गई। अर्थात् प्राकृत भाषा सस्कृत भाषा की पुत्री है। अधिकतर समाज में यही अर्थ प्रचलित है। हिन्दू धर्म की बहुत सी पुस्तके संस्कृत भाषा में ही है। इसलिए संस्कृत भाषा की ओर उनका अधिक मान देना स्वाभाविक है। अब प्रश्न यह उठता है कि प्राकृत व्याकरण रचयिता श्री हेमचन्द्राचार्य ने इस मत का क्यों आदर किया? उन्होने प्राकृत भाषा को सस्कृत से आयी हुई माना है। इसका क्या कारण है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हेमचन्द्राचार्य से पहले पर्याप्त मात्रा में संस्कृत ग्रन्थ बन चुके थे। सस्कृत भाषा का प्रचार पूर्ण रूप से हो चुका था। इसका असर जैन समाज पर भी पड़े बिना न रह सका। इसी लिए जैनाचार्यो ने सूत्रों की टीका आगम की भाषा में न लिख-

कर संस्कृत भाषा में ही लिखी। जिस समय सूत्रों के ऊपर भाष्य और चूर्णि आदि लिखे गये उस समय तक प्राकृत भाषा का बहुत आदर था । हेमचन्द्राचार्य के समय तक बहुत परिवर्तन हो चुका था । इसका प्रभाव हेमचन्द्राचार्य पर भी पड़ा और उन्होंने अपनी रचना में संस्कृत को प्रमुख स्थान दिया । सात अध्याय में संस्कृत और एक अध्याय में प्राकृत लिखा । हेमचन्द्राचार्य के समय में लोगों का संस्कृत पढ़ने–पढ़ाने में अधिक प्रवृत्ति थी । यहां तक कि किसी भी कोष में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत नही है फिर भी उन्होंने प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत स्वीकार कर लिया । प्रकृति शब्द का अर्थ कोष में स्वभाव या निसर्ग मिलता है। इन अर्थो को न मानकर लाक्षणिक प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करना अनुचित कहा जा सकता है ।

प्राकृत भाषा के प्रकार:—प्राकृत भाषा को साहित्य में महावीर स्वामी और गौतमबुद्ध के समय में स्थान मिला। इन दोनों का जन्म मगध देश में था और मातृभाषा मागधी थी । परन्तु महावीर स्वामी की उपदेश-भाषा 'अर्धमागधी' तथा गौतमबुद्ध की 'पाली' थी । मगध और सूरसेन देश की सीमा पर उस समय जो भाषा बोली जाती थी वह अर्धमागधी थी । मगध देश के अर्धभाग को इस भाषा ने रोका था। इसलिए इसका नाम अर्धमागधी पड़ा होगा यह

भी कहा जा सकता है। कई लोग इसका इस प्रकार भी अर्थ करते है कि इसमें आधे शब्द मगध देश की भाषा के और आधे शब्द अन्य भाषा के मिले हैं। इसीलिए इसका नाम अर्धमागधी पड़ा होगा। परन्तु जैन साहित्य में इस अर्थ की कोई चर्चा नही है।

पाली भाषा:— प्राकृत भाषा का दूसरा विभाग पाली नाम से प्रसिद्ध है। पाली शब्द का मूल अर्थ पंक्ति अथवा श्रेणी होता है। बौद्ध साहित्य में पाली शब्द का अर्थ सर्वत्र पंक्ति ही मिलता है। उनके मूल ग्रन्थों में भी पाली शब्द का प्रयोग किया गया है। इसलिए बौद्ध धर्मशास्त्रों की भाषा पाली नाम से प्रसिद्ध हुई जिसका दूसरा नाम मागधी भी है। मागधी भाषा मगध देश के नाम से पड़ी है। यह भाषा उस समय मगध मे बोली जाती थी। नाटकों में मागधी भाषा के समान जो प्राकृत भाषा के शब्द आते है वे अर्धमागधी या पाली से भिन्न हैं। अर्धमागधी व पाली में 'र' को 'ल' और 'स' को 'श' होता है।

पाली भाषा के तीन व्याकरण मुख्य हैं:—कात्यायन, मोग्गलायन और शब्दनीति। कात्यायन के आधार पर रूपसिद्धि, महानिर्युक्ति, चूलनिर्युक्ति, निर्युक्तपीटक तथा बालावतार

इत्यादि व्याकरण बने हुए है। मोग्गलायन के आधार पर प्रयोगसिद्धि, मोग्गलायनवृत्ति, सुशब्दसिद्धि तथा पदसाधनी इत्यादि ग्रन्थ लिखे गये हैं। शब्दनीति के आधार पर एक चूल्लशब्दनीति नाम का ग्रन्थ लिखा गया है। इन सभी में कात्यायन प्राचीन है। लेकिन इसकी अपेक्षा रूपसिद्धि, मोग्गलायनवृत्ति पदसाधनी तथा प्रयोगसिद्धि अधिक उपयोगी है। शब्दनीति सभी की अपेक्षा श्रेष्ठ है। रूपसिद्धि व्याकरण बड़ा नही है परन्तु छोटा भी नही है और उसमें सभी विषयों का समावेश है। इसलिए वह अधिक उपयोगी है। कई लोगों का कहना है कि कात्यायन बुद्ध के समकालीन विद्वान् थे और उन्होंने कात्यायन व्याकरण बनाया। रूपसिद्धि व बालावतार दोनो कात्यायन सूत्र को लेकर ही बने है। बालावतार सिहल में साधारण रूप से प्रचलित है।

महाराष्ट्री :—मध्ययुग की प्राकृत भाषा में महाराष्ट्री प्राकृत मुख्य है। सौरसेनी आदि दूसरे प्राकृत भाषाओं की अपेक्षा से यह अधिक प्रसिद्ध हुई थी। महाराष्ट्री प्राकृत का अन्य मतावलम्बियों की अपेक्षा जैन श्वेताम्बरमत ने अधिक सहारा लिया है। महाराष्ट्री प्राकृत में ही सुरसुन्दरी चरित्र पद्म चरित्र, कुमारपाल चरित्र, कुमार पाल प्रबन्ध, समरादित्य कथा आदि अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं।

सौरसेनी भाषा :— मध्ययुग की महाराष्ट्री भाषा के

समकालीन दूसरी प्राकृत भाषा सौरसेनी नाम से प्रसिद्ध है।
यह भाषा मथुरा के आस-पास के प्रदेशों में बोली जाती
थी। इस भाषा में वहुत से दिगम्बरों के साहित्य लिखे
गये हैं।

मागधी भाषा:— मगध देश में बोली जाने वाली
भाषा को मागधी भापा कहते हैं। यह पाली भाषा तथा
अर्धमागधी भाषा से भिन्न है। र का ल, स का श, और
प्रथमा के एकवचन में अकारान्त शब्दों के अन्त में आने
वाले एकार, इस भापा के मुख्य लक्षण है। मागधी प्राकृत
में एकार वना रहता है और 'ज' के स्थान में 'य'
होता है।

पैशाची भाषा:— मध्ययुग की चौथी भाषा पैशाची
है। पाण्ड्य आदि देश पिशाच के नाम से प्रसिद्ध हैं।
पाण्ड्य केकय, वाह्लीक, सिह, नेपाल, कुंतल, सुदेष्ण, चोल,
गांधार व कन्नोज ये पिशाच के नाम से प्रसिद्ध है। इन
देशों में वोली जाने वाली भाषा पैशाची कही जाती थी।

चूलिका पैशाची:— मध्ययुग की पांचवीं भाषा चूलिका
पैशाची है। इस भाषा में वर्ग के तीसरे अक्षर के स्थान
में पहला अक्षर और चौथे स्थान में दूसरा अक्षर पाया
जाता है। बाकी सभी पैशाची भाषा के समान ही है।

कई लोगों ने चूलिका पैशाची को पैशाची भाषा से भिन्न नही माना है ।

अपभ्रंश भाषा :— मध्ययुग की छठी भाषा अपभ्रंश भाषा है । दण्डी ने सस्कृत को छोड़कर सभी भाषाओं को अपभ्रंश ही माना है, परन्तु यह उचित नही है, क्योंकि संस्कृत के समान ही अन्य भाषाओं में साहित्यिक रचनाएं हुई है तथा उनके व्याकरण भी हैं ।

प्राकृत व्याकरण :— ऊपर कही हुई मध्ययुगीन भाषाओं के साहित्यों पर व्याकरण भी बने हुए है । उनमें सबसे प्राचीन चण्ड का 'प्राकृत लक्षण' नाम का व्याकरण है । प्रधानतः यह प्राचीन युग की सामान्य भाषा का व्याकरण है ।

वररूचि का 'प्राकृत प्रकाश' :— चण्ड के व्याकरण के बाद मध्ययुग की प्राकृत भाषाओं पर वररुचि का 'प्राकृत प्रकाश' सब से पहला व्याकरण है । उसमें वररुचि के द्वारा सूत्र बनाया गया है और भामाह ने वृत्ति की है । वररुचि के 'प्राकृत प्रकाश' में चार तरह की भाषाएं आती है । ऊपर कही हुई छः भाषाओं में से चूलिका पैशाची, अपभ्रंश ये दो भाषाएं उनमें नहीं गिनाई गई है । इससे यह प्रतीत होता है कि उस समय पैशाची से चूलिका पैशाची

अलग नहीं थी और अपभ्रंश भी स्वतन्त्र भाषा के रूप में गिनने में नही आई होगी ।

हेमचन्द्राचार्य का सिद्धहेम :— इसके बाद हेमचन्द्राचार्य का सिद्धहेम व्याकरण उपस्थित होता है। उसके सात अध्यायों में सस्कृत व्याकरण तथा आठवे अध्याय के चार पादों में प्राकृत भापा का व्याकरण है । हेमचन्द्राचार्य ने ऊपर कही हुई छः भाषाओं का समावेश किया है। हेमचन्द्र का समय बारहवी शताब्दी है । ऐसा प्रतीत होता है कि उनसे पहले छः भापाएं प्रकट हो चुकी थी । हेमचन्द्राचाय ने सूत्र और वृत्ति स्वयं बनाई है । इनके व्याकरण को जैन तथा जैनेतर दोनों ही मानते है । वररुचि के व्याकरण में प्राकृत भाषा शुद्ध महाराष्ट्री प्राकृत है। लेकिन हेमचन्द्राचार्य की प्राकृत भापा कई जैनागमों की छाया मिश्रित होने से 'जैन महाराष्ट्री प्राकृत' कही जा सकती है।

त्रिविक्रम का प्राकृत व्याकरण :— हेमचन्द्राचार्य के बाद त्रिविक्रम का व्याकरण आता है । त्रिविक्रम दिगम्बर जैन थे । उन्होंने सूत्र और वृत्ति स्वय बनाई है। षड्भाषा चन्द्रिकाकार लक्ष्मीधर का कहना है कि त्रिविक्रम ने वृत्ति ही बनाई है, सूत्र वाल्मीकि का है।

षड्भाषा चन्द्रिका :— जिन सूत्रों पर त्रिविक्रम ने वृत्ति बनाई है, उन्ही सूत्रों पर लक्ष्मीधर ने भी वृत्ति की है और उसी का नाम 'षड्भाषा चन्द्रिका' है।

प्राकृत रूपावतार :— लक्ष्मीधर के समान ही सिंहराज ने भी उक्त सूत्रों पर वृत्ति की है और उसका नाम 'प्राकृत रूपावतार' रखा है। सूत्रों का अनुक्रम षड्भाषा चन्द्रिका के समान ही है।

ऊपर कहे हुए व्याकरणों के आधार पर ही शतावधानी पण्डित मुनि श्री रत्नचन्द्र जी स्वामी ने गुजराती भाषा में 'प्राकृतपाठमाला' लिखी, जो विक्रम संवत् १६८४ मे सेठ श्री भैरोंदान जी जेठमल जी सेठिया बीकानेर की ओर से प्रकाशित की गई। परन्तु गुर्जराती भाषा में पढ़ने-पढ़ाने की असुविधा को देखकर श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने मुझे हिन्दी-अनुवाद के लिए प्रेरित किया। अतः मैंने इस 'प्राकृतपाठमाला' का हिन्दी में अनुवाद किया और साथ ही, विद्यार्थी-वर्ग की सुविधा को ध्यान में रखते हुए श्रद्धेय आचार्य पूज्य श्री श्री १००८ श्री नानालाल जी म. सा. के सुशिष्य श्री पार्श्वमुनि जी के पास संगृहीत प्राकृत शब्द रूपावली एवं धातु रूपावली को उनसे लेकर तथा प्रतिलिपि कर इसी ग्रन्थ के ही परिशिष्ट भाग में संलग्न कर दिया है, । आशा है यह ग्रन्थ प्राकृत भाषा के ज्ञान के लिए अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध होगा तथा पाठकगण इससे अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

विदुषामनुचर :
श्यामलाल ओझा

अनुक्रमणिका

परिशिष्ट–१

परिशिष्ट–२

परिशिष्ट–३





श्री वीतरागाय नमः ।

प्राकृत-पाठमाला

मंगलाचरणम्

(आर्या)

णविऊण गिरिसमधीरं गुणगंभीरं जिणं महावीरं ।
वोच्छं भवियहियट्ठं सरलं पाययपाढमालं ॥ १ ॥



प्राकृतवर्णमाला

स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ.

व्यञ्जन

क्, ख्, ग्, घ्, च्, छ्, ज्, झ्, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, त्, थ्, द्,
ध्, न्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, स्, ह ।

अनुस्वार (ं), सानुनासिक (ँ).

नोट— ङ् और ञ् का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है । परन्तु अनुस्वार के स्थान में यदि परसवर्ण होता हो तो संयुक्त ङ् तथा ञ् आता है ।

प्राकृत नियमावली

संधि

हे० १-५ (१) प्राकृत में एक पद में दो स्वरों की संधि नही होती है, जैसे कि—मुद्धाइ, महइ, परन्तु भिन्न-भिन्न पदों के दो स्वरों की सन्धि विकल्प से होती है[1] जैसे कि—विसम आयवो विसमायवो, वास इसी वासेसी, दहि ईसरो दहीसरो, साउ उअय साऊअयं ।

हे० १-६ (२) इवर्ण तथा उवर्ण की विजातीय[2] स्वर के साथ मे सन्धि नही होती है, जैसे कि-देहि अहिअं, महु अहिअं ।

हे० १-७ (३) एकार तथा ओकार की किसी भी स्वर के साथ मे सन्धि नही होती है, जैसे कि देवोए आसणं पंचालाओ आगओ ।

हे० १-८ (४) उद्वृत्त[3] स्वर की प्रायः किसी भी स्वर के साथ सन्धि नही[4] होती है, जैसे कि—पईवो, निसाअरो, रयणीअरो ।

---

१ कही पर एक पद मे भी संधि विकल्प से होती है, जैसे कि—विइओ बीओ, काहिइ काही ।

२. इवर्ण का सजातीय इ ई और उवर्ण का सजातीय उ ऊ कहलाते है तथा शेष स्वर विजातीय है ।

३. क् ग् च् इत्यादि व्यजनो के लोप होने पर जो स्वर बचते है वे उद्वृत स्वर कहलाते है ।

४. कही पर उद्वृत्त स्वर के साथ भी विकल्प से सन्धि हो जाती है, जैसे कि—कुम्भआरो कुम्भारो, सुउरिसो सूरिसो । कही पर सन्धि नित्य भी होती है जैसे कि—सालाहणो, चक्काओ ।

हे० १-९ (५) तिबादी[1] स्वर की किसी स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है जैसे कि—होइ इह ।

स्वर विकार

हे० १-१०, १-४० (६) प्राकृत में भिन्न-भिन्न पदों के दो स्वरों के योग होने पर प्रायः एक स्वर का लोप हो जाता है, जैसे कि—

त्रिदशेशः	तिअसीसो	अम्हे एत्थ	अम्हेत्थ
निःश्वासोच्छ्वासौ	निसासूसासा	जइ इमा	जइमा
		जइ अहं	जइहं

हे० १-४ (७) समास में प्रायः ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ[2] तथा दीर्घ के स्थान में ह्रस्व[3] हो जाता है, जैसे कि—

अन्तर्वेदिः	अंतावेई	नितम्बशिलास्खलितवी-
सप्तविंशतिः	सत्तावीसा	चिमालस्य निअंबसि-
		लखलिअवीइमालस्स ।

---

१. धातु से पर इ, सि, मि इत्यादि वर्तमान कालादि के प्रत्ययो को तिवादि कहते है ।

२. कहीं पर ह्रस्व को दीर्घ नही होता है, जैसे कि— जुवइअणो (युवतिजनः) और कही विकल्प से ह्रस्व को दीर्घ होता है, जैसे कि भुआयन्त भुअयन्तं (भुजयन्त्रम्) पईहर पइहर (पतिगृहम्) वेलूवण वेलुवण (वेणुवनम्) ।

३. कही पर दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से होता है, जैसे— जउँणायडं जउँ-णयड (यमुनातटम्) णईसोत्तं णइसोत्तं (नदीस्त्रोत) गोरीहरं गोरिहर (गौरीगृहम्) वहूमुह वहुमुहं (वधूमुखम्) ।

हे० १–६८ (८) घञ् प्रत्यय निमित्तक वृद्धि से होने वाले आकार को प्रायः विकल्प से अकार[1] होता है, जैसे कि—

प्रवाहः पवहो पवाहो प्रकारः प्रचारो वा पयरो पयारो
प्रहारः पहरो पहारो प्रस्तावः पत्थवो पत्थावो

हे० १–४३ (९) श् ष् तथा स् के साथ में पहले या पीछे रहने वाले य् र् व् श् ष् तथा स् के लोप होने के पश्चात् बाकी रहने वाले श्[2] ष्[2] तथा स् के पूर्व वाले स्वर को दीर्घ होता है, जैसे कि—

आवश्यकं	**आवासयं**	**मनश्शिला**	**मणासिला**
विश्राम्यति	**वीसमइ**	**शिष्यः**	**सीसो**
अश्वः	**आसो**	**वर्षः**	**वासो**
विश्वसिति	**वीससइ**	**कस्यचित्**	**कासइ**
दुश्शासनः	**दूसासणो**	**निस्सहः**	**नीसहो**

हे० १–८४ (१०) संयुक्त अक्षर के पूर्व में दीर्घ स्वर को ह्रस्व स्वर हो जाता है, जैसे कि—

आम्रम्	**अंबं**	**गुरूल्लापाः**	**गुरुल्लावा**
ताम्रम्	**तंबं**	**चूर्णः**	**चुण्णो**
विरहाग्निः	**विरहग्गी**	**नरेन्द्रः**	**नरिन्दो**
आस्यम्	**अस्सं**	**म्लेच्छः**	**मिलिच्छो**
मुनीन्द्रः	**मुणिन्दो**	**अधरोष्ठम्**	**अहरुट्ठं**
तीर्थम्	**तित्थं**	**नीलोत्पलम्**	**नीलुप्पलं**

१. कहीं पर नहीं होता है, जैसे कि— राओ (रागः)
२. श् या ष् को संस्कृत की अपेक्षा से समझना चाहिये ।

हे० १-८५ (११) संयुक्त अक्षर के पूर्व में आदि इकार को प्रायः विकल्प से एकार होता[1] है, जैसे कि—

पिण्डम्	पेण्डं	पिण्डं	विष्णुः	वेण्हू	विण्हू
धम्मिल्लम्	धम्मेल्लं	धम्मिल्लं	पिष्टम्	पेट्ठं	पिट्ठं
सिन्दूरम्	सेन्दूरं	सिन्दूरं	बिल्वं	बेल्लं	बिल्लं

हे० १-११६ (१२) संयुक्त अक्षर के पूर्व में आदि उकार को ओकार होता[1] है जैसे कि–

तुण्डम्	तोण्डं	मुस्ता	मोत्था
मुण्डम्	मोण्डं	मुद्गरः	मोग्गरो
पुष्करम्	पोक्खरं	पुद्गलम्	पोग्गलं
कुट्टिमम्	कोट्टिम	कुण्ठः	कोण्ठो
पुस्तकः	पोत्थओ	कुन्तः	कोन्तो
लुब्धकः	लोद्धओ	व्युत्क्रान्तम्	वोक्कन्तं

हे० १-१३, १-९३, १-११५.

(१३) निर् तथा दुर् उपसर्ग के रेफ का विकल्प से लोप होता है और लोप होने के पश्चात् निर् के इ को नित्य तथा दुर् के उ को विकल्प से दीर्घ होता है, जैसे कि— निस्सहं नीसहं (निस्सहम्) दुस्सहो दूसहो दुसहो (दुस्सहः)

हे० १-१२६, १-१४८, १-१५९.

(१४) आदि ऋ के स्थान पर अ, ऐ के स्थान पर ए, और औ के स्थान पर ओ होता है, जैसे कि—

---

१. कही नही भी होता है, जैसे कि— चिन्ता ।

घृतम्	घय	वैद्यः	वेज्जो
तृणम्	तण	कैतवः	केढवो
कृतम्	कयं	वैधव्यम्	वेहव्व
वृषभः	वसहो	कौमुदी	कोमुई
मृगः	मश्रो	यौवनम्	जोव्वणं
धृष्टः	धट्ठो	कौस्तुभः	कोत्थुहो
शैलः	सेलो	कौशाम्बी	कोसम्बी
त्रैलोक्यम्	तेल्लुक्क	क्रौंचः	कोंचो
ऐरावणः	एरावणो	कौशिकः	कोसिश्रो
कैलासः	केलासो		

हे० १-१४० (१५) [क] केवल आदि ऋ को रि होता है जैसे कि—

ऋषिः	रिसी	ऋक्षः	रिच्छो
ऋद्धिः	रिद्धी		

हे० १-१३४ [ख] गौण शब्द के अन्त में आने वाले ऋ को उ होता है जैसे कि—माउमण्डल, माउहर, पिउहरं, माउसिश्रा, पिउसिश्रा, पिउवण, पिउवई ।

व्यंजन विकार

हे० १-२३, १-२४.

(१६) अन्त्य म् को अनुस्वार होता है परन्तु स्वर पर में हो तो विकल्प से होता है जैसे कि—

जलम्	जलं	वत्सम्	वच्छं
फलम्	फलं	गिरिम्	गिरिं

ऋषभमजितं च वन्दे, उसभमजिश्रं च वन्दे, उसभं अजिश्रं च वन्दे ।

हे० १-२५ (१७) ङ् ञ् ण् तथा न् ये वर्ण यदि किसी व्यंजन से पहले हों तो अनुस्वार हो जाता है, जैसे कि—

पङ्क्तिः	पंती	षण्मुखः	छंमुहो
पराङ्मुखः	परंमुहो	उत्कण्ठा	उक्कंठा
कञ्चुकः	कंचुओ	सन्ध्या	संझा
लाञ्छनम्	लंछणं	विन्ध्यः	विंझो

हे० १-३० (१८) अनुस्वार के पर में आने वाले वर्गीय वर्ण हो तो अनुस्वार के स्थान में उस वर्ग का अन्त्य अक्षर विकल्प से हो जाता है, जैसे कि—

सन्ध्या	सञ्झा	संझा	उत्कण्ठा	उक्कण्ठा	उक्कंठा
पङ्कः	पङ्को	पंको	चन्द्रः	चन्दो	चंदो
कञ्चुकः	कञ्चुओ	कंचुओ	कलम्बः	कलम्बो	कलंबो

हे० १-११ (१९) संस्कृत शब्द के अन्त्य व्यजन का प्राकृत में प्रायः लोप हो[1] जाता है, जैसे कि—

यावत्	जाव	यशस्	जस
तावत्	ताव	जन्मन्	जम्म

---

१. पद विभक्ति की अपेक्षा से अन्त्य परन्तु वाक्य की विभक्ति की अपेक्षा से अनन्त्य होने से समास मे विकल्प से लोप होता है, जैसे कि—

सद्भिक्षुः	सभिक्खू	सब्भिक्खू	एतद्गुणाः	एअगुणा
सज्जनः	सज्जणो	सजणो	सद्गुणा	सग्गुणा

हे० १-१५ (२०) (विद्युत् शब्द को छोड कर) स्त्रीलिङ्ग में शब्दों के अन्त्य व्यंजन को आ[1] होता है जैसे कि—

सरित्	**सरिआ**	**सम्पद्**	**संपआ**
प्रतिपद्	**पाडिवआ**	**विद्युत्**	**विज्जू**

हे० १-१६ (२१) स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में रहने वाले र् को रा हो जाता है जैसे—

गिर्	**गिरा**	**पुर्**	**पुरा**
धुर्	**धुरा**		

हे० १-३७ (२२) संस्कृत सम्बन्धी अकार से पर अ सहित विसर्ग के स्थान में प्राकृत में ओ हो जाता है, जैसे कि—

सर्वतः	**सव्वओ**	**पुनः**	**पुणो**
पुरतः	**पुरओ**	**ततः**	**तओ**
अग्रतः	**अग्गओ**	**कुतः**	**कुदो**
मार्गतः	**मग्गओ**		

हे० १-१२, १-१४.

(२३) श्रद् उद् और जिसके पर में स्वर है, ऐसे अन्तर्[2] निर् और दुर् इनके अन्त्य व्यजन का लोप नहीं होता है, जैसे कि—

श्रद्धितम्	**सद्दहिअं**	**उद्गतम्**	**उग्गयं**
श्रद्धा	**सद्धा**	**उन्नतम्**	**उन्नयं**

---

१. कहीं आ के स्थान मे या भी हो जाता है, जैसे कि– सरिया इत्यादि।

२. कही पर लोप हो जाता है, जैसे कि—अन्तोवरि।

अन्तरात्मा	अंतरप्पा	दुरुत्तरम्	दुरुत्तरं
निरन्तरम्	निरन्तरं	दुरवगाहम्	दुरवगाहं
निरवशेषम्	निरवसेसं		

हे० १-१७७ (२४) स्वर से पर अनादि तथा असंयुक्त क् ग् च् ज् त् द् प् य् व् का प्रायः लोप हो जाता है जैसे कि—¹

---

१. कही पर लोप नही होता है जैसे कि—

सुकुसुमम्	सुकुसुम	सुतारम्	सुतारं
प्रयागजलम्	पयागजल	विदुरः	विदुरो
सुगतः	सुगओ	सपापम्	सपावं
अगुरु.	अगरू	समवायः	समवाओ
सचापम्	सचावं	देव.	देवो
विजनम्	विजण	दानवः	दाणवो

कही पर आदि मे हो तो लोप भी हो जाता है जैसे कि—

स पुनः	स उण	चिह्नम्	इन्धं
स च	सो अ		

समास मे उत्तर पद के आदि मे रहने वाले क् ग् च् इत्यादि का विकल्प से लोप होता है जैसे कि—

सुखकरः	सुहकरो	सुहयरो	बहुतरः	बहुतरो	बहुअरो
जलचरः	जलचरो	जलयरो	सुखदः	सुहदो	सुहओ

कही पर च् को ज् होता है जैसे कि—पिसाजी (पिशाची)

कही पर क् को ग् होता है जैसे कि—

एकत्वम्	एगत्तं	श्रावकः	सावगो
एक.	एगो	आकारः	आगारो
अमुकः	अमुगो	आकर्षः	आगरिसो

तीर्थंकरः	तित्थयरो	वितानम्	विआणं
नगः	नओ	रसातलम्	रसाअलं
नगरम्	नयरं	गदा	गआ
शचिः	सई	मदनः	मयणो
रजतम्	रययं	रिपुः	रिऊ
सुपुरुषः	सुउरिसो	लावण्यम्	लायण्णं
दयालुः	दआलू	विबुधः	विउहो
वियोगः	विओओ		

हे० १–१७९ (२५) अवर्ण से पर में अनादि प् का लोप नहीं होता है जैसे कि—

शपथः	सवहो	शापः	सावो

हे० १–१८० (२६) अवर्ण से पर में यदि उद्वृत्त अवर्ण हो तो य हो जाता है[1] जैसे कि—

शकटम्	सयढं	प्रजापतिः	पयावई
मृगाङ्कः	मयंको	पातालम्	पायालं
कचग्रहः	कयग्गहो	नयनम्	नयणं

हे० १–१८७ (२७) स्वर से पर अनादि तथा असंयुक्त ख् घ् थ् ध् तथा भ् का प्रायः ह हो जाता है[2] जैसे कि—

---

१. कही पर अवर्ण से पर में नहीं भी हो, तो भी य हो जाता है जैसे कि—पियइ (पिबति)

२. स्वर से पर मे अनादि तथा असंयुक्त होने पर भी कही पर ह् नही भी होता है जैसे कि—

सर्षपखल.	सरिसवखलो	प्रणष्टभय.	पणट्ठभओ
प्रलयघनः	पलयघणो	अस्थिर.	अथिरो
जिनधर्मः	जिणधम्मो	नभः	नभं

शाखा	साहा	साधुः	साहू
मुखम्	मुहं	बधिरः	बहिरो
मेघः	मेहो	सभा	सहा
जघनम्	जहणं	स्वभावः	सहावो
नाथः	नाहो	नभः	नहं

हे० १-१९५, १-१९९, १-२०२, १-२२८, १-२३१, १-२३६, १-२३७, १-२६०, १-२६४.

(२८) स्वर से पर अनादि तथा असंयुक्त ट् के स्थान में ड्, ठ् के स्थान मे ढ्, ड् के स्थान में ल्, न् के स्थान में ण्, प् तथा ब् के स्थान में व्, फ् के स्थान में भ् और ह तथा सभी जगह श् तथा ष् के स्थान में स् होता है और अनुस्वार से पर ह् के स्थान मे घ् विकल्प से होता है जैसे कि—

ट् = ड्[1]

नटः	नडो	घटः	घडो
भटः	भडो	घटति	घडइ

ठ् = ढ्

मठः	मढो	कुठारः	कुढारो
शठः	सढो	पठति	पढइ
कमठः	कमढो		

१ कहीं पर नहीं भी होता है जैसे— अटति अटइ ।

ड् = ल् (प्रायः)[1]

वडवामुखम्	वलयामुहं	तडागम्	तलायं
गरुडः	गरुलो	क्रीडति	कीलइ

न् = ण्

कनकम्	कणयं	वचनम्	वयणं
मदनः	मयणो	नयनम्	नयणं

प् = व् (प्रायः)[2]

उपसर्गः	उवसग्गो	कपिलम्	कविलं
प्रदीपः	पईवो	कपालम्	कवालं
उपमा	उवमा		
काश्यपः	कासवो	महिपालः	महिवालो

---

१. कही विकल्प से होता है जैसे कि— कही नहीं होता है जैसे कि—

वडिसम्	वलिसं	वडिस	निविडम्	निविड
दाडिमम्	दालिम	दाडिमं	गौड.	गउडो
गुडः	गुलो	गुडो	पीडितम्	पीडिग्रं
नाडी	णाली	णाडी	नीडम्	मीडं
नडम्	णलं	णडं	उडुः	उडू
आपीडः	आमेलो	आवेडो	तडि.	तडी

२, कही नही होता है जैसे कि—

कपिः	कई	रिपुः	रिऊ

फ् = ह् तथा भ् (प्रायः)[1]

सफलम् सभलं सहलं शफरी समरी सहरी
शेफालिका सेभालिआ सेहालिआ गुफति गुभइ गुहइ

ब् = व्

शबलः सवलो

श् तथा ष् = स्

शब्दः	सद्दो	षण्ढः	सण्ढो
कुशः	कुसो	निकषः	निहसो
शुद्धम्	सुद्धं	शेषः	सेसो

ह् = घ् (विकल्पे)[2]

सिंहः सिंघो सीहो संहारः संघारो संहारो

हे० १-२२९ (२९) असंयुक्त आदि न् के स्थान में ण् विकल्प से होता है जैसे कि—

नरः णरो नरो नदी णई नई
नयति णेइ नेइ

---

१. कहीं पर केवल भ् होता है जैसे कि—
रेफ. रेभो शिफा सिभा

कहीं पर केवल ह् होता है जैसे कि—
मुक्ताफलम् मुत्ताहलं

२. कहीं पर अनुस्वार से पर न हो तो भी ह का घ् हो जाता है जैसे कि—
दाह दाघो

हे० १-२४५ (३०) पद के आदि में आये हुए य् को ज् हो जाता है[1] जैसे कि—

यशः	जसो	याति	जाइ
यमः	जमो		

हे० १-२०६ (३१) प्रति उपसर्ग के त् को ड् हो जाता है[2] जैसे कि—

प्रतिपन्नम्	पडिवन्नं	प्रतिमा	पडिमा
प्रतिभासः	पडिहासो	प्रतिपद्	पडिवया
प्रतिहारः	पडिहारो	प्रतिकरोति	पडिकरइ
प्रतिस्पर्द्धी	पाडिप्फद्धी		

हे० २-७७ (३२) किसी भी संयुक्त अक्षर में क् ग् ट् ड् त् द् प् श् ष् स् ≍ क् (जिह्वामूलीय) तथा ≍ प् (उपध्मानीय) पहले आये हुवे हों तो उनका लोप हो जाता है जैसे कि—

---

१. उपसर्ग जोड़ने के बाद यदि वह यकार अनादि भी हो जाय, तो उसको भी जकार हो जाता है जैसे कि—

संयमः सजमो   सयोग. सजोगो   अपयश. अवजसो

कही नही भी होता है जैसे कि— प्रयोग. पओगो ।

२. कही पर त् को ड् नही भी होता है जैसे कि—

प्रतिसमयम्	पइसमयं	प्रतिष्ठानम्	पइट्ठाणं
प्रतीपम्	पईवं	प्रतिष्ठा	पइट्ठा
सम्प्रति	संपइ	प्रतिज्ञा	पइण्णा

भुक्तम्	भुत्तं	सुप्तः	सुत्तो
सिक्थम्	सित्थं	गुप्तः	गुत्तो
दुग्धम्	दुद्धं	श्लक्ष्णम्	लण्हं
मुग्धम्	मुद्धं	निश्चलः	निच्चलो
षट्पदः	छप्पओ	श्च्योतति	चुअइ
कट्फलम्	कप्फलं	गोष्ठिः	गोट्ठी
खड्गः	खग्गो	षष्ठः	छट्ठो
षड्जः	सज्जो	निष्ठुरः	निट्ठुरो
उत्पलम्	उप्पलं	स्खलितः	खलिओ
उत्पातः	उप्पाओ	स्नेहः	नेहो
मद्गुः	मग्गू	दुःखम्	दुक्खं
मुद्गरः	मोग्गरो	अन्तःपातः	अंतप्पाओ

नोट—ऊपर वाले सभी उदाहरणों में ३६ वें नियम के अनुसार द्वित्व हुआ है।

हे० २–७८ (३३) किसी संयुक्त अक्षर में पीछे म् न् तथा य् आये हों तो उनका लोप हो जाता है जैसे कि—

युग्मम्	जुग्गं	लग्नः	लग्गो
रश्मिः	रस्सी	श्यामा	सामा
स्मरः	सरो	कुड्यम्	कुड्डं
स्मेरम्	सेरं	व्याधः	वाहो
नग्नः	नग्गो		

नोट—ऊपर के उदाहरणों में ३६ वें नियम के अनुसार द्वित्व हुआ है।

हे० २-७९ (३४) किसी भी संयुक्त अक्षर में ल् ब् व् तथा र् आगे या पीछे आये हों तो उनका भी लोप होता है जैसे कि—

उल्का	उक्का	श्लक्ष्णम्	सण्हं
वल्कलम्	वक्कलं	विक्लवः	विक्कवो
शब्दः	सद्दो	चक्रम्	चक्कं
अब्दः	अद्दो	वर्गः	वग्गो
लुब्धकः	लोद्धओ	ग्रहः	गहो
पक्वम्	पक्कं पिक्कं	रात्रिः	रत्ती
ध्वस्तः	धत्थो		

नोट—ऊपर के सभी उदाहरणों में ३६ वें नियम के अनुसार द्वित्व हुआ है।

हे० २-८३ (३५) ज्ञ् में ञ् का विकल्प से लोप होता है[1] जैसे कि—

ज्ञानम्	जाणं	णाणं	मनोज्ञम्	मणोज्जं	मणोण्णं
सर्वज्ञः	सव्वज्जो	सव्वण्णू	अभिज्ञः	अहिज्जो	अहिण्णू
आत्मज्ञः	अप्पज्जो	अप्पण्णू	प्रज्ञा	पज्जा	पण्णा
दैवज्ञः	दइवज्जो	दइवण्णू	आज्ञा	अज्जा	आणा
इङ्गितज्ञः	इंगिअज्जो	इंगिअण्णू	संज्ञा	संजा	सण्णा

हे० २-८९ (३६) पद के आदि में नहीं हो और दीर्घ अथवा अनुस्वार से पर में भी नहीं हो और रेफ तथा हकार को छोड़ कर शेष तथा आदेश व्यंजन को द्वित्व हो जाता[2] है जैसे कि—

१. कहीं पर ज्ञ् के ञ् का लोप नहीं भी होता है जैसे कि— विण्णाणं (विज्ञानम्)

२. कहीं पर द्वित्व नहीं भी होता है जैसे— कसिणो (कृष्ण. कृत्स्नो वा)

कल्पतरुः	कप्पतरू	रक्तः	रग्गो
मूर्खः	मुक्खो	कृत्तिः	किच्ची
दष्टः	डक्को	रुक्मी	रुप्पी
यक्षः	जक्खो		

हे० २–९२. दीर्घ से पर में हो तो ? द्वित्व नही होता है–

क्षिप्तः	छूढो	लास्यम्	लासं
निःश्वासः	नीसासो	आस्यम्	आसं
स्पर्शः	फासो	प्रेष्यः	पेसो
पार्श्वम्	पासं	अवमाल्यम्	ओमालं
शीर्षम्	सीसं	आज्ञा	आणा
ईश्वरः	ईसरो	आज्ञप्तिः	आणत्ती
द्वेष्यः	वेसो	आज्ञपनम्	आणवणं

अनुस्वार से पर में हो तो ? द्वित्व नहीं होता है–

त्र्यस्त्रम्	तंसं	विन्ध्यः	विंझो
सन्ध्या	संझा	कांस्यालः	कंसालो

हे० २–९३. रेफ तथा हकार को ? द्वित्व नहीं होता है—

सौन्दर्यम्	सुन्देरं	विह्वलः	विहलो
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं	कार्षापणः	कहावणो
पर्यन्तः	पेरन्तो		

हे० २–९० (३७) वर्ग के दूसरे या चौथे अक्षर का द्वित्व का प्रसंग आवे तो द्वितीय अक्षर को पहला अक्षर तथा चौथे अक्षर को तीसरा अक्षर हो जाता है जैसे कि—

व्याख्यानम्	वक्खाणं	यक्षः	जक्खो
व्याघ्रः	वग्घो	अक्षि	अच्छी

मूर्च्छा	मुच्छा	मध्यम्	मज्झं
निर्झरः	निज्झरो	पृष्ठिः	पट्ठी
कष्टम्	कट्ठं	वृद्धः	वुड्ढो
तीर्थम्	तित्थं	हस्तः	हत्थो
निर्धनः	निद्धणो	आश्लिष्टः	आलिद्धो
गुल्फम्	गुप्फं	पुष्पम्	पुप्फं
निर्भरः	निब्भरो	विह्वलः	भिब्भलो

हे० २–९७ (३८) समास में शेष तथा आदेश व्यञ्जन को विकल्प से द्वित्व होता[1] है जैसे कि—

नदीग्रामः	नइग्गामो	नइगामो
कुसुमप्रकरः	कुसुमप्पयरो	कुसुमपयरो
देवस्तुतिः	देवत्थुई	देवथुई
हरस्कन्दौ	हरक्खन्दा	हरखन्दा
आलानस्तम्भः	आलाणक्खंभो	आलाणखंभो

हे०— २–१३, २–१५, २–२१, २–२४, २–२६, २–३०, २-३४, २–४२ २–४५, २–५२, २–५३, २–५७, २–६१, २–६२, २–७४, २–७५, २–७६.

---

१. कही पर शेप तथा आदेश व्यजन को छोड़ कर भी द्वित्व विकल्प से हो जाता है जैसे कि—

सपिपास.	सप्पिवासो	सपिवासो	अदर्शनम्	अद्दसणं	अदंसणं
बद्धफल.	बद्धप्फलो	बद्धफलो	प्रतिकूलम्	पडिक्कूल	पडिकूल
प्रमुक्तम्	पमुक्कं	पम्मुक्कं	त्रैलोक्यम्	तेल्लोक्कं	तेलोक्कं

(३९) नीचे दिये हुए सयुक्त अक्षरों के स्थान में नीचे कहे अनुसार आदेश होते है—

क्ष् = ख्[1]

क्षयः	खओ
लक्षणम्	लक्खणं

स्क् तथा ष्क् = ख्

पुष्करम्	पोक्खरं
निष्कम्	निक्खं
स्कन्धः	खंधो
अवस्कन्दः	अवक्खन्दो

त्य् = च्

सत्यम्	सच्चं
प्रत्ययः	पच्चओ

त्व् = च्

ज्ञात्वा	णच्चा
श्रुत्वा	सोच्चा

थ्व् = छ्

पृथ्वी	पिच्छी

द्व् = ज्

विद्वत्	विज्जं

ध्व् = झ्

बुद्ध्वा	बुज्झा

ह्रस्व से पर में रहने वाले—

थ्य्, श्च्, त्स् तथा प्स = छ्

पथ्यम्	पच्छं
मिथ्या	मिच्छा
पश्चिमम्	पच्छिमं
पश्चात्	पच्छा
उत्साहः	उच्छाहो
चिकित्सति	चिइच्छइ
जुगुप्सति	जुगुच्छइ
अप्सरा	अच्छरा

द्य्, य्य् तथा र्य् = ज्

वैद्यः	वेज्जो
द्युतिः	जुई
जय्यः	जज्जो
शय्या	सेज्जा
कार्यम्	कज्जं
मर्यादा	मज्जाआ

ध्य् तथा ह्य् = झ्

बध्यते	वज्झए
ध्यानम्	झाणं

---

१. कही पर क्ष् के स्थान मे छ् तथा झ् विशेष होते है जैसे कि—
क्षीण = खीण छीण झीणं

गुह्यम् गुज्झं
नह्यते णज्झइ

र्त् = ट्

वर्तुलम् वट्टुलं
नर्त्तकी नट्टई

ष्ट् = ठ्

यष्टिः लट्ठी
मुष्टिः मुट्ठी
सृष्टिः सिट्ठी
अनिष्टम् अणिट्ठं

म्न् तथा ज्ञ् = ण्

निम्नम् णिण्णं
प्रद्युम्नः पज्जुण्णो
ज्ञानम् णाणं
संज्ञा सण्णा

स्त् = थ्

स्तोत्रम् थोत्तं
स्तोकम् थोअं
प्रस्तरः पत्थरो
प्रशस्तः पसत्थो

क्म् तथा ड्म् = प्

कुड्मलम् कुम्पलं
रुक्मिणी रुप्पिणी
रुक्मी रुच्मी, रुप्पी

ष्प् तथा स्प्[1] = फ्

शष्पम् सप्फं
निष्पेषः निप्फेसो
स्पन्दनम् फन्दनं
प्रतिस्पर्द्धी पाडिप्फद्धी

ह्व् = भ् (विकल्पे)

जिह्वा जिब्भा जीहा

न्म् = म्

जन्म जम्मो
मन्मथः वम्महो
मन्मनः मम्मणं

ग्म् = म् (विकल्पे)

युग्मम् जुम्मं जुग्गं
तिग्मम् तिम्मं तिग्गं

---

१. कहीं विकल्प से होता है जैसे कि—

बृहस्पतिः बुहप्फई बुहप्पई

कहीं नहीं भी होता है जैसे कि—

निस्पृहः निप्पहो परस्परम् परोप्परं

श्न्[1] ष्म् स्म् तथा ह्म[2]=म्ह्

कुश्मानः	कुम्हाणो	अस्मादृशः	अम्हारिसो
कश्मीराः	कम्हारा	विस्मयः	विम्हओ
ग्रीष्मः	गिम्हो	ब्रह्माः	बम्हा
ऊष्मा	उम्हा	सुह्माः	सुम्हा

श्न् ष्ण् स्न् ह्न् ह्ण् क्ष्ण् = ण्ह्

प्रश्नः	पण्हो	प्रस्नुतः	पण्हुओ
शिश्नः	सिण्हो	वह्निः	वण्ही
विष्णुः	विण्हू	जह्नुः	जण्हू
जिष्णुः	जिण्हू	पूर्वाह्णः	पुव्वण्हो
कृष्णः	कण्हो	अपराह्णः	अवरण्हो
उष्णीषम्	उण्हीसं	श्लक्ष्णम्	सण्हं
ज्योत्स्ना	जोण्हा	तीक्ष्णम्	तिण्हं
स्नातः	ण्हाओ		

ह्ल् = ल्ह्

कह्लारम्	कल्हारं	प्रह्लादः	पल्हाओ

हे० २-१२४ (४०) संयुक्त ह्य के हकार तथा यकार को विकल्प से (विपर्यय) अदल-बदल हो जाता है। जैसे कि—

गुह्यम्	गुय्हं	गुज्झं	सह्यः	सय्हो	सज्झो

---

१. कहीं नहीं होता है जैसे कि — रश्मि रस्सी। स्मरः सरो।

२. कहीं ह्म् का म्ह तथा म्भ होता है जैसे कि—

ब्राह्मण. बम्हणो बम्भणो — ब्रह्मचर्यम् बम्हचेरं. बम्भचेर।

व्यंजनविश्लेष

हे० २-१०५ (४१) श् तथा ष् सयुक्त अक्षर के अन्त्य व्यंजन के पूर्व मे इ विकल्प से लग जाता[1] है जैसे कि—

आदर्शः	आयरिसो	आयंसो	वर्षम्	वरिसं	वासं
सुदर्शनः	सुदरिसणो	सुदंसणो	वर्षा	वरिसा	वासा
दर्शनम्	दरिसणं	दंसणं	वर्षशतम्	वरिससयं	वाससयं

हे० २-१०६ (४२) संयुक्त अक्षर के अन्त में यदि ल् आया हो तो उस संयुक्त अक्षर के अन्त्य व्यजन के पूर्व में इ लग जाता[2] है जैसे कि—

क्लिन्नम्	किलिन्न	श्लोकः	सिलोओ
क्लिष्टम्	किलिट्ठं	क्लेशः	किलेसो
श्लिष्टम्	सिलिट्ठं	ग्लानम्	गिलाणं
प्लुष्टम्	पिलुट्ठं	म्लानम्	मिलाणं
प्लोषः	पिलोसो	क्लाम्यति	किलम्मइ
श्लेषः	सिलेसो	क्लान्तम्	किलन्तं
शुक्लम्	सुक्किलं		

हे० २-११३ (४३) उकारान्त ङी प्रत्ययान्त जो शब्द है वे तन्वी तुल्य शब्द है । उनमे जो संयुक्त का अन्त्य व्यंजन है उससे पूर्व उकार होता है[3] जैसे कि—

---

१. कही पर इकार नित्य भी लगता है जैसे कि—

परामर्श	परामरिसो	आमर्प.	आमरिमो
हर्ष.	हरिसो		

२. कही पर इ नही भी लगता है जैसे कि—

क्लम.	कमो	शुक्लपक्ष.	सुक्कपक्खो
प्लव.	पवो	उत्प्लावयति	उप्पावेइ
विप्लवः	विप्पवो		

३. कही अन्यत्र भी उ जोड़ा जाता है जैसे कि— स्रुघ्नम् सुरुग्घ

तन्वी	तणुवी	बह्वी	बहुवी
लघ्वी	लहुवी	पृथ्वी	पुहुवी
गुर्वी	गरुवी	मृद्वी	मउवी

लिंगपरिवर्तन

हे० १–३१, १–३२ (४४) दामन्[1] शिरस्[1] तथा नभस्[1] के अतिरिक्त सकारान्त तथा नकारान्त शब्द और प्रावृप् शरत् तथा तरणि शब्द प्राकृत में पुलिङ्गमें आते[2] हैं जैसे कि—

यशः	जसो	नर्म	नम्मो
पयः	पओ	मर्म	मम्मो
तमः	तमो	प्रावृट्	पाउसो
तेजः	तेओ	शरत्	सरओ
उरः	उरो	तरणिः	तरणी
जन्म	जम्मो		

हे० १–३३ (४५) 'अक्षि' पर्यायवाची और वचनादि शब्द प्राकृत भाषा में विकल्प से पुलिङ्ग में आते हैं जैसे कि—

---

१ दामं (दाम), सिर (शिर.), नह (नभः)

२. नीचे लिखे हुए शब्द कही पर नपुंसक लिग मे भी देखे जाते है जैसे कि—

श्रेयः	सेय	शर्म	सम्म
वचः	वय	चर्म	चम्मं
सुमनः	सुमणं		

अक्षि	अच्छो	अच्छि	विद्युत्	विज्जु	विज्जू
चक्षुः	चक्खू	चक्खुं	कुलम्	कुलो	कुलं
नयनम्	नयणो	नयणं	छन्दः	छन्दो	छन्दं
लोचनं	लोअणो	लोअणं	माहात्म्यम्	माहप्पो	माहप्पं
वचनम्	वयणो	वयणं	दुःखम्	दुक्खो	दुक्खं

हे० १-३४ (४६) गुण आदि शब्द प्राकृत भाषा में विकल्प से नपुंसक लिंग में आते है जैसे कि—

गुणः	गुणं	गुणो	मण्डलाग्रः	मण्डलग्गं	मण्डलग्गो
देवः	देवं	देवो	करुहः	करुहं	करुहो
बिन्दुः	बिन्दुं	बिन्दू	वृक्षः	रुक्खं	रुक्खो
खड्गः	खग्गं	खग्गो			

हे० १-३५ (४७) इमान्त तथा अंजलि आदि शब्द प्राकृत भाषा में विकल्प से स्त्रीलिंग में आते है जैसे कि—

गरिमा	गरिमा	गरिमा	चौर्यम्	चोरिआ	चोरिअं
महिमा	महिमा	महिमा	कुक्षिः	कुच्छी	कुच्छी
धूर्त्तिमा	धुत्तिमा	धुत्तिमा	बलिः	बली	बली
अंजलिः	अंजली	अंजली	निधिः	निही	निही
पृष्टम्	पिट्ठी	पिट्ठं	विधिः	विही	विही
अक्षि	अच्छी	अच्छिं	रश्मिः	रस्सी	रस्सी
प्रश्नः	पण्हा	पण्हो	ग्रन्थिः	गण्ठी	गण्ठी

निर्लज्जिमा   निल्लज्जिमा   निल्लज्जिमा

अभ्यास—१.

(नाम-विभक्ति)

अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के प्रत्यय

विभक्ति[1]	एकवचन	बहुवचन[2]
प्रथमा	ओ	आ
द्वितीया	म्	आ, ए
तृतीया	एण, एणं	एहि, एहिं, एहिँ
पंचमी	त्तो, आओ, आउ, आहि, आहिन्तो, आ.	त्तो, आओ, आउ, आहि, आहिन्तो, आसुन्तो, एहि एहिन्तो, एसुन्तो
षष्ठी	स्स.	आण, आणं
सप्तमी	ए, म्मि	एसु, एसुं
संबोधन	०, ओ, आ	आ.

१ प्राकृत मे कारकादि विभक्तिया प्राय: सस्कृत के नियम के अनुसार ही होती है। परन्तु कही–कहीं कुछ भिन्नता भी होती है। कितनी जगह पर द्वितीया तथा तृतीया के स्थान पर सप्तमी, पचमी के स्थान पर तृतीया, और सप्तमी के स्थान पर द्वितीया होती है। चतुर्थी विभक्ति तो होती ही नही। उसके स्थान मे पष्ठी हो जाती है और कई जगह पर चतुर्थी का एक–वचन संस्कृत के तुल्य ही होता है।

२. प्राकृत मे नामविभक्ति या धातुविभक्ति मे द्विवचन नही होता है। द्विवचन के स्थान मे सर्वत्र बहुवचन आता है और साथ मे द्वि शब्द के रूप काम मे लाये जाते है।

जिण शब्द के रूप

प्र०	जिणो[1]	जिणा
द्वि०	जिणं[2]	जिणा, जिणे
तृ०	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ
पं०	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणा.	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि, जिणाहिन्तो, जिणेहिन्तो, जिणासुन्तो, जिणेसुन्तो
ष०	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं.
स०	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु, जिणेसुं.
सं०	हे जिण, जिणो, जिणा.	जिणा.

आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के प्रत्यय

प्र०	ओ	आ
द्वि०	म्	आ
तृ०	ण, णं.	हि, हिं, हिँ
पं०	त्तो, आओ, आउ, आहिन्तो,	त्तो, आओ, आउ, आहिन्तो, आसुन्तो.
ष०	स्स	आण, आणं.
स०	म्मि	आसु, आसुं
सं०	०, ओ,	आ.

---

१ जिण+ओ, आ, एण इत्यादि स्वरादि प्रत्ययो के पूर्व मे जिण शब्द का अन्त्य अकार को नियमावली के छठे नियम के अनुसार लोप हो जाता है।

२. जिण+म् नियम न० १६ के अनुसार अनुस्वार होता है।

गोवा शब्द के रूप

प्र०	गोवो	गोवा
द्वि०	गोवां	गोवा
तृ०	गोवाण, गोवाणं	गोवाहि, गोवाहिँ, गोवाहिं
पं०	गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहिन्तो,	गोवत्तो, गोवाओ, गोवाउ, गोवाहिन्तो, गोवासुन्तो.
ष०	गोवस्स	गोवाण, गोवाणं.
स०	गोवम्मि	गोवासु, गोवासुं
सं०	हे गोवो, गोवा.	गोवा.

हो.हा आदि शब्दों के रूप भी गोवा के समान ही होते है।

* अकारान्त पुल्लिंग शब्द

१. तित्थअर (तीर्थकर) जैन-शासननायक ।
२ आयरिअ (आचार्य) आचार्य साधुगण का नायक
३. किविण (कृपण) लोभी, कजूस
४. लोह (लोभ) लोभ
५ णरअ (नरक) नरक, दुःखस्थान
६. खत्तिअ (क्षत्रिय) क्षत्रिय-जाति का पुरुष
७. जण (जन) मनुष्य
८. किलेस (क्लेश) कष्ट, दुःख
९. पत्थाव (प्रस्ताव) अवसर

---

* दूसरा, तीसरा और सोलहवा नम्बर को छोडकर शब्द नियमावली के एक या अधिक नियमो के लक्ष्य है । जैसे कि— तीर्थकर, यह शब्द तीन नियमो का लक्ष्य है । दसवे नियम के अनुसार ह्रस्व, चौतीसवे नियम के अनुसार लोप और छत्तीसवे नियम के अनुसार द्वित्व, और चौवीसवे नियम के अनुसार 'क' का लोप होता है । इस प्रकार प्रत्येक शब्द की साधना नियमावली के नियमानुसार अपनी बुद्धि से कर लेना चाहिये ।

१०. **अहम्म** (अधर्म) धर्म-विरुद्ध कार्य

११. **उवज्झाय** (उपाध्याय) अध्यापक, शास्त्रशिक्षक

१२. **धम्म** (धर्म) धर्म, न्यायमार्ग

१३. **पह** (पथ) रास्ता, मार्ग, पंथ

१४. **मग्ग** (मार्ग) रास्ता

१५. **मोक्ख, मुक्ख** (मोक्ष) मुक्ति

१६. **वीर** (वीर) महावीर स्वामी

१७. **गिहासम** (गृहाश्रम) गृहस्थाश्रम

१८. **पमोअ** (प्रमोद) आनन्द

१९. **अहिअल** – दे० – गुस्सा

२०. **समणोवासअ** (श्रमणोपासक) श्रावक

२१. **णियम** (नियम) कायदा, मर्यादा

२२. **समण** (श्रमण) साधु

२३. **गुण** (गुण) गुण

२४. **णर** (नर) मनुष्य



अभ्यास—२.

(धातुविभक्ति)

वर्तमान काल के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	बहुवचन
प्रथम	इ	न्ति, न्ते, इरे.
मध्म	सि	ह, इत्था.
उत्तम	मि	मो, मु, म.

१. संस्कृत में जो व्यंजनान्त धातुएँ है, वे प्राकृत मे अकारान्त हो जाती है ।

२. अकारान्त धातुओं से प्रथम तथा मध्यम पुरुष के एकवचन के प्रत्यय इ तथा सि के अतिरिक्त अनुक्रम से ए तथा से प्रत्यय भी हो जाता है ।

३. वर्तमानकाल, भविष्यकाल, आज्ञार्थ, विध्यर्थ तथा वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययो के पूर्व अकार को विकल्प से एकार होता है ।

सूचना—१. परस्मैपद तथा आत्मनेपद के प्रत्यय खास अलग-अलग नही है । जो कि अकारान्त धातुओ के ए तथा से प्रत्ययो को और न्ते, इरे, इत्था इत्यादि को आत्मनेपद के प्रत्यय के समान गिने तो गिन सकते है । परन्तु शेप प्रयोगो मे उनका खास नियम नही रखा गया है किन्तु परस्मैपद धातुओ से भी उक्त प्रत्यय लगे हुए देखने मे आते है । इसलिये ये प्रत्यय परस्मैपद तथा आत्मनेपद दोनो ही मे सामान्य रीति से होते है ।

२. धातुओ मे कोई विशिष्ट गणकार्य नही होता है इसलिये गण विभाग दिखलाना कोई आवश्यक नही है ।

३. न्ते, इरे, तथा इत्था ये तीन प्रत्यय कात्यायन प्रणीत प्राकृत-प्रकाश मे नही है ।

४. उत्तम–पुरुष के मि प्रत्यय के पूर्व में अकार को विकल्प से आकार होता है।

५. उत्तम–पुरुष के मो, मु तथा म प्रत्ययों के पूर्व में अकार का विकल्प से आकार तथा इकार हो जाता है।

धातु

गच्छ (गम्[1]) जाना	वय (वद्) बोलना, कहना
पड (पत्) गिरना	वस (वस्) रहना
बुज्झ (बुध्) जानना, समझना	लह (लभ्) पाना
	पढ (पठ्) पढ़ना
रक्ख (रक्ष्) रक्षा करना, पालन करना	वड्ढ (वृध्) बढ़ना
	अइच्छ–दे०–जाना

उदाहरण – गच्छ धातु के रूप

ए० व०   ब० व०

१. कोष्ठक मे जो सस्कृत धातुओ के रूप दिये गये है, वे इसलिये कि सस्कृत और प्राकृत धातुओ मे कितना अन्तर है, यह स्पष्ट हो जाये। यह अन्तर दो प्रकार का होता है आंशिक और प्राकृतिक। नियमावली के नियम से गुण या अन्य नियम से जो धातुओ मे एकाध अंश मे जो फेर-फार होता है, वे आंशिक कहे जाते है जैसे कि रक्ष् के स्थान मे रक्ख, गम् के स्थान मे गच्छ रूप होता है। आदेश विधान मे धातु की जो प्रकृति बदल दी जाती है, वह प्राकृतिक कहलाती है जैसे कथ् के स्थान मे वज्जर इत्यादि। और जो कि अभ्यास मे आंशिक और प्राकृतिक अन्तर के तैयार रूप लिखे जायेंगे, तो भी आंशिक अन्तर का कार्य नियमावली के नियमों के अनुसार देखकर स्वयं कर लेना चाहिये।

प्र० पु०	गच्छइ, गच्छए	गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छिरे
म० पु०	गच्छसि, गच्छसे	गच्छह, गच्छित्था
उ० पु०	गच्छामि, गच्छमि	गच्छामो, गच्छिमो, गच्छमो
		एवं मुमयोरपि

पक्ष में 'गच्छेइ' इत्यादि रूप होते है। सभी जगह अकार को एकार हो जाता है।

सर्वनाम

तुमं (त्वं) तुम तूं	तुब्भे (यूयं) तुम सब
अहं (अहं) मै	अम्हे (अस्मान्) हमको
तुम्हे (युष्मान्) तुमको	अम्हे (वयं) हम सब

अव्यय

ण – नहीं अ (च) और वा – अथवा।

हिन्दी में अनुवाद करो

वाक्य—

१. तित्थअरा मोक्खं गच्छन्ति। २. आयरिओ मग्गं अइच्छइ। ३. तुमं पत्थावं बुज्झसि। ४. उवज्झायो मोक्खमग्गं वयइ। ५ वयं वीरस्स गुणा बुज्झामो। ६. णरो गुणेहि पमोअं लहए। ७. वयं धम्मेण वड्ढिमो। ८. तुब्भे समणस्स धम्मं रक्खित्था। ९. किविणा लोहेण णरए पडन्ति। १०. खत्तिओ जणे किलेसाओ रक्खइ। ११. तुब्भे अहम्मेहिन्तो अम्हे रक्खह। १२. अहं धम्मस्स पहे वसामि। १३. तुमं गिहासमम्मि वसेसि। १४. अहिअलत्तो लोहत्तो वा वयं ण वयामु। १५. तुमं समणोवासआणं णियमे पढसे।

प्राकृत में अनुवाद करो

वाक्य—

१. हम धर्म के मार्ग में जाते है। २. तुम महावीर के धर्म को जानते हो। ३. क्रोध से मनुष्य नरक में जाता है। ४. में तुमसे कहता हूं। ५. तुम मोक्ष के मार्ग में जाते हो। ६. तुम पढते नहीं हो। ७. तूं अधर्म से नरक में पड़ता (गिरता) है। ८. कंजूस धर्म की रक्षा नही करता है। ९. क्लेश से क्रोध बढता है। १०. आचार्य साधु के धर्म की रक्षा करता है। ११. हम क्षत्रियों के धर्म को समझते है। १२. मनुष्य धर्म से आनन्द पाते है। १३. तुम प्रस्ताव को जानते हो।



अभ्यास—३.

(नामविभक्ति)

इकारान्त तथा उकारान्त पुलिंग शब्दों के प्रत्यय

	ए. व.	ब. व.
प्र.	इ	अउ, अओ, णो, इ.
द्वि.	म्	णो, इ.
तृ.	णा	इहि, ईहिं, इहिँ.
पं.	णो, त्तो, इओ, इउ, इहिन्तो.	त्तो, इओ, इउ, इहिन्तो, इसुन्तो.
ष.	णो, स्स.	ईण, ईणं,
स.	म्मि.	इसु, इसुं.
सं.	०, इ.	अउ, अओ, णो, इ.

उदाहरण—इसि (ऋषि) शब्द का रूप

प्र.	इसी *	× इसउ, इसओ, इसिणो, इसी
द्वि.	इसिं	इसिणो, इसी
तृ.	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ
पं.	इसिणो, इसित्तो, इसीओ इसीउ, इसीहिन्तो	इसित्तो, इसीओ इसीउ इसीहिन्तो, इसीसुन्तो
ष.	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं
स.	इसिम्मि	इसीसु, इसीसुं
सं.	हे इसि, इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी

नोट—उकारान्त शब्दों के प्रत्यय भी इसी रीति से होते हैं। केवल इकार के स्थान में उकार आता है और प्रथमा के बहुवचन मे एक 'अवो' आदेश अधिक होता है।

गुरु शब्द के रूप

प्र.	गुरू	गुरओ, गुरउ, गुरवो, गुरुणो, गुरू
द्वि.	गुरुं	गुरुणो, गुरू
तृ.	गुरुणा	गुरूहि, गुरूहिं, गुरूहिँ
पं.	गुरुणो, गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ, गुरूहिंतो.	गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ गुरूहिन्तो, गुरूसुन्तो
ष.	गुरुणो, गुरुस्स	गुरूण, गुरूणं
स.	गुरुम्मि	गुरूसु, गुरूसुं
सं.	हे गुरु, गुरू	गुरओ, गुरउ, गुरवो, गुरुणो, गुरू.

* इसि + इ = इसी. इत्यादि स्थल मे सजातीय होने से नियमावली के पहले नियम के अनुसार दीर्घ रूप सधि हुई।

× इसि + अउ = इसउ इत्यादि स्थल मे विजातीय होने से संधि नही हुई किन्तु पूर्व स्वर का लोप हुआ।

नोट—पुल्लिग में दीर्घ ईकारान्त और दीर्घ ऊकारान्त गामणी खलपू आदि शब्द क्विप् प्रत्यय से बने हुए है। प्राकृत में उनको ह्रस्व होता है इसलिये उसका रूप इसि शब्द और गुरु शब्द के समान ही होते है।

शब्द (पुल्लिंग)

गुरु (गुरु) धर्म के मार्ग को बताने वाला

रिसि इसि (ऋषि) धर्मगुरु, साधु,, मुनि

साहु (साधु) आत्मकार्यसाधक

मुणि (मुनि) मौन-व्रतधारी साधु, यति

तरु (तरु) झाड़

सिस्स सीस (शिष्य) चेला, अनुयायी

विणय (विनय) नम्रता, विवेक

भोअ (भोग) इंद्रिय विषय

मूल (मूल) आद्यभाग, आदि-करण

संजम, संअम (संयम) संयम

आणंदाराम (आनन्दाराम) आनन्दरूप वगीचा

गिरि (गिरि) पर्वत

कोहग्गि (क्रोधाग्नि) क्रोध-रूपी अग्नि

अरि (अरि) शत्रु, दुश्मन

सिसु (शिशु) बालक

हत्थि (हस्ति) हाथी

करि (करि) हाथी

भाणु (भानु) सूर्य

निवास (निवास) रहने का स्थान

बाल (बाल) बालक, अज्ञानी

सर (सर) बांण

कर (कर) हाथ

मोअअ (मोदक) लड्डू

पाअ (पाद) पग

सिहर (शिखर) चोटी

गिम्ह (ग्रीष्म) गर्मी की ऋतु

विशेषण

पसत्थ (प्रशस्त) श्रेष्ठ प्रशंसा-पात्र

समत्त (समस्त) सभी

धातु

इच्छ (इष्) इच्छा करना

गिज्झ (गृध्) आसक्त होना, तल्लीन होना

चर (चर्) विचरना

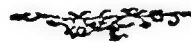
णव (नम्) प्रणाम करना

खिव (क्षिप्) फेकना

वह (वह्) ढोना, लेजाना

रम (रम्) क्रीड़ा करना

तव (तप्) प्रकाशित होना



वाक्य

१. गुरवो सिस्साण मोक्खमिच्छंति । २. तुमं गुरुणो विणयमिच्छसि । ३. रिसओ भोएसु ण गिज्झन्ति । ४. इसओ तरूणं मूले वसन्ति । ५. साहुणो सजमेणमाणदारामे चरन्ति । ६. मुणिस्स णिवासो गिरिम्मि पसत्थो । ७. मुणी गुरुं णवइ । ८. बालो कोहग्गिणा तवइ । ९. अरउ सरे खिवन्ति । १०. सिसू (दोसु) × करेसु मोअअं वहइ । ११. हत्थी पाएहि तरुणो खिवइ । १२. करिणो गिरिस्स सिहरम्मि रमन्ते । १३. भाणू गिम्हम्मि तवइ ।

× द्वि शब्द संख्या वाचक है ।

१. हम ऋषियों को नमस्कार करते है। २. सूर्य पर्वत के शिखर के ऊपर तपता है। ३ तुम लड्डू में आसक्त होते हो। ४. तू पर्वत की चोटी पर फिरता है। ५. हम ऋषियों के पास क्रीड़ा करते हैं। ६. हाथी पेड़ों को फेकते है। ७. हम भोगों के आसक्त नही होते है। ८. साधु संयम पालन करते है।



अभ्यास—४.

(धातुविभक्ति-वर्तमानकाल)

अकारान्त के अतिरिक्त स्वरान्त धातु

१. धातु के अन्त्य उवर्ण को अव और ऋवर्ण को अर होता है। जैसे कि— न्हु–ण्हव, हु–हव सू–सव, च्यु–चव, मृ–मर, तृ–तर, जृ–जर।

२. धातु के इवर्ण और उवर्ण को गुण होता है। इ का गुण ए और उ का गुण ओ होता है।

३. चि, जि, क्री, श्रु, हु, स्तु, पू, धू और लू इन धातुओं के अन्त में ण का आगम और दीर्घ के स्थान में ह्रस्व होता है।

धातु

+पिअ (पा) पीना	णे (नी) ले जाना
ठा-चिट्ठ (स्था) खड़ा रहना	भा-बीह (भी) डरना
× चे-चिण (चि) चुनना, इकट्ठा करना	किण (क्री) खरीदना
	सुण-हण (श्रु) सुनना
हुण (हु) हवन करना	धुण-धुव (धू) कांपना
थुण (स्तु) स्तुति करना	लुण (लू) छेदना, काटना
भव-हव-हो (भू) होना	कुण-कर (कृ) करना
पुण (पू) पवित्र करना	हर (हृ) हरना, चोरी करना
जय-जिण (जि) जितना	

उदाहरण – पा धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	पिअइ, पिअए,	पिअन्ति, पिअन्ते, पिइरे
म.	पिअसि, पिअसे.	पिअह, पिइत्था
उ.	पिआमि, पिअमि.	पिआमो, पिअमो, पिइमो
		एवं मुमयोरपि.

एकार पक्ष में पिएइ इत्यादि ।

+ जो रेखाङ्कित धातु है वे धातु रूप अभ्यास के किसी नियम से साध्य नहीं है, किन्तु धात्वादेश पाठ के प्रसिद्ध आदेश से साध्य है । उसी प्रकार कितनी धातुओ के अनेक आदेश होते है, परन्तु यहा पर मुख्य–मुख्य वतलाया गया है । इससे अधिक धात्वादेश पाठ मे देख लेना चाहिये । ये आदेश प्राय वैकल्पिक है इसलिये पक्ष मे नियम साध्य रूप होते है जैसे कि स्था के स्थान मे चिट्ठ और ठा ।

× प्राकृत मे सभी विधि वाहुलक है इसलिये 'ण' आगम नहीं होता है तो गुण होने से 'चि' के स्थान मे 'चे' रूप हो जाता है ।

चि धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	चिणइ, चिणए.	चिणन्ति, चिणन्ते, चिणिरे
म.	चिणसि, चिणसे.	चिणह, चिणित्था,
उ.	चिणामि, चिणमि.	चिणामो, चिणमो, चिणिमो

एवं मुमयोरपि ।

पुनः

प्र.	चेइ	चेन्ति, चेन्ते, चेइरे
म.	चेसि	चेह, चेइत्था
उ.	चेमि	चेमो, चेमु, चेम

एकार पक्ष में चिणेइ इत्यादि ।

श्रु धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	सुणइ, सुणए	सुणन्ति, सुणन्ते, सुणिरे
म.	सुणसि, सुणसे	सुणह, सुणित्था
उ.	सुणामि, सुणमि	सुणामो, सुणमो, सुणिमो

एवं मुमयोरपि ।

पुनः

प्र.	हुणइ, हुणए	हुणन्ति, हुणन्ते हुणिरे
म.	हुणसि, हुणसे	हुणित्था, हुणह
उ.	हुणामि, हुणमि	हुणामो, हुणमो, हुणिमो

एवं मुमयोरपि ।

एकार पक्ष में सुणेइ, हुणेइ इत्यादि रूप होते हैं ।

भू धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	भवइ, भवए	भवन्ति, भवन्ते,
म.	भवसि, भवसे	भवह, भवित्था भविमो
उ.	भवामि, भवमि	भवामो, भवमो, भविमो
		एवं मुमयोरपि।

पुनः

प्र.	होइ	होन्ति, होन्ते, होइरे
म.	होसि	होह, होत्था
उ.	होमि	होमो, होमु, होम

एकार पक्ष में भवेइ इत्यादि रूप होते हैं।

कृ धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	कुणइ, कुणए	कुणन्ति, कुणन्ते, कुणिरे
म.	कुणसि, कुणसे	कुणह, कुणित्था
उ.	कुणामि, कुणमि	कुणामो, कुणमो, कुणिमो
		एवं मुमयोरपि।

पुनः

प्र.	करइ, करए	करन्ति, करन्ते, करिरे
म.	करसि, करसे	करह, करित्था
उ.	करामि, करमि	करामो, करमो, करिमो
		एवं मुमयोरपि।

एकार पक्ष में कुणेइ, करेइ इत्यादि रूप होते हैं।

४. गुण और आदेशादि विधान के पश्चात् जो धातु स्वरांत रह जाती है, तो उनमें अकरान्त को छोड कर स्वरान्त धातु को विकल्प से अकार का आगम होता है। अकार के आगम पक्ष मे पाअइ, ठाअइ, चेअइ, नेअइ, भाअइ, होअइ इत्यादि रूप कहे जाते है।

पुल्लिंग शब्द

भमर (भ्रमर) भंवरा
पुप्फरस (पुष्परस) फूल का रस
अलि (अलि) भंवरा
पराअ (पराग) फूल का पराग
णिव (नृप) राजा
कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) क्रोध-रूपी दुश्मन
अग्गि (अग्नि) अग्नि
भविअजण (भव्यजन) श्रेष्ठ मनुष्य
जव (यव) जौ, धान्य विशेष
पंडिअ (पंडित) विद्वान
धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ठ) धर्म में विश्वास रखनेवाला धर्मपरायण
अप्पसाहग (आत्मसाधक) आत्मार्थी
देह (देह) शरीर
धअ (ध्वज) ध्वजा, पताका
किंकर (किङ्कर) नौकर-चाकर
केआर (केदार) क्यारी
संसार (संसार) लोक
दुग्गुण (दुर्गुण) अवगुण, दोष
वाणिअ (वणिज्) व्यापारी
आवण (आपण) दुकान
बोह (बोध) उपदेश
बम्हण (ब्राह्मण) ब्राह्मण
जिण (जिन) तीर्थंकर
पलाय (दे०) चोर
वावार (व्यापार) उद्योग
वाउ (वायु) हवा
तेण, थेण (स्तेन) चोर
गिहत्थ (गृहस्थ) गृहस्थ,
रह (रथ) रथ,
कुसल (कुशल) चतुर
किसीवल (कृषीवल) किसान

वाक्य—

हिन्दी में अनुवाद करो

१. भमरो पुप्फरस पिअइ । २. तुम गिरिणो सिहरम्मि चिट्ठसि । ३. अह साहुस्स गुणे चिणामि , ४. अली पराअं चेइ । ५. णिवो अरी जयइ । ६. तुब्भे कोहसत्तु जिणित्था । ७. अहं भविअजणे मग्गं णेमि । ८. तुम ससाराउ बीहसि । ६. अम्हे दुग्गुणाहिन्तो भामो । १०. तुमं वाणिअस्स आवणाओ किणसि । ११. वय मुणीणं वोहं सुणामु । १२. बम्हणा अग्गिम्मि जवा हुणन्ति । १३. अहं जिण थुणामि । १४. पंडिओ धम्मणिट्ठो भवइ। १५. साहुणो अप्पसाहगा होन्ति। १६. धम्मो देहं पुणइ । १७. धओ वाउणा धुणेइ । १८. किसीवलो केआरम्मि जवे लुणइ । १६. कुसलो धम्मस्स वावारं कुणइ । २०. तेणो गिहत्थस्स रहं हरेइ ।



प्राकृत में अनुवाद करो

१. नौकर राजा से डरता है । २. व्यापारी हाथियों को खरीदता है। ३. तुम गुरु के उपदेश को सुनते हो । ४. हम दुकान पर खड़े रहते है। ५. चोर व्यापारी के दुकान से धन चुराता है । ६. ऋपिगण योग्य मनुष्यो को धर्ममार्ग मैं ले जाते है। ७. तू राजा की स्तुति करता है। ८. हम क्षत्रिय है। ६. तुम ब्राह्मण हो । १०. साधुओं का उपदेश श्रेष्ठ–जनों को पवित्र करता है। ११. हम धर्म का उद्योग करते है। १२. मुनियों का उपदेश दुर्गुणों को हरता है।



अभ्यास—५ वां

(नाम-विभक्ति का आरम्भ)

नपुसकलिंग के प्रत्यय

	ए. व.	ब. व
प्रथमा	म्	णि, इं, इँ
द्वितीया	,,	,, ,, ,,

तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुलिङ्ग के समान होते है ।

संबोधन	० (लुक्)	प्रथमा की तरह

१. प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन में प्रत्ययों के पूर्व ह्रस्व स्वर को दीर्घ स्वर होता है ।

२. इकारान्त और उकारान्त शब्दों के प्रथमा के एकवचन में म् को विकल्प से लोप होता है ।

उदाहरण – नेत्त शब्द के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	नेत्तं	नेत्ताणि, नेत्ताइं, नेत्ताइँ
सं.	हे नेत्त	,, ,, ,,
द्वि.	नेत्तं	,, ,, ,,
तृ.	नेत्तेण इत्यादि ।	

जिन रूपों को नहीं कहा है, उन सभी को पुलिङ्ग जिण शब्द के समान जान लेना चाहिये ।

अच्छि शब्द के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	अच्छि, अच्छि×	अच्छीणि, अच्छीइं, अच्छीइँ.
सं.	हे अच्छि	,, ,, ,,
द्वि.	अच्छि	,, ,, ,,
तृ.	अच्छिणा	

इत्यादि पुलिङ्ग के इसि शब्द के समान होते है ।

धणु शब्द के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र०	धणुं, धणु×	धणूणि, धणूइं, धणूइँ
सं०	हे धणु	,, ,, ,,
द्वि०	धणुं	,, ,, ,,
तृ०	धणुणा	

इत्यादि पुलिङ्ग के गुरु शब्द के समान होते है ।

शब्द (नपुंसकलिंग)

वयण (वचन) शब्द, वाणी	वण (वन) जंगल
सर (सरस्) तालाब	दहि (दधि) दही
जल (जल) पानी	ओअण (ओदन) भात
धणु (धनुः) धनुष	दंसण (दर्शन) दर्शन

× नपुसकलिङ्ग मे इकारान्त तथा उकारान्त शब्दो के प्रथमा एकवचन मे कितने आचार्यो के मत मे सानुनासिक रूप होता है, जैसे कि– अच्छिँ तथा धणुँ ।

धण (धन) द्रव्य, दौलत
असंगय (दे०) वस्त्र
वत्थ (वस्त्र) कपड़ा
तेअ (तेजः) प्रकाश
सीअ (शीत) ठंडी
सत्थ (शास्त्र) आगम
पाउरण (दे०) कवच
सवण (श्रवण) श्रवण, कान
सिर (शिरस्) मस्तक
णेत्त (नेत्र) आंख
रअ (रजस्) धूल
अच्छि (अक्षि) नेत्र
ओसह (औषध) दवा
मण (मनस् , हृदय
सुह (सुख) आनन्द
दुह (दुःख) क्लेश
पुव्वकम्म (पूर्वकर्म) पूर्व जन्म का कार्य-कर्म
सच्च (सत्य) सच्च
अवलिअ (दे०) झूठ
हियअ (हृदय) हृदय

विशेषण

हिअ [हित] शुभ
मिअ [मित] परिमित
महुर [मधुर] मीठा
अप्प [अल्प] थोड़ा

अव्यय

सह [सह] साथ
सया [सदा] हमेशा
बहिं [वहिस्] वाहर
कयावि [कदापि] कभी भी
अहुणा [अधुना] अभी

धातु

भुञ्ज [भुज्] खाना
अस [अस्] होना

३. छहों वचन में प्रत्यय सहित अस् धातु को विकल्प से 'अत्थि' इस प्रकार का आदेश होता है।

४. मध्यम पुरुष के एकवचन में और उत्तम पुरुष के दोनों वचनों में अस् धातु का लोप हो जाता है और अवशिष्ट रहे हुए उत्तम पुरुष के प्रत्ययो मे व्यञ्जन और स्वर के वीच में ह जोड़ दिया जाता है जैसे कि अस्+सि, अस्+मि, अस्+मो, अस्+म के रूप अनुक्रम से सि, म्हि, म्हो तथा म्ह होते है।



वाक्य—

हिन्दी में अनुवाद करो

१. तुमं कुसलोऽसि। २. अह धम्मणिट्ठो म्हि। ३. अम्हे समणा म्हो [म्ह] । ४. तुमं खत्तिओ अत्थि । ५. तुब्भे वाणिआ अत्थि । ६ भविअजणा वीरस्स वयणाइं सुणेन्ति। ७. तुब्भे सरम्मि जलं पिएह। ८. णिवो धणुणा सर खिवेइ। ९. णिवस्स सरं वणम्मि पडेइ । १०. साहुणो दसणं हियअं पुणेइ। ११. वाणिओ धणेण असंगयाणि किणेइ। १२. भाणू तेएण सीअ हरेइ। १३. सत्थस्स सवणम्मि सिर धुणेइ । १४. धम्मे सुहमत्थि । १५. सिसू दहिणा सह ओअणाइ भुञ्जइ। १६. वाउणा णेत्तम्मि रअं पडेइ। १७. अच्छिणो ओसह कुणेइ। १८. भविअजणो मणम्मि जिणस्स दसणमिच्छेइ । १९ जणो सुहं वा दुह पुव्वकम्मेहि लहेइ। २०. पडिआ सया हिअं मिअं महुरं वयणं वएन्ति। २१. तुब्भे सच्चं वएह। २२. वयमवलिअ कयावि ण वएमो।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. हमलोग वन में मुनियों का दर्शन करते हैं। २. हम वस्त्र का उद्योग करते है। ३. मीठे वचन हृदय का दुःख हरते है। ४. चोर वन में वस्त्रों को चुराते है। ५. कंजूस धन के लोभ से दुःख पाते है। ६. हम ऋषि है। ७ तुम मुनि हो। ८. मै ब्राह्मण हूं। ९ तुम गांव में शास्त्र सुनते हो। १० पानी तालाब से बाहर निकलता है। ११. आँख के दुःख से मस्तक कांपता है। १२. हम आँख की दवा करते है। १३. तुम हमको मन से चाहते हो। १४. चतुर मनुष्य हितकारी, परिमित और सत्य बोलते है। १५. व्यापारी कुशल है। १६. तू व्यापारी है।



अभ्यास—६ ठा.

१. प्रेरणा अर्थ में तथा स्वार्थ में धातु और काल बोधकादि प्रत्ययो के बीच मे सस्कृत में जैसे 'णि' प्रत्यय आता है, उसी तरह प्राकृत मे 'णि' के स्थान में अ, ए, आव और आवे ये चार आदेश होते है। धातु का आदि अक्षर यदि गुरु हो तो 'अवि' प्रत्यय विशेष लगता है।

२. णिस्थानीय 'अ' और 'ए' के पूर्व में धातु के आदि अकार को आकार× होता है। उदाहरण—पाढइ, पाढेइ, पढावइ, पढावेइ इत्यादि। कारइ, कारेइ, करावइ, करावेइ इत्यादि। भुज्जइ, भुज्जेइ, भुज्जावइ, भुज्जावेइ।

× कितनो के मत मे आवे आदेश के पूर्व में भी धातु के आदि मे अकार को आकार हो जाता है।

३ भ्रम् धातु के पश्चात् आये हुए 'णि' के स्थान में 'आड' आदेश विकल्प से होता है जैसे कि— भमाडइ, भमाडेइ, इत्यादि। भामइ, भामेइ, भमावइ, भमावेइ इत्यादि।

ण्यन्त धातु

×**भमाड** [भ्रम+णि] घूमाना, भ्रमण करना
दाव, दंस [दृश्+णि] दिखलाना
दूम [दू+णि] दुःखी करना, सतप्त करना
सिह [स्पृह्+णि] चाहना
राव [रंज्+णि] खुश करना
णासव [नश्+णि] नाशकरना
जव [या+णि] समय-बिताना

शब्द (पुलिङ्ग)

सारहि [सारथि] रथ हांकने वाला
अट्ठ [अर्थ] शब्द का अर्थ
काल [काल] समय
वित्थर [विस्तार] फैलाना
विवाह [विवाह] लग्न प्रसंग
णाइजण [ज्ञातिजन] संबंधी

नपु सकलिंग

कज्ज [कार्य] काम-काज
कम्म [कर्म] शुभाशुभ सस्कार
दाण [दान] दान
आलस्स [आलस्य] सुस्ती
आरणाल – न० दे०– कमल

× —— इस प्रकार के चिन्ह वाले रूप प्राय विकल्प से ही होते हैं इसलिये पक्ष मे धातु के मूल रूप से णिस्थानीय प्रत्यय लगा कर नियमानुसार सिद्ध कर लेना चाहिये। प्रेरणा अर्थ मे सभी धातुओ से णिस्थानीय प्रत्यय लगा सकते है, इसलिये प्रेरणा अर्थ बतलाना हो तो वहा पर णि प्रत्यय लगा कर रूप बना लेना चाहिये।

विशेष नाम

जिणदास [जिनदास] एक मनुष्य का नाम

उत्तरज्झयण [उत्तराध्ययन] जिनागम के एक सूत्र का नाम

हत्थिणाउर [हस्तिनापुर] एक शहर का नाम, दिल्ली

वाक्य

हिन्दी में अनुवाद करो

१. सारही वणम्मि रहं भमाडइ । २. तुमं गामम्मि अम्हे भामेसि । ३. णिवो किंकरस्स कज्जं दसेइ । ४. अहं जिणदासं हत्थिणाउरस्स मग्गं दावेमि । ५. तुमं भविअजणो सत्थस्स अत्थं दससि । ६. अहम्मो किलेसेण हियअं दूमइ । ७. अली आरणाल–पुप्फाओ पराअं सिहइ । ८. तुब्भे बोहेणं समणोवासए रावह । ९. जिणो भविअजणाण कम्माणि णासवइ । १० किविणो दाणम्मि कालं जवइ । ११. उवज्झाओ सिस्साण सत्थं पाढेइ । १२. तुब्भे अम्हे उत्तरज्झयणं पढावेह । १३. छिवो धणुणा सत्तुं बीहावेइ । १४. पंडिओ वित्थरेण सत्थं सुणावेइ । १५. मुणिणो बोहेणं धम्मं करावेन्ति । १६. गिहत्था विवाहम्मि णाइजणे भुञ्जावन्ति ।

प्रा त में अनुवाद करो

१. तुम लोभ से हमको घुमाते हो । २. तुम हमेशा हित का मार्ग बताते हो । ३ मुनि कभी अधर्म का मार्ग नही बताते है , ४. राजा लोभ से मनुष्य को कष्ट पहूंचाते है । ५. श्रेष्ठ मनुष्य मोक्ष की स्पृहा करते है। ६. सारथि राजा को खुश करता है । ७. हम राजा के दुश्मनों को नष्ट कराते हैं । ८. नौकर आलस्य से समय बिताता है। ९. पंडित बालकों को सिखाते है। १०. व्यापारी धन से वस्त्र खरीदवाते है । ११. गुरु हमको शास्त्र सुनाते है ।

उपसर्ग

उपसर्ग धातु से पूर्व में रहकर धातुओं के वास्तविक अर्थ में कुछ न्यूनाधिक करके विशेष अर्थ को बताते है। उस प्रकार के कई उपसर्ग नीचे दिये जाते है।

१. अइ (अति) सीमा से बाहर, उल्लंघन, उत्कर्ष, अतिशय
अइगच्छइ—सीमा से बाहर जाता है।
अइसेए— वह उत्कर्ष को प्राप्त करता है।

२. अहि (अधि) उपर, अधिकार, **अहिगच्छइ**–प्राप्त करता है, वह ऊपर जाता है, वह जानता है। **अहिकरेइ**–वह अधिकार का उपभोग करता है।

३. अणु (अनु) पीछे, समान, समीप, **अणुगच्छइ** वह पीछे अथवा समीप जाता है अथवा वह उनका अनुसरण करता है।

४ अहि (भि) (अभि) तरफ, पास में, बारम्बार
अभिगच्छइ—वह पास में अथवा बारम्बार जाता है।

५ अव, ओ (अव) नीचे, निश्चय, **अवतरइ**– वह नीचे उतरता है। **अवसेइ**– वह निश्चय करता है।

६. आ (आ) सीमा, उलटा, आना, अभिव्याप्ति, थोडा, **आगच्छइ**–वह आता है, **साएइ**-वह थोडा चखता है।
आमोक्खं गच्छइ—मोक्षपर्यन्त जाता है।

७. उद् (उत्) उपर, उदय, विशेष, **उप्पडइ**— वह ऊपर चढ़ता है, कूदता है। **उदेइ**— उदय लेता है।

८- उव, ओ, ऊ (उप)— पास में, समीप, **उवगच्छइ**—वह समीप जाता है।

९. णि (नि) आदेश नीचे, **णियुजइ**— वह आज्ञा देता है, **णिसीयइ**—वह नीचे बैठता है।

१०. परा (परा) उलटा, पीछे, **पराजयइ**—वह हारता है।

११. पडि (प्रति) सामने, उलटा, **पडिभासइ**— वह सामने बोलता है।

१२. प (प्र) आगे, प्रारम्भ, उत्कर्ष, **पगच्छइ**— वह आगे जाता है। वह जाना प्रारम्भ करता है। वह उत्कृष्ट गति करता है।

१३. वि (वि) विशेष, विरह, विहार, **विकरेइ**— वह विकृत करता है। **विसिलिसइ**— वह वियोग पाता है या वियुक्त होता है। **विहरइ**— वह विहार करता है।

१४. णिर (निर्) बिना, बाहर, दूर, **णिगच्छइ**— वह बाहर निकलता है। **णिक्खिवइ**— वह दूर फेकता है।

१५. दुर (दुर्) बुरी तरह, कठिनाई से, **दुक्करेइ**—वह कठिनाई से या बुरी तरह करता है। **दुस्साहइ**— वह कठिनाई से सिद्ध करता है।

१६. सं (सम्) साथ में, संगति, संहार, अच्छी तरह, **संगच्छन्ति**—वे इकट्ठे होते हैं, संगत होते हैं, **संहरइ**—वह संहार करता है या समेटता है। **संगच्छन्ति**—अच्छी तरह जाते है।



अभ्यास—७.

नाम विभक्ति

* स्त्रीलिंग के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	०	०, ओ, उ
द्वि.	म्	०, ओ, उ
तृ.	अ, आ, इ, ए,	हि, हिं, हिँ
पं.	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, अ, आ, इ, ए.	त्तो, ओ, उ, हिन्तो, सुन्तो

* स्त्रीलिंग बोधक आप् और ईप् प्रत्यय प्राकृत मे प्राय सस्कृत के समान ही होते है, और जहा कही कुछ भिन्नता होती है उसे आगे कहा जाता है—

१. अणादि प्रत्यय निमित्त ई (ङी) सस्कृत मे जो नित्य होती है वह प्राकृत मे विकल्प से होती है और पक्ष मे आ होता है जैसे कि पासवी, पासवा।

२. अजाति वाचक स्त्रीलिंग मे विशेषण से संस्कृत मे ईकार नही होता है. परन्तु प्राकृत मे विकल्प से ईकार होता है। जैसे कि— नीली, नीला, हसमाणी, हसमाणा, इमी, इमा।

३. प्रथमा और द्वितीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन को छोडकर विभक्ति प्रत्ययो के योग मे किं, यत् और तत् शब्द से स्त्रीलिंग मे ई विकल्प से होता है, जो संस्कृत मे नही होता है जैसे कि— कीओ, काओ इत्यादि।

४. छाया और हरिद्रा शब्द से प्राकृत भाषा मे दीर्घ ईकार विकल्प से होता है, जो सस्कृत मे नही होता है जैसे कि—छाही, छाहा, हलद्दी, हलद्दा।

५. गो शब्द को स्त्रीलिंग मे गावी और गाई— ये आदेश होते हैं।

ष.	अ, आ, इ, ए.	ण, णं
स.	,, ,, ,, ,,	सु, सुं
सं.	०	०, ओ, उ

१. विभक्ति प्रत्ययों के पूर्व स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त्य ह्रस्व को दीर्घ हो जाता है।

२. द्वितीया के एकवचन म् के पूर्व में स्त्री-लिंग मे अन्त्य दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है।

३. आकारान्त स्त्रीलिग नाम (प्रातिपदिक) से तृतीया, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में आ प्रत्यय नही होता है।

४. सम्वोधन के एकवचन में स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त्य 'आ' को विकल्प से 'ए' 'इ' और उ को विकल्प से दीर्घ और ई तथा ऊ को नित्य ह्रस्व होता है।

५. ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दो से प्रथमा विभक्ति के दोनों वचनों से और द्वितीया के वहुवचन में एक 'आ' प्रत्यय अधिक लग जाता है।

उदाहरण— माला शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	माला	मालाओ, मालाउ, माला
द्वि.	मालं	,, ,, ,,
तृ.	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिं, मालाहिँ

पं.	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहितो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो, मालासुन्तो
ष.	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
स.	,, ,, ,,	मालासु, मालासुं
सं.	हे माले, माला	मालाओ, मालाउ, माला

आकारान्त स्त्रीलिंग सभी शब्द माला के समान होते हैं।

बुद्धि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	बुद्धी	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी
द्वि.	बुद्धिं	,, ,, ,,
तृ.	बुद्धीअ, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीए	बुद्धीहि, बुद्धीहिं, बुद्धीहिँ
पं.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ बुद्धीहिन्तो	बुद्धित्तो बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो, बुद्धीसुन्तो
ष.	बुद्धीअ· बुद्धीआ· बुद्धीइ बुद्धीए	बुद्धीण, बुद्धीणं
स.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
सं.	हे बुद्धी बुद्धि	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी.

इसी तरह धेनु आदि उकारान्त शब्दो के रूप जानना चाहिये। दीर्घ ऊकारान्त चमू आदि शब्दों के रूप धेनु शब्द के समान जानना चाहिये, परन्तु संबोधन के एकवचन में दीर्घ को ह्रस्व हो जाता है।

वाणी शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	वाणी, वाणीआ	वाणीओ, वाणीउ, वाणीआ, वाणी
द्वि.	वाणिं	,, ,,

तृतीया विभक्ति से बुद्धि के समान रूप जानना चाहिये।

सं.	हे वाणि	वाणीओ, वाणीउ, वाणीआ, वाणी.

शब्द (स्त्रीलिंग)

वणिआ (वनिता) स्त्री	**बुद्धि** (बुद्धि) मति
माला (माला) फूलों की माला	**इत्थी** (स्त्री) स्त्री
छुहा (क्षुधा) भूख	**णीइ** (नीति) न्यायमार्ग, नीति
पिवासा (पिपासा) प्यास	**रीइ** (रीति) प्रकार, आचार
परिक्खा (परीक्षा) परीक्षा	**मुत्ति** (मुक्ति) मोक्ष, कल्याण
परिसा (परिषद्) परिषद्, सभा	**धिइ** (धृति) धीरज
खमा (क्षमा) सहनशीलता	**दिट्ठि** (दृष्टि) दृष्टि, नजर
किवा (कृपा) कृपा, मेहरवानी	**पीइ** (प्रीति) प्रेम
सभा (सभा) परिषद्, सभा	**आवत्ति** (आवृत्ति) पुनरावर्तन
गाहा (गाथा) श्लोक	**चमू** (चमू) सैन्य, लश्कर
देवी (देवी) देवांगना	**सुहुम** (सूक्ष्म) बारीक, सूक्ष्म

धातु

धर (धृ) धारण करना — साह (साध्) साधन करना
सह — सहन करना — आ+गच्छ (आ+गम्) आना



हिन्दी में अनुवाद करो

वाक्य

१. वणिआ सिरम्मि मालं धरेइ। २. मुणी छुहं पिवासं वा सहेइ। ३. पंडिओ बुद्धीअ परिक्खं कुणइ। ४. देवीओ इत्थीणं परिसाए चिट्ठन्ति। ५. जिणाणं वाणीआ जणाणं हिअं पकरेइ। ६. कुसलो खमाए कोहं जयइ। ७. णीईए रीई जणं मुत्तीआ मग्गं णेइ। ८. धिई लोहस्स वित्थरं णासवइ। ९. गुरूणं किवा सिस्साण हिअं साहेइ। १०. तुमं सुहुमाए दिट्ठीए कज्जं कुणसि। ११. अम्हे गुरूहिं सह पीईए वसामो। १२. तुब्भे परिसासु धम्मं वयह। १३ मुणओ सभाए णीईअ बोह कुणन्ति १४. उत्तराज्झयणम्मि गाहाओ अत्थि। १५. धिइत्तो मणम्मि पमोओ हवइ। १६. तुब्भे सत्थस्स आवत्ति कुणह। १७. पलायो पाउरणं धरेइ।



प्राकृत में अनुवाद करो

१. हम बुद्धि से शास्त्र जानते हैं। २. स्त्रियां धीरता से काम करती है। ३. तीर्थंकर की वाणी न्याय का मार्ग बतलाती है। ४. गुरु का प्रेम शास्त्र का बोध कराता है। ५. शास्त्र की

शैनी सूक्ष्म दृष्टि बताती है । ६. राजा की नीति मनुष्यों को सुख देती है। ७. नीति का ज्ञान हृदय को पवित्र करता है। ८. तीर्थंकर की कृपा जनता का हित करती है। ९. मनुष्य क्षमा से सदा विजय पाता है । १०. तुम शास्त्र की गाथाओं को पढ़ते हो। ११. हम सभा में उपदेश श्रवण करते हैं। १२. सभा में स्त्रियां भी आती है । १३. भूख और प्यास मन को संतप्त करती है।



अभ्यास—८वां.

(धातुविभक्ति)

× आज्ञार्थ और विध्यर्थकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	उ०	न्तु
म०	सु, हि	ह
उ०	मु	मो.

× प्राकृत मे आज्ञार्थ तथा विध्यर्थ मे इतना ही अन्तर है कि आज्ञार्थ मे विकल्प मे ज्ज प्रत्यय लगता है, और उसके बदले विध्यर्थ मे ज्जइ प्रत्यय लगता है। उदाहरण — आज्ञार्थ मे गच्छिज्ज, विध्यर्थ में गच्छिज्जइ ।

१. अकारान्त धातु से मध्यमपुरुष के एकवचन के प्रत्यय सु और हि के स्थान में विकल्प से एज्जसु, एज्जहि, एज्जे और लुक् आदेश होता है ।

उदाहरण– गच्छ (गम्) धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	गच्छउ	गच्छन्तु
म०	गच्छसु, गच्छहि, ×गच्छेज्जसु, गच्छेज्जहि, गच्छेज्जे, गच्छ	गच्छह
उ०	गच्छमु, +गच्छामु, गच्छिमु.	गच्छमो, गच्छामो, गच्छिमो

एकार पक्ष में गच्छेउ इत्यादि.

हो (भू) धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	होउ	होन्तु
म.	होसु, होहि	होह
उ.	होमु	होमो

+ पूर्व स्वर के लोप के लिये नियमावली का छट्ठा नियम देखिये ।

× आकार तथा इकार के लिये दूसरे अभ्यास का पांचवां नियम देखिये ।

णयन्त कृ धातु के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	कारउ	कारन्तु
म.	कारसु, कारहि	कारह
उ.	कारमु	कारमो

पक्ष में— कारेउ, कारवेउ, कारवेउ इत्यादि।

भमाड (भ्रम् + णि) के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	भमाडउ	भमाडन्तु
म.	भमाडसु, भमाडहि	भमाडह
उ.	भमाडमु	भमाडमो

एकारपक्ष में – भमाडेइउ इत्यादि।

आदेशाभाव पक्ष में – भामइ इत्यादि।

शब्द पुलिङ्ग)

मयण (मदन) मदन, काम विकार

ताअ (तात) जनक, पिता

भूवइ (भूपति) राजा

सज्झाय (स्वाध्याय) पुनरावर्तन, स्वाध्याय

उवस्सय (उपाश्रय) धर्म–स्थानक

दोस (दोष) अवगुण

विणेअ (विनेय) विनीत शिष्य

संतोस (संतोष) तृष्णा का अभाव

अज्झवसाअ (अध्यवसाय) परिणाम का भाव

नपुंसकलिंग

अंतरजल — अन्दर का बल, मानसिक बल
पभाअ (प्रभात) प्रात काल
सामाइअ (सामायिक) सामायिक व्रत
सुत्त (सूत्र) आगम सिद्धान्त
कल्लाण (कल्याण) श्रेय, मोक्ष
अज्जव (आर्जव) मृदुता
अइस्सरिअ (ऐश्वर्य) पराक्रम
कइअव (कैतव) कपट
माण (मान) अभिमान

विशेषण

तरुण (तरुण) जवान, नया
सावज्झ (सावद्य) दोप सहित
सुह (शुभ) शुभ, श्रेष्ठ
असुद्ध (अशुद्ध) अशुद्ध

अव्यय

सीग्घं (शीघ्रं) जल्दी
वि (अपि) भी
मा (मा) नही, निषेध
त्ति (इति) समाप्ति, इस प्रकार

धातु

परिहर (परि+हृ) त्यागना, दूर करना, परिहार करना
सिक्ख (शिक्ष्) सीखना
पवड्ढ (दे०) सोना, शयन करना
गण्ह (ग्रह्) ग्रहण करना, लेना
चय (त्यज्) छोड़ना, त्यागना
प+णव (प्र+नम्) प्रणाम करना

वाक्य—

हिन्दी में अनुवाद करो

१. तरुणा अन्तरबलेण मयणं जयन्तु। २. सिसवो पभायम्मि ताअं पणवन्तु। ३. तुब्भे सामाइअं कुणेह। ४. भूवइणो णीईए जणाणं हिअं साहन्तु। ५. सिस्सो गुरूणो विणयं कुणउ। ६. तुमं सीग्घं सज्झायं कुणसु। ७. तुमं विणय मा चयहि। ८. तुब्भे सावज्जमसच्चं वा मा वयह। ९. उवस्सयम्मि असुद्धेहिं वत्थेहि मा आगच्छह। १०. तुमं दोसे चयेज्जसु गुणे गण्हेज्जहि। ११. खमाइ कोहं सीग्घ परिहर। १२. उवज्झाओ विणेआ सुत्त सिखावेउ। १३. सत्तूणं वि कल्लाणं होउ त्ति इच्छामि। १४. विणएणमज्जवेण वा माणं णासवन्तु। १५. हियअम्मि संतोसं धरेह। १६. अहं लोहं ण कुणमु। १७. वयं सुद्धेणमज्झवसाएणं हियअसुद्धि कुणामो। १८. तुमं उवस्सयम्मि मा पवड्ढहि।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. तुम सूत्र का अर्थ पढ़ाओ। २. हम स्वाध्याय करें। ३. श्रेष्ठजन मोक्ष को प्राप्त करे। ४. मुनि अशुद्ध वस्त्र न ले। ५. तुम शरीर की अशुद्धि दूर करो। ६. उपाश्रय में प्रातःकाल हमेशा आओ। ७. सामायिक में झूठ मत बोलो। ८. संतोष से लोभ को छोड़ो। ९. विनीत शिष्य अपने मनोवल से हृदय को शुद्ध करे। १०. सभा में बुद्धि की परीक्षा करो। ११. तुम भूख और प्यास को सहन करो। १२. न्याय मार्ग को कभी मत छोड़ो। १३. शुभ अध्यवसाय से मन पवित्र करो।

अभ्यास—९ वां.

(नाम विभक्ति)

ऋकारान्त शब्द

१. पुल्लिग में संस्कृत के सज्ञावाचक ऋकारान्त शब्द के अन्त्य ऋकार के स्थान में प्राकृत में उ और अर होता है जैसे कि— भातृ को भाउ, भाअर। पितृ को पिउ, पिअर इत्यादि रूप होते है।

२. पुल्लिग मे संस्कृत के गुणक्रियावाचक ऋकारान्त शब्दो के अन्त्य ऋकार को प्राकृत मे उ और आर होता है। जैसे कि—भर्तृ को भत्तु, भत्तार, कर्तृ को कत्तु, कत्तार इत्यादि।

३. द्वितीया के एकवचन में प्रत्ययों को जोड़ने पर ऋकारान्त शब्दो के ऋकार मात्र को अर या आर ही होते है परन्तु उ नही होता है।

४. इस रीति से बने हुए अरन्त तथा आरान्त पुल्लिग शब्दो के रूप जिण शब्द के समान होते है और उकारान्त पुल्लिग शब्दो के रूप गुरु शब्द के समान होते है केवल प्रथमा के एकवचन तथा सबोधन के एकवचन में नीचे लिखी हुई विशेषताये होती है—

(क) प्रथमा के एकवचन के ओ प्रत्यय को आ होता है और उस प्रत्यय के लगाने पर शब्द के अन्त्य उकार का लोप हो जाता है। सम्बोधन के एकवचन में भी 'ओ' प्रत्यय के स्थान

में 'अ' प्रत्यय लगता है और उस प्रत्यय के लगाने पर उकार का लोप होता है।

(ख) सम्बोधन के एकवचन में अर वाले शब्द के अन्त में 'ओ' प्रत्यय के बदले अनुस्वार लग जाता है।

उदाहरण- पिउ तथा पिअर शब्द के रूप

एकवचन—

प्र० पिआ, पिअरो

द्वि० पिअरं

स० हे पिअरं, पिअ

शेष विभक्तियों के रूप उ पक्ष में गुरु शब्द के समान तथा अर पक्ष में जिण शब्द के समान होते है।

कत्तु तथा कत्तार शब्द के रूप

एकवचन

प्र० कत्ता, कत्तारो

द्वि० कत्तारं

सं० हे कत्त, कत्तारा, कत्तार, कत्तारो.

शेष विभक्तियों के रूप उ पक्ष में गुरु शब्द के समान तथा आर पक्ष में जिण शब्द के समान होते हैं।

५. स्त्रीलिंग में—(क) संस्कृत के स्वसृ, ननान्दृ, दुहितृ आदि शब्दों के अन्त्य ऋकार को आकार होता है, और उनके रूप माला शब्द के समान होते हैं।

(ख) जननी वाचक मातृ शब्द के अन्त्य ऋकार को आकार और इकार होता है और प्रथमा, द्वितीया तथा सबोधन के एकवचन को छोड़कर शेष प्रत्ययों के पर में रहते हुए उकार भी हो जाता है। उनके रूप आकारान्त, ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के समान होते है।

(ग) देवी वाचक मातृ शब्द के अन्त्य ऋकार को 'अरा' हो जाता है और उसका रूप माला शब्द के समान होता है।

कुछ उपयोगी अव्यय

मिव, पिव, विव, व्व, व, विअ, इव — इवार्थक, तुल्य, सादृश्य

चेअ, च्चेअ, च्चिअ, च्च, णइ — निश्चय, निर्धारण

किर, इर, हिर, किल—संभावना, निश्चय

एवकसरिअं, भगिति, एण्हि एताहे — सम्प्रति के अर्थ में

बाहिं, बाहिर— वाहर अर्थ में

अज्ज (अद्य) आज

कहं (कथं) कैसे, किस प्रकार

अण्णहा, इतरहा — अन्यथा, नहीं तो

चे (चेत्) यदि, तो

अलाहि, अलं, माइं, मा, अण, णाइं, अकासि — निषेध अर्थ में नहीं के अर्थ में

मोरउल्ला— व्यर्थ

दर — ईषत्, थोड़ा

किणो— प्रश्न के अर्थ में

पि, वि— भी

सणिअं (शनैः) धीरे-धीरे

मणिअं (मनाक्) थोड़ा

इत्थं, एवं— इस प्रकार

पुण (पुनः) फिर से

किन्तु— परन्तु

शब्द

पिअर, पिउ (पितृ) पिता, बाप

पुत्त (पुत्र) पुत्र

ईसर (ईश्वर) प्रभु

लोअ (लोक) दुनिया

कत्तु, कत्तार (कर्तृ) करने वाला

जीव (जीव) आत्मा, चेतन

भाउ, भाअर (भ्रातृ) भाई

बल (बल) सैन्य, बल, शक्ति

माआ, माउ, माइ (मातृ)- माता, जननी

उच्छंग (उत्संग) गोद

जामाउ, जामाअर (जामातृ) जमाई

देवर (देवर) देवर, पति का भाई

माअरा (मातृ) माता, देवी

अण्णी (दे०) देवरानी, ननद

भाउजाया, भाउज्जा (भ्रातृ-जाया) भाभी

गिह (गृह) घर, मंदिर

णणंदा (ननान्दृ) ननद

खेअ (खेद) विषाद, दुःख

णत्तुअ (नप्तृक) दौहित्र, नाती

भत्तिज्जअ (भ्रातृज) भतीजा

धूया (पुत्री) पुत्री

भगिणी (भगिनी) बहिन

पिउत्था, पिउसिआ (पितृ-ष्वसा) फूफी, बुआ

धातु

जुज्झ (युध्) युद्ध करना

णत्थि (नास्ति) नहीं है

कीड (क्रीड्) खेलना, क्रीडा करना

विशेषण

मियावइ (मृगावती) राजा उदयन की माता

उदायण (उदयन) महावीर स्वामी के समय में कौशाम्बी का राजा

जयंती–राजा उदायन की फूफी महावीर स्वामी की श्राविका

चेडग (चेटक) विशाला नगरी के राजा, महावीर के मामा

सहस्साणीय (सहस्रानीक)- उदायन का दादा

सयाणीय (शतानीक) उदायन के पिता



हिन्दी में अनुवाद करो

वाक्य

१. पिआ पुत्तं पीईए रमावेइ। २. पिउणा सह पुत्तो कीडइ। ३. णत्थि ईसरो लोअस्स कत्तारो । ४. जीवो कम्माणं कत्ता अत्थि । ५. भाअराणं बलेणं णिवो जुज्झइ । ६. माआए उच्छंगे बालो चिट्ठइ । ७. माआओ पुत्तम्मि मिव जामायरम्मि वि पीइं धरन्ति । ८. देवरो भाउजायाए सह किलेसं कुणइ । ९. अलाहि माअराए सह किलेसेण । १० एवं पुण किणो कुणसि । ११. अहुणा चेअ पिउस्स गिहे गच्छइ । १२. एत्ताहे चिअ णणंदा आगच्छइ । १३. मोरउल्ला खेअं मा कुणसु । १४. माअराओ गिहत्तो बाहिं गच्छन्ति । १५. मियावईए हिर जयंती णणंदा। १६. उदायणो चेडगस्स णत्तुओ जयन्तीए किल भत्तिज्जओ अत्थि । १७. जयंती सहस्साणीयस्स धूया, सयाणीयस्स भगिणी, उदायणस्स पिउत्था अत्थि । १८. मियावई जयन्तीए भाउज्जा हवइ । १९. अण्णोए सह णाहं किलेसं कुणामि ।

प्राकृत में अनुवाद करो।

१. हम लोग अभी जाते है। २. पिता पुत्र को आज सिखाता है। ३. माताएं लड़कों को क्या सीखाती है। ४. तुम भाइयों के साथ क्लेश मत करो। ५. भाई सुख देने वाले होते है। ६. हम इस रीति से सामायिक करते हैं। ७. अन्यथा लड़के विनय नहीं कर सकते हैं। ८. हम अभी ही आ जाय तो? ९. लड़का फूफी के घर जाता है। १०. क्या दुनिया का कर्त्ता है? ११. चेटक राजा के सैनिक लड़ाई करते हैं। १२. क्षत्रिय ब्राह्मणों के साथ युद्ध न करे। १३. परन्तु नीति के मार्ग में सदा रहो। १४. घर के बाहर जाता है। १५. नौकर भाई के पुत्र को खेलाता है। १६. भाई की स्त्रियां ननद का विनय करती है। १७. देवर भाभी को नमस्कार करता है।



अभ्यास—१०.

कुछ कृदन्त प्रत्यय

१. दो क्रियाओं में पूर्वापर सम्बन्ध बतलाने के लिये पूर्व-कालिक क्रियावाचक धातु के सम्बन्धार्थकृदन्त बनाने मे सस्कृत में जैसे क्त्वा प्रत्यय लगता है, उसी प्रकार प्राकृत में उसके बदले उं, इअ, ऊण, ऊणं, उआण उआणं—ये प्रत्यय लगते है। और

कही पर तुं, तूण, तूणं, तुआण, तुआणं—ये प्रत्यय होते हैं जैसे कि— * नेउं, नेइअ, नेऊण, नेऊणं, नेउआण, नेउआण।

२. किसी भी धातु से उं प्रत्यय और कही पर तुं प्रत्यय जोड़ने से हेत्वर्थ कृदन्त होता है जसे कि–' सोउ '+

३. ऊपर कहे हुए क्त्वा, तुम् तथा तव्य,× स्थानीय प्रत्ययों के पूर्व में धातु के अन्त्य अकार को 'इ' और 'ए' हो जाता है जैसे कि—पढिऊग, पढेऊण (पठित्वा), पढिउ, पढेउ (पठितुं), पढिअव्व, पढेअव्व (पठितव्यम्)।

४. धातु के 'न्त' और 'माण' प्रत्यय लगाने से वर्तमान कृदन्त होता है। यदि स्त्रीलिग बनाना हो तो ई, न्ती, न्ता, माणी माणा प्रत्यय लगते है। जैसे—गच्छन्तो, गच्छमाणो (गच्छन्), गच्छाई, गच्छन्ती, गच्छमाणी (गच्छन्ती) एकार पक्ष में गच्छे-न्तो● इत्यादि रूप होते है।

---

१. * क्त्वा और तुं की गणना अव्यय मे है, इसलिये तदन्त से विभक्ति नही होती है।

२. + गुण के लिये चौथे पाठ का दूसरा नियम देखो।

३. × तव्य, अनीय इत्यादि भाव प्रत्यय सस्कृत नियम प्रमाण से होते है।

४. ● एकार के लिये दूसरे पाठ का तीसरा नियम देखो।

५. निम्नलिखित आदेश, धातुओं से क्त्वा, तुं और तव्य प्रत्ययों के योग में ही होते हैं। कृ को का, दृश् को दट्ठ, ग्रह् को घेत्, वच् को वोत्; और रुद् भुज् और मुच् के अन्त्य वर्ण को त् होता है। जैसे कि– घेत्तूणं, घेत्तु, घेत्तव्वं, वोत्तूणं, भोत्तूण, मोत्तूण, दट्ठूण, काऊणं इत्यादि।



धातु

णि+यच्छ (नि+यम्) नियम में लेना

प+वत्त (प्र+वृत्) प्रवृत होना

आ+यर (आ+चर्) आचरण करना, अनुष्ठान करना

प+या (प्र+या) प्रयाण करना

वांछ (वाञ्छ्) इच्छा करना

मुअ (मुच्) छोड़ना

पास (दृश्) देखना

रुव, रोव (रुद्) रोना

सद्+दह (श्रद्+धा) श्रद्धा करना, आस्था रखना

झा (ध्यै) ध्यान करना, चिन्तन करना

कुप्प (कुप्) कोप करना, क्रोध करना

खल (स्खल) ठेस लगना, फिसलना

लंब (लम्ब्) लंबा करना, लम्बा होना, नीचे करना

अज्ज (अर्ज्) इकट्ठा करना उपार्जन करना

शब्द

सज्जण पु. (सज्जन) श्रेष्ठ मनुष्य

अब्भुदअ पु. (अभ्युदय) उदय होना, बढ़ना

इन्दिअ न. (इन्द्रिय) चक्षु आदि इन्द्रिय

तत्त न. (तत्त्व) पदार्थ, सार

सुकइ पु. (सुकृति) पुण्यात्मा भाग्यशाली

परमत्थ पु, (परमार्थ) परोपकार

परलोअ पु. (परलोक) दूसरा लोक

सिणाण न. (स्नान) स्नान

फल न. (फल) फल

हत्थ पु (हस्त) हाथ

परएस पु, (परदेश) देशावर

सुवण्ण न. (सुवर्ण) सोना

मुद्दिआ स्त्री. (मुद्रिका) मोहर अंगुठी

सुबुद्धि स्त्री. (सुबुद्धि) सुबुद्धि, अच्छी बुद्धि

पायस न. (पायस) दूधपाक

पणीअ न. (प्रणीत) सरस

भोअण न. (भोजन) भोजन

सगास पु, (सकाश) पास, नजदीक

पड्डुय पु. (दे०) भैंसा

पद्धर त्रि. (दे०) सीधा

पयडि त्रि. (दे०) मार्ग, रास्ता

पऊढ न. (दे०) घर, मकान

बाला स्त्री. (बाला) बालिका, लड़की

मेह पु. (मेघ) बादल

आवत्ति स्त्री. (आपत्ति) विपत्ति, संकट

धीर पु. (धीर) धैर्यवान पुरुष

अट्टज्झाण न. (आर्त्तध्यान) बुरा ध्यान, बुरा विचार

गिहिणी स्त्री (गृहिणी) गृहिणी

पइ पु. (पति) स्वामी

पमाअ पु. (प्रमाद) आलस्य

पअ न. (पद) पैर

अंग न. (अङ्ग) आचारांगादि सूत्र, शरीर के अवयव

उवंग न. (उपाङ्ग) अगुली आदि, उववाइ आदि सूत्र

वागरण न. (व्याकरण) व्याकरण, भाषा शास्त्र

कव्व न. (काव्य) कविता

साला स्त्री. (शाला) पाठशाला

कसाअ पु. (कषाय) क्रोधादि कषाय

हिन्दी में अनुवाद करो

वाक्य

१. सज्जणा लोअस्स अब्भुदअं काउं पवत्तन्ते। २. सुकइणो परमत्थं कुणन्ता परलोअस्स कज्जं साहन्ति। ३. सिणाण काऊण भोअणं कुणइ। ४. सामाइअमायरिअ बाहिं गच्छइ। ५. हत्थम्मि फलं घेत्तूण परएसं पयाइ। ६. सुवण्णस्स मुद्दिअं घेत्तुं बालो कर लंबावेइ। ७. साहुस्स वअणाइं सुबुद्धिए घेत्तव्वाइं। ८. बालो माअरं वोत्तुमिच्छइ। ९. पायसं भोत्तूणमोअणं भोत्तुं वांछइ। १०. साहुणा सया पणीअं पणीअं भोअणं ण कायव्व। ११. जिणो कम्माणि मोत्तूण मोक्खं गच्छइ। १२. कसाअं मोत्तुं इंदिआणि नियच्छइ। १३. धम्मस्स फल सुह दट्ठूण तत्तं सद्दहइ। १४. भोअण कुणन्ती बाला मेहं दट्ठुं बाहिरं गच्छइ। १५. आवत्तीएवि णरेहि ण रोत्तव्वं। १६. अट्टज्झाणं झाएमाणी गिहिणी पइं कुप्पन्ती चिट्ठइ। १७. पमाएणं गच्छई इत्थी पए पए खलइ। १८. अगं पढिऊण उवंगं पढेउं पवत्तइ। १९. पडुओ पद्धराए पयडिए पऊढमागच्छइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. भव्य जन धर्म का आचरण कर के मोक्ष में जाते हैं। २. पिता पुत्रों को पढाना चाहता है। ३. उपाध्याय शास्त्र का अर्थ कहना चाहता है। ४. गांव जाता हुआ मनुष्य रास्ते में खड़ा है। ५. पिता को देखता हुआ लड़का मार्ग में घूमता

है। ६. मुनिजन भव्यजनों को ज्ञान देने के लिये गांव में रहते हैं। ७. भोजन करता हुआ बालक समय बिताता है। ८. तुम्हें शास्त्र का अर्थ ग्रहण करना चाहिये। ९. पति के ऊपर नाराज होती हुई स्त्री घर का काम करती है। १०. व्यापारी धन को एकत्र करने के लिये उद्यम करते है। ११. मैं गुरु के पास व्याकरण पढ़कर काव्य पढ़ता हूं। १२. तुम गांव में जाकर बाहर आओ। १३. पुत्र को क्रीड़ा कराने के लिये पिता वन में जाता है। १४. हम व्याख्यान सुनकर मन को प्रसन्न करते है। १५. असत्य मार्ग को छोड़कर सत्य मार्ग को ग्रहण करता है। १६. तुम सभा में बोलना चाहते हो।



अभ्यास—११.

(नाम विभक्ति)

× अन्नन्त शब्दों के रूप

१. संस्कृत में जिसके अन्त में अन् है, ऐसे ब्रह्मन्, आत्मन्, राजन् आदि शब्दों के अन्त्य के अन् को प्राकृत में आण आदेश विकल्प से हो जाता है। उनके रूप जिण शब्द के समान होते

× जब कि प्राकृत मे अन्त्य व्यजन का लोप होता है अथवा अन्त्य मे स्वर मिलाते है इसलिये कोई शब्द व्यंजनान्त रहने नही पाता है, तो भी साध्यमान दशा की अपेक्षा से यहा अन्नन्तता ग्रहण करनी चाहिये।

है। आण आदेश नहीं होता है, तो अन्त्य व्यञ्जन का लोप होकर वे शब्द अकारान्त बन जाते है। उनसे अकारान्त पुल्लिग के ओ आदि सभी प्रत्यय लगते हैं। इसलिए जिण शब्द के समान ही उनके रूप बनते है, परन्तु कुछ अधिक प्रत्यय लगते हैं वे नीचे लिखे गये है:—

अधिक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	आ	णो
द्वि.	णं	णो
तृ.	णा	×
पं.	णो	×
ष.	णो	×
स.	×	×
सं.	आ	णो

२. (प्रथमा द्वितीया और पंचमी के) णो प्रत्यय के पूर्व में बम्ह आदि शब्दों के अन्त्य अ को आ हो जाता है।

बम्ह (ब्रह्मन्) शब्दोंके अधिक रूप

प्र.	बम्हा	बम्हाणो
द्वि.	बम्हणं	बम्हाणो
तृ.	बम्हणा	×
पं.	बम्हाणो	×
ष.	बम्हणो	×
स.	×	×
सं.	बम्हा	बम्हाणो

नोट—बम्ह तथा बम्हाण के रूप जिण शब्द के समान भी होते है। जुव, जुवाण आदि संस्कृत के अनन्त शब्दों के रूप बम्ह, बम्हाण के समान होते है।

(३) आत्मन् शब्द से तृतीया के एकवचन में णिआ तथा णइआ प्रत्यय अधिक होते है।

अप्प* तथा अत्त* (आत्मन्) शब्दों के अधिक रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अप्पा, अत्ता	अप्पाणो, अत्ताणो
द्वि.	अप्पणं, अत्तणं	अप्पाणो, अत्ताणो
तृ.	अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पणइआ, अत्तणा, अत्तणिआ, अत्तणइआ,	×
प.	अप्पाणो, अत्ताणो	×
ष.	अप्पणो, अत्तणो	
स.	×	×
सं.	अप्पा, अत्ता	अप्पाणो, अत्ताणो.

नोट—अप्प, अत्त, अप्पाण और अत्ताण के रूप जिण शब्द के समान भी होते है।

---

* आत्मन् शब्द के त्म को विकल्प से प्प और नियमावली के दसवें नियमानुसार ह्रस्व हो जाता है। पक्ष मे म् को लोप और अवशिष्ट त को द्वित्व होता है।

(४) [क] णो, णा, णं और म्मि के पूर्व में राजन् शब्द को 'राइ' ऐसा आदेश विकल्प से हो जाता है।

[ख] तृतीया के 'णा' और पंचमी, षष्ठी के 'णो' के पूर्व में राजन् शब्द को विकल्प से 'रण्' ऐसा आदेश होता है।

[ग] तृतीया, पचमी, षष्ठी और सप्तमी के बहुवचन के पूर्व में राजन् शब्द को 'राई' यह आदेश विकल्प से होता है।

राअ (राजन्) शब्दों के अधिक रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	राआ	राइणो, राआणो
द्वि.	राइणं	राइणो, राआणो
तृ.	राइणा, रण्णा, राअणा	राईहि, राईहिं, राईहिँ
पं.	राइणो, रण्णो, राआणो	राईहिन्तो, राईसुन्तो, राइत्तो, राईओ, राईउ
ष.	राइणो, रण्णो, राअणो	राईणं, राइणं, राईण, राइण
स.	राइम्मि	राईसु, राईसुं
सं.	×	राइणो, राआणो

नोट—राअ, राआण शब्दों के रूप जिण शब्द के समान भी होते हैं।

× शौरसेनी भाषा मे राअ होता है।

(५) अनन्त शब्दो को छोड़कर व्यंजनान्त शब्दों के अन्त व्यंजन के लोप होने पर पीछे जो स्वर बच जाता है, उसके अनुसार उन-२ लिङ्गों के रूप बतलाये हुए स्वरान्त विभक्ति के नियमानुसार होते है । इसके लिये कोई विशेष नियम नही है .

(६) कितने लोगों के मत मे भवत् और भगवत् शब्द के अन्त तकार को संबोधन के एकवचन में अनुस्वार होता है। हे भवं, भयवं । हेमचन्द्राचार्य के मत में शौरशेनी भाषा का यह नियम है ।

शब्द

जुव, जुवाण (युवन्) पु. युवक पुरुष

अद्ध, अद्धाण (अध्वन्) पु. मार्ग

अप्प, अत्त, अप्पाण (आत्मन्) पु आत्मा

सिक्खा (शिक्षा स्त्री शिक्षा

गाव, गावाण (ग्रावन्) पु. पत्थर

मुद्ध, मुद्धाण (मूर्द्धन्) पु० मस्तक

णीरअ (नीरजः) वि. निर्मल

उच्छ, उच्छाण (उक्षन्) पु० बैल

राअ, राआण (राजन्) पु. राजा

पसाअ (प्रसाद) पु. कृपा

दीण (दीन) वि. गरीब

स—साण (श्वन्) पु. कुत्ता

तडाअ (तडाग) पु. तलाब

आएस (आदेश) पु आज्ञा

अणाह (अनाथ) वि. जिसका कोई सहायक न हो

ठिअ (स्थित) वि. ठहरा हुआ

सेणिअ (श्रेणिक) पु. एक राजा का नाम

पव्वअ (पर्वत) न. पहाड

उज्जाण (उद्यान) न. बगीचा

इल्ल (दे.) पु. चपरासी

इरमंदिर (दे.) पु. ऊँट

पूस, पूसाण (पूषन्) पु. सूर्य

पआस (प्रकाश) **पु.** प्रकाश

अंधआर (अंधकार) पु. अंधेरा

उज्जोअ (उद्योत) पु. प्रकाश

वणप्फइ (वनस्पति) पु. औषधि, वृक्ष-लता आदि

समत्थ (समर्थ) वि. समर्थ

पर (पर) वि. अन्य

परोप्पर (परस्पर) अ. परस्पर

हेट्ठं (अधः) अ. नीचे

जाव (यावत्) अ. जब तक

ताव (तावत्) अ. तब तक

पाअ (पाद) पु. पैर, चरण

अवयासिणी (दे.) स्त्री. नाक की रस्सी

ईस (दे.) न. खीला, खूंटा

धातु

उव+एस (उप+दिश्) उपदेश देना

वि+सिलेस (वि+श्लिष्) अलग करना

णि+ओअ (नि+युज्) जोड़ना

चिंत (चित्) विचार करना

अच्छ (आस्) बैठना

पूस (पुष्) पोषण करना

परा+जय (परा+जि) पराजय करना



हिन्दी में अनुवाद करो

वाक्य —

१. जुवाणो जुवाणेण सह जुज्झइ । २ अद्धाणम्मि चिट्ठन्तो साहू धम्ममुवएसइ । ३ बालो वि अप्पणो हिअं चिन्तेइ । ४. जिणो अप्पाणो कम्माणि विमिलेमइ । ५. भविअजणा अप्पणिआ धम्मं कुणन्ति । ६. सिस्सो अप्पम्मि गुरूणं सिक्खं धरेइ । ७. राइणो पमाओ वि दीणाण सुहं साहेइ । ८. परोप्पर जुज्झन्ताणं राइण मणमु किलेसो वड्ढइ । ९. साणो तडाअम्मि जलं पिअइ । १०. तुब्भे रण्णो आएसं कुणन्ता काल न जवह । ११. सेणिअस्स राअस्स वयणाइं सुणिऊण मुणी वयइ हे सेणिआ अप्पणावि अणाहोसि । १२. हेट्ठ ठिअस्स जणस्स मुद्धम्मि पव्वआओ गावाणो पडन्ति । १३. णीरअम्मि गावम्मि समणो अच्छइ । १४. सारही उच्छाणे रहम्मि णिओअइ । १५. पूसाणो जणा उज्जोअ लहन्ते । १६. पूसणो पआसो अन्धआर हरइ । १७. वणप्फइणो पूसिउं पूसा समत्थो अत्थि । १८. जणो अप्पाणस्स बलेण जाव विवड्ढइ ताव नो परस्स बलेणं । १९. इल्ला इरमदिर अवयासिणीए ईसम्मि बधइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. युवक पुरुषो को गुरु की शिक्षा ग्रहण करके नीतिमार्ग पर चलना चाहिये । २. राजाओ को अपनी गरीब प्रजा पर कृपा रखनी चाहिये । ३. कुत्ता तलाब में पानी पीने जाता है । ४. उद्यान में बैठे हुवे अनाथी मुनि श्रेणिक राजा को उपदेश देते है । ५. बैल निर्मल शिला पर बैठा है । ६. सूर्य का प्रकाश

अन्धकार को दूर करता है। ७. राजा की आज्ञा से सारथी रथ जोड़ता है। ८. सूर्य अपने प्रकाश से वनस्पति को पुष्ट करता है। ९. वे परस्पर लड़े नहीं ऐसा उपदेश दीजिये। १०. शिष्य गुरु के चरणों में मस्तक नमाता है। ११. वे वृक्ष के नीचे बैठे हुवे मनुष्यों को देखते है।



अभ्यास—१२ वां.

भावकर्म प्रत्यय

१. भाव तथा कर्म में जैसे संस्कृत में काल वाचक प्रत्यय और धातु के बीच में य प्रत्यय आता है उसी प्रकार प्राकृत में य के स्थान में 'ईअ' और 'इज्ज' हो जाते हैं जैसे कि— पढीअइ, पढिज्जइ।

२. चि, जि, श्रु, हु, स्तु, लू, पू, और धू इन धातुओं में भाव तथा कर्म में य के स्थान में विकल्प से 'व्व' आदेश और दीर्घ को ह्रस्व होता है, जैसे कि— चिव्वइ, जिव्वइ, सुव्वइ इत्यादि। पक्षे चिणीअइ, चिणिज्जइ, सुणीअइ, सुणिज्जइ इत्यादि।

३. नीचे लिखे हुए धातुरूप विकल्प से भाव कर्म में ही होते हैं और उस समय भाव कर्म सम्बन्धी य का लोप हो जाता है।

धातु

छुप्प [छुप्] स्पर्श करना
दीस [दृश्] देखना
वुच्च [वच्] बोलना
हम्म [हन्] मारना
खम्म [खन्] खोदना
दुब्भ [दुह्] दुहना
वुब्भ [वह्] ढोना
लिब्भ [लिह्] चाटना
× रुब्भ [रुध्] रोकना
डज्झ [दह्] जलाना
बज्झ [वन्ध्] वांधना
* होर [हृ] हरण करना
कीर [कृ] करना
जीर [जृ] जीर्ण होना
चिम्म [चि] चुनना (एकत्र करना)
तीर [तृ] तैरना, पार होना
णव्व, णज्ज [ज्ञा] जानना
गम्म [गम्] जाना
हस्स [हस्] हसना
भण्ण [भण्] बोलना
रुव्व [रुद्] रोना
लब्भ [लभ्] प्राप्त करना
कत्थ [कथ] कहना
भुज्ज [भुज्] खाना, पालन करना, भोग करना
घेप्प [ग्रह्] ग्रहण करना
छिप्प [स्पृश्] स्पर्श करना

देवदत्तो पढमोद्देश पढइ इस कर्तरिप्रयोग मे जैसे कर्त्ता में प्रथमा और कर्म मे द्वितीया विभक्ति होती है उसी तरह ' देवदत्तेण पढमोद्देशो पढीअइ, पढिज्जइ इस कर्मणि प्रयोग मे कर्त्ता मे तृतीया और कर्म मे प्रथमा एव जव अकर्मक धातु से भाव प्रयोग होता है तव कर्त्ता मे तृतीया होती है जैसे कि— होईअइ देवदत्तेण ।

× सम् अनु और उप, उपसर्ग से पर रुध् धातु को रुज्झ आदेश होता है जैसे कि—सरुज्झइ, अणुरुज्झइ, उवरुज्झइ (संरुध्यते) इत्यादि ।

* वि और आ उपसर्ग सहित ' हृ ' धातु को भावकर्म मे वाहिप्प आदेश होता है जैसे कि— वाहिप्पइ, (व्याह्रियते)

आढप्प (आ+रभ्) आरम्भ करना
विढप्प (अर्ज्) एकत्र करना
सिप्प (स्निह) स्नेह करना
सिप्प (सिच्) सिंचना

४. भाव कर्म प्रत्यय और कर्मणि भूत कृदन्त के 'त' प्रत्यय के पूर्व में प्रयोजकार्थक 'णि' के स्थान में लोप और 'आवि' आदेश होते है। जब लोप होता है तो धातु के आदि अकार को आकार होता है, जैसे कि—कारीअइ, करावीअइ, कारिज्जइ, कराविज्जइ (कार्यते) इत्यर्थः।

शब्द

तए [त्वया] युष्मद् शब्द के तृतीया का एकवचन तेरे द्वारा
आगास[आकाश] न. आकाश
चोर [चौर] पु. चोर, लुटेरा
जीव [जीव] पु. जीव, आत्मा
णई [नदी] स्त्री. नदी
पवाह [प्रवाह] पु प्रवाह
सरल [सरल] वि. निष्कपटी भोलाभाला
माया [माया] स्त्री. कपट
णाण [ज्ञान] न. विज्ञान
समय [स्वमत] न. अपना मत
चंडाल (चण्डाल) पु. नीच-वर्ण
पसु (पशु) पु. पशु, जानवर
कफाड (देशी) पु. गुफा
णिरिक्खण (निरीक्षण) न. अवलोकन, देखना
मए (मया) अस्मद् तृतीया का एकवचन मुझ से
सद्द (शब्द) पु शब्द, ध्वनि
सेट्ठि(श्रेष्ठी पु, सेठ, साहूकार
रज्जु [रज्जू] स्त्री. रस्सी
धुत्त [धूर्त्त] पु. ठग
संसारसाअर [संसार सागर] पु. संसार रूपी समुद्र

रहस्स (रहस्य) न. गुप्ततत्त्व
पडिसमय (प्रतिसमय) न. हरसमय
खच्चोल (दे.) पु वाघ
तविधण (तपइंधन) न. तपस्या रूपी इंधन
दुज्जण (दुर्जन) पु. दुर्जन
कम्हिअ (दे.) पु. माली

हिन्दी में अनुवाद करो

वाक्य

१. अहुणा तुमं किणो ण दीससि। २. मए जिणस्स वत्थाणि सुव्वन्ति । ३. आगासम्मि मेहस्स सद्दो सुणीअइ । ४. णिवेण वणम्मि चोरो हम्मइ। ५. साहुणा सुहुमो वि जीवो ण हणिज्जइ। ६ चोरेण सेट्ठिस्स गिहाओ धणं हीरइ । ७. णईयापवाहेण गामं गच्छन्तो णरो रुब्भइ। ८. अप्पा कम्मरज्जूहि वज्झइ । ९. धुत्तेण सरलो मायाए वधिज्जइ । १०. मुणिणा अप्पं वि पावं ण कारिज्जइ। ११ णाणेणं ससारसाअरो तीरइ । १२. तए वअणस्स रहस्स ण णव्वइ। १३ मए गुरुणो वअणाणि तत्तओ णज्जन्ति १४. पावं कुणन्तो तुम जिणेण पासीअसि । १५. समयं वोत्तुं मए आढप्पइ। १६. तए पडिसमयं कम्माणि विढप्पन्ति । १७. दीणस्स गिहाओ अप्पं वि धणं चोरेहिं मा हीरउ। १७. चंडालेहिं तुमं मा छिप्पसु। १९. तविधणेहि कम्माणि डज्झन्तु (डहिज्जन्तु वा)। २०. कफाडम्मि खच्चोलेण कम्हिओ हम्मइ।



प्राकृत में अनुवाद करो

१. धर्म से अधर्म का नाश होता है । २. रस्सी से पशुओं की तरह पाप से मनुष्य बांधा जाता है । ३. सत्य के मार्ग में दुर्जनों से सज्जन नही रोके जाते है । ४ उत्तमजनों से सज्जन स्तुति किये जाते हैं । ५. सेठ का धन लुटेरो से लुटा जाता है । ६. आत्मा की शुद्धि से शास्त्रों के तत्त्व जाने जाते है । ७. मस्तक पर पानी छिटा जाता है । ८. बोलते-बोलते हंसा जाता है । ९. चलते-चलते रोया जाता है । १०. देखने से शास्त्र का रहस्य समझा जाता है । ११. गुरु के उपदेश से तत्त्व जाना जाता है । १२. तुम साधुओं के उपदेश से समझते हो । १३. ब्राह्मण से चाण्डाल स्पर्श नही किया जाता है । १४. युवक से नदी पार की जाती है । १५. जिन भगवान् से मै सदा देखा जाता हूं । १६. प्रकाश से अन्धकार नष्ट किया जाता है ।



अभ्यास—१३.

(नाम विभक्ति)

सर्वनाम

सव्व, अण्ण, अण्णयर, इयर, कइम, नेम, इक्क, एग, सम, सिम, पुव्व, उत्तर, अवर, दाहिण दक्खिण, अहर अन्तर ये सर्वादि शब्द तीनों लिंगों में होते हैं ।

१. अदन्त सर्वादि शब्दों से अदन्त पुल्लिग के ही प्रत्यय आते है परन्तु प्रथमा तथा षष्ठी के बहुवचन में और सप्तमी के एकवचन मे विशेष रूप नीचे लिखे अनुसार होते है।

प्र. ब. व.-ए। षष्ठी ब. व.-एसिं। स. ब. व.- स्सि, म्मि, त्थ, हिं

उदाहरण—

प्र. ब. व.	ष. ब. व.	स. ए. व.
सर्व–सव्वे।	सव्वेसिं।	सव्वस्सि, सव्वम्मि
	सव्वाण।	सव्वत्थ, सव्वहिं
अन्य–अण्णे।	अण्णेसिं।	अण्णस्सि, अण्णम्मि
	अण्णाण।	अण्णत्थ, अण्णहिं
कयर–कयरे।	कयरेसिं।	कयरस्सि, कयरम्मि
	कयराण।	कयरत्थ, कयरहिं

उपरोक्त विभक्तियों को छोड़ कर शेष विभक्तियों में जिन शब्द के समान रूप समझना चाहिये।

२. किम्, यद् और तद् शब्द से तृतीया, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियां निम्नलिखित होती है।

तृ. ए. व.	पं. ए. व.	ष. ए. व.	ष. ब. व.
इणा	म्हा	आस	आस

३. पंचमी के एकवचन में किम् शब्द से इणो और ईस और तद् शब्द से ओ अधिक विभक्तियां लगती हैं।

४. सप्तमी के एकवचन में जो उपर तीन शब्द कहे हैं उनका अर्थ यदि काल होता हो तो सप्तमी विभक्ति के स्थान में आहे, आला और अइया आदेश हो जाते है।

५, तद् और एतद् शब्द से प्रथमा के एकवचन में ओ और अ आदेश होता है और पुल्लिग तथा स्त्रीलिग में तद्, एतद् शब्दों के त को स हो जाता है ।

६, तद्, एतद् और इदम् शब्दों के षष्ठी का एकवचन के प्रत्यय सहित 'से' और षष्ठी के बहुवचन के प्रत्यय सहित 'सिम्' आदेश विकल्प से होते है।

७. किम् शब्द को सभी विभक्तियों में तथा त्र त और ग प्रत्ययों के पूर्व में क आदेश हो जाता है, और तद् तथा इदम् शब्द के तीनो लिग में कही पर ण आदेश होता है ।

उदाहरण—	किम्,	यद्,	तद्
प्र० ए०	को,	जो	सो, स
तृ० ए०	किणा, केण,	जिणा, जेण,	तिणा, तेण णिणा, णेण
पं० ए०	कम्हा, किणो, कीस, काओ इ०	जम्हा, जाओ, इ०	तो, तम्हा ताओ इ०
ष० ए०	कास, कस्स,	जास, जस्स,	तास, तस्स, से
ष० ब० व०	कास, केसिं, काण इ०	जास, जेसिं, जाण इ०	तास, तेसिं सिम्, ताण इ०

स० ए० काहे, काला, जाहे, जाला, ताहे, ताला
कइआ, कस्सि, जइया, जस्सि, तइआ तस्सि
कम्मि, कत्थ, जम्मि, जत्थ, तम्मि, तत्थ
कहिं, जहिं, तहिं

ऊपर कहे हुए रूपों से अतिरिक्त रूप सव्व' शब्द के समान समझ लेना चाहिये।

८. किम्, यद् और तद् इन तीन शब्दों को छोड़ कर सर्वादि शब्दों के स्त्रीलिंग में आप् प्रत्यय होता है और उनके रूप सव्वा इत्यादि माला शब्द के समान समझना चाहिये।

किम् यद् और तद् से जब ईप् प्रत्यय होता है तब षष्ठी के एकवचन मे स्सा से और डास आदेश विकल्प से होते है। जैसे कि— कीस्सा, कीसे, कास, जीस्सा, जीसे, जास, तीस्सा, तीसे, तास, (तस्याः इत्यर्थः) बाकी के रूप ईप् पक्ष में वाणी शब्द के समान और आप् पक्ष में माला शब्द के समान होते हैं।

९. किम् शब्द के स्त्रीलिंग में प्रथमा तथा द्वितीया के एक वचन मे और षष्ठी के बहुवचन में डी प्रत्यय नही लगता।

१०. नपुंसकलिंग में किम् शब्द को छोड़कर सर्वादि शब्दों के रूप सव्व, सव्वाणि इत्यादि नेत्त शब्द के समान समझना चाहिये। किम् शब्द से प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन के प्रत्यय का लोप हो जाता है। किं, काणि इत्यादि। शेष रूप नेत्त शब्द के समान समझना चाहिये।

शब्द

सव्व (सर्व) स० समस्त
त (तद्) स० वह
ज (यद्) स० जो
क (किम्) स० कौन, प्रश्न
पुरिस (पुरुष) पु० मनुष्य
वर (वर) वि० प्रधान श्रेष्ठ
अण्ण (अन्य) स० दूसरा
कअर (कतर) स० दो में से एक
इअर (इतर) स० दूसरा
एग (एक) स० कोई, एक
दो (द्वि) त्रि० दो
भत्तु, भत्तार (भर्तृ) पु. पति
णिन्दा (निन्दा) स्त्री. अपवाद, निन्दा
भविय (भव्य) वि० भव्य
सेट्ठ (श्रेष्ठ) वि० सर्वोत्तम
आआर (आचार) पु. आचार
अलमंजुल (दे०) त्रि. आलसी
अच्छ (दे०) न० शीघ्र
अह (दे०) न० दुःख
कारण (कारण) न. हेतु, कारण
हेउ (हेतु) पु० कारण
वेस (वेष) पु. रचना, पहनावा
विकअ (विकृत) वि० विकार पाया हुआ
वेर (वैर) न० वैरभाव, दुश्मनाई
कुडुंब (कुटुंब) न० परिवार
णामहेयं (नामधेय) स० नाम, सञ्ज्ञा
गावी (गो) स्त्री० गाय
सिर (शिरः) मस्तक, शिर
कहा (कथा) स्त्री० कथा
णयर (नगर) न० शहर
णिजवह (निजवध) पु० अपना वध
चंड (चण्ड) वि० भयंकर
सयं (स्वयं) अ० अपने, खुद
वअण (वदन) न० मुख
मुह (मुख) न० मुख

सिज्झ (सिध्) सिद्ध होना
छिन्द (छिद्) काटना
अव+राह (अप+राध्) अपराध करना
णिरिक्ख (निर्+ईक्ष्) देखना
उल्लस (उत्+लस्) प्रकट करना
प+मोअ (प्र+मुद्) प्रसन्न होना

हिन्दी में अनुवाद करो

१. सव्वे भवियजीवा सिज्झन्ति । २. कम्हा ते पुरिसा तत्थ चिट्ठन्ति जम्हा गामस्स सव्वो वि जणो तेसिं मग्गं णिरिक्खइ । ३. को वयइ जिणधम्मो अण्णेहिन्तो धम्मेहिन्तो वरो णत्थि । ४. जो धम्मं कुणइ सो सुहं लहइ । ५. किणा कारणेण तुब्भे हसेऊण वयह । ६. जिणा हेउणा सव्वाणं इत्थीणं वेसो विकओ दीसइ । ७. कीस कारणाउ स तास सिराणि छिन्दइ । ८ एगे जणा णिजवहे वि असच्च ण वयन्ति । ९. तो तस्स मणम्मि वेरमुल्लसइ । १०. कंसि गामम्मि सो कुडुंबेण वसइ। ११. जम्मि गामम्मि णत्थि को वि चोरो । १२. तत्थ राया को अत्थि, तास किं णामहेयं । १३. जाहे गावी दुब्भइ ताला (ताहे तइया वा) स गिहे आगच्छइ । १४. जहिं सयं णिवो अवराहइ तहिं अण्णेसिं जणाणं का कहा । १५. कअरस्सि णयरम्मि सिं जणाणं वासो हवइ। १६. अण्णत्थ कहिं सुहेण वयं वसेमो । १७. स किस्सा इत्थीआ भत्तारो अत्थि ? । १८. जीसे वयणं पासिअ पमोअइ तिस्सा (तीसे वा) भत्तारो । १९. इयरेसिं णिन्दं मा

कुणहि । २०. केहिन्तो बीहइ ? जेसि मुहं चंड दीसइ ताणं दंसणत्तो बीहइ । २१. जो अलमंजुलो हवइ सो अच्छ अहेण हणिज्जइ।

प्राकृत में अनुवाद करो ।

१. हम सभी मुनियों को नमस्कार करते है । २. तुम किस के घर जाते हो ? । ३. दूसरे की अपेक्षा उनका आचार श्रेष्ठ है। ४. जो पढ़ते नही है वे सुख नही पाते हैं। किसलिये वे नरक में जाते है। ६. इसलिये तुम उन से कहो । ७. सभी का हित कैसे किया जा सकता है ? । ८. जिसका मन धर्म मे लगा हुआ है वह मनुष्य आत्मा का कल्याण करता है। ९. जिस में तुम रहते हो उसी में हम रहते है। १०. सभी दोष किस के नष्ट होते है। ११. दोनों में से तुम किस मनुष्य को चाहते हो। १२. सभी मनुष्यों में तीर्थंकर सब से श्रेष्ठ है । १३. सुबह में किस का मुख देख कर तुम बाहर निकलते हो। १४. वह जिस को देखता है उसको नमस्कार करता है । १५. तुम दूसरो से डर कर चलते हो । १६. सभी मनुष्य आँख से देखते है और मन से विचार करते है। १७. सभी से अपना हित सिद्ध किया जाता है । १८. जिस से सुख हो वही काम सदा करो।



अभ्यास—१४ वां.

(धातु विभक्ति और कृदन्त)

भूतकाल और कर्मणिभूत कृदन्त

१. भूतकाल के प्रथम, मध्यम तथा उत्तम पुरुष के एक वचन और बहुवचन के प्रत्यय के रूप में स्वरान्त धातुओं से सी, ही और हीअ और संस्कृत की अपेक्षा व्यंजनान्त और प्राकृत की अपेक्षा अकारान्त धातुओं से एक 'ईअ' प्रत्यय होता है।

जैसे कि—सो, तुमं, अहं, ते, तुब्भे, अम्हे, वा होसी, होही, होहीअ, गच्छीअ वा (अभूत्, अभूः, अभूवम्) अगच्छद्वेत्यार्थः।

२. प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुषों के एकवचन और बहुवचन के प्रत्ययों के सहित अस् धातु के भूतकाल में आसि और अहेसि आदेश होते हैं। सो, तुमं, अहं, ते तुब्भे, वय वा, आसि, अहेसि (आसीत् इत्यर्थः) वह, तुम, मै, वे दोनों, वे सब, तुम दोनों, तुम सब, हम दोनों, हम सब थे।

३. धातु से त प्रत्यय लगाने पर कर्मणि भूतकृदन्त+ बनता है, जैसे कि— सुअं (श्रुतम्)।

+ कर्मणि भूत कृदन्त होने पर यदि वह शब्द किसी का विशेषण होता है तो उससे विशेष्य के समान विभक्ति और वचन होता है। जैसे कि— सुअ वयणं, सुएण वयणेण अत्थनाणं, यदि वह किसी का विशेषण नही होता है तो उस से प्रथमा विभक्ति होती है।

४. त प्रत्यय के पूर्व धातु का अन्त्य अकार को इकार होता है, जैसे कि– पढिअं, सुणिअं।

५. त प्रत्यय के पूर्व प्रयोजकार्थ 'णि' के स्थान में लोप और आवि आदेश होता है, जब लोप होता है, तो धातु के आदि अकार को आकार होता है, जैसे कि–कारिअं, कराविअं।

६. यदि धातु का आदि स्वर गुरु हो तो आवि के बदले अवि आदेश होता है। जैसे कि— सोसिअं, सोसविअं।

७. निम्नलिखित 'त' प्रत्ययान्त शब्द विकल्प से निपातनात् सिद्ध होते हैं। जैसे कि—

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
आक्रान्तः	अफुण्णो	दबाया हुआ
उत्कृष्टः	उक्कोसो	उत्कर्ष पाया हुआ, श्रेष्ठ
अतिक्रान्तः	वोलीणो	पार किया हुआ
विकसितः	वोसट्टो	विकसित
निपातितः	णिसुट्टो	गिरादिया या गिराया हुआ
प्रमुषितः, प्रमुष्टः	पम्हुट्ठो	चोराया या चोराया हुआ
स्थापितम्	णिमिअं	रखा हुआ या रखा
आस्वादितम्	चक्खिअं	चखा हुआ या चखा
पर्यस्तम्	पल्लट्टं, पल्लत्थं	फेंका हुआ
स्पष्टम्	फुडं	साफ या शुद्ध

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
रुग्णः	लुग्गो	पीडित, रोगी
नष्टः	लिहक्को	भग गया, नष्ट हो गया
अर्जितम्	विढत्तं	उपार्जन किया या उपार्जन किया हुआ
स्पृष्टम्	छित्तं	स्पर्श किया हुआ या स्पर्श किया
लूनम्	लुअं	काटा या काटा हुआ
त्यक्तम्	जढं	त्याग दिया या त्यागा हुआ
क्षिप्तम्	झोसिअं	फेंका हुआ या फेंक दिया
उद्वृत्तम्	णिच्छूढं	पीछे लौटा या पीछे लौटा हुआ
ह्रेषितम्	हसिमणं	खंखार किया या घोड़े का शब्द

पक्ष में व्याकरण नियमानुसार शब्द सिद्ध होते हैं।

धातु

आ+लव (आ+लप्) आलाप, बातचित करना

गुंज (गुञ्ज्) गुंजना

आ+करिस (आ+कृष्)खीचना

पीड (पीड्) दुःख देना

उट्ठ (उत्+स्था) उठना

प+यत (प्र+यत्) प्रयत्न करना

उड्डे (उत्+डी) आकाश में उड़ना

दे (दा) देना

ण्हा (स्ना) स्नान करना

जिम्म (जिम्) खाना, भोजन करना

शब्द

अंतिअ (अन्तिम) न. नजदीक
गोवाल (गोपाल) पु. ग्वाला
सुगइ (सुगति) स्त्री. अच्छी गति
यंतणा (यंत्रणा) स्त्री. यंत्र
सग्गइ (सद्गति) स्त्री. देव आदि ऊंची गति
कामभोअ (काग भोग) पु. रूप आदि इंद्रियों का विषय
पंकय (पकज) न. कमल
ममभाव (ममत्व) पु. अपनापन
इड्ढिमंत (ऋद्धिमत्) त्रि. वैभव वाला

शब्द

विआर (विकार) पु. विकार विकृति
जुद्ध (युद्ध) न. लडाई
विउल (विपुल) त्रि. वहुत ज्यादा
जन्तु (जन्तु) पु. जीव
पक्खि (पक्षिन्) पु. पक्षी
धन्न (धान्य) न. अन्न
पासाअ (प्रासाद) पु. मकान
पच्चूह (दे.) पु. सूर्य
उज्जोमिआ (दे) स्त्री किरण
कंदोट्ट (दे.) न. कमल
उज्जाविय (दे.) त्रि. विकसित हुआ

विशेष नाम या संज्ञा

महावीर– चौवीसवां तीर्थङ्कर का नाम
राम– रामचन्द्र सूर्यवंश का एक प्रसिद्ध राजा
सीया (सीता) रामचन्द्र जी की धर्मपत्नी
खंधक (स्कन्धक) जैन शास्त्र का एक प्रसिद्ध आचार्य
पालक (स्कंधक का वैरी) एक पापी ब्राह्मण
रावण– लंका का राजा

अव्यय

पुरा— पहले
सपइ (सपदि) शीघ्र
जहा (यथा) जैसा या जिस तरह
तहा (तथा) वैसा, उसी तरह



वाक्य

हिन्दी में अनुवाद करो

१. मए गुरुणो अन्तिए सत्थ पढिअं । २. तुमं धम्मं काउण अप्पाण पुणीअ । ३. गोवालो धेणूओ वणम्मि णेसी । ४. आयरिओ मुणिणो सग्गमग्ग णेही । ५. तुम पुरा जहा ववहारम्मि कुसलो होहीअ सपइ तहा णत्थि। ६. जाहे तुम पुत्तेणं सह आलवीअ ताहे अह उवस्सय गच्छीअ । ७. कि देवदत्तो गेहे ण आसि ? । ८, कम्हा माअराए सह बालो रुव्वीअ । ९. महावीरस्स सव्वेसि सिस्साणं मुगई अहेसि । १०. जढा कामभोआ लिहक्को ममभावो ज्झोसिया विआरा जीवस्स सुह देन्ति । ११, तस्सिं गामम्मि मुणिणा धम्मस्स अब्भुदओ कारिओ । १२. पालको खधकस्स सिस्से यंत्तणाए पीडीअ । १३, तेसि विसुद्धभावेण सग्गई होहीअ । १४. रावणेण सह जुद्धे रामो जेही । १५. रावणो रामस्स इत्थिं सीअं हरीअ । १६. सेट्ठिणा वावारम्मि विउल धणं विढत्तं । १७. पाएण अफुण्णो जन्तू उड्ढं

उट्ठिउं पयतीअ । १८. उड्डेन्तेण पक्खिणा पव्वओ वोलीणो । १९. वोसट्टुं पंकयं गुंजन्तं भमरमाकरिसीअ । २०. चडालेण छित्तो बम्हणो ण्हाउण जिम्मइ । २१. पम्हुट्ठं धन्न वाणीयो धणेण किणइ । २२. राइणा धम्मस्स पासाओ बधाविओ । २३. पच्चूहस्स उज्जोमिआए कदोट्टं उज्जावियं ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. मेरे द्वारा मुनियों का उपदेश सुना गया । २. उनके द्वारा शरीर के समान धर्म की रक्षा की गयी । ३. क्षत्रियों द्वारा ब्राह्मणों के साथ युद्ध किया गया । ४. पहले के मनुष्य धनवान होते थे । ५. महावीर ने धर्म की खूब वृद्धि की । ६. उस ने साधु सेवा का फल प्राप्त किया । सेठ ने नौकरों को बहुत धन दिया । ८. मार्ग मे हम भी उनके साथ थे । ९. सभी मनुष्य साथ में रहते थे । १०. हम राजा के महल में वैठे थे । ११. उन लोगों के द्वारा वहुत धन इकट्ठा किया गया । १२. व्यापारी धनोपार्जन के लिये परदेश में गये । १३ सज्जन पुरुष अपने गुण से सद्गति में गये । १४. सेठ के द्वारा वहुत पैसो से घर बनवाया गया ।



अभ्यास—१९ वां.

सर्वनाम

एतद्, इदम् और अदस् शब्दों के रूप

१. प्रथमा के एकवचन के प्रत्यय सहित एतद् शब्द को तीनों लिगों में विकल्प से इणम् और इणमो आदेश; और इदम् के पुलिग में अय और स्त्रीलिग में इमिआ और नपुंसक लिग मे इदम्, इणम् और इणमो तथा अदस् शब्द के तीनों लिगो में विकल्प से अह आदेश होता है।

२. द्वितीया के एकवचन में प्रत्यय सहित इदम् शब्द के पुंल्लिग मे विकल्प से इणम्, नपुंसक लिग में इदम्, इणम् और इणमो आदेश होते है।

३. एतद् और इदम् शब्द से तृतीया के एकवचन में डिणा प्रत्यय होता है और एतद् शब्द से पंचमी के एकवचन में ताहे प्रत्यय बिकल्प से होता है।

४. त्तो, ताहे और त्थ के पूर्व में एतद् शब्द के उद्वृत्त अ का लोप होता है।

५. म्मि के पूर्व में एतद् शब्द का आदि एकार को विकल्प से अ, और ई, अदस् शब्द को अअ, और इअ, इदम् श

के षष्ठी के एकवचन स्स और सप्तमी के एकवचन सिं के पूर्व में और कही तृतीया तथा सप्तमी के बहुवचन में भी अ आदेश और त्थ सहित इह आदेश होता है।

६. सभी विभक्तियो में इदम् शब्द को इम और अदस् शब्द को अमु आदेश होता है।

७. एतद् और इदम् शब्द से सप्तमी के एकवचन में हि प्रत्यय नही होता है ।

एतद् शब्द के विशेष रुप

प्र, ए. व. एसो, एस×, इणम्, इणमो ।

द्वि, ए. व. एअं ।

तृ. ए. व. एइणा, एएण ।

पं. ए. व. एताहे, एत्तो, एआओ—इत्यादि ।

ष. ए. व. एअस्स, से+

ष. ब. व. एएसिं+, सिं, एआण—इत्यादि ।

स. ए. व. एअस्सि, एअम्मि, अअम्मि, ईअम्मि. एत्थ

शेष रूप सव्व शब्द के समान समझना चाहिये।

× एस इस प्रयोग मे १३ वा पाठ का ५ वां नियम देखना चाहिये ।

+ से और सिं ये दोनों रूप १३ वें पाठ के छट्ठे नियम के अनुसार होते है ।

इदम् शब्द के विशेष रूप

प्र. ए. व. अअं, इमो ।

द्वि. ए. व. इणं, इमं, णं×

तृ. ए. व. इमिणा, इमेण, णेण ।

पं. ए. व. इमाओ इत्यादि ।

ष, ए. व. अस्स, इमस्स, से ।

ष. ब. व. इमेसिं, सिं, इमाणं इत्यादि ।

स. ए. व. अस्सि, इमस्सि, इमम्मि, इह इत्यादि ।

शेष रूप सव्व शब्द के समान होते हैं ।

अदस् शब्द के विशेष रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अह, अमू	अमुणो इत्यादि
द्वि.	असुं.	अमुणो, अमू
तृ.	अमुणा.	अमूहिं इत्यादि
पं.	अमूओ, अमूउ इत्यादि.	अमूहिंतो इत्यादि
ष.	अमुणो, अमुस्स.	अमूण, अमूणं
स.	अअम्मि, इअम्मि, अमुम्मि, अमुस्सि इत्यादि ।	अमूसु, अमूसुं

शेष रूप सव्व शब्द के समान होते हैं।

× ण आदेश तेरहवे पाठ के सातवें नियम के अनुसार होता है

८. स्त्रीलिंग में प्रथमा के एकवचन को छोड़ कर एतद् शब्द को एआ, इदम् शब्द को इमा, इत्यादि आदन्त स्त्रीलिग के समान, अदस् शब्द को अमू इत्यादि ऊदन्त स्त्रीलिंग के समान, प्रथमा के एकवचन में एतद् शब्द को एसा, एस, इणम् इणमो, इदम् शब्द को इमिआ, इमा, अदस् शब्द को अह, अमू ये रूप होते हैं।

९. नपुंसकलिंग में भी प्रथमा के एकवचन को छोड़ कर एतद् शब्द को एअ, इदम् शब्द को इम आदेश होते है, उनका रूप नेत्त शब्द के समान होता है। अदस् शब्द कोअमू आदेश होता है उसका रूप धणु शब्द के समान, प्रथमा के एकवचन में एतद् शब्द को एस, इणं, इणमो, एअं. अदस् शब्द को अह, अमु, इदम् शब्द को इदं, इणं, इणमो, ये रूप होते हैं। इदम् शब्द के द्वितीया एकवचन के रूप प्रथमा एकवचन के समान होते है।

शब्द

पत्त (पात्र) न. योग्य, अधिकारी, वर्त्तन
सुकअ (सुकृत) न. पुण्य
सफल (सफल) वि. सार्थक
माणुस्स (मानुष्य) न. मनुष्यत्व मनुष्य सम्बन्धी
जीविअ (जीवित) न. जीवन
जम्म (जन्म) न. उत्पत्ति
गणिआ (गणिका) स्त्री. वेश्या
साहज्ज (साहाय्य) न. सहायता
णरिन्द (नरेन्द्र) पु. राजा

उन्नअ (उन्नत) वि. उच्च
विआर (विचार) पु. मन का अभिप्राय
मेत्ती (मैत्री) स्त्री. मित्रता प्रेम
महिला (महिला) स्त्री. स्त्री
सच्चवाइ (सत्यवादिन्) पु. सत्य बोलने वाला
पसंग (प्रसंग) पु. प्रस्ताव
अहिअ (अधिक) वि, अधिक
सुणिउण (सुनिपुण) वि. चतुर
दिण्ण (दत्त) वि. दिया, या दिया हुआ
कह (कथ) धातु, कहना
भव (भव) पु. जन्म, संसार
परभव (परभव) पु. दूसरा भव
लहु (लघु) वि. छोटा
ठाण (स्थान) न. स्थान
बहु (बहु) वि. अधिक
रज्ज (राज्य) न. राज्य
कइ (कति) सं. कितना
कंटअ (कंटक) पु. कांटा
जणवअ (जनपद) पु. देश
पत्तड़ (दे.) त्रि. सुन्दर
परज्झ (दे.) त्रि. पराधीन
अत्थारिअ (दे.) पु. नौकर

विशेष नाम

भत्तहरि— भर्तृहरि नाम का एक राजा
कोणिअ— श्रेणिक राजा का पुत्र कोणिक
पिंगला— भर्तृहरि की स्त्री

अव्यय

खलु— निश्चय
अइ— अति, अधिक
सुट्ठु (सुष्ठु) अच्छा



वाक्य

हिन्दी में अनुवाद करो

१. एसो साहू इणं समणोवासग्रं किं वग्रइ । २. अयं जणो पत्तम्मि विउलं दाणं देइ । ३. अस्स जम्मं जीविग्रं अ सुकएण सफलं हवइ । ४. इमिणा खलु सुट्ठु माणुस्सं जम्मं लहिग्रं । ५. एएसिं हियअम्मि उन्नग्रा वियारा अत्थि । ६. एत्थ को पुरिसो चिट्ठइ ? । ७ इमे एइणा सह मेत्तिं वहन्ति । ८. अह महिला सव्वम्मि कज्जम्मि सुणिउणा अत्थि । ९. अह जणो सया चेअ परमत्थस्स कज्जाणि कुणइ । १०. अह फल भत्तहरिणा पिंगलाए हत्थम्मि दिण्णं । ११. इमिग्रा गणिग्रा जुवाणाणं धणं हरइ । १२, अमू चमू कोणिअस्स रण्णो साहज्जं करेइ । १३. इमम्मिं जुद्धे कोणिग्रो णरिन्दो जयइ । १४. इह भवे कग्रो धम्मो परभवम्मि सुहं देइ । १५. इमो वालो से जणस्स लहू भाया हवइ । १६. एत्तो जणाग्रो तुमं ण सुहं लहीग्र । १७. इग्रम्मि ठाणे वहवो राग्राणो रज्जं कुणिग्रं । १८ अमुस्सि गामम्मि कइ सच्चवाइणो हवन्ति । १९. एत्ताहे अहिग्रं किणाम दुहं हवइ ? । २०. णाण पसंगेण णेण इणं कहिग्रं । २१. इमस्सिं मग्गे वहवो कटग्रा हवन्ति । २२. अमुणो दिट्ठी एग्रं पुरिस णिरिक्खइ । २३. ग्रयं पत्तट्ठोवि परज्झो अत्थारिग्रो किं चिंतेइ ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. इस मनुष्य के द्वारा बहुत धर्म का कार्य किया गया ।

२. इस को तुम सत्य का मार्ग बतलावो। ३. इस के द्वारा इस राजा की सेना नष्ट की गयी। ४. इस का नाम धर्मसिह है। ५. इन के द्वारा धर्मशास्त्र देखे गये। ६. इस में सभी बातों का रहस्य आता है। ७. इस से दूसरा कौन अधिक है। ८. इस से मैं सदा खुश हुआ। ९. इसके द्वारा धर्म पुस्तकों को अच्छी तरह समझाया गया। १०. यह मनुष्य अधिक चतुर है। ११. तुम इस को अधिक कष्ट न देना। १२. ये लोग सभी कार्य में कुशल है। १३. इन के द्वारा बहुत देश देखे गये। १४. इन लोगों से तुम मन में डरना नही। १५. इसकी मैत्री व्यवहार में बहुत अच्छी है। १६. इनमें जो गुण चाहिये वे सभी है। १७ इन में एक रीति बहुत अच्छी है।

अभ्यास—१६ वां.

(धातु विभक्ति)

भविष्य काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	हिइ, हिए।	हिन्ति, हिन्ते, हिरे।
म० पु०	हिसि, हिसे।	हित्था, हिह।
उ० पु०	हिमि, स्सामि, हामि, स्सं।	हिमो, हिमु, हिम, हामो, हामु, हाम, स्सामो, स्सामु, स्साम, हिस्सा, हित्था।

१. भविष्य काल वाले प्रत्ययों के पूर्व में धातु के अन्त्य अकार को इकार और एकार होते हैं।

उदाहरण पढ (पठ्) धातु के रुप

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	पढिहिइ—ए	पढिहिन्ति इत्यादि
म. पु.	पढिहिसि—सै	पढिहित्था. पढिहिह
उ. पु.	पढिहिमि,	पढिहिमो, पढिहिमु, पढिहिम,
	पढिस्सामि,	पढिहामो, पढिहामु, पढिहाम,
	पढिहामि,	पढिस्सामो, पढिस्सामु, पढिस्साम,
	पढिस्सं।	पढिहिस्सा, पढिहित्था।

एकार पक्षे पढेहिइ इत्यादि सभी वचनों में जितने रुप हुए है उतने ही एकार पक्ष मे भी रूप होगे।

कर्मणि— पढीअहिइ इत्यादि

प्रेरणा— पढावेहिइ इत्यादि

हो (भू) धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
भविष्य—		
प्र, पु.	होहिइ—ए	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे

भविष्य—

म. पु.	होहिसि, होहिसे	होहित्था, होहिह
उ. पु.	होहिमि, होस्सामि, होहामि, होस्सं।	होहिमो, होहिमु, होहिम, होस्सामो, होस्सामु होस्साम होहामो, होहामु, होहाम, होहिस्सा, होहित्था।

भावे— होइज्जहिइ इत्यादि।

प्रेरणा— होआवेहिइ इत्यादि।

२, नीचे लिखे हुए आदेश केवल भविष्यकाल में ही होते है, और जब वे प्रत्यय होते है तब भविष्यकाल के प्रत्ययों में से 'हि' का विकल्प से लोप हो जाता है, और उत्तम पुरुष के एक-वचन के सदृश एक अनुस्वार अधिक हो जाता है।

आदेश धातु के रूप

सोच्छ (श्रु) सुनना	**रोच्छ** (रुद्) रोना
वेच्छ (विद्) जानना	**दच्छ** (दृश्) देखना
मोच्छ (मुच्) छोडना	**वोच्छ** (वच्) बोलना
भोच्छ (भुज्) खाना, भोगना	**भेच्छ** (भिद्) फाड़ना
छेच्छ (छिद्) काटना	

उदाहरण—सोच्छिइ, सोच्छिहिइ (श्रोष्यति).

उत्तमपुरुष—सोच्छं, सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छिस्सामि,
सोच्छिहामि, सोच्छिस्सं (श्रोष्यामीत्यर्थः)

३. कृ और दा धातु से उत्तमपुरुष के एकवचन के समान एक हं, प्रत्यय अधिक होता है।

४. भविष्य और भूतकाल के प्रत्ययों के योग में कृ धातु को का आदेश होता है।

उदाहरण—काहिइ, काहिन्ति, काहिसि, काहित्था, काहि, काहं, काहिमि, कास्सामि, काहामि, कास्सं, काहिमो, कास्सामो इत्यादि। एवं दाहिइ, दाहं, दाहिमि, दास्सामि इत्यादि।

शब्द

महापुरिस (महापुरुष) पु० महात्मापुरुष
संग (सङ्ग) पु. साथ, सहवास
गहण (गहन) न. कठिन
सुपत्त (सुपात्र) न. सत्पात्र सुपात्र
उचिअ (उचित) वि. लायक योग्य
सोरट्ठ (सौराष्ट्र) सौराष्ट्र देश
अत्तवयण (आप्तवचन) न० प्रामाणिक वचन
अज्झत्थ (अध्यात्म) न. आत्म-तत्त्व संबन्धी
इट्ठ (इष्ट) वि. इच्छित, प्रिय
अकज्ज (अकार्य) न० नहीं करने योग्य कार्य
संघ (संघ) पु. समुदाय
ते (तव) युष्मद् शब्द के षष्ठी का एकवचन, तेरा
अग्ग (अग्र) न. आगे
पाण (प्राण) पु प्राणवायु, जीवन
णासिआ (नासिका) स्त्री० नाक
जीहा (जिह्वा) स्त्री. जीभ
कण्ण (कर्ण) पु. कान
कयन्न (कदन्न) न. खराब भोजन
दव्व (द्रव्य) न. द्रव्य
मंस (मांस) न. मांस
मइरा (मदिरा) स्त्री. दारू, मद्य

शब्द

तप्परिणाम [तत्परिणाम] पु० उसका परिणाम

मत्त [मात्र] वि० मात्र

भयंअर [भयङ्कर] वि० भय देने वाला, भयानक

विरूव [विरूप] त्रि. विपरीत

मच्चु (मृत्यु) पुं मृत्यु, मौत

उदअ (उदय) पु. प्रादुर्भाव, उदय

जम (यम) पु. यमराज

पहाव [प्रभाव] पु० प्रताप

सअल [सकल] वि० सभी

वच्छ [वृक्ष] पु० वृक्ष

पट्टइल्ल [दे.] पु. पटेल, गांव का मुखिया

उज्झस (दे.) पु. उद्यम

अहिल्ल (दे.) त्रि. धनवान्

पुच्छ (पृच्छ्) धा. पुछना, प्रश्न करना

चल (चल्) धा. चलना

अव्यय

तहवि (तथापि) तौभी

अईव (अतीव) अत्यन्त, बहुत ज्यादा

णिच्च (नित्य) सदा

एत्थ (अत्र) यहा

वाक्य

हिन्दी मे अनुवाद करो

१. अयं जणो महापुरिसाणं संगेण महापुरिसो होहिइ । २. इमे साहूण समासे गहणाणि सत्थाणि पढिहिन्ति । ३. तुमं एत्थ ठाउणं कि काहिसि। ४, ते सुपत्तम्मि उचिअमन्नं दाहिन्ति, ५. अहं गुरुणो दंसणं काउं सोरट्ठं गच्छिमि । ६. वयं हियअ-

सुद्धि काऊण अत्तवयणाणि सोच्छिहिमो । ७. अहं णिच्चं अज्झ-त्थसत्थाणि सोच्छं । ८. तुब्भे अग्गे गच्छन्ता इट्ठं पुरिसं दच्छि-हित्था । ९. जया सेट्ठिणो पुच्छिहिन्ते, तया अकाऊण कज्जं तुमं किं वोच्छिसि ? । १०. अकज्जस्स परिणामे पावस्स उदअम्मि तुमं अईव रोच्छिहिसि तहवि ण कोवि मोच्छिइ । ११. तया तुमं पावस्स फलं वेच्छिहिसि जया जमा ते हत्थे, पाए, णासिअं, जीहं, कण्णे, छेच्छिहिन्ति । १२. जइ कअन्नं मंसं मइरं वा कया वि भोच्छिहिसि तया तप्परिणामो भयअरो होहिइ । १३. तुमं ने णीइपहे चलिहिसि तया तव अहं विउलं धणं दाहं । १४. अहम्म कुणिहिसि चे विरूवं फलं लहिहिसि । १५. जाव धम्मं काहिसि करावेहिसि ताव सुहं समाहिं लहिहिसि । १६. एएसिं पहावेण सअलो किलेसो उवसमिहिइ । १७. इमे सव्वत्थ गामम्मि संघम्मि वा किलेसमुवसमावेहिन्ति । १८ अणेण एसो वच्छो ण भेच्छीअहिइ । १९. एस पट्टइल्लो उज्झसेण अहिल्लो होहिइ।

प्राकृत में अनुवाद करो ।

१. तुम धर्म का कार्य कब करोगे ? २. जिसको तुम मारते हो वह तुम्हें मारेगा तो तुम क्या रोवोगे नहीं ? । ३. मृत्यु आयेगी तो तुम्हें छोड़ेगी नहीं । ४. कुटुम्ब या धन कोई भी साथ में नहीं जायेगा । ५. जो धर्म किया होगा वही साथ जायेगा । ६. किसी भी प्राणी का प्राण हरण न करो । ७. किसी को मारोगे, काटोगे तो तुम भी मारे जाओगे, काटे

जाओगे । ८. मै पैसों को इकट्ठे करके गरीबों को दूंगा । ९. तुम भी सुपात्र में दान देओगे क्या ? । १०. हम सदा इन के साथ चलेंगे । ११. वे धर्मार्थ के काम मे बहुत सहायता दिलायेंगे । १२. किसी का भी चुराया हुआ द्रव्य नही खरीदना । १३. जैसा करोगे वैसा पावोगे । १४. साधु उपदेश देंगे और श्रावक धर्म का काम करेंगे । १५ पाप करोगे तो उसके उदय के समय विपरीत फल पावोगे । १६ धन मिलने पर खाकर प्रसन्न न हो जाओ परन्तु दूसरों को भी खिलाओ । १७. धर्म शास्त्र सुनोगे तो आत्मशुद्धि होगी ।



अभ्यास—१७ वां.

संख्या वाचक शब्दों के रूप

१. संख्या वाचक शब्दों से तीनों लिग में षष्ठी के बहुवचन के रूप मे 'ण्ह' और 'ण्ह' प्रत्यय आते है । बाकी के रूप पहले के समान होते है ।

२. प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन के प्रत्ययों के सहित द्वि शब्द को दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दो और वे एवं त्रि शब्द को तिण्णि, चतुर् शब्द को चत्तारि, चउरो और चत्तारो आदेश तीनों लिग में होते है।

३. तृतीयादि विभक्तियों के पूर्व में त्रि शब्द को ती और द्वि शब्द को दो तथा वे आदेश तीनों लिंग में होते है।

४. जब चउ शब्द से तृतीया, पंचमी और सप्तमी विभक्ति आती है तो चउ शब्द के उकार को दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण द्वि× शब्द के रूप

प्र० दुवे+, दोण्णि, वेण्णि, दो, वे ।
द्वि० ,, ,, ,, ,, ,,
तृ० दोहिं, वेहिं इत्यादि
पं० दोहिन्तो, वेहिन्तो इत्यादि
ष० दोण्ह, दोण्हं, वेण्ह इत्यादि
स० दोसु, वेसु इत्यादि ।

त्रि शब्द के रूप

प्र० तिण्णि
द्वि० तिण्णि
तृ० तीहिं, तीहि इत्यादि
पं० तीहिन्तो, तीसुन्तो इत्यादि

× संख्यावाचक द्वि आदि शब्द सदा बहुवचनान्त ही रहते हैं।

+ नियमावली के दसवें नियम के अनुसार नय ह्रस्व हो जाता है तो दुण्णि, विण्णि इस प्रकार के भी रूप होते हैं।

ष० ×तिण्ह, तिण्ह
स० तीसु, तीसुं ।

चउ (चतुर्) शब्द के रूप

प्र० चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वि० ,, ,, ,,
तृ० चऊहिं, चउहिं इत्यादि
पं० चऊहिन्तो, चउहिन्तो इत्यादि
ष० चउण्ह, चउण्हं
स० चऊसु, चउसु इत्यादि ।

५. पञ्चन् शब्द से अष्टादशन् शब्द पर्यन्त जो संख्या वाचक शब्द है उनके और कति शब्द के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति का सस्कृत के समान ही लोप हो जाता है । जैसे कि— प्र० पच द्वि० पच, तृ० पंचहिं, पं० पचहिन्तो, प० पचण्ह इ., स० पचसु इत्यादि ।

कुछ अव्यय

हु खु= निश्चय
उअ (देखने अर्थ में) देखो
चिर= चिर काल तक
अप्पणो, सयं= स्वयं
आम= हां, स्वीकार
ओ= सूचना, पश्चात्ताप
अम्मो= आश्चर्य
पाडिक्कं, पाडिएक्कं, पत्तेअं— (प्रत्येक) हरेक
णवि= वैपरीत्य, विपरीतता
हद्धी (हा धिक्) खेद, धिक्कार
रे—अरे= संबोधन, कलह
णवरं= केवल, अथवा इसमें इतना विशेष

× नियमावली के दशवे नियम के अनुसार यहा ह्रस्व हुआ है ।

संख्या वाचक शब्द

एग (एक) एक
दो, वे (द्वि) दो
ति (त्रि) तीन
चउ (चतुर्) चार
पंच (पञ्चन्) पांच
छ (षट्)छः
सत्त (सप्त)सात
अट्ठ (अष्टन्) आठ
णव (नवन्) नव
दश (दशन्) दश
एकारस (एकादशन्) इग्यारह
वारस (द्वादशन्) बारह
तेरस (त्रयोदश) तेरह
चउद्दस (चतुर्दश) चौदह
पन्नरस (पञ्चदश) पन्द्रह
सोलस (षोडश) सोलह
सत्तारस (सप्तदश) सत्रह
अट्ठारस (अष्टादश) अट्ठारह
एगुणवीसा (एकोनविंशति) उन्नीस
वीसा (विंशति) बीस
सट्ठि (षष्ठि) साठ
सअ (शत) सौ
सहस्स सहस्र) हजार
लक्ख (लक्ष) लाख

शब्द

वच्छर [वत्सर] पु० वर्ष
मास [मास] पु० महीना
सावराह [सापराध] वि० अपराध सहित
णिरवराह [निरपराध] वि० निर्दोष
सकंकण [सकङ्कण] वि० कंकण सहित
सव्वघाइ [सर्वघातिन्] वि० सभी का घातक
पय [पद] न० पैर
लखमण–पु० एक विशेष नाम राम का छोटा भाई लक्ष्मण
पक्ख [पक्षन्] पु० पक्ष
रम्म [रम्य] वि० रमणीय
दुहिआ [दुःखिता] स्त्री० दुःखी स्त्री
पहु [प्रभु] पु० समर्थ
पत्त [पात्र] न० पत्ता काष्ठ पात्र

अज्झप्प [अध्यात्म] न० अध्यात्म, आत्मतत्त्वसबन्धी
महव्वय[महाव्रत]न. साधुओं का महाव्रत, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह
जीवणिकाय[जीवनिकाय]पु. जीव समुदाय
विविह [विविध[वि. अनेक प्रकार
कारागिह [कारागृह] न. कैदखाना
कम्माआण [कर्मादान] न. श्रावकों का वर्जनीय आचार
समप्पणीय [समर्पणीय] वि. सौंपने लायक
अंगुलि [अगुलि] स्त्री. अंगुली
विणा [विना] अ. छोड़कर
गइ [गति] स्त्री० नरक आदि चार गति
किरिया [क्रिया] स्त्री. अनुष्ठान
जोणि [योनि] स्त्री. उत्पत्ति का स्थान
बीभच्छ [बीभत्स] वि. निन्दनीय
रूवग [रूप्यक] न. रुपैया
विभाअ [विभाग] पु. अलग, हिस्सा
कमलावई [विशेष नाम] कमलावती नामकी स्त्री
मज्झ [मध्य] अ. मध्य में
पंखुडिया [देशी] स्त्री. पाँख
करडा [दे.] स्त्री. भ्रमर
विरह [विरह] पु. वियोग

धातु

दड[दंड्] दंड देना
खम [क्षम्] क्षमा करना
सम्+तूस [स+तुष्] संतोष संतुष्ट होना
मण [मन्] मानना, स्वीकार करना
मारि [मृ+णि] मारना
भम [भ्रम्] भ्रमण करना
सोह [शुभ्] शोभना
वट्ट [वृत्] वर्तमान, रहना

संख्या वाचक शब्द

एग (एक) एक
दो, वे (द्वि) दो
ति (त्रि) तीन
चउ (चतुर्) चार
पंच (पञ्चन्) पांच
छ (षट्)छः
सत्त (सप्त)सात
अट्ठ (अष्टन्) आठ
णव (नवन्) नव
दश (दशन्) दश
एकारस (एकादशन्) इग्यारह
वारस (द्वादशन्) बारह
तेरस (त्रयोदश) तेरह
चउद्दस (चतुर्दश) चौदह
पन्नरस (पञ्चदश) पन्द्रह
सोलस (षोडश) सोलह
सत्तारस (सप्तदश) सत्रह
अट्ठारस (अष्टादश) अट्
एगुणवीसा (एकोनविंश
वोसा (विंशति) बीस
सट्ठि (षष्ठि) साठ
सअ (शत) सौ
सहस्स सहस्र) हजार
लक्ख (लक्ष) लाख

शब्द

वच्छर [वत्सर] पु० वर्ष
मास [मास] पु० महीना
सावराह [सापराध] वि० अपराध सहित
णिरवराह [निरपराध] वि० निर्दोष
सकंकण [सकङ्कण] वि० कंकण सहित
सव्वघाइ [सर्वघातिन्] वि० सभी का घातक
पय [पद] न० पैर
लक्खमण-पु० एक विशे राम का छोटा भाई
पक्ख [पक्षन्] पु
रम्म [रम्य] वि०
दुहिआ [दु.खिता दु
पहु [प्रभु] पु० स
पत्त [पात्र] न

अज्झप्प [अध्यात्म] न० अध्यात्म, आत्मतत्त्वसबन्धी

महव्वय [महाव्रत] न. साधुओं का महाव्रत, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह

जीवणिकाय [जीवनिकाय] पु. जीव समुदाय

विविह [विविध[वि. अनेक प्रकार

कारागिह [कारागृह] न. कैदखाना

कम्माआण [कर्मादान] न. श्रावको का वर्जनीय आचार

समप्पणीय [समर्पणीय] वि. सौपने लायक

अंगुलि [अगुलि] स्त्री. अंगुली

विणा [विना] अ. छोड़कर

गइ [गति] स्त्री० नरक आदि चार गति

किरिया [क्रिया] स्त्री. अनुष्ठान

जोणि [योनि] स्त्री. उत्पत्ति का स्थान

बीभच्छ [बीभत्स] वि. निन्दनीय

रूवग [रूप्यक] न. रुपैया

विभाअ [विभाग] पु. अलग, हिस्सा

कमलावई [विशेष नाम] कमलावती नामकी स्त्री

मज्झ [मध्य] अ. मध्य में

पखुडिया [देशी] स्त्री. पाँख

करडा [दे.] स्त्री. भ्रमर

विरह [विरह] पु. वियोग

धातु

दड [दंड्] दड देना

खम [क्षम्] क्षमा करना

सम्+तूस [स+तुष्] सतोष सतुष्ट होना

मण [मन्] मानना, स्वीकार करना

मारि [मृ+णि] मारना

भम [भ्रम्] भ्रमण करना

सोह [शुभ्] शोभना

वट्ट [वृत्] वर्तमान, रहना

संख्या वाचक शब्द

एग (एक) एक

दो, वे (द्वि) दो

ति (त्रि) तीन

चउ (चतुर्) चार

पंच (पञ्चन्) पांच

छ (षट्)छः

सत्त (सप्त)सात

अट्ठ (अष्टन्) आठ

णव (नवन्) नव

दश (दशन्) दश

एकारस (एकादशन्) इग्यारह

वारस (द्वादशन्) बारह

तेरस (त्रयोदश) तेरह

चउद्दस (चतुर्दश) चौदह

पन्नरस (पञ्चदश) पन्द्रह

सोलस (षोडश) सोलह

सत्तरस (सप्तदश) सत्रह

अट्ठारस (अष्टादश) अट्ठारह

एगुणवीसा (एकोनविंशति) उन्नीस

वोसा (विंशति) बीस

सट्ठि (षष्ठि) साठ

सअ (शत) सौ

सहस्स (सहस्र) हजार

लक्ख (लक्ष) लाख

शब्द

वच्छर [वत्सर] पु० वर्ष

मास [मास] पु० महीना

सावराह [सापराध] वि० अपराध सहित

णिरवराह [निरपराध] वि० निर्दोष

सकंकण [सकङ्कण] वि० कंकण सहित

सव्वघाइ [सर्वघातिन्] वि० सभी का घातक

पय [पद] न० पैर

लक्खमण–पु० एक विशेष नाम राम का छोटा भाई लक्ष्मण

पक्ख [पक्षन्] पु० पक्ष

रम्म [रम्य] वि० रमणीय

दुहिआ [दुःखिता] स्त्री० दुःखी स्त्री

पहु [प्रभु] पु० समर्थ

पत्त [पात्र] न० पत्ता काष्ठ पात्र

अज्झप्प [अध्यात्म] न० अध्यात्म, आत्मतत्त्वसबन्धी
महव्वय [महाव्रत] न. साधुओं का महाव्रत, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह
जीवणिकाय [जीवनिकाय] पु. जीव समुदाय
विविह [विविध[वि. अनेक प्रकार
कारागिह [कारागृह] न. कैदखाना
कम्माआण [कर्मादान] न. श्रावको का वर्जनीय आचार
समप्पणीय [समर्पणीय] वि. सौपने लायक
अंगुलि [अगुलि] स्त्री. अंगुली
विणा [विना] अ. छोड़कर
गइ [गति] स्त्री० नरक आदि चार गति
किरिया [क्रिया] स्त्री. अनुष्ठान
जोणि [योनि] स्त्री. उत्पत्ति का स्थान
बीभच्छ [बीभत्स] वि. निन्दनीय
रूवग [रूप्यक] न. रुपैया
विभाअ [विभाग] पु. अलग, हिस्सा
कमलावई [विशेप नाम] कमलावती नामकी स्त्री
मज्झ [मध्य] अ. मध्य में
पंखुडिया [देशी] स्त्री. पाँख
करडा [दे.] स्त्री. भ्रमर
विरह [विरह] पु. वियोग

धातु

दड [दंड्] दड देना
खम [क्षम्] क्षमा करना
सम्+तूस [स+तुष्] सतोष सतुष्ट होना
मण [मन्] मानना, स्वीकार करना
मारि [मृ+णि] मारना
भम [भ्रम्] भ्रमण करना
सोह [शुभ्] शोभना
वट्ट [वृत्] वर्तमान, रहना

वाक्य

हिन्दी में अनुवाद करो

१– उअ दुवे बह्मणा एत्थ चिट्ठन्ति । २– दोहि पक्खेहिं पक्खी उड्डेइ । ३– पुरिसस्स दोण्णि हत्था वेण्णि पाआ एग मुहमत्थि । ४– अस्स दो णेत्ताणि वे कण्णा रम्मा अत्थि । ५– इमो णिवो सावराहं णिरवराहं वा दुवे दडेइ । ६– चंडालो कमलावईए दोण्णि हत्थे सककणे छिन्दीअ । ७– वेहिं हत्थेहिं विणा सा अईव दुहिआ होसी । ८– रामलखमणाणं दोण्हं भाअराणमईव पीई होही । ९– स चिरं चउसु गईसु विविह जोणीसु भमीअ । १०– दसहिं सएहि सहस्स हवइ । ११– अम्मो स अप्पणो चेअ बीभच्छं कज्ज काऊण कारागिहे पडीअ । १२– पच पुरिसा ज वयन्ति तं सच्च । १३—अरे किमिणमकज्जं कअ १४– दोसु मज्झे एग्गो एगस्स विरह खामिउ ण पहू । १५– साहुणं सगासे तिण्णि पत्ताणि वट्टन्ते । १६– एसो खु तिण्णि मोअए गुहे णिखिवइ । १७– तीहि पुरिसेहि इमो वणम्मि मारिओ । १८—चत्तारो गईओ चउरो कसाआ चत्तारि सव्वघाइकम्माणि अत्थि । १९– जा किरिआ चउरो गई साहेइ सा ण अज्भप्पकिरिआ । २०—जो चत्तारो कसाए जयइ स महापुरिसो हवइ । २१– हद्धी सव्वोवि ससारो चउहि कसाएहि जिओ । २२—इमेहिन्तो चउहिन्तो सव्वेवि वीहन्ति । २३—पंचहिं अंगु-

लीहिं हत्थो सोहइ। २४—पाडिएक्क विभाएण कज्जं समप्पणीयं। २५— जणो रूवगाण सअं सहस्सं लक्खं वा लहइ तहवि ण संतूसइ। २६—स पन्नरसहि कम्मायाणेहि णरए पडइ। २७—करडा दोहिं पखुडिआहि उड्डेइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१— मैंने वहा पर दो मनुष्यों को क्रीडा करते हुए देखा। २—तुम तीनो आदमी साथ मे आरहे थे। ३—पांच मनुष्य साथ मे बाते करते हुए जाते थे। ४—वे अपने साथ चार गौ ले जाते थे। ५— यह पैसा तीन मनुष्यो का है। ६— जहां पांच है वहां परमेश्वर है। ७— पांच इन्द्रियों को जीतकर मन को वश मे करो। ८—मुनिजन पांच महाव्रतो का पालन करते है। ९— बारह मास का एक वर्ष और एक वर्ष में तीनसौ साठ दिन होते है। १०— गौ चार पैरो से चलती है। ११— मनुष्य दो पैरो से चलते है। १२—पक्षी दो पांखो से आकाश मे उड़ते है। १३—इस मनुष्य के छ लड़के और सात लडकियां है। १४— यह एक सौ मनुष्यों का पोषण करता है। १५—इस ने एक युद्ध में एक सौ मनुष्यो को मारा। १६—यह एक लाख रुपैया इकट्ठा करके सेठ बना। १७—आचारॉग सूत्र के अठारह हजार पद है।



अभ्यास—१८ वां.

धातु विभक्ति

१– वर्त्तमान, विध्यर्थ, आज्ञार्थ, भूत, क्रियातिपत्ति, और भविष्यकाल में धातु से ज्ज और ज्जा प्रत्यय विकल्प से होते है।

२– ज्ज और ज्जा के पूर्व में धातु का अन्त्य अकार को एकार होता है और कही पर इकार भी होता है जैसे कि— पढेज्ज, पढेज्जा (पठति, पठेत्, पठतु, अपठत्. अपठिष्यत्, पठिष्यतीत्याद्यर्थः) ।

३– अकारान्त को छोडकर स्वरान्त धातुओं में वर्त्तमान कालिक इ आदि प्रत्ययो के पूर्व में भी ज्ज और ज्जा प्रत्यय विकल्प से होते हैं। जैसे कि— होज्जइ, होज्जाइ इत्यादि।

उदाहरण – गच्छ (गम्) धातु के रूप

प्र. **गच्छेज्ज, गच्छेज्जा**

म. ,, ,,

उ. ,, ,,

'णि' प्रयोग में गच्छावेज्ज, गच्छावेज्जा।

पक्ष में गच्छइ, गच्छउ, गच्छीअ, गच्छिहिइ इत्यादि।

हो (भू) धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	होज्जइ, होज्जाइ	होज्जन्ति, होज्जान्ति इ.

	एकवचन	बहुवचन
म.	होज्जसि, होज्जासि	होज्जित्था, होज्जह इ.
उ.	होज्जमि, हो जामि	होज्जामो, होज्जिमो होज्जेमा इत्यादि

एव होज्जउ, होज्जीअ, होज्जहिइ, होज्जाहिइ इत्यादि ।

पक्षे—होज्ज, होज्जा, हवइ - इत्यादि ।

धातु

पसारि (प्र+सृ+णि) फैलाना

अइवाअ (अति+पात्) हिंसा करना

अणुजाण (अनु+ज्ञा) अनुमोदन करना

शब्द

सुभिक्ख (सुभिक्ष) न सुकाल

मणोरह (मनोरथ) पु. मन की इच्छा

जरा (जरा) स्त्री. वृद्धावस्था

अवत्था (अवस्था) स्त्री. उम्र, दशा

माआपिअर (मातापितर) पु. माता–पिता

पुव्वि (पूर्वं) अ. पहले

परित्थी (परस्त्री) स्त्री दूसरे की स्त्री

पच्छा (पश्चात्) अ. पीछे

सावज्ज (सावद्य) वि. सदोष, पाप

पाढग (पाठक) पु. पढाने वाला

सुवुट्ठि (सुवृष्टि) स्त्री. अच्छी बरसात

तिव्व (तीव्र) वि. तीक्ष्ण

मुसा (मृषा) स्त्री झूठ

कुरुल (दे.) त्रि. चतुर

अडणी (दे.) स्त्री. मार्ग

कालय (दे.) त्रि. ठग, धूर्त



वाक्य

हिन्दी में अनुवाद करो

१. पाए पसारिअ गुरुणो अन्तिए न चिट्ठेज्जा। २. स तिव्वबुद्धीए गहणसत्थेसु णिउणो होज्जइ। ३. तुम इमं पुरिसं कहिणेज्जसि। ४. सो णिच्चं सच्चं वयणं वएज्जा (वयइ) कयावि असच्चं ण वएज्जा। ५. ते पुव्वि एत्थ आगमिअ पच्छा तत्थ गच्छेज्जा (गच्छन्तु)। ६. इमे सव्वेऽवि पाढगस्स सगासे सामाइयं पढेज्ज (पठिष्यन्ति)। ७ अह जराए अवत्थाए धम्मसत्थम्मि कुसलो होज्जाहिइ (भविष्यति)। ८. जइ सुवुट्ठी होज्ज तया सुभिक्खं होज्जा (अभविष्यत्)। ९. इमो मायापिअराण सुट्ठु विणयं कुणेज्ज (अकरोत्)। १०. णो पाणे अइवाएज्जा, णो मुसं वएज्जा पभाअम्मि सुहमणोरः चिन्तेज्जा। ११. धम्मस्स कज्जम्मि खणं वि पमाअं मा कुणेज्ज (कुरु)। १२. सावज्जं ण करेज्जा ण करावेज्जा करंतं वि णाणुजाणेज्जा। १३. कुसलो जणो अडणीए कालएण सहणं गच्छेज्जा।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. मनुष्य का जन्म पाकर नीतिमार्ग से चलना चाहिये। २. जो सामर्थ्यवाला होगा वह जीतेगा। ३. रावण धर्मात्मा था परन्तु परस्त्री की इच्छा से नरक में पड़ा। ४. श्री महावीर स्वामी ने माता-पिता की बहुत सेवा की। ५. गायें वन में पर्वत के ऊपर भ्रमण करती है। ६. महात्मा सभी की भलाई करना

चाहते है । ७ राजा ग्राम के बाहर भ्रमण कर फिर ग्राम में आया । ८ अन्याय मार्ग से जाते हुए सभी को रोको । ९. सच्चे मन से गरीबो की रक्षा करनी चाहिये । १०. परस्त्री के ससर्ग से मन में डरो । ११. प्रात:काल में माता-पिता को प्रणाम करो। १२ तीर्थङ्कर दीक्षा लेने के पहले एक वर्ष पर्यन्त दान देते थे । १३. परोपकार के बिना मै धर्म को नही मानता हूं ।



अभ्यास—१९ वां.

युष्मद् तथा अस्मद् शब्द के रूप

१—सभी विभक्तियो के एकवचन तथा बहुवचन के प्रत्ययों के सहित युष्मद् और अस्मद् शब्द को नीचे लिखे हुए आदेश होते है ।

युष्मद् शब्द

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुब्भ, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे
द्वि.	तं, तुं, तुमं, तुवं तुह, तुमे, तुए	वो, तुज्झ, तुब्भे, तुम्हे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झे, तुय्हे, उय्हे, भे,

	एकवचन	बहुवचन
तृ.	भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, उब्भेहिं, उम्हेहिं, तुय्हेहिं, उय्हेहिं, तुज्झेहिं, तुम्हेहिं, उज्झेहिं
पं.	तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तहिन्तो. तइ (तइत्तो, तईओ, तईउ, तइणो, तईहिन्तो) तुव, तुम, तुह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ (प्रत्येक के छ-छ रूप होते हैं- जैसे- तुवा, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ	तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुय्ह, उय्ह, उम्ह (प्रत्येक के नव रूप होते है- जैसे-तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भेहिन्तो, तुब्भासुन्तो, तुब्भेसुन्तो)
ष.	तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उज्झ, उम्ह, तुय्ह, उय्ह	तु, भे, वो, तुज्झ, तुम्ह, तुब्भ, तुज्झ, तुम्ह, तुब्भ, तुब्भाण-णं, तुज्झाण-णं, तुम्हाण-णं, तुवाण-णं, तुहाण-णं, तुमाण, तुमाणं, उम्हाण, उम्हाणं।
स.	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुव, तुम, तुह, तुम्ह, तुब्भ, तुज्झ (प्रत्येक के चार रूप होते हैं)	×तूसु-सुं, तुवेसु सुं, तुमेसु-सुं, तुहेसु-सुं, तुब्भेसु-सुं, तुम्हेसु-सुं, तुज्झेसु-सु।

× कितनो के मत मे तुवसु-सुं, तुमसु-सुं, और कितनो के मत मे तुवासु-सुं, तुमासु-सुं- इत्यादि रूप भी होते है।

जैसे— तुवम्मि,)
तुवस्सि, तुवत्थ, तुवंहि।

अस्मद् (मैं) शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र	म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं, अहअं	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वअ, भे
द्वि.	णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, म, मम, मिम, अह	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
तृ.	मि, मे, ममं, ममए, ममाइ, मइ, मए, मआइ, णे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे
प.	मइ (मइ के पांच रूप होते है, जैसे—मइणो, मईहिन्तो, मइत्तो, मईओ, मईउ) मम, मह, मज्झ, (प्रत्येक के छ रूप होते है, जैसे—ममा, ममाहि, ममाहिन्तो, ममत्तो, ममाओ, ममाउ)	मम, अम्ह (प्रत्येक के नव रूप होते है, जैसे — ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि, ममाहिन्तो, ममेहिन्तो ममासुन्तो, ममेसुन्तो
ष.	मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्हं।	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण–णं, ममाण–णं, महाण–ण, मज्झाण–णं।

स.	मइ, मि, ममाइ, मए, मे, अम्ह, मम, मह, मज्झ, (प्रत्येक के चार रूप होते है), जैसे— अम्हत्थ, अम्हंसि, अम्हम्मि, अम्हहिं)।	× अम्हेसु-सुं, × ममेसु-सुं, महेसु-सुं, मज्झेसु-सुं।

शब्द

कुढार (कुठार) पु. कुल्हाडी
कोसल्ल (कौशल्य) न. आरोग्य, कुशलता
समूह (समूह) न. समुदाय
अस्स (अश्व) पु. घोडा
गअ (गज) पु. हाथी
भअ (भय) न. भय, डर
जोह (योध) पु योद्धा
विस्सास (विश्वास) पु. भरोसा निष्ठा
देव (देव) पु देवता, देव
किच्च (कृत्य) न. कार्य
वरिस (वर्ष) न. वर्ष, संवत्सर
दुद्दसा (दुर्दशा) स्त्री. दुर्दशा
पुण्ण (पूर्ण) वि. पूरा
सामि (स्वामिन्) पु. मालिक
भर (भर) पु उत्कर्ष, समूह
मुत्त (मुक्त) वि छुटकारा, मुक्त
गव्व (गर्व) पु. अभिमान
गरीअ (गरीयस्) पु अतिशय गुरु, मोटा
सन्त (सत्) व. कृ. विद्यमान
णिसेह (निषेध) पु नही निषेध
लेस (लेश) पु थोडा, अंश
सत्ति (शक्ति) स्त्री सत्ता, सामर्थ्य
उज्जम (उद्यम) न. उद्यम

× कितनो के मत मे अम्हसु-सुं, ममसु-सुं और कितनो के मत मे अम्हासु-सुं, ममासु-सु, इत्यादि रूप भी होते है।

भत्ति (भक्ति) स्त्री. भक्ति कलयदि (दे.) त्रि. प्रख्यात
कलय (दे.)पु. सोनी सुवर्णकार

धातु

भिन्द (भिद्) भेदना, काटना वलग्ग (आ+रुह्) चढ़ना
आकारि(आ+कृ+णि)बुलाना णिरुन्ध (नि+रुध्) रोकना
उववज्ज (उप+पद्) उत्पन्न होना सक्क (शक्) सकना

वाक्य

हिन्दी में अनुवाद करो

१. तुं कुढारेण वच्छं व्व दाणेण पाव भिन्दसि। २. अस्सं गअं वा वलग्गन्तो तुमं सुट्ठु दीसइ । ३. अम्मि तुम्हाण वयणं विणा अन्न कि वि दट्ठुं णेच्छामि। ४, परिसाए रिअन्तेण तए किमट्ठं हं आकारिज्जामि । ५. मइत्तो तुहं किंचि वि भयं णत्थि । ६. अहय सव्वेसि जीवाण कोसल्ल वाञ्छामि । ७. सेज्जम्मि उववज्जन्तं देवमणे देवा पुछन्ति सामी पुव्वभवम्मि तुमए किं दाणं कअ किं किच्चं कअं जेण इमा इड्ढी तुमे लहिआ। ८. अम्हेहिं एगवरिसम्मि जाव धणं विढत्तं ताव तुम्हेहि वरिससएण वि किं अज्जीअहिइ । ९. अम्हाणं तु धम्मस्स चेअ ववारो अत्थि। १०. अहं सव्वेसिं कहेहिमि को वि कहेहिइ, तया अम्मि रोच्छं। ११. तुवम्मि मज्झ पुण्णो विस्सासो अत्थि,

१२. तुह पसाअाओ जत्थ–जत्थ अम्हे गच्छामो तत्थ–तत्थ परं सुहं लहेमो। १३. जो तुवं भत्तिभरेण थुणइ सो ते किवं लहिअ दुहाओ मुत्तो हवइ। १४. तुज्झे मणम्मि अम्हे वाञ्छह तं वयं खलु जाणामो। जोहसमूहम्मि पविसन्तं ममं णिरुन्धिउं को समत्थो अत्थि ?। १६ तुज्झत्तो अहिओ सेट्ठो अण्णो को अत्थि ?। १७. कस्सि वि सुहकज्जे कया वि मह णिसेहो णत्थि। १८. धम्ममग्गम्मि णो सया एगा चिअ रीई वट्टइ। १९. मज्झ मणम्मि णत्थि गव्वलेसो वि। २०. महाणं मज्झे को गरीओ को वा जेहिइ तं ण जाणामो। २१, तुवाण सगासे कइण्ह पुरिसाणं बलमत्थि ?। २२. मए जइ तुम्ह पसाओ होहिइ तया तुब्भे मज्झं दंसणं किं ण दाहिह। २३. तुमं कलयदी कलओ दीससि।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. हम सबको देखते है, किन्तु हमको कोई नही देखता है। २. तुम इस समय इस गांव में क्या उद्योग करते हो। ३. तुम्हारे ऊपर किसी का भरोसा नही है। ४. हम को जितना सत्य ज्ञात होता है, उतना स्वीकार करते है। ५. तुम्हारे में आलस्य नही है, इसलिये तुम सर्वत्र विजय प्राप्त करते हो। ६, यदि कुछ भी आलस्य होगा तो वह तुम को भयंकर दुःख देगा। ७. तुम उसको ऐसा–वैसा मत समझो, वह एक भयंकर दुश्मन है। ८. कौन कहता है कि तुम विद्वान् नहीं हो। ९. जो हम से हो सकता

है, वह हम करते है। १०. तुम श्री महावीर स्वामी के शासन की सेवा करो इसी से तुम्हारा कल्याण होगा । ११. तुम्हारे में हमारा पूर्ण विश्वास है। १२. तुम्हारे से सभी का हित साधा जाता है। १३. हमारे में क्या ज्ञान है, क्योकि हमारी बुद्धि तो अपूर्ण है। १४. तुम्हारा हित साधने के लिए तुम्हारे पास शक्ति है। १५. तुम्हारे पास जितना आत्म बल है, उससे तुम क्या-क्या नही कर सकते हो। १६. बल के रहते हुए कोई भी उद्यम नही करते हो, यही तुम्हारी दुर्दशा है।



अभ्यास—२० वां.

कुछ ताद्धित प्रत्यय

१. प्रथमान्त पद से 'अस्य अस्ति' इस अर्थ में संस्कृत में होने वाले 'मतुप्' प्रत्यय के स्थान में प्रयोग के अनुसार आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, मन्त, इत्त, इर और मण आदेश होते है। जैसे:—आलु-स्नेहोऽस्यास्तीति = णेहालू, दयालू, ईसालू, लज्जालू। इल्ल—शोभाऽस्यास्तीति=सोहिल्लो। उल्ल—मांसोऽस्यास्तीति=मंसुल्लो, दप्पुल्लो। आल—शब्दोऽस्यास्तीति=सद्दालो, जटालो। वन्त— धणवन्तो, भत्तिवन्तो। मन्त— हणुमन्तो, सिरिमन्तो, पुण्णमन्तो। इत्त—कव्वइत्तो, माणइत्तो। इर—

गव्विरो, रेहिरो। मण— धणमणो। ये आदेश मतुप् प्रत्यय के स्थान पर ही होते है। इसलिए धनमस्यास्तीति धणी यहां पर इन् प्रत्यय के स्थान में ये आदेश नही होते है।

२. यद् तद् तथा एतद् शब्द के परिमाण अर्थ में इत्तिअ, एत्तिअ, इत्तिल तथा एद्दह प्रत्यय होते है और उनके लगने पर शब्द के आदि व्यंजन को छोडकर शेष भाग का लोप हो जाता है। किं तथा इद शब्द से पहला प्रत्यय छोड़कर के बाकी के तीन प्रत्यय पूर्ववत् लगते है। जैसे:—जित्तिअं, जेत्तिअ, जित्तिल, जेद्दहं, तित्तिअ, तेत्तिअ, तित्तिल, तेद्दहं, इत्तिअ, एत्तिअ, इत्तिलं, एद्दहं, केत्तिअं, कित्तिल, केद्दहं, एत्तिअ, इत्तिल, एद्दह।

३. भावार्थक जो त्व और तल् प्रत्यय है उनके स्थान में इमा और त्तण प्रत्यय विकल्प से होते है जैसे:— पीनस्य भावः पीणिमा, पीणत्तणं पक्ष में पोणत्त, पीणआ।

४. तुल्यार्थक 'वत्' प्रत्यय के स्थान पर 'व्व' आदेश होता है। जैसे:—सा गयव्व गच्छइ, गजेन तुल्य=गयव्व, 'वत्' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय सज्ञक होता है इसलिए विभक्तिया नही लगती है।

५. पञ्चम्यर्थक 'तस्' प्रत्यय के स्थान पर 'त्तो' और 'ओ' तथा सप्तम्यर्थक 'त्र' प्रत्यय के स्थान पर 'त्थ, हि और ह' आदेश होते है। जैसे:— सर्वतः=सव्वत्तो, सव्वओ, एकतः= एगत्तो, एगओ, अन्यतः=अण्णत्तो, अण्णओ, कुतः=कत्तो, कओ,

यतः=जत्तो, जओ इत्यादि। त्र—कुत्र=कत्थ, कहि, कह. यत्र=जत्थ, जहि, जह अन्यत्र=अण्णत्थ, अण्णहि, अण्णह इत्यादि।

६. संख्यावाचक शब्द से 'वार' इस अर्थ में हुए कृत्वसुच्-प्रत्यय के स्थान पर हुत्त आदेश होता है। जैसे:—शतबारमिति=सयहुत्त (शतकृत्वः) सोवार, तिहुत्तं (त्रिकृत्वः)—तीनबार, धा प्रत्यय लगाने पर तो सत्तहा, तिहा इत्यादि होते है। कृत्वसुच्-प्रत्ययान्त की भी अव्यय सज्ञा होती है।

७. शील, धर्म और साधु अर्थ मे इर प्रत्यय होता है। उन अर्थो मे से शील अर्थ में धातु से 'इर' प्रत्यय होता है। जैसे—हसनशील=हसिरो, भ्रमणशील=भमिरो, लज्जाशील=लज्जिरो उदाहरण:—इत्थी लज्जिरा इत्यादि।

८. तस्येदम् इस अर्थ में केर प्रत्यय होता है। जैसे:—युष्माकमयमिति=तुम्हकेरो (युष्मदीयः), अस्माकमयमिति=अम्ह-केरो (अस्मदीय.)।

तुम्ह तथा अम्ह शब्द के इदं इस अर्थ में एच्चअ प्रत्यय विकल्प से लगता है। जैसे:—तुम्हेच्चअ, अम्हेच्चअं, पर तथा राअ शब्द के इद इस अर्थ में क्क तथा इक्क प्रत्यय विकल्प से लगते है। जैसे:— पारिक्क, पारक्कं, पारकेरं; राइक्कं, राअक्कं, राअकेर, सव्वग तथा पह शब्द के इद इस अर्थ में इअ और अप्प शब्द के इदं इस अर्थ में णअ प्रत्यय लगता है। जैसे:—सव्वगिओ, पहिओ, अप्पणअं।

९. तत्रभव इस अर्थ में इल्ल और उत्ल प्रत्यय होते है। जैसे:— ग्रामे भवः– गामिल्लो, पुरिल्लो, हेठिल्लो (अधो भव इत्यर्थः) आत्मनि भवः–अप्पुल्लो ।

१०. स्वार्थ में अ, इल्ल और उल्ल प्रत्यय होते है और त्व तथा तल् प्रत्ययान्त से स्वार्थ में पुनः त्व तथा तल् प्रत्यय होते है। जैसे:— अ–पिञ्जरमेव–पिजरअ, गगनमेव–गयणअं, किसी स्थान पर दो बार अ प्रत्यय होता है । बहुएव बहुअअं इल्ल- पल्लव एव पल्लविल्लो, पुरा एव पुरिल्लो, उल्ल–मुखमेव मुहुल्ल, हस्तौ एव हत्थुल्ला इत्यादि, त्व–मृदुत्वमेव मिउत्तत्तं, मइत्तत (मृदुत्वकमित्यर्थः)।

नव, एक्क तथा उपरि शब्द से स्वार्थ में ल्ल प्रत्यय होता है। जैसे— नवल्लो, एक्कल्लो, अवरिल्लो, मीस शब्द से स्वार्थ में डालिअ तथा दीह शब्द से र प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे:— मीसालिअं पक्ष में मीम; दीहर पक्ष में दीहं, विज्जु, पत्त, पीअ तथा अन्ध शब्द से स्वार्थ में ल प्रत्यय विकल्प से लगता है। जैसे-- विज्जुला, पत्तल, पीअल, अन्धलो, पक्ष में विज्जू, पत्तं, पीअ. अन्धो।

११. एक्क शब्द से काल अर्थ में सि, सिअं, और इआ प्रत्यय विकल्प से होते है। जैसे--एक्कसि, एक्कसिअं, एक्क- इआ; पक्ष में एक्कआ ।



शब्द

णेह (स्नेह) पु. प्रेम, प्रीति
दया (दया स्त्री. दया, अनुकम्पा
लज्जा (लज्जा) स्त्री. लाज, शर्म
ईसा (ईर्ष्या) स्त्री. ईर्ष्या
समिद्धि (समृद्धि) स्त्री. वैभव, ऋद्धि
कुलीण (कुलीन) वि. खानदान
कुरूव (कुरूप) वि. खराब रूप
अलंकार (अलकार पु. गहना आभूषण
विज्जा (विद्या) स्त्री. विद्या, ज्ञान
सोहा (शोभा) स्त्री. शोभा, सुन्दरता
रसाल (रसाल) वि रसयुक्त
रस (रस) पु स्वाद, स्वादयुक्त प्रवाहीपदार्थ
पवण (पवन) पु एक राजा का नाम, वायु
हणुमन्त (हनुमत्) पु. हनुमान पवन राजा का पुत्र
अअ (अज) पु. बकरा

गामिल्ल (ग्राम्य) वि. ग्रामवासी
पुरिल्ल (पौर) वि. नागरिक नगर में रहने वाला
अप्पुल्ल (आत्मिक) वि. आत्म संबधी
आणंद (आनंद) पु. आनन्द
भत्त (भक्त) पु. सेवक- अनुचर
सिरि (श्री) स्त्री. पैसा- लक्ष्मी शोभा
वित्त (वित्त) न. पैसा- लक्ष्मी
गव्व (गर्व) पु. अभिमान- घमंड मद
आइच्च (आदित्य) पु. सूर्य
किरण (किरण) पु. किरण
मिउ (मृदु) वि. कोमल
वल्लह (वल्लभ) वि. प्रिय, वत्सल
उ (तु) अ. तो
पिंजर (पिंजर) न. पिंजरा
गयण (गगन) न. आकाश
दिणअ (दिन) न, दिवस, दिन
रत्तिआ (रात्रि) स्त्री. रात्रि
पल्लव (पल्लव) पु. कोमलपत्ता

शब्द

भक्खण [भक्षण] न खाना

पीणिमा [पीनत्व] स्त्री. पुष्टता मोटापन

गोवच्छ [गोवत्स] पु. बछड़ा

किस [कृश] वि. पतला

णिवट्ट [नि+वृत्त] वि. लौटा

भमिर [भ्रमिष्णु] वि. घुमने के स्वभाव वाला

केरिस [कीदृश] वि. किस प्रकार- कैसा

जग [जगत्] न. दुनिया, ससार

विजअ [विजय] पु. विजय

धुवं [ध्रुवम्] अ. निश्चय

सहिरत्तण [सहिष्णुता] पु. सहनशीलता

धातु

परिभंस [परि+भ्रंश्] भ्रष्ट होना

आच्छाअ [आ+छद्+णि] ढाँकना, दबाना

रंज [रंज्] क्रीड़ा करना, प्रसन्न करना

कंप [कम्प्] कांपना, धूजना

वाक्य

हिन्दी मे अनुवाद करो

१. जो णेहालू सो दयालू वा लज्जालू हवइ। २. ईसालुणो मणं परस्स समिद्धि दट्ठूण सया सयमेव तवइ। ३. सा कुलीणा इत्थी अकज्जम्मि लज्जालुआ अत्थि। ४. कुरूवो वि वत्थालंकारं विणा वि विज्जाए सोहिल्लो दीसइ। ५. रे रे रसालफलमोअसि

किं रसं णो। ६. पवणस्स पुत्तो हणुमन्तो रामस्स भत्तो अहेसि। ७. सिरिमन्ता वि जइ वित्तेण परमत्थं ण कुणिज्जा तया अन्नेसि का कहा। ८. गव्विरो जणो गव्वेण विणअत्तो परिभंसइ। ९. मए सअहुत्तं तस्स कहिअं तह वि माणइत्तो स जणो ण मणइ। १०. अहो इमस्स अअस्स जवभक्खणेण पोणिमा ! । ११. अस्स दीणस्स गोवच्छस्स उ किसत्तामज्झ वि ण णिवट्टं। १२. एगत्तो धम्मिणो धम्मोवएसं कुणन्ति, अन्नओ अहम्मिणो अहम्मं कुणन्ति, एत्थ को जिणेहिइ। १३. जहि वाणिआ वसन्ति तहिं तस्स गिह-मत्थि। १४. अयं भमिरो बालो अम्हकेरं वयणं ण मणइ। १५. स गामिल्लो जणो पुरिल्लजणाण कहाए किं जाणइ ? । १६. अप्पुल्लो आणंदो जाव ण जाणिज्जइ, ताव अन्नेसु विसयसुहेसु जणा रंजन्ति। १७. पिजरअम्मि ठिओ पक्खी गयणअम्मि उड्डे-उमिच्छइ। १८. सावया दिणअम्मि भुंजन्ति, रत्तिआए कयावि ण भोत्तव्व। १९. पभाअम्मि आइच्चकिरणेहिं तरूणो पल्ल-विल्ला सोहन्ते। २०. स हत्थुल्लेहिं मुहुल्लमाच्छाएऊण भयाओ कंपइ। २१. अहो अस्स हियअस्स केरिसं मिउत्तात्तं अणेण स जगवल्लहो होहीअ। २२. धणवंताणं गेहेसु पंडिआ वि किंकरव्व-चिट्ठन्ति। २३. पाणस्स पहणे जाओ वि इमो अकज्जं न कुणइ।

प्राकृत में अनुवाद करो

१. बुद्धिमान् मनुष्य सर्वत्र विजय प्राप्त करता है। २. दयालु मनुष्य सब का प्रिय होता है। ३. उसका मुख सदा

प्रसन्न दिखता है । ४. उसके भाई अत्यन्त धनवान् हैं । ५, नगर वासी लोग निपुण और विद्वान् होते हैं। ६. एक ओर सहन-शीलता दिखती है और दूसरी ओर क्रोधरूपी अग्नि फैल रही है । ७. धनवानों की अपेक्षा विद्यावान् मनुष्य श्रेष्ठ होते हैं। ८. धार्मिक मनुष्य नीति के मार्ग को कभी भी नहीं छोडते है । ९. वह सभी प्राणियों को अपनी आत्मा की तरह देखता है । १०. वह परस्त्री को माता और बहन की तरह मानता है। ११. हम ग्रामीणों के साथ रहते हैं । १२. जहां कोई भी मना नहीं करता है वहां हम रहते है । १३. गुरु–भक्तिवाला मनुष्य आत्मिक आनन्द प्राप्त करता है ।



अभ्यास—२१ वां.

१— द्वि शब्द तथा नि उपसर्ग के इकार को प्रायः उकार हो जाता है ।× जैसे :—

द्विमात्रः	दुमत्तो ।	द्विरेफः	दुरेहो
द्व्यादिः	दुआइ ।	द्विवचनम्	दुवयणं
द्विविधः	दुविहो ।	निमज्जति	णुमज्जइ
		निमग्नः	णुमवो

× क्वचित् विकल्प से होता है । जैसे —

द्विगुण. दुउणो, विउणो । द्वितीय, दुइओ, विइओ ।

[illegible] है । जैसे – दिओ (द्विजः) ।

२— उप उपसर्ग को विकल्प से ऊ तथा ओ होता है। जैसे.—

उपहसितम्	ऊहसिअं,	ओहसिअं,	उवहसिअं
उपाध्यायः	ऊज्झाओ,	ओज्झाओ,	उवज्झाओ
उपवासः	ऊआसो,	ओआसो,	उववासो

३— अव तथा अप उपसर्ग को और विकल्पार्थक जो उत अव्यय है उसको प्रायः विकल्प से ओ हो जाता है।+ जैसे—

अवतरति	ओअरइ,	अवयरइ ।
अवकाशः	ओआसो	अवयासो ।
अपसरति	ओसरइ,	अवसरइ ।
अपसारितम्	ओसारिअं,	अवसारिअं।
उतवनम्	ओवणं,	उअवणं ।
उतघनः	ओघणो,	उअघणो ।

४--पद से पर जो अपि अव्यय है उसके आदि अकार का विकल्प से और इति अव्यय के आदि इकार का नित्य लोप होता है और स्वर से पर यदि इति अव्यय हो तो उससे तकार को द्वित्व हो जाता है। जैसे--

तमपि	तंपि,	तमवि।	किमिति	किंति
किमपि	किंपि,	किमवि।	यमिति	जंति
केनापि	केणपि	केणावि।	दृष्टमिति	दिट्ठंति

+ कहीं पर नहीं होता है। जैसे—

अवगतं अवगय। अपशब्दः अवसद्दो। उतरविः उअरवी।

कथमपि	कहंपि, कहमवि ।	युक्तमिति	जुत्तंति
तथेति	तहत्ति ।	प्रिय इति	पिम्रोत्ति
झगिति	झत्ति ।	पुरुष इति	पुरिसोत्ति

५. वाक्य के प्रारम्भ में आया हुआ इति अव्यय के 'ति' में रहे हुए इकार को अकार होता है। जैसे-इअ जंपि आवसाणे।

६--मयट् प्रत्यय के आदि आकार को विकल्प से अइ होता है। जैसे-- विषमयः　विसमइओ,　विसमओ ।

७-- कोई भी अव्यय के आदि आकार का विकल्प से अकार होता है । जैसे—

यथा	जह,	जहा ।	वा	व,	वा।
तथा	तह,	तहा ।	हा	ह,	हा।
अथवा	अहव,	अहवा ।			

८--मात्रच् प्रत्यय के आकार को विकल्प से एकार होता है। जैसे--

एतावन्मात्रम् — एत्तिअमेत्तं,　एत्तिअमत्तं ।

९— तीय, अनीयर् तथा कृदन्त में आये हुए य प्रत्यय के यकार को विकल्प से ज्ज होता है। जैसे--

द्वितीयः — विइज्जो, बीओ ।

करणीयम्— करणिज्जं, करणीअं। पेया-पेज्जा, पेआ ।

१०. वृषादि धातु के ऋकार को अरि आदेश होता है। जैसे--

वृष् – वरिस । मृष् – मरिस ।
कृष् – करिस । हृष् – हरिस ।

११-- रुषादि धातुओ के उपान्त्य स्वर को दीर्घ हो जाता है। जैसे---

रुष् – रूस । दुष् – दूस !
तुष् – तूस । पुष – पूस ।
सुष् – सूस । शिष् – सीस ।

१२--- धातुओ में कही पर एक स्वर के स्थान पर दूसरा स्वर हो जाता है विकल्प से×। जैसे--

हवइ, हिवइ। धावइ, धुवइ।
चिणइ, चुणइ। रुवइ, रोवइ।
सद्दहणं, सद्दहाण।

१३. शकादि धातुओं के अन्त्य वर्ण को द्वित्व होता है। जैसे--

शक् — सक्क । सिव् — सिव्व ।
जिम् — जिम्म । स्फुट् – फुट्ट, फुड ।
लग् — लग्ग । चल् – चल्ल, पक्ष में चल ।
मग् — मग्ग । प्र+मिल् – पमिल्ल पक्ष में पमील ।

× कही पर नित्य होता है। जैसे— देइ, लेइ, विहेइ, नासइ।

कुप् — कुप्प । नि+मिल्–निमिल्ल पक्ष में निमील।
नश् — नस्स । सम्+मिल् – संमिल्ल पक्ष मे संमील।
अट् — अट्ट ।
लुट् — लोट्ट । उद्+मिल् – उम्मिल्ल पक्ष में उम्मील।
तुट् — तुट्ट ।
नट् — नट्ट ।

शब्द

जस (यशस्) पु. यश, कीर्ति
जम्म (जन्मन्) पु. जन्म, उत्पत्ति
पाउस (प्रावृष्) पु. वर्षाऋतु, चौमासा
सरअ (शरत्) पु. शीत ऋतु
तरणि (तरणि) पु. सूर्य
महिम (महिमन्) पु.–स्त्री. गौरव
अंजलि (अञ्जलि) पु-स्त्री. हथेली
नहि (निधि) पु.-स्त्री. भंडार,
नयण (नयन) पु-न. आँख
वयण (वचन) पु-न. वचन
माहप्प (माहात्म्य) पु.–न. माहात्म्य
लुम्बी (लुम्बी) स्त्री. केले के अग्र भाग में लटका हुआ फूल
धीवर (धीवर) पु. मछुआ
बब्बर (बर्बर) त्रि. जंगली, मूर्ख
गुण (गुण) पु. गुण
देव (देव) पु.–न देव
अच्छि (अक्षि) पु.-स्त्री.-न. आँख
दाम (दामन्) न. माला
सिर (शिरस्) न. मस्तक
नह (नभस्) न. आकाश
सेय (श्रेयस्) न. कल्याण
वय (वयस्) न. आयु
सुमण (सुमनस्) न. फूल, पुष्प
सम्म (शर्मन्) न. सुख
चम्म (चर्मन्) न. चमड़ा
निक्किट्ठ (निकृष्ट) त्रि अधम
मिलाण (म्लान) त्रि. मुरझाया हुआ

सरम्भ (संरम्भ) पु. कोप का आडबर, सूर्य की किरणो का विस्तार

दोवारिअ (दौवारिक) पु० द्वारपाल

कयली (कदली) स्त्री. केला

पहिअ (पथिक) त्रि. मुसाफिर, राहगीर

भसल (भ्रमर) पु. भँवरा

मिहुण (मिथुन) न. सयोग, कामभोग

कंचणार (काञ्चनार) पु एक तरह का वृक्ष

लच्छी (लक्ष्मी) स्त्री. लक्ष्मी

मालारी (मालाकारी) स्त्री. मालण

लवली (लवली) स्त्री. लता विशेप

केअई (केतकी) स्त्री. केतकी

चीरी (चीरि) स्त्री. नेत्राच्छादन वस्त्र

उच्चिणिरी (उच्चेत्री) स्त्री. चुनने वाली

दरवलिअ (दे.) त्रि. भोगा हुआ

पुलइअ (पुलकित) त्रि. रोमाचित, प्रसन्न

विलया (वनिता) स्त्री. स्त्री

पयट्ट (प्रवृत्त) त्रि. प्रवृत्त हुआ

दक्खरस (द्राक्षारस) पु. दाख का रस

पसविर (प्रसवशील) त्रि. उत्पादक

उम्मीलण (उन्मीलन) त्रि. खोलना

लय (लय) पु. साम्यावस्था

चुलुक्क (चौलुक्य) पु. चौलुक्य वश

जाइ (जाति) स्त्री. चमेली का झाड़, ब्राह्मण आदि जाति

विहि (विधि) पु. ब्रह्मा

गिम्हसिरी (ग्रीष्मश्री) स्त्री. ग्रीष्म ऋतु की शोभा



धातु

वि+अस (वि+कस्) विकास पाना

सुरह (सुरभ) ना. धा. सुगन्धित करना

निअ (दृश्) देखना

अव्यय

तं— वाक्योपन्यास अर्थ में

पुणरुत्तं— दुबारा कथन

हन्दि— विषाद, विकल्प, निश्चय तथा सत्य अर्थ में

हन्द— लेवो इस अर्थ में

बले—निर्धारण तथा निश्चय अर्थ में

णवरि— आनन्तर्य अर्थ में

वेव्वे— भय, निवारण तथा विषाद अर्थ में

वेव्व— आमन्त्रण अर्थ में

मामि, हला, हले —सखी के आमन्त्रण अर्थ में

दे—संमुखीकरण तथा सखी के आमंत्रण अर्थ में

हुं—दान, प्रश्न तथा निवारण अर्थ में

ऊ— गर्हा, आक्षेप, विस्मय, तथा सूचना अर्थ में

थू— तिरस्कार अर्थ में

हरे— आक्षेप, संभाषण तथा रतिकलह अर्थ में

अव्वो—सूचना, दुःख, संभाषण अपराध, विस्मय, आनंद आदर, भय, खेद, तथा पश्चात्ताप अर्थ में

अइ— संभावना अर्थ में

वणे— निश्चय, विकल्प तथा अनुकम्पा अर्थ में

मणे— विचार करने के अर्थ में

इहरा — अन्यथा

इ, जे, र —पाद पूर्ति अर्थ में इन का प्रयोग होता है।

गाथाएं

लंबंतलुम्बि रंभारम्भियतोरणनिरुद्धसंरंभो ।
सरएवि पाउसम्मिव न जत्थ दीसइ फुडो तरणी ॥१॥
जत्थ चुलुक्कनिवाणं परिमलजम्मो जसो कुसुमदामं ।
नहम् इव सव्वगओ दिसरमणीण सिराइँ सुरहेइ ॥२॥
सव्ववयाणं मज्झिमवयव सुमणाण जाइसुमणं व ।
सम्माण मुत्तिसम्मं व पुहइनयराण ज सेयं ॥३॥
चम्मं जाण न अच्छी णाणं अच्छीइ ताणवि मुणीण ।
विअसन्ति जत्थ नयणा किं पुण अन्नाण नयणाइं ? ॥४॥
गुरुणो वयणा वयणाइं ताव महप्पम् अवि य माहप्पो ।
ताव गुणाइंपि गुणा जाव न जस्सि बुहे निअइ ॥५॥
हरिहरविहिणो देवा जत्थन्नाइंवि वसन्ति देवाइं ।
एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुरपुरीए ॥६॥
जत्थञ्जलिणा कणय रयणाइवि अञ्जलीइ देइ जणो ।
कणयनिही अक्खीणो रयणनिही अक्खया तहवि ॥७॥

(कु० च० प्रथमे सर्गे २१-२७)

तं निवपुच्छिअदोवारिएण भणिअं ति आम गिम्हसिरी ।
उण्हेह सीअलाणवि कयलिवणे पेच्छ पुणरुत्तं ॥८॥
"हन्दिविदेसो ! जीवइ हन्दि पिआ ? हन्दि किं पिआ मुक्का ? ।
हन्दि मरण जम्मो गिम्हो हन्दि" लवन्ति इअ पहिआ ॥९॥
"हन्द महु हन्दि परिमलम् इमं" व्व भणिरेहि भसलमिहुणेहि ।

उअ सहइ कञ्चणारो मउडो इव गिम्ह लच्छीए ॥१०॥
जणणिं मिव धूअंपिव नत्तिविअ सोअरं विव सहिंव ।
मालारीओ सिणेहा नवकञ्चणकेअइम् उवेन्ति ॥११॥
जेणं अहुल्ला लंवली वोलीणा णइ वंसन्तउउलच्छी ।
फुल्लं च्चंच धूलिकम्बं तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी ॥१२॥
फुल्लच्च सुगन्धच्चिअ लयाण नोमालिआ बले रम्मा !
जा किर मल्ली जा इर जवा बले ते मयणबाणा ॥१३॥
सुत्ते जणम्मि जोहिर सद्दो चीरीण सुव्वए णवर ।
गाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तस्स गिम्हसिरी ॥१४॥
पहिआ अलाहि गन्तुं अणदइआण कुसलाइं इह णाइं ।
माइं इह एध हद्धी इअव्व चीरीहि उल्लविअं ॥१५॥
संमुहोट्ठि अम्मि भसरे वेव्वेत्ति भणेइ मल्लि उच्चिणिरी ।
वारणखेअभएहि भणिउं वेव्वे वयसेत्ति ॥१६॥
वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद मामि रम जासि कत्थ हले ।
दे पसिअ किमसि रुट्ठा ? हुं गिण्हसु कणय भायणयं ॥१७॥
हुं तुह पिओ न आओ ? हु कि तेणज्ज ? सो हु अन्न रओ ।
सुमयं खु माणइत्ता तस्स हु जुग्गा सि सा खु न त ॥१८॥
सहि वव्वरो खु अह धीवरो हु एसो खु तुज्झ ऊ रमणो ।
ऊ इअ हसेइ लोओ इमम्मि ऊ किं मए भणिअं ॥१९॥
ऊ अच्छरा मह सही थू रे निक्किट्ठ कलहसील अरे ।
दासो सि इमाइ हरे सढो सि ओ ओ किमसि दिट्ठो ॥२०॥

अव्वो नओ तुह पिओ अव्वो तम्मेसि कीस ? किं एसो ।
अव्वो अन्नासत्तो ? अव्वो तुज्झेरिसो माणो ? ॥२१॥

अव्वो पिअस्स समओ ! अव्वो सो एइ रूसणो अव्वो ।
अव्वो कट्ठं ! अव्वो किं एसो सहि मए वरिओ ॥२२॥

अइ एसि रइघराओ वणे मिलाणा सि दइअ दरवलिआ ।
मुणिमो वणे न मुणिमो तं न वले कहइ नजम् अंगं ॥२३॥

दासो वणे न मुच्चइ मणे पिओ तुज्झ मुच्चइ स अम्मो ।
पत्तो खु अप्पणोच्चिअ तए सयं चेअ निउणाए ॥२४॥

पाडिक्कं दइआओ ताण वयंसीओ पाडिएक्क च ।
पत्तोअं मित्ताइं उअ एसो एइ भासन्तो ॥२५॥

देक्ख तुहेसो दइओ कहम् इहरा पुलइआ सि दट्ठुम् इमं ।
भणिओ न वयम् इअरहा मुणिअम् इमं एक्कसरिअंति ॥२६॥

मा तम्म मोरउल्ला दरविअसिअ बन्धुजीवकुसुमोट्ठि ।
अणुसोचसि धुत्तम् इमं सरलसहावे किणो रमणं ॥२७॥

वारविलया इ एआ गिम्हसुहं माणिउं पयट्टा जे ।
इअ जवि तपि लविराओ पिअन्ति र पिक्कदक्खरसं ॥२८॥

(कु. च चतुर्थे सर्गे १–२१)

अणउम्मिल्लि अनाणोम्मीलणआ हरिसपसविरा लोह ।
सुअजलम् ओज्झाया पवरिसन्तु वित्थरिअगुणमरिआ ॥२९॥

नो रूसइ नो तूसइ जेऊण मणं लयम्मि जो नेन्तो ।
मोत्तुं भवं विणीअं तं साहुजणं नमंसामि ॥३०॥

उप्पाइअसद्दहणो असद्दहाणेवि देइ जो बोहि ।
संसारनासिरो ह तं साहुं चिय विहेमि गुरुं ॥३१॥

(कु. च. सप्तमे सर्गे ६२–६७)

अभ्यास—२२ वां.

कारक, समास, तद्धित तथा सन्नन्त आदि प्रक्रिया और जिनके विषय में कुछ भी नहीं कहा गया है—ऐसी कृदन्त विधि के सब कार्य को संस्कृत के समान समझ लेना चाहिये। तात्पर्य यह है कि कर्तृ प्रत्यय अथवा कर्म प्रत्यय आदि करने पर जैसे प्रातिपदिक से प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियां जैसी संस्कृत में आती हैं वैसी ही विभक्तियां प्राकृत में भी आती हैं।

समास के विषय में भी अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय इत्यादि समास योग्यता के अनुसार संस्कृत के समान ही प्राकृत में भी होते हैं।

तद्धित तथा कृदन्त के विषय में जो नियम पहले बतला चुके हैं उन के अतिरिक्त तद्धित और कृदन्त के रूप संस्कृत सिद्ध रूपों में नियमावली के नियमों को लगाने से प्राकृत में सिद्ध हो जाते हैं।

कारक

संस्कृत		प्राकृत
कुलालो घटं करोति	—	कुलालो घडं कुणइ.
कुलालेन घटः क्रियते	—	कुलालेण घडो करिज्जइ.
दण्डेन घटः क्रियते	—	दण्डेण घडो करीअइ.
साधुभ्योऽन्नं ददाति	—	साहूणमन्नं देइ.

संस्कृत		प्राकृत
पर्वतात् प्रस्तरः पतति	—	पव्वआओ पत्थरो पडइ.
गृहस्थानामिदं धनम्	—	गिहत्थाणमिणं धणं.
शिलायामास्ते	—	सिलाए अच्छइ.
गृहे तिष्ठति	—	गिहे चिट्ठइ.

समासों के उदाहरण

अव्ययीभाव

घटस्य समीपमुपघटम्	।	उवघडं दीवो अत्थि.
सुखमनतिक्रम्य यथासुखम्	।	जहासुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंधं करेह.

तत्पुरुष

जिनं श्रितो जिनश्रितः	।	जिणस्सिओ जिणभत्तो.
धनेन क्रीतं धनक्रीतम्	।	धणकीअमिदं वत्थं.
दानाय धनं दानधनम्	।	दाणधणं जाव विढत्तं ताव सफलं.
पापाद् भयं पापभयम्	।	अस्स मणम्मि सया पावभयं वट्टइ
राज्ञः पुरुषः राजपुरुषः, धर्मे कुशलो धर्मकुशलः		इमो राअपुरिसो खलु धम्मकुसलो अत्थि।

द्वन्द्वसमास

धर्मश्चार्थश्च कामश्च मोक्षश्च धर्मार्थकाममोक्षाः	धम्मत्थकाममोक्खा चत्तारि पुरिसत्था.
हस्तौ च पादौ च तयोः समाहारः हस्तपादम्	तस्स हत्थपाअं सुकुमालं अत्थि.

ईषदपरिसमाप्तःपटु पटुदेश्यः— अयं बालो पडुदेस्सो.

मृत्तिकाया विकारो मृत्तिकामयो घटः — मट्टिग्रामयो घडो.

द्वारि नियुक्तो दौवारिकः — अंतरं रिएउं दोवारिअं पुच्छइ.

न्यायमधीते वेद वा नैयायिकः— नेयाइओ पंडिओ.

लज्जा संजाताऽस्य लज्जितः — पावेण लज्जिअो पच्छा तवइ.

अतिशयेन लघु लघीयान् लघिष्ठः — लहिट्ठो लहीओ वा.

आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति — पुत्तीयइ देवदत्तो.

कलहं करोति कलहायते — कलहायइ.

श्येन इवाचरतिश्येनायते — सेणायइ कागो.

द्वयोस्त्रयाणां वा संख्यापुरकः द्वितीयस्तृतीयः — बिईओ तईओ वा.

शतवारानिति शतशः — सअसो सहस्ससो वा संसारे भमिओ

प्रक्रिया

पक्तुमिच्छति पिपक्षति — सूओ ओयणं पिवक्खइ.

गन्तुमिच्छति जिगमिषति — स गामं जिगमिसइ.

कृदन्त

करोतीति कर्त्ता — कारकः — कुलालो घडस्स कत्ता— कत्तारो कारओ वा.

ददातीति दाता - दायकः — दाआ, दाअगो वा इमो जणो ।

तपति ज्वलति वा तपनः ज्वलनः—तवणो जलणो वा अग्गी ।

कर्मधारय

नीलं च तदुत्पलं च नीलोत्पलम् । णीलुप्पलंव्व तस्स मुहं.

महांश्चासौ पुरुषश्च महापुरुषः । महापुरुसस्स वयणमन्नहा ण हवइ.

मुखं चन्द्र इव मुखमेव वा चन्द्रः मुखचन्द्रः] जिणस्स मुहचन्दो सोहइ.

न हिंसा अहिंसा । अहिंसा संजमो तवो धम्मो.

बहुव्रीहि

बहु धनं यस्य स बहुधनः । × बहुधणो (बहूधणो) पुरिसो.

धर्मे बुद्धिर्यस्य स धर्मबुद्धिः । धम्मबुद्धी सव्वत्थ जयइ.

तद्धित

दशरथस्यापत्यं दाशरथिः – दासरथी रामो सीमावई.

कुंकुमेन रक्तं कौंकुमम् – कोंकुमं वत्थं धरेइ,

मथुराया आगता माथुरः – माहुरो सघो कहिं गच्छइ.

कवचानां समूहः कावचिकम् – रक्खगेहिं कावइअं रक्खीअइ.

फलमस्यास्तीति फली – इमो वच्छो फली अत्थि.

तुन्दिरस्यास्तीति तुन्दिलः – तुन्दिलो पुरिसो.

तपो विद्यतेऽस्य तपस्वी – सो साहू तवस्सी कहिज्जइ.

× समास में पूर्वपद के अन्तिम स्वर ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व विकल्प से होना है ।

ईषदपरिसमाप्त पटु पटुदेश्य:— अयं बालो पडुदेस्सो.

मृत्तिकाया विकारो मृत्तिकामयो घट: — मट्टिआमयो घडो.

द्वारि नियुक्तो दौवारिक: — अंतरं रिएउं दोवारिअं पुच्छइ.

न्यायमधीते वेद वा नैयायिक:— नेयाइओ पंडिओ.

लज्जा संजाताऽस्य लज्जित: — पावेण लज्जिओ पच्छा तवइ.

अतिशयेन लघु लघीयान् लघिष्ठ: — लहिट्ठो लहीओ वा.

आत्मन. पुत्रमिच्छति पुत्रीयति — पुत्तीयइ देवदत्तो.

कलहं करोति कलहायते — कलहायइ.

श्येन इवाचरतिश्येनायते — सेणायइ कागो.

द्वयोस्त्रयाणां वा संख्यापुरक: द्वितीयस्तृतीय: — बिईओ तईओ वा.

शतवारानिति शतश: — सअसो सहस्ससो वा संसारे भमिओ

प्रक्रिया

पक्तुमिच्छति पिपक्षति — सूओ ओयणं पिवक्खइ.

गन्तुमिच्छति जिगमिषति — स गामं जिगमिसइ.

कृदन्त

करोतीति कर्त्ता – कारक: — कुलालो घडस्स कत्ता— कत्तारो कारओ वा.

ददातीति दाता - दायक: — दाआ, दाअगो वा इमो जणो ।

तपति ज्वलति वा तपन: ज्वलन:—तवणो जलणो वा अग्गी ।

कुम्भं करोतीति कुम्भकारः – कुम्भाआरो-कुम्भारो वा.

सर्वं कषतीति सा सर्वकषा – सव्वंकसा नई.

असहायः सहायः सम्पद्यमानस्तथाकरणं सहायीकरणम् – सहाईकरणं.

पचनं पाकः – पयणं, पाओ.

पाकेन निवृत्तं पक्त्रिमं फलम् – पत्तिमं फलं.

पच्यतेऽनेनेति पचनः – पयणो अग्गी.

पच्यतेऽस्यामिति पचनी – पयणी थाली.

दुःखेन क्रियते दुष्करः – दुक्करं तवं.

कर्तुमर्हं क्रियते वा कर्तव्यम् करणीयम् – कायव्वं करणीयं वा सयणुट्ठाणं

जीयते जेतुमर्हं वा जेयं – जेयमिन्दियं.

क्रियते तत्कृत्यं कार्यं वा – किच्चं—कज्जं वा.

करणं कृतिः – इमा सुकइणो कई—इत्यादि.

स्थानं स्थितिः – एगसागरोवमठिई पण्णत्ता.

शब्द

पक्खिय (पाक्षिक) त्रि. पखवाड़ा

अबीअ (अद्वितीय) त्रि. अकेला

पुव्वरत्तावरत्त (पूर्वरात्र्यपररात्रि) न. मध्यरात्रि

राईसर (राजेश्वर) पु. महाराज

अज्झत्थिय (अध्यवसित) न. अध्यवसाय, परिणाम

हट्ठतुट्ठ (हृष्टतुष्ट) त्रि, संतुष्ट, मोटा, ताजा

अणवयग्ग (अनवदग्र) त्रि. अनंत

सपेहेत्ता (सम्प्रेक्ष्य) अ. विचार करके

शब्द

पन्नत्त (प्रज्ञप्त) त्रि. प्ररूपणा किया हुआ
अणुव्वइ (अणुव्रतिक) वि. अणुव्रत युक्त
सिक्खावइय (शिक्षाव्रतिक) त्रि. शिक्षाव्रत से युक्त
दुवालस (द्वादश) त्रि. (सं.वा) बारह
दूइज्जमाण- त्रि. चलते हुए
सद्दावेत्ता (शब्दापयित्वा) अ. बुला करके
वास (वर्ष) न. वर्ष
भत्त (भक्त) न. वक्त, टंक
खिप्पामेव (क्षिप्रमेव) अ. शीघ्र, जल्दी



उदायन राजा की कथा

तए णं से उदायणे राया अन्नया कयाइ पोसहसालाए पोसहिए एगे अबीए पक्खियं पोसहं सम्मं पडिजागरमाणे विहरइ। तओ तस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसययसि जागरियं करेमाणस्स एयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था 'धन्ना णं ते गामनगरा, जत्थ णं समणे वीरे विहरइ, धम्मं कहेइ', धन्ना णं ते राईसरपभिईओ, जे समणस्स महावीरस्स अन्तिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेन्ति, एव पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइय सावगधम्म दुवालसविहं पडिवज्जन्ति, एवं मुण्डा भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयन्ति। तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं दूइज्जमाणे इहेव वीयभए आगच्छेज्जा, ता णं अहमवि भगवओ अन्तिए मुण्डे भवित्ता जाव पव्वएज्जा'। तए णं भगवं उदायणस्स एयारूवं अज्झत्थियं जाणित्ता चम्पाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीयभए नयरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव विहरइ। तओ परिसा

निग्गया उदायणे य। तए णं उदायणे महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा हट्ठतुट्ठे एवं वयासी :—'जं नवर जेट्ठपुत्तं रज्जे अहिसिञ्चामि तओ णं तुब्भं अन्तिए पव्वयामि'। सामी भणइ:—'अहासुहं मा पडिबन्धं करेह'।

तओ णं उदायणे आभिओगियं हत्थिरयणं दुरुहित्ता सए गिहे आगए। तओ उदायणस्स एयारूवे अज्झत्थिए जाए:—'जइ णं अभिइं कुमारं रज्जे ठवित्ता पव्वयामि तो अभिई रज्जे य रट्ठे य जाव जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए अणाइयं अणवयग्गं संसारकन्तारं अणुपरियट्टिस्सइ। तं सेयं खलु मे नियग भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठवित्ता पव्वइत्तए'। एवं संपेहेत्ता सोभणे तिहिकरणमुहुत्ते कोडुम्बियपुरिसे य सद्दावेत्ता एवं वयासी 'खिप्पामेव केसिस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह। तओ महिड्ढीए अभिसित्ते केसी कुमारे राया जाए जाव पसासेमाणे विहरइ'। तओ उदायणे राया केसिं रायं आपुच्छइ :—'अहण्णं देवाणुप्पिया संसारभउव्विग्गो पव्वयामि'। तओ केसी राया कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी :—'खिप्पामेव उदायणस्स रन्नो महत्थं महरिहं निक्खमणाभिसेयं उवट्ठवेह'। तओ महया विभूईए अभिसित्ते सिवियारूढे भगवओ समीवे गन्तूण पव्वइए जाव बहूणि चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसमासद्धमासाईणि तवोकम्माणि कुव्वमाणे विहरइ।

तओ से उदायणे अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुण्डभावे तमट्ठं पत्ते जाव दुक्खपहीणेत्ति।



आदेशावली

शब्दों के आदेश

नियमावली के अपवाद रूप तथा विशेष नियमों से सिद्ध होने वाले शब्द नीचे दिये जाते है। जैसे:—

अ = आ

संस्कृत	प्राकृत
समृद्धिः	सामिद्धी समिद्धी
प्रसिद्धिः	पासिद्धी पसिद्धी
प्रकटम्	पायडं पयडं
प्रतिपत्	पाडिवआ पडिवआ
प्रसुप्तः	पासुत्तो पसुत्तो
प्रतिसिद्धिः	पाडिसिद्धी पडिसिद्धी
सदृक्षः	सारिच्छो सरिच्छो
मनस्वी	माणंसी मणंसी
मनस्विनी	माणसिणी मणंसिणी
अभियाति	आहिआइ अहिआइ
प्ररोहः	पारोहो परोहो
प्रवासी	पावासू पवासू
प्रतिस्पर्द्धी	पाडिप्फद्धी पडिप्फद्धी
अस्पर्शः	आफंसो

परकीयम्	पारकेरं पारक्कं
प्रवचनम्	पावयणं
चतुरन्तम्	चाउरन्तं
दक्षिणः	दाहिणो दक्खिणो
न पुनः	न उणा, न उण

अ = इ

स्वप्नः	सिविणो सिमिणो
ईषत्	ईसि
वेतसः	वेडिसो
व्यलीकम्	विलिअं
व्यजनम्	विअणं
मृदङ्गः	मुइंगो
कृपणः	किविणो
उत्तमः	उत्तिमो
मरिचम्	मिरिअं
दत्तम्	दिण्णं
पक्वम्	पिक्कं पक्कं
अङ्गारः	इंगालो अंगारो
ललाटम्	णिडालं णडालं
मध्यमः	मज्झिमो

कतमः	कइमो
सप्तपर्णः	छत्तिवण्णो छत्तावण्णो
	अ = आइ
न पुनः	न उणाइ, न उण
पुनः	पुणाइ
	अ = ई
हरः	हीरो हरो
	अ = उ
ध्वनि-	झुणी
विष्वक्	वीसुं
वन्द्रम्	वुन्द्रं वन्द्रं
खण्डितः	खुडिओ खण्डिओ
गवयः	गउओ गउआ
प्रथमम्	पुढुमं, पुढमं, पढुमं, पढमं
अभिज्ञः	अहिण्णू
सर्वज्ञः	सव्वण्णू
कृतज्ञः	कयण्णू
आगमज्ञः	आगमण्णू
	अ = ए
शय्या	सेज्जा
सौन्दर्यम्	सुन्देरं

कन्दुकम्	गेन्दुअं
अत्र	एत्थ
वल्ली	वेल्ली, वल्ली
उत्करः	उक्केरो उक्करो
पर्यन्तः	पेरन्तो पज्जन्तो
आश्चर्यम्	अच्छेरं अच्छरिअं अच्छअरं, अच्छरिज्जं, अच्छरीअं
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं बम्भचेरं
अन्तःपुरम्	अन्तेउरं
अन्तश्चारी	अन्तेआरी

अ = ओ

पद्मम्	पोम्मं
नमस्कारः	नमोक्कारो
परस्परम्	परोप्परं
अर्पयति	ओप्पेइ अप्पेइ
स्वपिति	सोवइ सुवइ

आ = अ

उत्खातम्	उक्खयं उक्खायं
चामरः	चमरो चामरो
कालकः	कलओ कालओ
स्थापितः	ठविओ ठाविओ

प्राकृतम्	पययं पाययं
तालवृन्तम्	तलवेंटं तालवेंटं
	तलवोंटं तालवोंटं
हालिकः	हलिओ हालिओ
नाराचः	नराओ नाराओ
बलाका	बलया बलाया
कुमारः	कुमरो कुमारो
खादिरम्	खइरं खाइरं
परिस्थापितः	परिट्ठविओ परिट्ठाविओ
सस्थापितः	सठविओ सठाविओ
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठं
मांसम्	मस
पासुः	पसू
पांसनः	पसणो
कास्यम्	कसं
कांसिकः	कसिओ
वांशिकः	वसिओ
पांडवः	पंडवो
सांसिद्धिकः	ससिद्धिओ
सांयात्रिकः	संजत्तिओ
श्यामाकः	सामओ
आचार्यः	आयरिओ

आ = इ

सदा	सइ सश्रा
निशाचरः	निसिअरो निसाअरो
कूर्पासः	कुप्पिसो कुप्पासो
आचार्यः	आइरिओ

आ = ई

स्त्यानम्	ठीणं, थीणं, थिण्णं
खल्वाटः	खल्लीडो

आ = उ

सास्ना	सुण्हा
स्तावकः	थुवओ
आर्द्रम्	उल्लं, अल्लं

आ = ऊ

आसारः	ऊसारो आसारो
आर्या (श्वश्रू)	अज्जू

आ = ए

ग्राह्यम्	गेज्झं
द्वारम्	देरं, दुआरं, दारं, वारं
पारापतः	पारेवओ पारावओ

आ = ओ

आर्द्रम्	ओल्लं, अल्लं
आली (पंक्ति)	ओली

इ = ए

किंशुकम्	केसुअं किंसुअं
मिरा	मेरा

इ = अ

पन्थाः	पहो
पृथिवी	पुहई, पुढवी
प्रतिश्रुत्	पडंसुआ
मूषिकः	मूसओ
हरिद्रा	हलद्दी, हलद्दा
बिभीतकः	बहेडओ
शिथिलम्	सढिलं, सिढिलं
इङ्गुदम्	अंगुअं इंगुअं
तित्तिरिः	तित्तिरो

इ = ई

जिह्वा	जीहा
सिंहः	सीहो

त्रिंशत्	तीसा
विंशतिः	वीसा

इ = उ

प्रवासिकः	पावासुओ
इक्षुः	उच्छू
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो
द्विधाक्रियते	दुहाकिज्जइ
द्विधाकृतम्	दुहाइअं

इ = ओ

द्विधाक्रियते	दोहाकिज्जइ
द्विधाकृतम्	दोहाइअं
निर्झरः	ओज्झरो निज्झरो

ई = अ

हरीतकी	हरडई

ई = आ

कश्मीराः	कम्हारा

ई = इ

पानीयम्	पाणिअं
अलीकम्	अलिअं

जीवति	जिअइ
जीवतु	जिअउ
व्रीडितम्	विलिअं
करीषः	करिसो
शिरीषः	सिरिसो
द्वितीयम्	दुइअं
तृतीयम्	तइअं
गभीरम्	गहिरं
उपनीतम्	उवणिअं
आनीतम्	आणिअं
प्रदीपितम्	पलिविअं
अवसीदन्तम्	ओसिअन्तं
प्रसीद	पसिअ
गृहीतम्	गहिअं
वल्मीकः	वम्मिअो
तदानीम्	तयाणिं

ई = उ

जीर्णम्	जुण्णं

ई = ऊ

हीनः	हूणो, हीणो

त्रिंशत्	तीसा
विंशतिः	वीसा

इ = उ

प्रवासिकः	पावासुओ
इक्षुः	उच्छू
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो, जहिट्ठिलो
द्विधाक्रियते	दुहाकिज्जइ
द्विधाकृतम्	दुहाइअं

इ = ओ

द्विधाक्रियते	दोहाकिज्जइ
द्विधाकृतम्	दोहाइअं
निर्झरः	ओज्झरो निज्झरो

ई = अ

हरीतकी	हरडई

ई = आ

कश्मीराः	कम्हारा

ई = इ

पानीयम्	पाणिअं
अलीकम्	अलिअं

उ = आ

बाहुः (स्त्री,)	बाहा

उ = इ

भ्रुकुटिः	भिउडी
पुरुषः	पुरिसो
पौरुषम्	पउरिसं

उ = ई

क्षुतम्	छीअं

उ = ऊ

सुभगः	सूहवो, सुहओ
मुसलम्	मूसलं, मुसलं
उत्सुकः	ऊसुओ
उत्सवः	ऊसओ
उत्सिक्तः	ऊसित्ता
उत्सरति	ऊसरइ
उच्छुकः[1]	ऊसुओ
उच्छ्वसिति	ऊससइ

---

1. उद्गताः शुका यस्मात्स उच्छुकः

विहीनः	विहूणो, विहीणो
तीर्थम्	तूहं, तित्थं

ई = ए

पीयूषम्	पेऊसं
आपीडः	आमेलो
विभीतकः	वहेडओ
कीदृशः	केरिसो
ईदृशः	एरिसो
नीडम्	नेडं, नीडं
पीठम्	पेढं, पीढं

उ = अ

मुकुलम्	मउलं
मुकुरम्	मउरं
मुकुटम्	मउडं
अगुरु	अगरुं
गुर्वी	गरुई
युधिष्ठिरः	जहिट्ठिलो, जहुट्ठिलो
सौकुमार्यम्	सोअमल्लं
गुडूची	गलोई
उपरि	अवरिं, उवरिं
गुरुकः	गरुओ, गुरुओ

उ = आ

बाहुः (स्त्री,)	बाहा

उ = इ

भ्रुकुटिः	भिउडी
पुरुषः	पुरिसो
पौरुषम्	पउरिसं

उ = ई

क्षुतम्	छीग्रं

उ = ऊ

सुभगः	सूहवो, सुहग्रो
मुसलम्	मूसलं, मुसलं
उत्सुकः	ऊसुग्रो
उत्सवः	ऊसग्रो
उत्सिक्तः	ऊसित्ता
उत्सरति	ऊसरइ
उच्छुकः[1]	ऊसुग्रो
उच्छ्वसिति	ऊससइ

---

1. उद्गताः शुका यस्मात्स उच्छुकः

उ = ओ

कुतूहलम्	कोऊहलं, कोउहल्लं, कुऊहलं

ऊ = अ

सूक्ष्मम्	सण्हं, सुण्हं
दुकूलम्	दुअल्लं, दुऊलं

ऊ = इ

नूपुरम्	निउरं, नूउरं

ऊ = ई

उद्व्यूढम्	उव्वीढं, उव्वूढं

ऊ = उ

भ्रूः	भुमया
हनुमान्	हणुमन्तो
कण्डूयति	कण्डुअइ
वातूलः	वाउलो
मधूकम्	महुअं, महूअं

ऊ = ए

नूपुरम्	नेउरं, नूउरं

ऊ = ओ

कूष्माण्डी	कोहण्डी, कोहली
तूणीरम्	तोणीरं

कूर्परम्	कोप्परं
स्थूलम्	थोरं
ताम्बूलम्	तम्बोलं
गुडूची	गलोई
मूल्यम्	मोल्लं
स्थूणा	थोणा, थूणा
तूणम्	तोणं, तूणं

ऋ = अ

ऋणम्	अणं, रिणं

ऋ = आ

कृशा	कासा किसा
मृदुकम्	माउक्कं मउअं
मृदुत्वम्	माउक्कं मउत्तणं

ऋ = इ

कृपा	किवा
हृदयम्	हिययं
मृष्टम् (रसे)	मिट्ठं
दृष्टम्	दिट्ठं
दृष्टिः	दिट्ठी
सृष्टम्	सिट्ठं
सृष्टिः	सिट्ठी
गृष्टिः	गिण्ठी

पृथ्वी	पिच्छी
भृगुः	भिऊ
भृङ्गः	भिंगो
भृङ्गारः	भिंगारो
शृङ्गारः	सिंगारो
शृगालः	सिआलो
घृणा	घिणा
घुसृणम्	घुसिणं
वृद्धकविः	विद्धकई
समृद्धिः	समिद्धी
ऋद्धिः	इद्धी, रिद्धी
गृद्धिः	गिद्धी
कृशः	किसो
कृशानुः	किसाणू
कृसरा	किसरा
कृच्छ्रम्	किच्छं
तृप्तम्	तिप्पं
कृषितः	किसिओ
नृपः	णिवो
कृत्या	किच्चा
कृतिः	किई

धृतिः	धिई
कृपः	किवो
कृपणः	किविणो
कृपाणः	किवाणं
वृश्चिकः	विञ्चुओ
वृत्तम्	वित्तं
वृत्तिः	वित्ती
हृतम्	हिअं
व्याहृतम्	वाहित्तं
बृंहितः	विहिओ
वृषी	विसी
ऋषिः	इसी, रिसो
वितृष्णः	विइण्हो
स्पृहा	छिहा
सकृत्	सइ
उत्कृष्टम्	उक्किट्ठं
नृशसः	निसंसो
पृष्ठम्	पिट्ठी पट्ठी
मसृणम्	मसिणं मसणं
मृगाङ्कः	मिअंको मयंको
मृत्युः	मिच्चू मच्चू

शृङ्गम्	सिंगं संगं
धृष्टः	धिट्ठो धट्ठो
मातृगृहम्	माइहरं
वृष्टः	विट्ठो
वृष्टिः	विट्ठी
पृथक्	पिहं
मृदङ्गः	मिइंगो
नप्तृकः	नत्तिओ
बृहस्पतिः	विहप्फई बहप्फई
वृन्तम्	विण्ट

ऋ = उ

ऋतुः	उऊ, रिऊ
परामृष्टः	परामुट्ठो
स्पृष्टः	पुट्ठो
प्रवृष्टः	पउट्ठो
पृथिवी	पुहई
प्रवृत्तिः	पउत्ती
प्रावृट्	पाउसो
प्रावृतः	पाउओ
भृतिः	भुई
प्रभृति	पहुडि

प्राभृतम्	पाहुडं
परभृतः	परहुओ
निभृतम्	निहुअं
निवृतम्	निउअं
विवृतम्	विउअं
संवृतम्	संवुअं
वृत्तान्तः	वुत्तंतो
निर्वृत्ताम्	निव्वुअं
निर्वृतिः	निव्वुई
वृन्दम्	वुन्दं
वृन्दावनः	वुन्दावणो
वृद्धः	वुड्ढो
वृद्धः	वुड्ढी
ऋषभः	उसहो, रिसहो
मृणालम्	मुणालं
ऋजुः	उज्जू, रिज्जू
जामातृकः	जामाउओ
मातृकः	माउओ
मातृका	माउआ
भ्रातृकः	भाउओ
पितृकः	पिउओ

पृथ्वी	पुहुवी
निवृत्ताम्	निवुत्तं, निअत्तं
वृन्दारका	वुन्दारया, वन्दारया
वृषभः	उसहो, वसहो
मातृमण्डलम्	माउमण्डलं
मातृगृहम्	माउहरं, माइहरं
पितृगृहम्	पिउहरं
मातृस्वसा	माउसिआ
पितृस्वसा	पिउसिआ
पितृवनम्	पिउवणं
पितृपतिः	पिउवई
मृषा	मुसा
मृषावादः	मुसावाओ
वृष्टः	वुट्ठो
वृष्टिः	वुट्ठी
पृथक्	पुहं
मृदङ्गः	मुइंगो
नप्तृकः	नत्तुओ
बृहस्पतिः	बुहप्फई, बहप्फई

ऋ = ऊ

मृषा	मूसा

मृषावादः	मूसावाओ
	ऋ = ए
वृन्तम्	वेण्टं
	ऋ = ओ
वृन्तम्	वोण्टं
मृषा	मोसा
मृषावादः	मोसावाओ
	ऋ = ढि
आदृतः	आढिओ
	ऋ = अरि
दृप्तः	दरिओ
	ऋ = रि
ऋणम्	रिणं, अणं
ऋजुः	रिज्जू, उज्जू
ऋषभः	रिसहो, उसहो
ऋषिः	रिसी, इसी
ऋतुः	रिऊ, उऊ
सदृशः	सरिसो
सदृक्षः	सरिच्छो

एतादृशः	एआरिसो	
भवादृशः	भवारिसो	
यादृशः	जारिसो	
तादृशः	तारिसो	
कीदृशः	केरिसो	
ईदृशः	एरिसो	
अन्यादृशः	अन्नारिसो	
अस्मादृशः	अम्हारिसो	
युष्मादृशः	तुम्हारिसो	
सदृग्वर्णः	सरिवण्णो	

ए = इ

वेदना	विअणा	वेअणा
चपेटा	चविडा	चवेडा
देवरः	दिअरो	देवरो
केसरम्	किसरं	केसरं

ए = ऊ

स्तेनः	थूणो	थेणो

ऐ = इ

सैन्धवम्	सिन्धवं	
शनैश्चरः	सणिच्छरो	
सैन्यम्	सिन्नं,	सेन्नं

ए = अइ

सैन्यम्	सइन्नं
दैत्यः	दइच्चो
दैन्यम्	दइन्नो
ऐश्वर्यम्	अइसरिअं
भैरवः	भइरवो
वैजवनः	वइजवणो
दैवतम्	दइवअं
वैतालीयम्	वइआलीअं
वैदेशः	वइएसो
वैदेहः	वइएहो
वैदर्भः	वइदब्भो
वैश्वानरः	वइस्साणरो
कैतवम्	कइअवं
वैशाखः	वइसाहो
वैशालः	वइसालो
स्वैरम्	सइरं
चैत्यम्	चइत्तं, चेइअं
वैरम्	वइरं, वेरं
कैलाशः	कइलासो, केलासो
कैरवम्	कइरवं, केरवं

वैश्रवणः	वइसवणो,	वेसवणो
वैशम्पायनः	वइसंपायणो,	वेसंपायणो
वैतालिकः	वइआलिओ,	वेआलिओ
वैशिकम्	वइसिअं,	वेसिअं
चैत्रः	चइत्तो,	चेत्तो
दैवम्	दइवं	देवं

ऐ = अअ

उच्चैः	उच्चअं
नीचैः	नीचअं

ऐ = ई

धैर्यम्	धीरं

ओ = अ

अन्योन्यम्	अन्नन्नं,	अन्नुन्नं
प्रकोष्ठः	पवट्ठो,	पउट्ठो
आतोद्यम्	आवज्जं,	आउज्जं
शिरोवेदना	सिरविअणा,	सिरोविअणा
मनोहरम्	मणहरं,	मणोहरं
सरोरुहम्	सररुहं,	सरोरुहं

ओ = ऊ

सोच्छ्वासः	सूसासो

ओ = अउ

गो	गउओ,	गउआ

ओ = आअ

गो	गाओ

औ = आ

गौरवम्	गारवं

औ = उ

सौन्दर्यम्	सुन्देरं,	सुन्दरिअं
मौञ्जायनः	मुंजायणो	
शौण्डः	सुण्डो	
शौद्धोदनिः	सुद्धोअणी	
दौवारिकः	दुवारिओ	
सौगन्ध्यम्	सुगन्धत्तणं	
पौलोमी	पुलोमी	
सौवर्णिकः	सुवण्णिओ	
कौक्षेयकम्	कुच्छेअयं	

औ = ओ

कौक्षेयकम्	कोच्छेअयं

औ = अउ

कौक्षेयकम्	कउच्छेअयं
पौरः	पउरो
पौरजनः	पउरजणो
कौरवः	कउरवो
कौशलम्	कउसलं
पौरुषम्	पउरिसं
सौधम्	सउह
गौडः	गउडो
मौलिः	मउली
मौनम्	मउणं
सौराः	सउरा
कौलाः	कउला
गौरवम्	गउरवं

औ = आवा

नौ	नावा

क् = ख्

कुब्जः	खुज्जो
कर्परम्	खप्परं
कीलकः	खीलओ

क् = ग्

मरकतम्	मरगयं
मदकलः	मयगलो
कन्दुकम्	गेन्दुग्रं

क् = च्

किरातः	चिलाग्रो

क् = भ्

शीकरः	सीभरो

क् = म्

चन्द्रिका	चन्दिमा

क् = ह्

शीकरः	सीहरो
निकषः	निहसो
स्फटिकः	फलिहो
चिकुरः	चिहुरो

ख् = क्

शृङ्खलम्	संकलं

ग् = म्

पुन्नागानि	पुन्नामाइं
भागिनी	भामिणी

ग् = ल्

छागः	छालो
छागी	छाली

च् = ल्ल् (वि.)

पिशाचः	पिसल्लो, पिसाओ

च् = स् (वि.)

खचितः	खसिओ, खइओ

ज् = झ् (वि.)

जटिलः	झडिलो, जडिलो

ट् = ढ्

सटा	सढा
शकटः	सयढो
कैटभः	केढवो

ट् = ल्

स्फटिकः	फलिहो

ट् = ल् (वि.)

चपेटा	चविला, चविडा
पाटयति	फालेइ, फाडेइ

ठ् = ल्ल्

अङ्कोठतैलतुप्पम्	अंकोल्लतेल्लतुप्पं

ठ् = ह्

पिठरः पिहडो, पिढरो

ण् = ल् (वि.)

वेणुः वेलू, वेणू

त् = च् (वि.)

तुच्छम् चुच्छं, छुच्छं, तुच्छं

त् = छ् (वि.)

तुच्छम् छुच्छं, चुच्छं, तुच्छं

त् = ट्

तगरः टगरो
त्रसरः टसरो
तूवरः टूवरो

त् = ड्

प्रतिपन्नम् पडिवन्नं
प्रतिहासः पडिहासो
प्रतिहारः पडिहारो
प्रतिस्पर्द्धी पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी
प्रतिसारः पडिसारो
प्रतिनिवृत्तम् पडिनियत्तं

प्रतिमा	पडिमा
प्रतिपदा	पडिवया
प्रतिकरोति	पडिकरेइ
प्रभृति	पहुडि
प्राभृतम्	पाहुडं
व्यावृतः	वावडो
पताका	पडाया
विभीतकः	बहेडओ
हरीतकी	हरडई
मृतकम्	मडयं
सुकृतम्	सुकडं
आहृतम्	आहडं
अवहृतम्	अवहडं

त् = ण्

गर्भितः	गब्भिणो
अतिमुक्तकम्	अणिउँत्तयं, अइमुत्तयं
रुदितम्	रुण्णं

त् = र्

सप्ततिः	सत्तरी

त् = ल्

अतसी	अलसी
सातवाहनः	सालवाहणो, सालाहणो
पलितम्	पलिलं, पलिअं

त् = व् (वि.)

पीतलम्	पीवलं, पीअलं

त् = ह्

वितस्तिः	विहत्थी
वसतिः	वसही, वसई
भरतः	भरहो
कातरः	काहलो
मातुलिङ्गम्	माहुलिंगं

थ् = ढ्

मेथिः	मेढी
शिथिरः	सिढिलो
शिथिलः	सिढिलो
प्रथमः	पढमो
निशीथः	निसीढो, निसीहो
पृथिवी	पुढवी, पुहवी

थ् = ध् (वि.)

पृथक्	पिधं, पुधं, पिहं, पुहं

द् = ड् (वि.)

दशनम्	डसणं, दसणं
दष्टः	डट्ठो, दट्ठो
दग्धः	डड्ढो, दड्ढो
दोला	डोला, दोला
दण्डः	डण्डो, दण्डो
दरः [भय]	डरो, दरो
दाहः	डाहो, दाहो
दम्भः	डभो, दंभो
दर्भः	डब्भो, दब्भो
कदनम्	कडणं, कयणं
दोहदः	डोहलो, दोहलो
दशति	डसइ
दहति	डहइ

द् = ध्

दीप्यति	धिप्पइ, दिप्पइ

द् = र्

एकादश	एआरह
द्वादश	बारह

त्रयोदश	तेरह
गद्गदम्	गग्गरं
कदली	करली, कयली, केली

द् = ल्

प्रदीप्यति	पलीवेइ
प्रदीप्तम्	पलित्तं
दोहदः	दोहलो
कदम्बः	कलम्बो, कयम्बो

द् = व्

कदर्थितः	कवट्टिओ

द् = ह्

ककुदम्	कउहं

ध् = ढ्

निषधः	निसढो
औषधम्	ओसढं, ओसहं

न् = ण्ह् (वि.)

नापितः	ण्हाविओ, नाविओ

न् = ल् (वि.)

निम्बः	लिम्बो, निम्बो

प् = फ्

पाटयति	फालेइ, फाडेइ
परुषः	फरुसो
परिघः	फलिहो
परिखा	फलिहा
पनसः	फणसो
पारिभद्रः	फालिहद्दो

प् = ब्

प्रभूतम्	बहुत्तं

प् = म् (वि.)

नीपः	नीमो, नीवो
आपीडः	आमेलो, आवेडो

प् = र्

पापर्द्धिः	पारद्धी

ब् = भ्

बिसिनी	भिसिणी

ब् = म् तथा य्

कबन्धः	कमन्धो, कयन्धो

ब् = म्

शबरः	समरो

म् = व्

कैटभः — केढवो

म् = ढ्

विषमः — विसढो, विसमो

म् = व्

मन्मथः — वम्महो

अभिमन्युः — अहिवन्नू, अहिमन्नू

म् = स्

भ्रमरः — भसलो, भमरो

य् = त्

युष्मादृशः — तुम्हारिसो

युष्मदीयः — तुम्हकेरो

य् = ल्

यष्टिः — लट्ठी

य् = ज्ज् (वि.)

उत्तरीयम् — उत्तरिज्जं, उत्तरीअं

य् = ह्

छाया — छाहा

सच्छायम् — सच्छाहं, सच्छायं

य् = आह्, तथा व्

कतिपयम्	कइवाहं, कइअवं

र् = ड्

किरिः	किडी
भेरः	भेडो

र् = डा (वि.)

पर्याणम्	पडायाणं, पल्लाणं

र् = ण्

करवीरः	कणवीरो

र् = ल्

हरिद्रा	हलिद्दी
दरिद्राति	दलिद्दाइ
दरिद्रः	दलिद्दो
दारिद्र्यम्	दालिद्दं
हरिद्रः	हलिद्दो
मुखरः	मुहलो
चरणः [पाद.]	चलणो
वरुणः	वलुणो
करुणः	कलुणो
सत्कारः	

रुग्णः	लुक्को
अपद्वारम्	अवद्दालं
जटरम्	जढलं
बठरः	वढलो
निष्ठुरः	निट्ठुलो
युधिष्ठिरः	जहुट्ठिलो
शिथिरः	सिढिलो
अङ्गारः	इंगालो
सुकुमारः	सोमालो
किरातः	चिलाओ
परिखा	फलिहा
परिघः	फलिहो
पारिभद्रः	फालिहद्दो
कातरः	काहलो

ल् = र्

स्थूलम्	थोरं

ल् = ण् (वि.)

लाहलः	णाहलो, लाहलो
लाङ्गलम्	णङ्गलं, लंगलं
लाङ्गूलम्	णंगूलं, लंगूलं
ललाटम्	णिडालं णडालं

व् = म् (वि.)

स्वप्नः	सिमिणो, सिविणो
नीवी	नीमी, नीवी

श् = छ् (वि.)

शमी	छमी
शावः	छावो
शिरा	छिरा, सिरा

श् = ह्

दशमुखः	दहमुहो, दसमुहो
दशरथः	दहरहो, दसरहो

ष् = ण्ह् (वि.)

स्नुषा	सुण्हा, सुसा

ष् = छ्

षष्ठः	छट्ठो
षष्ठिः	छट्ठी
षट्पदः	छप्पओ
षण्मुखः	छंमुहो

ष् = ह्

पाषाणः	पाहाणो, पासाणो

स् = ह्

दिवसः	दिवहो, दिवसो

स् = छ्

सुधा	छुहा
सप्तपर्णः	छत्तिवण्णो

संयुक्त अक्षरों को निम्नलिखित आदेश हो जाते हैं:—

क् (वि.)

शक्तः	सक्को, सत्तो
मुक्तः	मुक्को, मुत्तो
दष्टः	डक्को, दट्ठो
रुग्णः	लुक्को, लुग्गो
मृदुत्वम्	माउक्कं, मउत्तणं

ख्

शुष्कम्	सुक्खं, सुक्कं
स्कन्दः	खन्दो, कन्दो
क्ष्वेटकः	खेडओ
क्ष्वोटकः	खोडओ
स्फोटकः	खोडओ
स्फेटकः	खेडओ
स्फेटिकः	खेडिओ

स्थाणुः	खाणू
स्तम्भः	खम्भो, थम्भो
	ग्
रक्तः	रग्गो, रत्तो
	ङ्
शुल्कम्	सुंग, सुक्कं
	च्
कृत्तिः	किच्ची
चत्वरम्	चच्चरं
प्रत्यूषः	पच्चूहो, पच्चूसो
	छ्
अक्षिः	अच्छिं
इक्षुः	उच्छू
लक्ष्मीः	लच्छी
कक्षः	कच्छो
क्षुतम्	छीअं
क्षीरम्	छीरं
सदृक्षः	सरिच्छो
वृक्षः	वच्छो
मक्षिका	मच्छिआ

क्षत्रम्	छेत्तं
क्षुध्	छुहा
दक्षः	दच्छो
कुक्षिः	कुच्छी
वक्षः	वच्छं
क्षुण्णः	छुण्णो
कक्षा	कच्छा
क्षारः	छारो
कौक्षेयकम्	कुच्छेअयं
क्षुरः	छुरो
उक्षा	उच्छा
क्षतम्	छयं
सादृश्यम्	सारिच्छं
स्थगितम्	छइअं
क्षमा (पृथिवी)	छमा
ऋक्षम्	रिच्छं, रिक्खं
क्षणः (उत्सवः)	छणो
सामर्थ्यम्	सामच्छं, सामत्थं
उत्सुकः	उच्छुओ, ऊसुओ
उत्सवः	उच्छवो, ऊसवो
स्पृहा	छिहा

ञ् (वि.)

अभिमन्युः	अहिमज्जू, अहिमन्नू

झ्

ध्वजः	झओ, धओ

ञ्च्

वृश्चिकः	विञ्चुओ

ञ्न्

अभिमन्युः	अहिमञ्जू, अहिमन्नू

ट्

वृत्तः	वट्टो
प्रवृत्तः	पयट्टो
मृत्तिका	मट्टिआ
पत्तनम्	पट्टणं
कदर्थितः	कवट्टिओ
पर्यस्तः	पल्लट्टो

ठ्

अस्थि	अट्ठी
विसंस्थुलम्	विसंठुलं
स्त्यानम्	ठीणं, थीणं

चतुर्थः	चउट्ठो
अर्थः	अट्ठो
स्तम्भः	ठम्भो, थम्भो
स्तब्धः	ठड्ढो

ड्

गर्तः	गड्डो
गर्ता	गड्डा
सम्मर्दः	सम्मड्डो
वितर्दी	विअड्डी
विच्छर्दः	विच्छड्डो
च्छर्दी	छड्डी
कपर्दः	कवड्डो
मर्दितः	मड्डिओ
सम्मर्दितः	सम्मड्डिओ
गर्दभः	गड्डहो, गद्दहो

ढ्

स्तब्धः	ठड्ढो
दग्धः	दड्ढो
विदग्धः	विअड्ढो
वृद्धिः	वुड्ढी
वृद्धः	वुड्ढो

श्रद्धा	सड्ढा, सद्धा
मूर्धा	मुड्ढा, मुद्धा
अर्धम्	अड्ढं, अद्धं

ण्

पंचाशत्	पण्णासा
पंचदश	पण्णरह
दत्ताम्	दिण्णं

ण्ट्

वृन्तम्	वेण्टं
तालवृन्तम्	तालवेण्टं

ण्ड्

कन्दरिका	कण्डलिआ
भिन्दिपालः	भिण्डिवालो

त्

समत्तः	समत्तो
स्तम्बः	तम्बो

थ्

स्तम्भः	थम्भो, ठम्भो
स्तवः	थवो, तवो
पर्यस्तः	पल्लत्थो, पल्लट्टो
उत्साहः	उत्थारो, उच्छाहो

ध्

आश्लिष्टः — आलिद्धो

न्त् (वि.)

मन्युः — मन्तू, मन्नू

न्ध् (वि.)

चिह्नम् — चिन्धं, इन्धं, चिण्हं

प्

भस्म — भप्पो, भस्सो

आत्मा — अप्पा, अप्पाणो

फ्

भीष्मः — भिप्फो

श्लेष्मः — सेफो, सिलिम्हो

भ्

विह्वलः — भिब्भलो, विब्भलो, विहलो

ऊर्ध्वम् — उब्भं, उद्धं

म्ब्

ताम्रम् — तम्बं

आम्रम् — अम्बं

म्भ्

कश्मीराः	कम्भारा, कम्हारा

र्

ब्रह्मचर्यम्	बम्हचेरं, बम्हचरिअं
तूर्यम्	तूरं
सौन्दर्यम्	सुन्देरं
शौण्डीर्यम्	सोण्डीरं
धैर्यम्	धीरं, धिज्जं
पर्यन्तः	पेरन्तो, पज्जन्तो
आश्चर्यम्	अच्छेरं, अच्छरिअं

ल्

आश्लिष्टः	आलिद्धो
कूष्माण्डी	कोहली, कोहण्डी

ल्ल्

पर्यस्तम्	पल्लट्टं, पल्लत्थं
पर्याणम्	पल्लाणं
सौकुमार्यम्	सोअमल्लं

स्

बृहस्पतिः	बहस्सई, बहप्फई

	भयस्सई, भयप्फई
वनस्पतिः	वणस्सई, वणप्फई

ह्

बाष्पः	बाहो
कार्षापणः	काहावणो
दुःखम्	दुह, दुक्खं
दक्षिणः	दाहिणो, दक्खिणो
तीर्थम्	तूहं, तित्थं
कूष्माण्डी	कोहण्डी, कोहली

नीचे लिखे अक्षरों का लोप हो जाता है:—

अ (वि.)

अलावुः	लाऊ, अलाऊ
अलाबु	लाउं, अलाउं
अरण्यम्	रण्णं, अरण्णं

ण्

तीक्ष्णम्	तिक्खं, तिण्हं

त्र्

रात्रिः	राई, रत्ती

म्

यमुना	जउँणा

चामुण्डा	चाउँण्डा
कामुकः	काउँओ
अतिमुक्तकम्	अणिउँतयं, अइमुन्तयं, अइमुत्तयं

र्

चन्द्रः	चन्दो, चन्द्रो
रुद्रः	रुद्दो, रुद्रो
भद्रम्	भद्दं, भद्रं
समुद्रः	समुद्दो, समुद्रो
द्रहः	दहो, द्रहो
धात्री	धाई, धत्ती, धारी

श्

श्मश्रुः	मासू, मंसू, मस्सू
श्मशानम्	मसाणं

श्च्

हरिश्चन्द्रः	हरिअन्दो

ह्

मध्याह्नः	मज्झन्नो, मज्झण्हो
दशार्हः	दसारो

(०) अनुस्वार

विंशतिः	वीसा

त्रिंशत्	तीसा
संस्कृतम्	सक्कयं
संस्कारः	सक्कारो
मांसम्	मासं, मंसं
मांसलम्	मासलं मंसलं
कांस्यम्	कासं, कंसं
पांसुः	पासू पंसू
कथम्	कह, कहं
एवम्	एव, एवं
नूनम्	नूण, नूणं
इदानीम्	इआणि, इआणिं
दानीं	दाणि, दाणिं
किम्	कि, किं
संमुखम्	समुहं, समुहं
किंशुकम्	केसुअं, किंसुअं
सिंहः	सीहो, सिंघो

अन्त्य व्यंजनों को नीचे लिखे अनुसार आदेश होते हैं :—

अ

शरत्	सरओ
भिषक्	भिसओ

स

दिक्	दिसा
प्रावृट्	पाउसो
दीर्घायुः	दीहाउसो, दीहाऊ
अप्सराः	अच्छरसा, अच्छरा

ह

ककुभ्	कउहा
धनुः	धणुहं, धणू
क्षुध्	छुहा

पद के आदि में रहे हुए स्वर को पीछे आने वाले सस्वर व्यंजन के साथ निम्नलिखित आदेश होते हैं।

ए

स्थविरः	थेरो
विचकिलम्	वेइल्लं
अयस्कारः	एक्कारो
कदलम्	केलं, कयलं
कदली	केली, कयली
कर्णिकारः ❀	कण्णेरो, कण्णिआरो

❀ इकार के स्थान में सस्वर व्यंजन सहित एकार होता है।

बृहस्पतिः	भयस्सई, भयप्फई, भयप्पई, पक्ष में– बहस्सई, बहप्फई, बहप्पई, बिहस्सई, बिहप्फई, बिहप्पई, बुहस्सई, बुहप्फई, बुहप्पई.
मलिनम्	मइलं, पक्ष में— मलिणं
उभयम्	अवहं, उवहं, पक्ष में– उभयं
शुक्तिः	सिप्पी, पक्ष में— सुत्ती
छुप्तः	छिक्को, पक्ष में— छुत्तो
आरब्धः	आढत्तो, पक्ष से– आरद्धो
पदातिः	पाइक्को, पक्ष में– पयाई
दंष्ट्रा	दाढा
बहिस्	बाहिं, बाहिरं
अधस्	हेट्ठ
मातृष्वसा	माउसिआ, माउच्छा
पितृष्वसा	पिउसिआ, पिउच्छा
तिर्यक्	तिरिच्छि
गृहम्	घरो

नीचे आये हुए शब्दों में अनुस्वार का आगम हो जाता है–

वक्रम्	वंक
त्र्यस्त्रम्	तंसं
अ[illegible]	अंसु

अंगु तथा आउ

प्रावरणम्	पंगुरणं, पाउरणं पावरणं

नीचे आये शब्दों को निम्नलिखित आदेश हो जाते हैं-

स्तोक	थोक्कं, थोवं, थेवं
	पक्ष में— थोअं
दुहिता	धूआ, पक्ष में- दुहिआ
भगिनी	बहिणी, पक्ष में- भइणी
वृक्षः	रुक्खो पक्ष में- वच्छो
क्षिप्तम्	छूढं, पक्ष में- खित्तं
उत्क्षिप्तम्	उच्छूढं, पक्ष में- उक्खित्तं
वनिता	विलया, पक्ष में- वणिआ
ईषत्	कूर, पक्ष में- ईसि
स्त्री	इत्थी, पक्ष में- थी
धृतिः	दिही, पक्ष में- धिई
मार्जारः	मंजरो, वंजरो, पक्ष में- मज्जारो
वैडूर्यम्	वेरुलिअं, पक्ष में- वेडुज्जं
इदानीम्	एण्हिं, एत्ताहे, पक्ष में- इआणि
पूर्वम्	पुरिमं, पक्ष में— पुव्वं
त्रस्तम्	हित्थं, तट्ठं, पक्ष में- तत्थं

बृहस्पतिः	भयस्सई, भयप्फई, भयप्पई,
	पक्ष में— बहस्सई, बहप्फई, बहप्प
	बिहस्सई, बिहप्फई, विहप्प
	बुहस्सई, बुहप्फई, बुहप्प
मलिनम्	मइलं, पक्ष में— मलिणं
उभयम्	अवहं, उवहं, पक्ष में— उभयं
शुक्तिः	सिप्पी, पक्ष में— सुत्ती
छुप्तः	छिक्को, पक्ष में— छुत्तो
आरब्धः	आढत्तो, पक्ष से— आरद्धो
पदातिः	पाइक्को, पक्ष में— पयाई
दंष्ट्रा	दाढा
बहिस्	वाहिं, वाहिरं
अधस्	हेट्ठं
मातृष्वसा	माउसिआ, माउच्छा
पितृष्वसा	पिउसिआ, पिउच्छा
तिर्यक्	तिरिच्छि
गृहम्	घरो

नीचे आये हुए शब्दों में अनुस्वार का आगम हो जाता है

वक्रम्	वंकं
त्र्यस्त्रम्	तंसं

श्मश्रु	मंसू
पुच्छम्	पुंछ
गुच्छम्	गुंछं
मूर्धा	मुंढा
पर्शुः	पंसू
बुध्नम्	बुंधं
कर्कोटः	कंकोडो
कुड्मलम्	कुंपलं
दर्शनम्	दसणं
वृश्चिकः	विंछिओ
गृष्टिः	गिंठी
मार्जारः	मंजारो
वयस्यः	वयंसो
मनस्वी	मणंसी
मनस्विनी	मणंसिणी
मनःशिला	मणंसिला
प्रतिश्रुत्	पडंसुआ
उपरि	अवरिं
अतिमुक्तकम्	अणिउंतयं, अइमुंतयं

नीचे बताये हुए शब्दों में निम्नलिखित स्वर मिलाये जाते हैं—

अ

शार्ङ्गम्	सारंगं
क्ष्मा	छमा
श्लाघा	सलाहा
रत्नम्	रयणं
स्नेहः	सणेहो, नेहो
अग्निः	अगणी, अग्गी
प्लक्षः	पलक्खो
स्निग्धम्	सणिद्धं, सिणिद्धं, निद्धं

इ

अर्हति	अरिहइ
अर्हा	अरिहा
गर्हा	गरिहा
बर्हः	बरिहो
श्रीः	सिरी
ह्रीः	हिरी
ह्रीतः	हिरीओ
अह्रीकः	अहिरीओ
कृत्स्नः	कसिणो
क्रिया	किरिया
दिष्ट्या	दिट्ठिआ

तप्तः	तविश्रो, तत्तो
वज्रम्	वइरं, वज्जं
स्याद्	सिश्रा
स्याद्वादः	सिश्रावाश्रो
भव्यः	भविश्रो
चैत्यम्	चेइश्रं
चौर्यम्	चोरिश्रं
स्थैर्यम्	थेरिश्रं
भार्या	भारिश्रा
गाम्भीर्यम्	गंभीरिश्रं, गहीरिश्रं
आचार्यः	श्रायरिश्रो
शौर्यम्	सोरिश्रं
सौन्दर्यम्	सुन्दरिश्रं
वीर्यम्	वीरिश्रं
वर्यम्	वरिश्रं
सूर्यः	सूरिश्रो
ब्रह्मचर्यम्	बम्हचरिश्रं
धैर्यम	धीरिश्रं
स्वप्नः	सिविणो
स्निग्धम्	सिणिद्धं, सणिद्धं, निद्धं
कृष्णः	कसिणो, कसणो, कण्हो
अर्हत्	श्ररिहो, श्ररुहो, श्ररहो

ई

ज्या	जीआ

उ

अर्हत्	अरुहो, अरहो, अरिहो
पद्मम्	पउमं, पोम्मं
छद्मम्	छउमं, छम्मं
मूर्खः	मुरुक्खो, मुक्खो
द्वारम्	दुवारं, बारं, देरं, दारं
श्वः कृतम्	सुवे कयं
स्वे जनाः	सुवे जणा
स्रुघ्नम्	सुरुग्घं

नीचे आये हुए शब्दों को नीचे लिखे अनुसार द्वित्व हो जाता है—

दीर्घः	दिग्घो, दीहो
कर्णिकारः	कणिआरो, कण्णिआरो
तैलम्	तेल्लं
मण्डूकः	मंडूक्को
विचकिलम्	वेइल्लं
ऋजुः	उज्जू

व्रीडा	विड्डः
प्रभूतम्	वहुत्तं
स्रोतः	सोत्तं
प्रेम	पेम्मं
यौवनम्	जुव्वणं
नीडम्	नेड्डं, नीडं
नखाः	नक्खा, नहा
निहितः	निहित्तो, निहिओ
व्याहृतः	वाहित्तो, वाहिओ
मृदुकम्	माउक्कं, माउअं
एकः	एक्को, एओ
कुतूहलम्	कोउहल्लं, कोउहलं
व्याकुलः	वाउल्लो, वाउलो
स्थूलः	थुल्लो, थोरो
हूतम्	हुत्तं, हूअं
दैवम्	दइव्वं, दइवं
तूष्णीकः	तुण्हिक्को, तुण्हिओ
मूकः	मुक्को, मूओ
स्थाणुः	खण्णू, खाणू
स्त्यानम्	थिण्णं, थीणं
अस्मदीयम्	अम्हक्केरं, अम्हकेरं

चैत्र	च्चेत्र, चेत्र
चित्र	च्चित्र, चित्र

नीचे लिखे हुए शब्दों में द्वित्व नहीं होता है—

धृष्टद्युम्नः	धट्ठज्जुणो
दृप्तः	दरिओ

नीचे लिखे हुए शब्दों में व्यत्यय (उलट-पुलट) हो जाता है—

करेणूः	कणेरू
वाराणसी	वाणारसी
आलानः	आणालो
अचलपुरम्	अलचपुरं
महाराष्ट्रम्	मरहट्ठं
ह्रदः	द्रहो
हरितालः	हलिआरो, हरिआलो
लघुकम्	हलुअं, लहुअं
ललाटम्	णडालं, णलाडं

नीचे लिखे हुए शब्द निपात से सिद्ध होते हैं—

गौः	गोणो, गावी
गावः	गावीओ

कर्पासः	पलही
बली	उज्जल्लो
ताम्बुलम्	झसुरं
पुंश्चली	छिछई
शाखा	साहुली



धातु के आदेश

संस्कृत धातुओं को प्राकृत में आदेश नीचे बताये अनुसार होते हैं—

(स्वरान्त धातुएं)

ज्ञा—	जाण, मुण पक्ष में- णा
पा—	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट पक्ष में- पिअ
स्था-	ठा, थक्क, चिट्ठ, निरप्प
उद्+स्था-	उट्ठ, उक्कुक्कुर
स्ना—	अब्भुत्त, पक्ष में- ण्हा
श्रद्+धा-	सद्दह
उद्+ध्मा-	उद्धुमा
उद्+वा-	ओरुम्मा, वसुआ, पक्ष में- उव्वा
नि+द्रा-	ओहीर, उंघ, पक्ष में- निद्दा
आ+घ्रा-	आइग्घ, पक्ष में- अग्घा

निर्+मा–	निम्माण, निम्मव
प्र+स्था+णि–	पट्ठव, पेण्डव, पक्ष में- पट्ठाव
वि+ज्ञा+णि–	वोक्क, अवुक्क, पक्ष में- विण्णव
या+णि–	जव, पक्ष में- जाव
क्षि–	णिज्झर, पक्ष में- झिज्ज
क्री–	किण
वि+क्री–	विक्के, विक्किण
भी–	भा बीह
आ+ली–	अल्ली
नि+ली–	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क, लिक्क, ल्हिक, पक्षमें- निलिज्ज
वि+ली–	विरा, पक्ष में– विलिज्ज
रु–	रुंज, रुण्ट, पक्ष में– रव
श्रु–	हण, पक्ष में– सुण
धू–	धुव, पक्ष में- धुण
भू–	हो, हुव, हव, पक्ष में– भव
भू–	हु (वि उपसर्ग को छोड़ कर)
भू–	णिव्वड (पृथक् तथा स्पष्टीकरण के अर्थ में)
प्र+भू–	पहुप्प (प्रभुत्व के अर्थ में)
दू+णि–	दूम

सं+भू+णि—	आसंघ, पक्ष में- संभाव
कृ—	कुण, पक्ष में- कर
कृ—	णिआर (एक आँख से देखना)
कृ—	णिट्ठुह (गलना, निश्चेष्ठ होना)
कृ—	संदाण (अवलम्बन या सहारा लेना)
कृ—	वावम्फ (श्रम के अर्थ में)
कृ—	णिव्वोल (क्रोध से होठ को मलीन करना या मुंह बिगाड़ना)
कृ—	पयल्ल (शिथिल करना, लटकना)
कृ—	णीलुंछ (गिरने तथा कूदने के अर्थ में)
कृ—	कम्म (क्षौर कर्म के अर्थ में)
कृ—	गुलल (खुशामद करवाने के अर्थ में)
स्मृ—	झर, झूर, भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, पक्ष में- सर
वि+स्मृ—	पम्हुस, विम्हर, वीसर
व्या+ हृ—	कोक्क, पोक्क, पक्ष में- वाहर
प्र+सृ—	पयल्ल, उवेल्ल, पक्ष में- पसर
,, ,,—	महमह, (गंध फैलाने के अर्थ से)
निर्+सृ—	णीहर, नील, धाड, वरहाड पक्ष में- नीसर
जागृ—	जग्ग, पक्ष में- जागर
व्या+पृ—	आअड्ड, पक्ष में- वावर

सम्+वृ–	साहर, साहट्ट, पक्ष में– संवर
आ+दृ–	सन्नाम, पक्ष में– आदर
प्र+हृ–	सार, पक्ष में– पहर
अव+तृ–	ओह, ओरस, पक्ष में– ओअर
नि+वृ+णि–	णिहोड, पक्ष में– निवार
ध्यै–	झा
गै–	गा
सम्+स्त्यै–	संखा
म्लै–	वा, पव्वाय, पक्ष में– मिला

व्यंजनान्त धातुएं

शक्–	चय, तर, तीर, पार, पक्ष में- सक्क
फक्क्–	थक्क
श्लाघ्–	सलह
खच्–	वेअड, पक्ष में– खच
पच्–	सोल्ल, पउल (पउल्ल) पक्ष में– पय
मुच्–	छड्ड, अवहेड, मेल्ल, उस्सिक्क, रेअव, णिल्लुंछ, धंसाड, पक्ष में–मुअ
मुच्–	णिव्वल (दुःख को छोड़ने के अर्थ में)
वंच्–	वेहव, वेलव, जूरव, उमच्छ, पक्ष में-वंच
रच्–	उग्गह, अवह, विडविड्ड (ड) पक्ष में– रय

समा+रच्-	उवहत्थ, सारव, समार, केलाय, पक्ष में- समारय
सिच्	सिंच, सिम्प, पक्ष में- सेश्र
वि+रिच्+णि-	श्रोलुंड, उल्लुंड, पल्हत्थ, पक्ष में- विरेश्र
प्रच्छ्-	पुच्छ
गर्ज्-	बुक्क, पक्ष में- गज्ज
गर्ज्-	ढिक्क (बैल की गर्जना, सांड की गर्जना)
राज्-	श्रग्घ, छज्ज, सह, रीर, रेह, पक्ष में- राय
मस्ज्-	श्राउड्ड, णिउड्ड, वुड्ड, खुप्प, पक्ष में- मज्ज
पुंज्-	श्रारोल, वमाल, पक्ष में- पुज
लस्ज्-	जीह, पक्ष में- लज्ज
तिज्-	श्रोसुक्क
मृज्-	उग्घुस, लुंछ, पुंछ, पुंस, फुस, पुस, लुह, हुल, रोसाण, पक्ष में- मज्ज
भञ्ज्-	वेमय, मुसुमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पविरंज, करंज, नीरज, पक्ष में- भंज
व्रज्-	वच्च
श्रनु+व्रज्-	पडिश्रग्ग, पक्ष में- श्रणुवच्च
सृज्-	सिर
श्रर्ज्-	विढव, पक्ष में- श्रज्ज
युज्-	जुंज, जुज्ज, जुप्प

भुज्—	भुंज, जिम्म, जेम, कम्म, अण्ह समाण, चमढ, चड्ड
उद्+विज्—	उव्विव
उप+भुज्—	कम्मव, पक्ष में— उवहुंज
वीज्—	वोज्ज, पक्ष में— वीज
रंज्+णि—	राव, पक्ष में— रंज
वेष्ट्—	वेढ
सम्+वेष्ट्—	संवेल्ल
उद्+वेष्ट्—	उव्वेल्ल, पक्ष में— उव्वेढ
घट्—	गढ, पक्ष में— घड
सम्+घट्—	सगल, पक्ष में— संघड
स्फुट्—	मुर (हास्य करना हो तो)
घट्+णि—	परिवाड, पक्ष में- घड
उद्+घट्+णि—	उग्ग, पक्ष से- उग्घाड
वेष्ट्+णि—	परिआल, पक्ष में- वेढ
मंड्—	चिंच, चिंचिअ, चिंचिल्ल, रीड, टिविडिक्क, पक्ष में- मंड
तुड्—	तोड, तुट्ट, खुट्ट, खुड, उक्खुड, उल्लुक्क, णिलुक्क, लुक्क, उल्लूर, पक्ष में- तुड
तड्+णि—	आहोड, विहोड, पक्ष में- ताढ

घूर्ण्—	घुल, घोल, घुम्म, पहल्ल
वि+वृत्—	ढंस, पक्ष में- विवट्ट
पत्+णि—	णिहोड, पक्ष में- पाड
क्वथ्—	अट्ट, पक्षमें- कढ
ग्रन्थ्—	गण्ठ
मन्थ्—	घुसल, विरोल, पक्ष में- मंथ
कथ—	वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, संघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस, साह, पक्ष में- कह
कथ—	णिव्वर (दुःख कहने के अर्थ में)
रोमन्थ्+णि—	ओग्गाल, वग्गोल, पक्ष में- रोमन्थ
मद्—	मच्च
ह्लाद्—	अवअच्छ
खाद्—	खा, (एकवचन में)
नि+सद्—	णुमज्ज
छिद्—	दुहाव, णिच्छल, णिज्झोड, णिव्वर, णिल्लूर, लूर, पक्ष में- छिन्द
आ+छिद्—	ओअन्द, उद्दाल, पक्ष में- अच्छिन्द
मृद्—	मल, मढ, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड
स्पन्द्—	चुलुचुल, पक्ष में- फन्द

निर्+पद–	निव्वल, पक्ष में- निप्पज्ज
विसं+वद्–	विअट्ट, विलोट्ट, फस, पक्ष में- विसवय
शद्–	झड, पक्खोड
सद्–	सड
सम्+पद्–	संपज्ज
आ+क्रन्द्–	णीहर, पक्ष में- अक्कन्द
खिद्–	जूर, विसूर, पक्ष में- खिज्ज
स्विद्–	सिज्ज
ह्लाद्+णि–	अवअच्छ
छद्+णि—	णुम, नूम, सन्नुम, ढक्क, ओम्वाल, पव्वाल, पक्ष में— छाय
रुध्—	उत्थंघ, रुम्भ, रुज्झ, पक्ष में- रुन्ध
नि+षिध्–	हक्क, पक्ष में- निसेह
क्रुध्—	जूर, पक्ष में- कुज्झ
गृध्—	गिज्झ
सिध्—	सिज्झ
जन्—	जा, जम्म
तन्—	तड, तड्ड, तड्डव, विरल्ल, पक्ष में- तण
तृप्—	थिप्प
उप+सृप्—	अल्लिअ, पक्ष में- उवसप्प

सम्+तप्—	झंख, पक्ष में- संतप्प
वि+आप्—	ओअग्ग, पक्ष में- वाव
सम्+आप्—	समाण, पक्ष में- समाव
क्षिप्—	गलत्थ, अड्डक्ख, सोल्ल, पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, परी घत, पक्ष में- खिव
उद्+क्षिप्—	गुलगुछ, उत्थंघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव, पक्ष में- उक्खिव
आ+क्षिप्—	णीरव, पक्ष में- अक्खिव
स्वप्—	कमवस, लिस, लोट्ट, पक्ष में- सुअ
वेप्—	आयम्ब, आयज्झ, पक्ष मे- वेव
वि+लप्—	झंख, वडवड, पक्ष में- विलव
लिप्—	लिम्प
गुप्—	विर, णड, पक्ष में- गुप्प
कृप्+णि—	अवहाव
प्र+दीप्—	तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त, पक्ष मे- पलीव
कम्प्+णि—	विच्छोल, पक्ष में— कम्प
अर्प्+णि—	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम, पक्ष में- अप्प
लुभ्—	सम्भाव, पक्ष में- लुब्भ
क्षुभ्—	खउर, पड्डुह, पक्ष में- खुब्भ
आ+रभ्—	आरंभ, आढव, पक्ष मे- आरभ

जृम्भ्—	जम्भा
नम्—	णिसुढ, पक्ष मे- णव (कर्त्ता भार से दबा हो तो)
यम्—	जच्छ
वि+श्रम् —	णिव्वा, पक्ष में- वीसम
आ+क्रम्—	ओहाव, उत्थार, छुन्द, पक्ष में- अक्कम
भ्रम्—	टिरिटिल्ल, ढुण्ढुल्ल, ढण्टल्ल, चक्कम्म, भम्मड, भमड, भमाड, तलअंट, झंट, झप भुम, गुम, फुम, फुस, ढुम, ढुस, परी, पर, पक्ष में- भम
गम् —	अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चड्ड, पच्छन्द, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ, रम्भ, परिअल्ल, बोल, परिअल, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, पक्ष में- गच्छ
आ+गम्—	अहिपच्चुअ, पक्ष में- आगच्छ
सम्+गम्—	अब्भिड, पक्ष में- संगच्छ
अभ्या+गम्—	उम्मत्थ, पक्ष में- अब्भागच्छ
प्रत्या+गम्—	पलोट्ट, पक्ष में- पच्चागच्छ
शम्—	पडिसा, परिसाम, पक्ष में- सम

रम्—	संखुड्ड, खेड्ड, उब्भाव, किलिंकिंच, कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल, पक्ष में- रम
कम्+णि—	णिहुव, पक्ष में- काम
भ्रम्+णि—	तालिअंट, तमाड, पक्ष में- भाम, भमाड, भमावे
उद्+नम्+णि—	उत्थंघ, उल्लाल, गुलगुंछ, उप्पेल, पक्ष में- उन्नाव
पूर्—	अग्घाड, अग्घव (उग्घव), उद्धुम, अंगुम, अहिरेम, पक्ष में- पूर
क्षर्—	खिर, झर, पज्झर, पच्चड, णिच्चल, णिट्टुअ
त्वर्—	तुवर, जअड
,,	तूर (त्यादि तथा शतृ प्रत्यय आगे हो तो)
,,	तुर (त्यादि भिन्न प्रत्यय आगे हो तो)
मिश्र्+णि—	वीसाल, मेलव, पक्ष में- मिस्स
उद्+छल्—	उत्थल्ल
वि+गल्—	थिप्प, णिट्टुह, पक्ष में- विगल
दल्—	विसट्ट, पक्ष में- दल
वल्—	वम्फ, पक्ष में- वल

धवल्+णि-	दुम, पक्ष में- धवल
तुल्+णि	ओहाम, पक्ष में- तुल
उद्+धूल्+णि-	गुण्ठ, पक्ष में- उद्धूल
ड्डल्+णि —	रंखोल, पक्ष में- दोल
धाव् —	धा, (एकवचन में)
प्लव्+णि-	ओम्वाल, पव्वाल, पक्ष में- पाव
भ्रंश् —	फिड, फिट्ट, फुड, फुट्ट, चुक्क, भुल्ल, पक्ष में- भंस
नश्—	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवहर, पक्ष में- नस्स
अव+काश्—	ओवास
सम्+दिश्—	अप्पाह, पक्ष में- संदिस
दृश्—	निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयज्झ, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, पुलअ निअ, अवआस, पास
स्पृश्—	फास, फंस, फरिस, छिव, छिह, आलुख, आलिह
प्र+विश्-	रिअ, पक्ष में- पविस
प्र+मृश्-	पम्हुस
नश्+णि-	विउड, नासव, हारव, विप्पगाल,

	पलाव, पक्ष में- नास
दृश्+णि-	दाव, दंस, दक्खव, पक्ष में- दरिस
वि+कोश्+णि-	पक्खोड, पक्ष में- विकोस
प्रकाश्+णि-	णुव्व, पक्ष में- पयास
प्र+मृष्—	पम्हुस
पिष्—	णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड, पक्ष में- पीस
भष्—	भुक्क, बुक्क, पक्ष में- भस
कृष्—	कड्ढ, साअड्ढ अच, अणच्छ, अयंछ, आइंछ, पक्ष में- करिस
कृष्—	अक्खोड (म्यान में से तलवार खीचने के अर्थ में)
गवेष्—	ढुण्ढुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त, पक्ष में- गवेस
श्लिष्—	सामग्ग, अवयास, परिअन्त, पक्ष में- सिलेस
बुभुक्ष्—	णीरव, पक्ष में- बुहुक्ख
म्रक्ष्—	चोप्पड, पक्ष में- मक्ख
कांक्ष्—	आह, अहिलंघ, अहिलंख, वच्च, वम्फ, मह, सिह, विलुम्प पक्ष में- कंख
प्रति+ईक्ष्-	सामय, विहीर, विरमाल, पक्ष में- पडिक्ख

तक्ष्—	तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ, पक्ष में- तक्ख
वि+कस्—	कोआस, वोसट्ट, पक्ष में- विअस
हस्—	गुंज, पक्ष में- हस
आस्—	अच्छ
स्रस्—	ल्हस, डिम्भ, पक्ष में- संस
त्रस्—	डर, बोज्ज, वज्ज, पक्ष में- तस
नि+अस्—	णिम, णुम
परि+अस्—	पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ
निर्+श्वस्—	झंख, पक्ष में- नीसस
उद्+लस्—	ऊसल, ऊसुभ, णिल्लस, पुलआअ, गुंजोल्ल, आरोअ, पक्ष मे- उल्लस
भास्—	भिस, पक्ष में- भास
ग्रस्—	घिस, पक्ष में- गस
जुगुप्स्—	झुण, दुगुच्छ, दुगुछ, पक्ष में- जुउच्छ
अव+गाह्—	ओवाह, पक्ष में- ओगाह
आ+रुह्—	चड, वलग्ग, पक्ष में- आरुह
मुह्—	गुम्म, गुम्मड, पक्ष में- मुज्झ
दह्—	अहिऊल, आलुंख, पक्ष में- डह
ग्रह्—	वल, गेण्ह, हर, पंग, निरुवार, अहिपच्चुअ
स्पृह्+णि—	सिह
आ+रूप्+णि—	वल, पक्ष में- आरोव



परिशिष्ट.

अभ्यास—१. ला.

शौरसेनी भाषा

सामान्य नियम

१. अनादि तथा असंयुक्त तकार के स्थान मे शौरसेनी भाषा में प्रायः दकार हो जाता है जैसे कि—

पितरो— पिदरो ।

कहीं पर प्रयोग के अनुसार संयुक्त तकार को भी दकार हो जाता है जैसे कि—

महन्तो—महन्दो, अंतेउरं— अन्देउरं, निच्चिन्तो—निच्चिन्दो

२. अनादि थ को विकल्प से ध हो जाता है जैसे कि—

कथम्— कधं, कहं। राजपथः— राजपधो, राजपहो ।

३. र्य के स्थान में विकल्प से य्य होता है जैसे—

आर्यः—अय्यो, अज्जो। पर्याकुलः— पय्याउलो, पज्जाउलो। सूर्यः— सुय्यो।

४. अकारान्त शब्द से पंचमी के एकवचन मे दु तथा दो प्रत्यय लगते है जैसे कि— अय्यादु, अय्यादो ।

५. नकारान्त शब्द में संबोधन के एकवचन का लोप और नकार को अनुस्वार विकल्प से होता है जैसे कि—

भो रायं ! सुकम्मं ! पक्षे— भो राय ! सुकम्म !

६. भवत् शब्द के और उसके समान भगवत् आदि शब्दों के अंत्य व्यंजन को प्रथमा के एकवचन मे अनुस्वार होता है, और एकवचन के प्रत्यय का लोप होता है जैसे कि—

एदु भवं, समणे भगवं महावीरे, मघवं पागसासणे कयवं इत्यादि ।

७. इन् प्रत्यान्त शब्दो के नकार को संबोधन के एकवचन में विकल्प से आकार होता है जैसे कि—

भो कंचुइया ! भो सुहिआ ! पक्षे—भो कंचुइ ! भो सुहि !

८. अकार को छोडकर स्वरांत धातु से वर्तमानादि काल मे प्रथम पुरुष के एकवचन के रूप मे दि प्रत्यय और अकारांत धातु से दि तथा दे प्रत्यय होते है जैसे कि—

नेदि, देदि, होदि, गच्छदि, गच्छदे, रमदि, रमदे ।

९. मध्यम पुरुष के ह प्रत्यय तथा इह शब्द के हकार को विकल्प से ध होता हे जैसे कि—

भवथ— होध, होथ । इह— इध, इह ।

१०. भविष्य काल के तीनों पुरुषों मे प्राकृत के हि विभक्ति के स्थान मे स्सि प्रत्यय आता है जैसे—

भविस्सिदि, करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि ।

११. भू धातु के हकार को विकल्प से भकार होता है जैसे कि—

भवति— भोदि, होदि, भुवदि, हुवदि, भवदि, हवदि ।

१२. संबंधार्थक क्त्वा प्रत्यय के स्थान में इय तथा दूण आदेश विकल्प से होते है जैसे कि—
भविय, भोदूण, हविय, होदूण, पढिय पढिदूण, रमिय रन्दूण । पक्षे— भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता ।

१३. कृ तथा गम् धातु से पर क्त्वा प्रत्यय के स्थान में अडुअ आदेश विकल्प से होता है, और जब अडुअ आदेश होता है तो धातु के आदि व्यंजन को छोड़कर वाकी का लोप हो जाता है जैसे कि—
कडुअ, गडुअ । पक्षे— करिय, करिदूण, गच्छिय, गच्छिदूण ।

१४. इकार या एकार पर मे हो तो अंत मकार से पर में णकार का आगम विकल्प से होता है जैसे कि –
जुत्तमिणं, जुत्ताण्णिणं, सरिसमिणं, सरिसण्णिणं, किमेदं, किण्णेदं, एवमेदं, एवण्णेदं ।

१५. नीचे दिये हुए अव्यय नीचे लिखे प्रमाण के अनुसार शौरसेनी भाषा मे काम मे लिये है—
इदानीम् — दाणिं (दाणिं आणवेदु अय्यो)
तस्मात् — ता (ता अल एदिणा माणेण)
एव — य्येव (सो य्येव एसो)
ननु — णं (णं भवं मे अग्गदो चलदि)
तावत् — दाव, ताव ।

१६. नोचे लिखे हुवे अव्यय खास तौर से शौरसेनी भाषा में ही काम में लिये जाते है—

हञ्जे— दासी के आमंत्रण मे ।

हीमाणहे— विस्मय तथा निर्वेद अर्थ में ।

अम्महे— हर्ष में ।

हीही— विदूषक को हर्ष बतलाना हो तो हीही शब्द का प्रयोग होता है ।

इनको छोडकर बाकी सब विधिया प्राकृत के समान ही शौरसेनी में होती है ।

शब्द

कदकज्ज (कृतकृत्य) त्रि.— जिसने अपना काम कर लिया है ।

थाम (स्थामन्) न०— पराक्रम ।

अपुरव (अपूर्व) त्रि०— अपूर्व ।

सुमरण (स्मरण) न०— स्मरण ।

अज्जिद (अर्जित) त्रि०— उपार्जित किया हुआ ।

सग्ग (स्वर्ग) न०— स्वर्गलोक ।

अव्यय

हंहो— संबोधन के अर्थ में ।

खु— निश्चय अर्थ में ।

इअ— इति अर्थ में ।

गाथाएं

तइ इन्दो निच्चिन्दो विहरदु अन्देउरम्मि सो दाव ।
इन्दस्स ताव मित्तं हवेसि महि सामिआ ! तुमयं ॥ १ ॥

हहो मणस्सि राय जं अव भयवंति विन्नवेदि भवं ।
रक्खिज्जसु तेण तुमं जिणवइणा मेइणीमघवं ! ॥ २ ॥

अय्यावत्तो सयले कदकज्जो तं खु थामसिरिणाह ।
जिणनाधसुमरणे इअम् अज्जिदइहलोअपरलोअ ॥ ३ ॥

तायध समग्गपुहविं तायह सग्गपि भोदु तुह भद्दं ।
होदु जयस्सोत्तंसो तुह कित्तीए अपुरवाए ॥ ४ ॥

सत्तीइ अपुव्वाए होदूण हरिव्व हविय सेसोव्व ।
होता भरहोव्व तुमं एगच्छत्तं कुणसु रज्जं ॥ ५ ॥

करियावणिउद्धारं गुरुभाव गडुय कडुय बलिबन्धं ।
गच्छिय लच्छिम् उविन्दो भोदि भवं भोदु इन्दसमो ॥ ६ ॥

अम्हेहि तुह पसंसा किज्जदि अन्नेहि किज्जदे न कहं ।
कित्ती रमिस्सिदि तुहा सग्गादु रसातलादोवि ॥ ७ ॥

दाणि तुह तुट्ठा ता देमि वरं इअ तुमम्मि जुत्ताम् इमं ।
जुत्तंणिमं खु मग्गसु इह किं णेदंति मा चिन्त ॥ ८ ॥

भणिओ निवो किम् एद तिहुयणरज्जंपि तुमइ तुट्ठाए ।
तुज्झय्येव पसाया सुरीओ हञ्जेत्ति भणन्ति ॥ ९ ॥

हीमाणहे देवि ! तुमं सि दिट्ठा हीमाणहे हं चकिदो भवादो ।
णं अम्महे कि वि भणोपदेसं हीही भणन्तावि समन्ति जेण ॥

(कु. च. स८.मे सर्गे ९३–१०२)

——:०:——

अभ्यास—२ रा.

मागधी-भाषा

सामान्य नियम

१. रेफ के स्थान में ल् और असंयुक्त स् के स्थान में श् होता है जैसे कि—

नरः – नले
करः – कले   सुतः – शुदे
हसः – हशे   पुरूषः – पुरिसो

१. ग्रीष्म शब्द को छोड़कर संयुक्त मुर्धन्य ष् को दत्य स् होता है जैसे कि—

शुष्कम् – शुस्कं
कष्टम् – कस्टं   विष्णु – विस्नू

…युक्त ट्ट तथा ष्ठ के स्थान में स्ट हो जाता है जैसे कि—

पट्टः – पस्टे   सुष्ठु – शुस्टु

४. स्थ तथा र्थ के स्थान में स्त हो जाता है जैसे कि—

उपस्थितः – उवस्तिदे   अर्थपतिः – अस्तवदी
सुस्थितः – शुस्तिदे   सार्थवाहः – शस्तवाहे

५. ज तथा द्य के स्थान में य होता है और य को य

रह जाता है जैसे कि—

जानाति – याणदि　　मद्यम् – मय्यं
जनपदः – यणवदे　　अद्य – अय्य
अर्जुनः – अय्युणे　　विद्याधरः – विय्याहले
दुर्जनः – दुय्यणे　　याति – यादि
वर्जितः – वय्यिदे　　यानपात्रम् – याणवत्तं

६. न्य, ण्य, ज्ञ तथा ञ्ज के स्थान में ञ्ञ हो जाता है जैसे कि—

अभिमन्यु – अहिमञ्ञू. प्रज्ञा – पञ्ञा. सर्वज्ञः – शव्वञ्ञे
अन्यः – अञ्ञे　　अवज्ञा – अवञ्ञा
सामान्यम – शामञ्ञं　　अञ्जलिः – अञ्ञली
पुण्यवान् – पुञ्ञवन्ते　　धनञ्जयः – धणञ्ञए

७. (क) अनादि च्छ को श्च होता है जैसे कि—

उच्छलति – उश्चलदि　　पिच्छिलः – पिश्चि
पृच्छति – पुश्चदि

(ख) लाक्षणिक च्छ को भी श्च हो जाता है जैसे

सं०	प्रा०	मा०
तिर्यक् प्रेक्षते.	तिरिच्छ पेच्छइ.	तिरिश्चि पेस्कदि.

८. अनादि क्ष के स्थान में जिह्वामूलीय ≍क होता है जैसे कि—

यक्षः – य≍के.　　राक्षसः – ल≍कशे.

९. पुल्लिग में अकारान्त नाम से प्रथमा के एकवचन के रूप में ओ के बदले ए प्रत्यय होता है जैसे कि—

देवे, जिणे, कयरे, सव्वे ।

१०. अवर्णान्त नाम से पर षष्ठी एकवचन के स्थान पर 'आह' और बहुवचन के स्थान में 'आहँ' आदेश विकल्प से होता हे जैसे कि—

जिणाह, जिणस्स, कम्माह, कम्मस्स, जिणाहँ, जिणाणं, कम्माहँ, कम्माणं ।

११. अस्मद शब्द के प्रथमा के एकवचन और वहुवचन में विभक्ति सहित 'हगे' आदेश होता है जैसे कि—

अहं क्षत्रियः— हगेखत्तिए,. वयं पुरूषाः— हगे पुलिशा ।

१२. व्रज् धातु के जकार के स्थान में ञ्ज हो जाता है जैसे कि—

व्रजति— वञ्जदि ।

१३. प्रेक्ष् तथा आचक्ष् के क्ष् को स्क् हो जाता है जैसे कि—

प्रेक्षते— पेस्कदि. आचक्षते— आचस्कदि ।

१४. तिष्ठ के स्थान में चिष्ठ होता है जैसे कि—

तिष्ठति— चिष्ठदि ।

शौरसेनी भाषा के सभी नियम मागधी भाषा में भी लागु होते हैं और शेष नियम प्राकृत भाषा के जान लेना चाहिये ।

शब्द

विघस्टण (विघट्टन) न.– दूर करना ।

शलश्शदी (सरस्वती) स्त्री.– विद्या की अधिष्ठात्री देवी।

विवय्यिदकशाअ (विवर्जितकषाय) त्रि.–क्रोध, मान, माया, लोभ से रहित ।

लहिद (रहित) त्रि.— अतिरिक्त ।

निशादपञ्ञ (निशातप्रज्ञ) त्रि.– तीक्ष्ण बुद्धि वाला ।

यय (जगत्) न. – संसार ।

श (स्व) त्रि.– अपना ।

पउदव्व (प्रयोक्तव्य) त्रि,– प्रयोग करने के योग्य ।

गाथाएं

कधिदे शुभोवदेशे शलश्शदीए तदो अपस्स्वलिदे ।
भवकस्टगिम्हपदहण विघस्टणे शुस्टुमेघेव ॥ १ ॥
अदिशुस्तिदं निविस्टे चदुस्तवग्गं विवय्यिदकशाए ।
शावय्ययोगलहिदे शाहू शाहदि अणञ्ञमणे ॥ २ ॥
पुञ्ञे निशादपञ्ञे सुपञ्ञले यदि पधेण वञ्ञन्ते ।
शयलययवश्चलत्तं गश्चन्ते लहदि पलमपद ॥ ३ ॥
शपलविवᳲकालहिदे पेस्कन्ते सव्वम् ओल्लदिस्टीए ।
मिदपियम् आचस्कन्ते चिष्ठदि मग्गम्मि मोᳲकस्स ॥४॥
एदस्स वधं कलिमो भत्ति एदाह इदि मदी जाहँ ।
ताणं दोण्हंपि हगे हिदेत्ति बुद्धी पउद्दव्वा ॥ ५ ॥

अभ्यास—३. रा.

पैशाची भाषा और चूलिका पैशाची भाषा

पैशाची भाषा के सामान्य नियम

१. णकार को नकार होता है जैसे कि—

गुणगणः गुनगनो

२. दकार के स्थान में तकार होता है, और तकार के स्थान में तकार ही रहता है जैसे कि—

मदनः	मतनो.	भगवती	भगवती
सदनम्	सतन.	भवतु	होतु
दामोदरः	तामोतरो.	रमताम्	रमतु
प्रदेशः	पतेसो.		

३. श् तथा मूर्धन्य ष् के स्थान में दंत्य स् होता है और लकार को लकार ही होता है, जैसे कि—

शोभनम्	सोभनं.	विषाणः	विसानो
शशी	ससी.	शीलम्	सीलं
वृषभः	विसभो.	जलम्	जलं

४. टु के स्थान में विकल्प से तु होता है, जैसे कि—

कुटुम्बकम् कुतुम्बकं, कुटुम्बकं

५. यादृश शब्दों के समान शब्दों में दृ के स्थान में ति आदेश होता है, जैसे कि—

यादृशः	यातिसो	भवादृशः	भवातिसो
तादृशः	तातिसो	अन्यादृशः	अञ्ञातिसो
कीदृशः	केतिसो	युष्मादृशः	युम्हातिसो
ईदृशः	एतिसो	अस्मादृशः	अम्हातिसो

६. हृदय शब्द के य को प होता है, जैसे कि—

हृदयम् हितपं

७. (क) ज्ञ, न्य तथा ण्य के स्थान में ञ्ञ होता है, जैसे कि—

प्रज्ञा	पञ्ञा	विज्ञानम्	विञ्ञानं
संज्ञा	सञ्ञा	कन्यका	कञ्ञका
सर्वज्ञः	सव्वञ्ञो	अभिमन्युः	अभिमञ्ञू
ज्ञानम्	ञ्ञानं	पुण्यम्	पुञ्ञं

(ख) राजन् शब्द के राज्ञः इत्यादि रूपों में जो ज्ञ है उसको चिञ् आदेश विकल्प से होता है, जैसे कि—

राज्ञा राचिञा, रञ्ञा राज्ञः राचिञो रञ्ञो

८. र्य, स्न तथा ष्ट के स्थान में अनुक्रम से रिय, सिन तथा सट आदेश कही पर हो जाते है, जैसे कि—

भार्या भारिया. कष्टम् कसटं. स्नातम् सिनातं

९. अकारान्त नाम से पंचमी के एक वचन के रूप में आतो तथा आतु प्रत्यय होते है, जैसे कि—

देवात्– तेवातो, तेवातु.　　त्वत्– तुमातो, तुमातु.

दूरात्– तूरातो, तूरातु.　　मत्– ममातो, ममातु.

१०. तद् तथा इदम् शब्द के तृतीया के एकवचन के प्रत्यय सहित पुल्लिग तथा नपुसकलिंग मे नेन और स्त्रीलिग में नाए आदेश होता है, जैसे कि—

तेन, अनेन } नेन.　　तया, अनया } नाए

११ प्राकृत के तिबादि प्रथम पुरुष के एकवचन का इ तथा ए के स्थान में ति आदेश होता है, जैसे कि—

भवति भोति.　　ददाति तेति

नयति नेति.

अकारान्त धातु से पर प्राकृत के इ तथा ए के स्थान

२. सं मे अनुक्रम से ति तथा ते आदेश हो जाते है, जैसे कि—

लपति— लपति, लपते.　　गच्छति— गच्छति, गच्छते

आस्ते— अच्छति, अच्छते.　　रमते— रमति, रमते

१३. भविष्य काल में प्रथम पुरुष के एकवचन के रूप में एय्य प्रत्यय होता है, जैसे कि—

भविष्यति हुवेय्य

१४. (क) भाव कर्म में होने वाले क्य प्रत्यय के स्थान में इय्य आदेश हो जाता है, जैसे कि—

गीयते— गिय्यते. रम्यते— रमिय्यते

दीयते— दिय्यते. पठ्यते— पढिय्यते

(ख) क्य प्रत्यय सहित कृ धातु के स्थान में कीर आदेश हो जाता है, जैसे कि—

क्रियते कीरते

१५. (क) संबन्धार्थक त्तवा प्रत्यय के स्थान में तून आदेश हो जाता है, जैसे कि—

मन्तून, रन्तून, हसितून, पढितून, कधितून

(ख) ष्ट्वा के स्थान में द्धून, तथा त्थून आदेश हो जाता है, जैसे कि—

नष्ट्वा– नद्धून, नत्थून. दृष्ट्वा–तद्धून, तत्थून

इन नियमों को छोड़कर शौरसेनी भाषा के सभी नियम पैशाची भाषा में लागु पड़ते है, केवल नियमावली के २४वें नियम से ३१वें नियम तक व्यंजन का लोप और व्यंजन विकार के सामान्य नियम और उसके अपवाद रूप विशेष आदेश शौरसेनी भाषा में लागु पड़ते हैं, परन्तु पैशाची भाषा में लागु नहीं पड़ते हैं ।

पैशाची के शब्द

हितपक (हृदयक) न. हृदय
उज्झित (उज्झित) त्रि. त्यागा हुआ
कतकपट (कृतकपट) त्रि. जिसने कपट किया है

धातु

वल (वल्) पीछे लौटना

चू० पै० के शब्द

अनालम्भ (अनारम्भ) त्रि. आरभ रहित
लाच (राजन) पु. राजा
बन्थु (बन्धु) पु. बान्धव
आलम्पित (आलम्बित) त्रि आश्रित

चूलिका पैशाची के नियम

१. वर्ग के तीसरे अक्षर के स्थान में प्रथम अक्षर और चौथे अक्षर के स्थान मे द्वितीय अक्षर होता[1] है । जैसे कि—

नगरम्	नकरं	व्याघ्रः	वक्खो
गिरितटम्	किरितटं	निर्झरः	निच्छरो
राजा	राचा	झर्झरः	छच्छरो

---

१. कितने आचार्य के मत मे ऊपर के नियम अनादि अक्षर मे ही लागु पडते है । आदि भूत तृतीत तथा चतुर्थ के स्थान मे अनुक्रम से प्रथम तथा द्वितीय अक्षर नही होता हे जैसे कि—

गतिः	गती	धर्मः	धम्मो
जीमूतः	जीमूतो	झर्झरः	झच्छरो
डमरूकः	डमरुको	ढक्का	टक्का
दामोदरः	दामोतरो	भगवती	भकवती

जर्जरम्	चच्चर	गाढम्	काठं
जीमूतः	चीमूतो	ढक्का	ठक्का
तडागम्	तटाकं	षण्ढः	सण्ठो
डमरूकः	टमरूको	मधुरम्	मथुर
मदनः	मतनो	वान्धवः	पन्धवो
कन्दर्पः	कन्तप्पो	धूलिः	थूली
दामोदरः	तामोतरो	रभसः	रफसो
बालकः	पालको	रम्भा	रम्फा
मेघः	मेखो	भगवती	फकवती

२. र् के स्थान में विकल्प से ल् होता है जैसे कि—

गोरी– गोली, गोरी. चरणम्– चलनं, चरनं.

इनको छोड़कर के बाकी सभी पैशाची भाषा के समान जानना चाहिये ।



पैशाची भाषा की गाथाएं

पञ्ञान राचिञा गुननिधिना रञ्ञा अनञ्ञपुञ्ञेन।
चिन्तेतव्वं मतनातिवेरिनो किल विजेतव्वा ॥ १ ॥

सुद्धाकसायहितपक-जित करन कुतुम्व-चेसटो योगी ।
मुक्ककुटुम्बसिनेहो न वलति गन्तून मुक्खपतं ॥ २ ॥
यन्ति कसाया नत्थून यन्ति नद्धून सव्वकम्माइं ।
समसलिलसिनातान उज्झितकतकपट भरियान ॥ ३ ॥
यति अरिहपरममन्तो पढिय्यते कीरते न जीववधो ।
यातिस तातिस जाती ततो जनो निव्वुति याति ॥ ४ ॥
अच्छति रन्ने सेलेवि अच्छते दढतपं तपन्तोवि ।
ताव न लभेय्य मुक्क याव न विसयान तूरातो ॥ ५ ॥
तूरातु नेन घेप्पति मुत्तिसिरी नाइ योगकिरियाए ।
चत्तारिमंगलपभुतिमन्तम् उवखो समानेन ॥ ६ ॥

[कु० च० अष्टमे सर्गे ६-११]

चूलिका पैशाची की गाथाएं

बन्थू सठासठेसुवि आलम्पितउपसमो अनालम्फो ।
सव्वञ्ञलाचचलने अनुझायन्तो हवति योगी ॥ ७ ॥
झच्छरडमरुकभेरीढक्का जीमूतगफिरघोसावि ।
वम्हनियोजितम् अप्पं जस्स न दोलिन्ति सोधञ्ञो ॥ ८ ॥

[कु० च० अष्टमे सर्गे १२-१३]



अभ्यास–४ था.

अपभ्रंश–भाषा

सामान्य नियम

१. अपभ्रंश भाषा में एक स्वर के बदले में प्राय दूसरा स्वर हो जाता है जसे कि—

वचन— वेण, वीण
कृत्य— कच्चु, काच्च
बाहु— बाह, बाहा, बाहु
पृष्ठ— पुट्ठि, पिट्ठि, पट्ठि
तृण— तणु, तिणु, तृणु
सुकृत— सुकिदु, सुकिओ सुकृदु
क्लृन्न— किन्नओ, किलिन्नओ
रेखा— लिह, लेह, लीह
गौरी— गउरि, गोरि,

२. विभक्ति[1] के पूर्व में नाम के अन्त दीर्घ स्वर को ह्रस्व और ह्रस्व स्वर को दीर्घ विकल्प से हो जाता है जैसे कि—

श्यामल— सामला, सामल
दीर्घ:— दीहा, दीह
स्वर्णरेखा— सुवण्णरेह, सुवण्णरेहा
निद्रया— निद्दए, निद्दाए

---

१. लुक् का भी विभक्ति में समावेश होता।

३. अनादि, असयुक्त तथा स्वर से पर में क् को ग्, ख् को घ्, त् को द् थ् को ध्, प् को ब् और फ् को भ् होता है जैसे कि—

विक्षोभकर- विच्छोहगर　　शपथ- सबध.
सुख — सुघ　　सफल- सभल.
कथित— कधिद.

४. अनादि तथा असंयुक्त म् को व विकल्प से होता है जैसे कि —

कमल— कवँल, कमल,
भ्रमर— भवँर, भमर.

५. (क) संयुक्त र् का विकल्प से लोप होता है, जैसे कि—

प्रिय— पिय, प्रिय.

(ख) कही पर संस्कृत में रेफ न हो तो भी अपभ्रंश में उ हो जाता है जैसे कि—

व्यास- व्रास, वास.

६. प्राकृत में रहे हुए म्ह् को अपभ्रंश मे विकल्प से म्भ् हो जाता है जैसे कि—

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश
ग्रीष्म-	गिम्ह	गिम्भ, गिम्ह.

श्लेष्म–	सिम्ह	सिम्भ, सिम्ह.
ब्रह्म–	बम्ह	बम्भ, बम्ह.

७. अनादि तथा असंयुक्त य तथा व का लोप होता है और उसके बदले में आगे वाले स्वर के स्थान में अनुक्रम से ए तथा ओ हो जाता है जैसे कि—

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश
वचन–	वयण,	वेण.
शयन–	सयण,	सेण.
नयन–	नयण,	नेण.
नवनीत–	नवणीअ,	नोणीअ.

तद्धित प्रत्यय

८. पुल्लिग तथा नपुंसक लिंग वाचक नाम से स्वार्थ में अ, अड, उल्ल, अडअ, उल्लअ तथा अल्लडअ प्रत्यय लगते है जैसे कि—

दृष्ट–	दिट्ठअ.	हृदय–	हिअडअ
दोष–	दोसड.	चूड–	चूडुल्लअ
कुट–	कुडुल्ल.	बल–	बलुल्लडअ

९. नाम से संबंध अर्थ में केर और तण प्रत्यय लगते हैं जैसे कि—

जमुकेरू ( ), अम्हहं तणु ( )

१०. युष्मद् तथा अस्मद् शब्द से संबंध अर्थ में आर प्रत्यय होता है जैसे कि—

त्वदीय– तुहार. 　　मदीय– महार

युष्मदीय– तुम्हार. 　　अस्मदीय– अम्हार

११. नाम से भाव अर्थ में प्पण तथा त्तण प्रत्यय होते है जैसे कि—

वृद्धत्व– वड्ढप्पण, वड्डुतण

भद्रत्व– भल्लप्पण, भल्लत्तण

पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग

अकारान्त पुलिंग शब्दों के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	उ, ओ, ० (लुक्)	० (लुक्)
द्वि.	उ, ० (लुक्)	० (लुक्)
तृ.	एण, एण, एं	एहिं, हि
पं.	हु, हे	हुं
ष.	सु, स्सु, हो, ० (लुक्)	ह, ० (लुक्)
स.	इ ए	हिं
सं.	उ, ओ, ० (लुक्)	हो, ० (लुक्)

जिण शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	जिणु, जिणो, जिण, जिणा	जिण, जिणा
द्वि.	जिणु, जिण, जिणा	जिण, जिणा

	एकवचन	बहुवचन
तृ.	जिणेण, जिणेणं, जिणें	जिणेहिं, जिणाहि, जिणहि
पं.	जिणहु, जिणाहु, जिणहे, जिणाहे	जिणहुं, जिणाहुं
ष.	जिणासु, जिणसु, जिणस्सु, जिणाहो, जिणहो, जिण, जिणा	जिणाहं, जिणहं, जिण, जिणा,
स.	जिणि, जिणे	जिणाहिं, जिणहि
स	जिणु, जिणो, जिण, जिणा	जिणहो, जिणाहो, जिण, जिणा.

अकारान्त पुंल्लिग शब्दों के रूप जिण शब्द के समान जानना चाहिये ।

इकारान्त तथा उकारान्त पुंल्लिग शब्दों के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	० (लुक्)	० (लुक्)
द्वि.	० (लुक्)	० (लुक्)
तृ.	एं, म्, ण, णं	हिं
प.	हे	हुं
ष.	० (लुक्)	हुं, हं
स.	हि	हुं, हि
सं.	० (लुक्)	हो, ० (लुक्)

इसि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	इसि, इसी	इसि, इसी
द्वि.	इसि, इसी	इसि, इसी
तृ.	इसिए इसीएं, इसि, इसी इसिण, इसिणं. इसीण, इसीणं	इसिहि, इसीहि
पं.	इसिहे, इसीहे	इसिहुं, इसीहुं
ष.	इसि, इसी	इसिहु, इसीहु, इसिहं, इसीहं
स.	इसिहि, इसीहि	इसिहि, इसीहि, इसिहु, इसीहुं
स.	इसि, इसी	इसिहो, इसीहो, इसि, इसी.

इकारान्त पुल्लिग शब्दों के रूप इसि शब्दों के समान समझना चाहिये।

गुरु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	गुरु, गुरू	गुरु, गुरू
द्वि.	गुरु, गुरू	गुरु, गुरू
तृ.	गुरुए, गुरूएं, गुरु, गुरू, गुरुण, गुरुणं, गुरूण, गुरूणं	गुरुहि, गुरूहि
पं.	गुरुहे, गुरूहे	गुरुहुं, गुरूहुं
ष.	गुरु, गुरू	गुरुहुं, गुरूहुं, गुरुहं, गुरूहं

इकारान्त तथा उकारान्त नपुंसकलिंग के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	० (लुक्)	इं,
द्वि.	० (लुक्)	इं.
सं.	० (लुक्)	हो, इं.

शेष प्रत्यय इकारान्त तथा उकारान्त पुल्लिग के समान जानना चाहिये।

अच्छि शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अच्छि, अच्छी	अच्छिइं, अच्छीइं
द्वि.	अच्छि, अच्छी	अच्छिइं, अच्छीइं
स.	अच्छि, अच्छी	अच्छिहो, अच्छीहो, अच्छिइं, अच्छीइं

शेष रूप इकारान्त पुल्लिग के समान समझना चाहिये।

इकारान्त नपुंसकलिंग के शब्दों के रूप अच्छि शब्द के समान जानना चाहिये।

धणु शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	धणु, धणू	धणुइं, धणूइं
द्वि.	धणु, धणू	धणुइं. धणूइं
सं.	धणु, धणू	धणुहो, धणूहो, धणुइं, धणूइं.

अभ्यास-५. वां.

अपभ्रंश भाषा

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्द

स्त्रीलिंग प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	० (लुक्)	उ. ओ
द्वि.	० (लुक्)	उ. ओ
तृ.	ए	हिं
प.	हे	हु
ष.	हे, ० (लुक्)	हु, ० (लुक्)
स.	हि	हिं
सं.	० (लुक्)	हो, ० (लुक्)

१, स्त्रीलिंग वाचक नाम से स्वार्थ में ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय होते है, जैसे कि–

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली=मालुल्ली, माला + अडिआ = मालडिआ, माला + उल्लिआ = मालुल्लिआ, माला + उल्लडिआ = मालुल्लडिआ ।

अभ्यास-५. वां.

अपभ्रंश भाषा

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्द

स्त्रीलिंग प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	० (लुक्)	उ. ओ
द्वि.	० (लुक्)	उ. ओ
तृ.	ए	हिं
प.	हे	हु
ष.	हे, ० (लुक्)	हु, ० (लुक्)
स.	हि	हि
सं.	० (लुक्)	हो, ० (लुक्)

१, स्त्रीलिंग वाचक नाम से स्वार्थ में ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय होते है, जैसे कि—

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली=मालुल्ली, माला + अडिआ = मालडिआ, माला + उल्लिआ = मालुल्लिआ, माला + उल्लडिआ = मालुल्लडिआ ।



शेष रूप उकारान्त पुल्लिग के समान समझना चाहिये ।

उकारान्त नपुंसकलिग शब्दों के रूप धणु शब्द के समान जानना चाहिये ।

जिन शब्दों के अन्त में क सम्बन्धी उद्धृत अ हो, ऐसे शब्दों के नपुसकलिग में प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन में शून्य तथा उ के वदले में उं प्रत्यय लगता हैं जैसे कि–

नेत्तअ (नेत्रक) शब्द

प्र.–द्वि.	नेत्ताउं	नेत्तअइं, नेत्तआइं

शेष रूप नेत्त शब्द के समान जानना चाहिये ।

अच्छिअ (अक्षिक) शब्द

प्र.–द्वि.	अच्छिउं	अच्छिअइं, अच्छिआइं.

धणुअ (धनुष्क) शब्द

प्र.–द्वि.	धणुउं	धणुअइं, धणुआइं.



अभ्यास–५. वां.

अपभ्रंश भाषा

स्त्रीलिंग तथा सर्वनाम शब्द

स्त्रीलिंग प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	० (लुक्)	उ. ओ
द्वि.	० (लुक्)	उ. ओ
तृ.	ए	हि
पं.	हे	हु
ष.	हे, ० (लुक्)	हु, ० (लुक्)
स.	हि	हिं
सं.	० (लुक्)	हो, ० (लुक्)

१, स्त्रीलिंग वाचक नाम से स्वार्थ में ई, अडी, उल्ली, अडिआ, उल्लिआ तथा उल्लडिआ प्रत्यय होते है, जैसे कि–

माला+ई=माली, माला+अडी=मालडी, माला+उल्ली=मालुल्ली, माला + अडिआ = मालडिआ, माला + उल्लिआ = मालुल्लिआ, माला + उल्लडिआ = मालुल्लडिआ ।



मालडिआ (माला) शब्द के रूप

	ए०	ब०
प्र.	मालडिआ, मालडिअ	मालडिआउ, मालडिअउ, मालडिआओ, मालडिअओ
द्वि.	मालडिआ, मालडिअ	मालडिआउ, मालडिअउ, मालडिआओ, मालडिअओ
तृ.	मालडिआए, मालडिअए	मालडिआहि, मालडिअहि
प.	मालडिआहे, मालडिअहे	मालडिआहु, मालडिअहु
ष.	मालडिआहे, मालडिआहे, मालडिआ, मालडिअ	मालडिआ, मालडिअ, मालडिआहु, मालडिअहु
स.	मालडिआहि, मालडिअहि	मालडिआहिं, मालडिअहिं
सं.	मालडिआ, मालडिअ	मालडिआहो, मालडिअहो, मालडिआ, मालडिअ.

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप मालडिआ शब्द के समान समझना चाहिये ।

वुद्धि शब्द के रूप

	ए०	ब०
प्र.	वुद्धि, वुद्धी	वुद्धिउ, वुद्धिओ, वुद्धीउ, वुद्धीओ
द्वि.	वुद्धि, वुद्धी	वुद्धिउ, वुद्धीउ, वुद्धिओ, वुद्धीओ
तृ.	वुद्धिए, वुद्धीए	वुद्धिहिं, वुद्धीहिं
पं.	वुद्धिहे, वुद्धीहे	वुद्धिहु, वुद्धीहु

	ए.	ब.
ष.	बुद्धिहे, बुद्धीहे बुद्धि, बुद्धी	बुद्धिहु, बुद्धीहु, बुद्धि, बुद्धी
स.	बुद्धिहि, बुद्धीहि	बुद्धिहि, बुद्धीहि
सं.	बुद्धि, बुद्धी	बुद्धिहो, बुद्धोहो, त्रुद्धि, बुद्धी.

इकारान्त स्त्रीलिग शब्दों के रूप बुद्धि शब्द के समान समझना चाहिये ।

कुडुल्ली शब्द के रूप

	ए.	ब.
प्र,	कुडुल्ली, कुडुल्लि	कुडुल्लीउ, कुडुल्लिउ, कुडुल्लीओ, कुडुल्लिओ.
द्वि.	,,	,,

बाकी के रूप बुद्धि शब्द के समान समझना चाहिये ।

ईकारान्त स्त्रीलिग शब्दो के रूप कुडुल्ली शब्द के समान समझना चाहिये ।

धेणु शब्द के रूप

	ए.	ब.
प्र.	धेणु, धेणू	धेणुउ, धेणूउ, धेणुओ, धेणूओ
द्वि.	,,	,, , ,, ,,
तृ.	धेणुए, धेणूए	धेणुहि, धेणूहिं

	ए.	ब.
पं.	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
प.	,, ,, धेणु, धेणू	धेणुहु, धेणूहु, धेणु, धेणू
स.	धेणुहि, धेणूहि	धेणुहिं, धेणूहिं
सं.	धेणु, धेणू	धेणुहो, धेणूहो, धेणु, धेणू.

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप धेणु शब्द के समान समझना चाहिये ।

चमू शब्द के रूप

	ए.	ब.
प्र.	चमू, चमु	चमूउ, चमुउ, चमूओ, चमुओ.
द्वि.	,	,, ,, ,, ,,

शेप रूप धेणु शब्द के समान समझना चाहिये ।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के रूप चमू शब्द के समान समझना चाहिये ।

सर्वनाम शब्द

अकारान्त सर्वादि शब्दों के रूप सामान्य रूप से जिण शब्द के समान होते हैं, और सर्वनाम निमितक अन्तर जहाँ होते है वे नीचे लिखे जाते हैं:—

१. इदम् शब्द के स्थान में आय आदेश होता है और

सर्व शब्द के स्थान में साह तथा किम् शब्द के स्थान में कवण तथा काइ[1] आदेश विकल्प से होता है ।

२. अकारान्त सर्वादि शब्दो से पचमी विभक्ति के एकवचन में हां तथा सप्तमी विभक्ति के एकवचन में हि प्रत्यय आते है जैसे कि—

सव्वहा, सव्वाहां । सव्वहि, सव्वाहि । शेप रूप जिण शब्द के समान जानना चाहिये ।

३. यद् तथा तद् शब्द से प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन मे विभक्ति सहित क्रम से ध्रुं तथा त्रं आदेश विकल्प से होते है ।

४. किम् शब्द से पचमी के एकवचन में विभक्ति सहित किहे आदेश विकल्प से होता है । पक्ष मे– काहां, कहां ।

५. एतद् तथा अदस् शब्द से प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन मे विभक्ति सहित अनुक्रम से एइ तथा ओइ आदेश होते है ।

६. एतद् शब्द से प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन में विभक्ति सहित पुल्लिग में एहो, स्त्रीलिग में एह तथा नपुंसकलिंग में एहु आदेश होता है ।

---

१. काइं शब्द के रूप इकारान्त शब्द के समान होते है ।

७. यद्, तद् तथा किम् शब्द के स्त्रीलिंग में षष्ठी के एकवचन में विभक्ति सहित क्रमशः जहे, तहे तथा कहे आदेश होते हैं।

८. इदम् शब्द से नपुंसकलिंग से प्रथमा तथा द्वितीया के एकवचन में विभक्ति सहित इमु आदेश होता है।

नोट:—स्त्रीलिंग में सर्वादि शब्दों से ई तथा आ प्रत्यय लगाने से सव्वी तथा सव्वा रूप बनते है और उनके रूप कुडुल्ली तथा मालडिआ के समान होते हैं।

तुम्ह (युष्मद्) शब्द के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	तुहुं	तुम्हइं, तुम्हे
द्वि.	पइं, तइं	तुम्हइं, तुम्हे
तृ.	,, ,,	तुम्हेहि
पं.	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
ष.	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
स.	पइं, तइं	तुम्हासु

अम्ह (अस्मद्) शब्द के रूप

	ए. व.	ब. व.
प्र.	हउं	अम्हइं, अम्हे
द्वि.	मइं	अम्हइं, अम्हे

	ए. व.	ब. व.
तृ.	मइं	अम्हेहि
प.	महु, मज्झु	अम्हहं
ष.	महु, मज्झु	अम्हहं
स.	मइ	अम्हासु

शब्द के आदेश

१. नीचे लिखे हुए संस्कृत शब्दों के स्थान में नीचे लिखे हुए आदेश होते है:—

आपद् – आवइ अवस्कन्द – दडवड
विपद् – विवइ मूढ – नालिअ, वढ
सपद – सपइ यादृश – जइस, जेह
वर्त्म – विच्च तादृश – तइस, तेह
कौतुक – कोड्ड कीदृश – कइस, केह
क्रीडा – खेड्ड ईदृश – अइस, एह
दृष्टि – द्रेहि यावत् – जाम, जाउं, जामहिं, जेवड
 पक्षे— जेत्तुल
नवाक्षत–नवख तावत् – ताम, ताउं, तामहि, तेवड
 पक्षे— तेत्तुल
हेआले – हेल्लि इयत् – एवड. पक्षे— एत्तुल
भय – द्रवक्क कियत् – केवड, पक्षे— केत्तुल

असाधारण–सड्ढल एतावत्–एत्तुल
गाढ — निच्चट्ट परस्पर – अवरोप्पर
अद्भुत–ढक्करि अन्यादृश – अन्नाइश, अवराइस
आत्मीय– अप्पण उत्थानोपवेसन – उट्ठबईस ।

शब्द

धम्मक्खर (धर्माक्षर) न. धर्म का रहस्य ।
खाणि (खनि) पु. खान ।
कयकिच्च (कृतकृत्य) त्रि. जिसने कार्य को कर लिया है ।
ढाव (दे०) पु. आग्रह ।
अथिर (अस्थिर) त्रि. नष्ट होने वाला ।
घुंट (दे०) पु. घूँठ, एक बार पीने योग्य पानी ।
विहव (विभव) पु वैभव ।

धातु

जोअ (द्युत्)— चमकना ।
पिच्छ (दृश्)— देखना ।
तडप्फड (दे०)— तड़फना ।

अव्यय

निरु (   ) अ० निश्चित ।
निरुत्तउ (   ) अ० निश्चित ।

——:0:——

गाथाएं

जो जइा होतउ सो तहां होतउ, सत्तुवि मित्तुवि किहे वि हु आवउ।
जहिंवि हु तहिंवि हु मग्गे लीणा, एक्कए दिट्ठिहि दोन्निवि
जोअहु ॥ १ ॥

कासुवि जासुवि तासुवि पुरिसहो, कहेवि हु जहेवि हु तहेवि हु नारिहे।
त्रं हितु वयणु चविज्जइ थोवउ ध्रु परिणम्वॅइ समत्त पयारेहिं ॥२॥

तं बोल्लिअइ जु सच्चु पर इमु धम्मक्खरू जाणि ।
एहो परमत्था एहु सिवु एह सुहरयणहं खाणि ॥ ३ ॥

एइ सुसावग ओइ मुणि, निच्छह तवहि तवाइ ।
आयहो जम्महो एहुफलु नायइ विसय सुहाइं ॥ ४ ॥

साहुवि लोउ तडप्फडइ सव्वुवि पण्डिउ जाणु ।
कवणुवि एहु न चिन्तवइ काइवि ज निव्वाणु ॥ ५ ॥

सव्वहो कासुवि उवरि तुहुं एहु चिन्तसु निम्मोह।
तुम्हे म निवडहु भवगहणि तुम्हइं सुहिआ होह ॥ ६ ॥

तुम्हे निक्खउ अप्पु जिम्वॅ तुम्हइ जिम्वॅ अप्पाणु ।
पइं अणुसासउं पसमु करि तइ नेउ अक्उउ ठाणु ॥ ७ ॥

पइ करिअव्वी जीवदय तइ वोल्लेवउ सच्चु ।
पइं सुहु तइं कल्लाण तउ तउ होहिसि कयकिच्चु ॥ ८ ॥

सेवेअव्वा साहु पर तुम्हेहि इह जम्मम्मि ।
तुज्झु समत्तणु तुम्र खम तउ सजमु चिन्तेमि ॥ ९ ॥

कलिमलु तुज्झु पणसिही तउ वच्चेही पावु ।

मुक्खुवि तुम्र न दूरि ठिउ करि धम्मक्खरि ढावु ॥१०॥
तुम्हहं मुक्खु न दूरि ठिउ जइ संजमु तुम्हासु ।
हउं तुम्ह वन्धवु इग्र भणिवि एहु जम्पहु सव्वेसु ॥११॥
अम्हे निन्दउ कोवि जणु अम्हइ वण्णउ कोवि ।
अम्हे निन्दहुं कंवि नवि नम्हइ वण्णहुं कवि ॥१२॥
मइं मिल्लेवा भवगहणु मइ थिर एही बुद्धि ।
मत्था हत्थउ सुगुरू मइं पावउं अप्पहो सुद्धि ॥१३॥
अम्हेहिं केणवि विहिवसिण एहु मणुअत्तणु पत्तु ।
मज्झु अदूरे होउसिवु महु वच्चउ मिच्छत्तु ॥१४॥
अम्हहं मोह परोहु गउ सजमु हुउ अम्हासु ।
विसय न लोलिम महु करहिं म करहि इअ वीसासु ॥१५॥
(कु० च० अष्टमे सर्गे २६–४०)

कायकुडुल्ली निरू अथिर जीवियडउ चलु एहु ।
ए जाणिवि भवदोसडा असुहउ भावु चएहु ॥१६॥
ते धन्ना कन्नुल्लडा हिअउल्ला ति कयत्थ ।
जे खणि खणिवि नवुल्लडअ घुण्टहिं धरहि सुअत्थ ॥१७॥
पइठीकन्नि जिणागमहो वत्तडिआवि हु जासु ।
अम्हारउँ तुम्हारउँ वि एहु ममत्तु न तासु ॥१८॥
जीवु जित्तुलु जिअइ जियलोइ जइ तित्तुलु दमु करइ ।
गणइ विहवु एत्तुलु न केत्तुलु तो इत्तहे नाणु लहि
जाइ लोइ तेत्तहि निरुत्तउ ॥१९॥
(कु० च० अष्टमे सर्गे ७२–७५)

अभ्यास– ६ ठा.

अपभ्रंश–भाषा

धातु

१. वर्तमान काल के प्रत्यय अपभ्रंश भाषा में जो प्राकृत तथा शौरसेनी भाषा से भिन्न होते है वे प्रत्यय नीचे लिखे जाते हैं:—

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	×	हि
म.	हि	हु
उ.	उं	हुं

२. आज्ञार्थ में प्राकृत से अधिक मध्यम पुरुष के एकवचन में इ, उ तथा ए प्रत्यय अधिक लगते हैं ।

३. भविष्य काल में प्राकृत के 'हि' के स्थान में 'स' विकल्प से आता है ।

४. नीचे दी हुई सस्कृत धातुओं के नीचे निम्नलिखित आदेश होते है—

व्रज् – वुञ	तक्ष्— छोल्ल
भू— हुच्च	दृश्— प्रस्स
ब्रू— ब्रुव	ग्रह्— गृण्ह

कृदन्त

५. कृ धातु के कर्म में वर्तमान काल के उत्तम पुरुष के एकवचन में प्रत्यय सहित कीसु आदेश विकल्प से होता है । पक्ष मे— किज्जउं (क्रिये) ।

६. तव्य प्रत्यय के स्थान में इएव्वउं एव्वउँ तथा एवा आदेश होते हैं जैसे कि—

कर्तव्यम्— करिएव्वउं, करेव्वउं, करेवा ।

७. क्त्वा प्रत्यय के स्थान में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि तथा एविणु आदेश होते हैं ।

८. गम् धातु से एप्पिणु तथा एप्पि के एकार को विकल्प से लोप होता है जैसे कि— गम्प्पिणु, गमेप्पिणु, गम्प्पि, गमेप्पि ।

९. तुम् प्रत्यय के स्थान में एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु एवं अण, अणहं तथा अणहि आदेश होते हैं ।

१०. धातु से कर्ता अर्थ में अणअ प्रत्यय होता है, जैसे कि— मारणअ ।

११. नीचे दिये हुए कृदन्त के स्थान में नीचे लिखे अनुसार आदेश होते हैं:—

विषण्ण— वुन्न रम्य— रवण्ण

उक्त— वुत्त.

अव्ययों के आदेश

१२. नीचे दिये हुए अव्ययों के स्थान में नीचे लिखे अनुसार आदेश होते हैं:—

कथम्– किम, किवँ, केम, केवँ, किध, किह
यथा— जिम, जिवँ, जेम, जेवँ, जिध, जिह
तथा– तिम, तिवँ, तेम तेवँ, तिध, तिह
यत्र– जेत्थु, जत्तु, जेत्तहे
तत्र– तेत्थु, तत्तु, तेत्तहे
कुत्र– केत्थु, केत्ताहे
अत्र– एत्थु, एत्ताहे
सर्वत्र– सव्वेत्तहे
परत्र– परेत्ताहे
एतर्हि– एएत्ताहे, एतेत्ताहे
प्रायशः– प्राउ, प्राइव, प्राइम्व, पग्गिम्व
अन्यथा– अनु, पक्षे-अभह
कुतः — कउ, कहन्तिहु
ततः– तो

मनाक्— मणाउं
यावत्– जाम, जाउं, जामहिं
तावत्– ताम, ताउं, तामहि
किल— किर
दिवा— दिवे
अथवा— अहवइ
सह– सहु
नहि– नाहि
पश्चात्— पच्छइ
एवमेव— एम्वइ
एव– जि
इदानीम्– एम्वहिं
प्रत्युत– पच्चलिउ
इतः– एत्ताहे
शीघ्रम्— वहिल्ल
पुनः– पुणु
विना– विणु
अवश्यम्– अवसें, अवस

तदा– तो

एवम्— एम्व

परम्– पर

समम्– समाणु

ध्रुवम्– ध्रुवु

मा— मं.

एकशः – एक्कसि

इव– जणि, जणु, नं, नउ, नाइ, नावइ

पृथक्-पृथक्– जुअं. जुअ

यदि– छुड्ड

माभैषीः — मब्भेसी

१३. अपभ्रंश भाषा में किसी-किसी स्थान में घइं, खाइं, इत्यादि निपात पादपूर्ति के लिये दिये जाते हैं ।

१४. केहिं, तेहिं, रेसि, रेसिं, तणेण ये पांच निपात तादर्थ्य चतुर्थी के अर्थ में आते हैं ।

१५. हुहुरू आदि शब्दानुकरण में और घुग्घादि चेष्टानुकरण में आते हैं ।

शब्द

आलडी (आलि) स्त्री. परस्त्री आदि का प्रार्थनारूप अनर्थ.

निच्छअ (निश्चय) पु निश्चय.

पहाण (प्रधान) न. मुख्य.

बम्भ (ब्रह्म) न. शील.

संतोसामअ (सतोषामृत) न. सतोषरूपी अमृत.

दुक्कयकम्म (दुष्कृतकर्म) न. बुरा काम

पच्छइताव (पश्चात्ताप) पु. खेद, पश्चात्ताप.

कसरक्क (कसरत्क) पु. भोजन करते समय एक तरह का आवाज
पावद्रह (पापह्लद्) पु. पाप रूपी तालाब
मक्कड (मर्कट) पु वंदर
परिगह (परिग्रह) पु. वस्तुओं का संग्रह
अलिअ (अलीक) न. झूठ, असत्य
तुरिअ (त्वरित) त्रि. उत्सुक, शीघ्रता
अणाउलअ (अनाकुलक) त्रि. व्याकुल नही होने वाला
अचप्पलअ (दे०) न. चंचल नही होने वाला
झाण (ध्यान) न. ध्यान
निम्ममत्त (निर्ममत्व) न. ममत्व रहित
भल्लत्ताण (भद्रत्व) न. भद्रता, भलाई
सामाइअ (सामायिक) न. सामायिक व्रत

धातु

जोअ (द्युत्) चमकना, प्रकाशित करना

अव्यय

इणपरि ( ) अ. इस प्रकार
निरानिउ ( ) अ. निश्चित.



गाथाएं

रे मण करसि कि आलडी विसया अच्छहु दूरि ।
करणइ अच्छह रून्धिअइं कड्डुउसिवफलु भूरि ॥ १ ॥
इणपरि अप्पउ सिक्खविसु तुह अक्खहु परमत्थु ।
सुमरि जिणागम धम्मु करि सजमु वच्चु पसत्थु ॥ २ ॥
सजम लीणहो मोक्खसुहु निच्छइ होसइ तासु ।
पिय वलि कोसु भणन्ति अउ णाइ पहुच्चहि जासु ॥ ३ ॥
सच्चइं वयणइं जो ब्रुवइ उवसमु वुजइ पहाणु ।
अस्सदि सत्तु वि मित्तु जिम्वँ सो गृन्हइ निव्वाणु ॥ ४ ॥

[कु० च० अष्टमे सर्गे ४१-४६]

बम्भु अणभाइसु चरइ जो अणवराइसचित्तु ।
आइव आवइ तहिं जि भवि सो निव्वाणु पवित्तु ॥ ५ ॥
आइम्व भवि सुहु दुल्लहउं पगिम्ब जण सुहलुद्ध ।
तं सतोसामएण विणु आउ अमग्गहि मुद्ध ॥ ६ ॥
रयणत्ताउ फुडु अणुसरहु अन्नह मुत्ति कहंति ।
भण्डइ लम्भहि पउर धण अनु कि नहउ पडन्ति ॥ ७ ॥
कउ वढ अमिअइ भवगहणि ? मुक्ख कहन्तिहु होइ ।
एहु जाणेवउं जइ मणसि तो जिण आगम जोइ ॥ ८ ॥
चंचल संपय ध्रुवु मरणु सव्वु वि एम्व भणेइ ।
मिलिवि समाणु महामुणिहि पर संजमु न करेइ ॥ ९ ॥

मकरि मणाउवि मणु विवसु मं करि दुक्कयकम्मु ।
वायारम्भुवि मा करहि जइ किर इच्छसि सम्मु ॥१०॥
तित्थिवि अच्छउ अहव वणि अहवइ निअगेहेवि ।
दिवेदिवे करइ जु जीवदय सो सिज्झइ सव्वोवि ॥११॥
तवे सहुं संजमु नाहि जसु एम्वइ गम्वइ जु दीह ।
पच्छइ ताबु न जो करइ तासु फुसिज्जइ लीह ॥१२॥
सिज्झउ सो नरु एम्वहिं जि एत्ताहि माणुसजम्मि ।
जो पडिकूलिवि कूव करइ पच्चलिलउ गयधम्मि ॥१३॥
जइ संसारहो विच्चि ठिउ वुन्नउ वुत्तु सो एहु ।
पवणबहिल्लउं अप्पणउ मणु वठ सुथिरू करेहु ॥१४॥
निअमविहूणा रत्तिहिवि खाहि जि कसरक्केंहि ।
हुहुरू पडन्ति ति पावद्रहि भमडहि भवलक्खेहि ॥१५॥
तव परिपालणि जसु मणु वि मक्कड घुग्घिउ देइ ।
आहर जाहर भवगहणि सो घइं नहु प्राम्वेइ ॥१६॥
सग्गहो केहि करि जीवदय दमु करि मोक्खहोरेसि ।
कहि कसु रेसि तुहूं अवर कम्मारम्भ करेसि ॥१७॥
कसु तेहि परिगहु अलिउ कामु तणेण कहेमु ।
जसु विणु पुणु अवसे न सिवु अवस तम् इक्कसिलेसु ॥२८॥

[कु० च० अष्टमे सर्गे ५८–७१]

भल्लत्तणु जइ महसि भल्लप्पणु पसमेण ।
जइ करिएव्वउं पसमु विजउ तो करेव्वउं करणहं ॥१९॥

जइ अ करेवा करणविजउ तो मणु निच्चलु धरहु ।
निच्चलु मणु पुणु धरहु करिउ जउ रागदोसहं ॥२०॥

तह विजउ करहि रागाइअहं अविचलु सामाइउं करिवि ।
अविचलु सामाइउं करहि निम्ममत्तु निम्मलु करवि ॥२१॥

अन्तु करेप्पि निरानिउ कोहहो अन्तुकरेप्पिणु सव्वह माणहो ।
अन्तु करेविणु मायाजालहो अन्तु करेवि नियतसु लोहहो ॥२२॥

जइ चएवं मणसि संसारु सिवसुक्ख भुञ्जण तुरिउ ।
तो किर संगु मुचणहि करि मणु ।
तह सुह गुरु सेवणहं निम्ममत्तु अइ दढु करेविणु ।।२३॥

चित्तु करेवि अणाउलउं वयणु करेप्पि अचप्पलउं ।
कम्मु करेप्पिणु निम्मलउं झाणु पजुञ्जसु निच्चलउं ॥२४॥

जमणु गमेप्पि गमेप्पिणु जन्हवि गम्प्पि सरस्सइ गमिप्पणु नर्मद ।
लोउअजाणउ जं जलि बुड्डेइ नं पसु कि नीरइं सिवसर्मद ॥२५॥

(कु० च० अष्टमे सर्गे ७६-८०)

—

प्रशस्ति

गीति

इमिआ रइआ माला, गिरि[७]रस[६]णिहि[९]णह[१]मिअम्मि वरिसम्मि ।
मडणपुरम्मि कच्छे गुलावसीसेणं मुणिरयणेणं ॥ १ ॥

ससोहिअ पुण लिहिआ एगासु[१८]त्तरएगुण[९१]वीसाए ।
पोस सुकिलपढमाए झालावाडोमरडाख्यगामम्मि ॥ २ ॥



※ इति श्री प्राकृत-पाठमाला समाप्ता ※

---

१. नोट— झालावाड़ प्रदेशान्तर्गते उमरडाख्यग्रामे इत्यर्थः ।

प्राकृत-रूप-चन्द्रिका

सद्दर्शनं वीरजिनं प्रणम्य, नानेशपादाब्जरजो निधाय ।
स्वान्ते मया प्राकृतरूपकाणां, वितन्यते व्याकृतिचन्द्रिकेयम् ॥

अकारान्त-पुल्लिंग

(१) जिण [जिन] = जिनेश्वर

	ए. व.	व. व.
प्र.	जिणो	जिणा
द्वि.	जिणं	जिणा, जिणे
तृ.	जिणेण, जिणेणं	जिणेहि, जिणेहिं, जिणेहिँ
च.	जिणाय, जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
पं.	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणाहिन्तो, जिणा.	जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि, जिणाहिन्तो, जिणेहिन्तो, जिणासुन्तो, जिणेसुन्तो.
ष.	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
स.	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु, जिणेसुं
सं.	हे जिण, जिणो, जिणा.	हे जिणा.

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तित्थअर	तीर्थंकर	किलेस	क्लेश
आयरिय	आचार्य	पत्थाव	प्रस्ताव
जण	मनुष्य	अहम्म	अधर्म

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
उवज्झाय	उपाध्याय	णिव	राजा
धम्म	धर्म	जव	जौ
पह, मग्ग	रास्ता	पंडिअ	पंडित
मोक्ख, मुक्ख	मोक्ष	धम्मणिट्ठ	धर्म-परायण
वीर	वीर	गिहासम	गृहस्थाश्रम
किविण	कजूस	पमोअ	खुशी
लोह	लोभ	अहिअल	गुस्सा
गुण	गुण	समणोवासअ	श्रावक
णर	मनुष्य	णियम	नियम
सिस्स, सीस	शिष्य	समण	श्रमण
विणय	विनय	आपण	दुकान
भोअ	भोग	बोह	उपदेश
मूल	मूल	बम्हण	ब्राह्मण
संजम, संअम	संयम	पलाय	चोर
आणन्दाराम	आनन्द रूपी बगीचा	धअ	ध्वजा
		किंकर	नौकर
णरअ	नरक	केआर	क्यारी
खत्तिअ	क्षत्रिय	वावार	व्यापार
सिहर	शिखर	तेण, थेण	चोर
गिम्ह	गरमी का मौसम	गिहत्थ	गृहस्थ
भमर	भंवरा	रह	रथ
पुप्फरस	फूल का रस	कुशल	चतुर
पराअ	पराग	किसीवल	किसान

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अट्ठ	अर्थ	ताअ	पिता
काल	समय	सज्झाय	स्वाध्याय
वित्थर	विस्तार	उवस्सय	धर्मस्थान
परएस	परदेश	दोस	अवगुण
सगास	समीप	विणेअ	विनीत शिष्य
पड्डुय	भैसा	संतोस	संतोष
मेह	बादल	अज्झवसाअ	परिणाम
धीर	धैर्यवान पुरुष	पुत्त	पुत्र
निवास	निवास	ईसर	ईश्वर
बाल	बालक, अज्ञानी	चोर	चोर
सर	बाण	पहाव	प्रवाह
कर	हाथ	चडाल	चण्डाल
मोअअ	लड्डू	कफाड	गुफा
पाअ	पैर	सद्द	शब्द
विवाह	शादी	अप्पसाहग	आत्मसाधक
णाइजण	ज्ञातिजन	देह	शरीर
जिणदास	एक श्रावक का नाम	भवियजण	भव्यजन
		संसार	संसार
उत्तराज्झयण	उत्तराध्ययन सूत्र	दुग्गुण	दुर्गुण
		वाणिअ	व्यापारी
हत्थिणाउर	हस्तिनापुर, दिल्ली	लोअ	दुनिया
		जीव	आत्मा
मयण	मदन	उच्छंग	गोद

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
देवर	पति का छोटा भाई	इल्ल	चपरासी
खेअ	दुःख	इरमदिर	ऊंट
णत्तुअ	दोहिता	पआस	प्रकास
भत्तिज्जअ	भतीजा	अधआर	अंधेरा
सहस्साणीय	उदायन के दादा	उज्जोय	प्रकाश
उदायण	उदायन	कटअ	कंटक, कांटा
चेडग	महावीर स्वामी के मामा	जणवअ	जनपद
		अत्थारिअ	नौकर
सयाणीय	उदायन के पिता	कोणिअ	कोणिक
सज्जण	सज्जन	महापुरिस	महापुरुष
अब्भुदय	उन्नति	सग	सङ्ग
परमत्थ	परमार्थ	संघ	संघ, समुदाय
परलोअ	परलोक	पाण	प्राण
हत्थ	हाथ	कण्ण	कर्ण, कान
गोवाल	गोपाल, ग्वाला	तप्परिणाम	उसका परिणाम
कामभोअ	इन्द्रियो के विषय भोग	पहाव	प्रभाव
		वच्छ	वृक्ष
पमाअ	आलस्य	पट्टइल्ल	पटेल
कसाअ	कषाय	उदअ	उदय
पसाअ	कृपा	जम	यमराज
तडाअ	तालाव	उज्झस	उद्यम
आएस	आदेश	धुत्त	धूर्त्त, ठग
सेणिअ	श्रेणिक	संसारसाअर=संसार रूपी समुद्र	

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
खच्चोल	बाघ	सरअ	शरत्, शरद्ऋतु
दुज्जण	दुर्जन	ममभाव	ममत्व
कम्हिअ	माली	विआर	विकार
पुरिस	पुरुप	पासाअ	हवेली
आआर	आचार	पच्चूह	सूर्य
वेस	वेप	महावीर	महावीर
णिजवह	अपना वध	राम	रामचन्द्र
वच्छर	वर्प	खंधक	स्कन्धक
वास	महीना	पालक	पालक
लखमण	लक्ष्मण	रावण	रावण
जीवनिकाय	जीव समुदाय	विआर	विचार
विरह	वियोग	णरिन्द	नरेन्द्र
पक्ख	पाँख	भव	संसार, जन्म
पहु	प्रभु, समर्थ	परभव	दूसरा भव
विभाअ	विभाग	पसग	प्रसग
मणोरह	मन की इच्छा	देव	देवता
माआपिअर	माता-पिता	भर	समूह
पाढग	पाठक	गव्व	गर्व
कुढार	कुठार, कुल्हाड़ी	गरीअ	गरीअस्, अत्यन्त मोटा
अस्स	अश्व, घोड़ा		
गअ	गज, हाथी	णिसेह	निपेध
जोह	योध, योद्धा	लेस	लेश, थोड़ा
विस्सास	विश्वास	कलय	सुवर्णकार

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
णेह	स्नेह, प्रीति	दोवारिअ	दौवारिक, द्वारपाल
अलंकार	अलंकार, आभूषण		
रस	रस	भसल	भ्रमर, भंवरा
पवण	पवन, वायु	राईसर	राजेश्वर, महाराज
किरण	किरण		
पल्लव	पल्लव	हणुमन्त	हनुमान्
गोवच्छ	गोवत्स	अअ	अज, बकरा
विजअ	विजय	आणंद	आनन्द
सहिरत्तण	सहिष्णुता	भत्त	भक्त
जस	यशः, कीर्ति	आइच्च	आदित्य, सूर्य
जम्म	जन्म	कंचणार	काञ्चनार एक वृक्ष विशेष
पाउस	प्रावृष्, वर्षा ऋतु		
चुलुक्क	चौलुक्य वंश	धीवर	धीवर, मछुवा
महिम	महिमा	दक्खरस	द्राक्षारस
संरम्भ	संरम्भ	लय	लय, साम्यावस्था



इकारान्त-पुल्लिंग

(२) इसि (ऋषि) = साधु

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	इसी	इसउ, इसओ, इसिणो, इसी,
द्वि.	इसिं	इसिणो, इसी

	एकवचन	बहुवचन
तृ.	इसिणा	इसीहि, इसीहिं, इसीहिँ
च.	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं
प.	इसिणो, इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिन्तो	इसित्तो, इसीओ, इसीउ, इसीहिन्तो, इसीसुन्तो
ष.	इसिणो, इसिस्स	इसीण, इसीणं
स.	इसिम्मि	इसीसु, इसीसुं
सं.	हे इसि, इसी	हे इसउ, इसओ, इसिणो, इसी

एवम्—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
रिसि	ऋषि, साधु	अग्गि	अग्नि, आग
मुणि	मुनि, साधु	सारहि	सारथि
गिरि	पर्वत	भूवइ	भूपति, राजा
कोहग्गि	क्रोधाग्नि	सुकइ	सुकृति
अरि	शत्रु	पइ	पति
हत्थि	हस्ति, हाथी	वणप्फइ	वनस्पति
करि	हाथी	सेट्ठि	श्रेष्ठी, सेठ
अलि	भंवरा	पक्खि	पक्षी

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सच्चवाइ	सत्यवादी	अंजलि	अञ्जलि
भत्तहरि	भर्तृहरि	निहि	निधि, खजाना
सामि	स्वामी	अच्छि	अक्षि, आँख
तरणि	सूर्य	विहि	विधि, ब्रह्मा

सूचना— दीर्घ ईकारान्त 'गामणी' आदि के रूप 'इसि' शब्द के समान होते हैं । किन्तु सम्बोधन के एकवचन में ह्रस्वान्त रूप ही होता है ।



उकारान्त – पुल्लिग

(३) गुरु (गुरु)— गुरु

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	गुरु	गुरउ, गुरओ, गुरवो, गुरुणो, गुरू
द्वि.	गुरुं	गुरुणो, गुरू
तृ.	गुरुणा	गुरूहि, गुरूहिं, गुरूहिँ
च.	गुरुणो, गुरुस्स	गुरूण, गुरूणं
पं.	गुरुणो, गुरुत्तो, गुरूओ. गुरूउ, गुरूहिन्तो	गुरुत्तो, गुरूओ, गुरूउ गुरूहिन्तो, गुरूसुन्तो
ष.	गुरुणो, गुरुस्स	गुरूण, गुरूणं
स.	गुरुम्मि	गुरूसु, गुरूसुं
सं.	हे गुरु, गुरू	हे गुरउ, गुरओ, गुरवो, गुरुणो, गुरू

एवम्—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
साहु	साधु, मुनि	वाउ	वायु, हवा
तरु	तरु, वृक्ष	पहु	प्रभु, समर्थ
सिसु	शिशु, बच्चा	पसु	पशु
मच्चु	मृत्यु, मौत	हेउ	हेतु, कारण
भाणु	भानु, सूर्य	जन्तु	जीव
कोहसत्तु	क्रोध रूपी शत्रु		

सूचना— दीर्घ ऊकारान्त 'खलपू' आदि शब्दों के रूप 'गुरु' के समान होते है। किन्तु सम्बोधन के एकवचन में ह्रस्वान्त एक ही रूप होता है।



आकारान्त - स्त्रीलिंग

(४) माला = माला

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	माला	मालाओ, मालाउ, माला
द्वि.	मालं	,, ,, ,,
तृ.	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाहि, मालाहिँ, मालाहिं
च.	,, ,, ,,	मालाण, मालाणं

पं.	मालाअ, मालाइ, मालाए, मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो	मालत्तो, मालाओ, मालाउ, मालाहिन्तो, मालासुन्तो
ष.	मालाअ, मालाइ, मालाए	मालाण, मालाणं
स.	,, ,, ,,	मालासु, मालासुं
सं.	हे माले, माला	हे मालाओ, मालाउ, माला,

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वणिआ	वनिता	मुद्दिआ	मुद्रिका
छुहा	क्षुधा, भूख	बाला	बाला
पिवासा	पिपासा, प्यास	साला	शाला
परिक्खा	परीक्षा	सिक्खा	शिक्षा
परिसा	परिषद्, सभा	माया	माया
खमा	क्षमा	णिन्दा	निन्दा
किवा	कृपा	कहा	कथा
		यंत्तणा	यंत्रणा
सहा	सभा	उज्जोमिआ	किरण
गाहा	गाथा	सीया	सीता
भाउजाया, भाउज्जा	भातृजाया, भोजाई	गणिआ	गणिका
माअरा	मातृ, देवी	महिला	स्त्री
णणंदा	ननान्दृ, नणंद	पिंगला	भर्तृहरि की स्त्री
धूया	पुत्री	णासिआ	नासिका, नाक
पिउत्था, पिउसिआ	पितृस्वसा, भूवा	जीहा	जिह्वा, जीभ
		मइरा	मदिरा

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
करडा	भंवरा	दया	दया
दुहिआ	दुखिता	लज्जा	लज्जा, शर्म
किरिआ	क्रिया	ईसा	ईर्ष्या
पखुडिआ	पाँख	विज्जा	विद्या
जरा	वृद्धावस्था	सोहा	शोभा
अवत्था	अवस्था	रत्तिआ	रात्रि
मुसा	मृषा, झूठ	महिमा	महिमा
दुद्दशा	दुर्दशा	विलया	वनिता



इकारान्त-स्त्रीलिंग

(५) बुद्धि (बुद्धि) = मति

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	बुद्धी	बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी
द्वि	बुद्धि	,, ,, ,,
तृ.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीहि बुद्धीहिं, बुद्धीहिँ
च.	,, ,, ,, ,,	बुद्धीण, बुद्धीणं
पं.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धिहिन्तो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धीहिन्तो, बुद्धीसुन्तो

	ए. व.	ब. व.
ष.	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए	बुद्धीण. बुद्धीणं
स.	,, ,, ,, ,,	बुद्धीसु, बुद्धीसुं
सं.	हे बुद्धी, बुद्धि	हे बुद्धीओ, बुद्धीउ, बुद्धी.

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
णीइ	नीति	जोणि	योनि
रीइ	रीति	सुवुट्ठि	सुवृष्टि
आवत्ति	आवृत्ति	सत्ति	शक्ति
मियावइ	मृगावती	दिट्ठि	दृष्टि
सुबुद्धि	सुबुद्धि	पीइ	प्रीति
आवत्ति	आपत्ति	भत्ति	भक्ति
पयडि	मार्ग	समिद्धि	समृद्धि
सुगई	सुगति	सिरि	श्री, लक्ष्मी
मुत्ति	मुक्ति	अंजलि	अञ्जलि
धिइ	धृति	निहि	निधि
सग्गइ	सद्गति	अच्छि	अक्षि
अंगुलि	अंगुली	जाइ	जाति
गइ	गति		



ईकारान्त-स्त्रीलिंग

(६) वाणी = वाणी

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	वाणी, वाणीआ	वाणीआ, वाणीओ, वाणीउ, वाणी
द्वि.	वाणि	,, ,, ,, ,,
तृ.	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीहि, वाणीहिं, वाणीहिँ
च.	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीण, वाणीणं
पं.	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए, वाणित्तो, वाणीओ, वाणीउ, वाणीहिन्तो	वाणित्तो, वाणीओ, वाणीउ, वाणीहिन्तो, वाणीसुन्तो
ष.	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीण, वाणीणं,
स.	वाणीअ, वाणीआ, वाणीइ, वाणीए	वाणीसु, वाणीसुं
सं.	हे वाणि	हे वाणीआ, वाणीओ, वाणीउ, वाणी.

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
देवी	देवी	अणी	देवराणी, नणंद
इत्थी	स्त्री	भगिणी	भगिनी, बहिन

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जयन्ती	उदायन की भूवा	लुम्बी	केले के अग्रभाग में लटका हुआ फूल
गिहिणी	गृहिणी		
अवयासिणी	नाक की रस्सी	कयली	कदली, केला
गिम्हसिरी	ग्रीष्मश्री, गरमी की ऋतु	लच्छी	लक्ष्मी
		मालारी	मालाकारी, मालण
णई	नदी		
गावी	गो, गाय	लवली	लता विशेष
मेत्ती	मैत्री	केअई	केतकी
कमलावई	कमलावती	चीरी	चीरि
परित्थी	परस्त्री	उच्चिणिरी	उच्चेत्री, बिनने वाली
अडणी	मार्ग		

सूचना :—

ह्रस्व उकारान्त 'धेणु, रज्जु और दीर्घऊकारान्त चमू' आदि के रूप 'बुद्धि' शब्द के समान होते है, किन्तु दीर्घ ऊकारान्त के सम्बोधन के एकवचन में ह्रस्वान्त रूप ही होता है।

——:0:——

अकारान्त — नपुंसकलिंग

(७) नेत्त (नेत्र) = आँख

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	नेत्तं	नेत्ताणि, नेत्ताइं, नेत्ताइँ
द्वि.	नेत्तं	,, ,,
तृ.	नेत्तेण, नेत्तेणं	नेत्तेहि, नेत्तेहिं, नेत्तेहिँ
च.	नेत्ताय, नेत्तस्स	नेत्ताण, नेत्ताणं
प.	नेत्तत्तो, नेत्ताओ, नेत्ताउ, नेत्ताहि, नेत्ताहिन्तो, नेत्ता	नेत्तत्तो, नेत्ताओ, नेत्ताउ, नेत्ताहि, नेत्तेहि, नेत्ताहिन्तो, नेत्तेहिन्तो, नेत्तासुन्तो, नेत्तेसुन्तो
ष.	नेत्तास्स	नेत्ताण, नेत्ताण
स.	नेत्ते, नेत्तम्मि	नेत्तेसु, नेत्तेसुं
स.	हे नेत्त	हे नेत्ताणि, नेत्ताइं, नेत्ताइँ

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
वयण	वचन	असंगय	वस्त्र
वण	वन	वत्थ	वस्त्र
ओअण	ओदन	तेअ	तेजः, प्रकाश
दंसण	दर्शन	सीअ	शीत, ठंड
धण	धन	सत्थ	शास्त्र

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पाउरण	कवच	फल	फल
सवण	श्रवण	सुवण्ण	सुवर्ण
सर	सरः, तालाब	पायस	खीर
दुह	दुःख	पणीअ	प्रणीत, सरस
पुव्वकम्म	पूर्वकर्म	भोअण	भोजन
सच्च	सत्य	इन्दिअ	इन्द्रिय
अवलिय	मिथ्या, झूठ	सिर	शिरः, मस्तक
हियअ	हृदय	रअ	रजः, धूल
कज्ज	कार्य	ओसह	औषध
कम्म	कर्म	मण	मन
दाण	दान	सुह	सुख
आलस्स	आलस्य	उवंग	उपांग, उववाई
आरणाल	कमल		आदि सूत्र
अंतरबल	मानसिक बल	वागरण	व्याकरण
जल	जल, पानी	कव्व	काव्य
अइसरिअ	ऐश्वर्य	पऊढ	घर
कइअव	कैतव, कपट	पव्वअ	पर्वत
माण	मान	उज्जाण	उद्यान
बल	बल, सैन्य	ईस	खीला
सिणाण	स्नान	आगास	आकाश

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
णाण	ज्ञान	कुडुब	कुटुम्ब
समय	स्वमत	णामहेय	नामधेय, संज्ञा
णिरिक्खण	निरीक्षण	णयर	नगर
रहस्स	रहस्य	वअण	वदन, मुख
पडिसमय	प्रतिसमय	मुह	मुख
तविंधण	तप रूपी इंधन	अंतिअ	अन्तिक, समीप
अच्छ	जल्दी	पंकय	पंकज, कमल
अह	दुःख	जुद्ध	युद्ध
रूवग	रूप्यक, रुपैया	धन्न	धान्य
सुभिक्ख	सुभिक्ष	कदोट्ट	कमल
कोसल्ल	कौशल्य	पत्त	पात्र
समूह	समूह	सुकअ	सुकृत
भअ	भय	माणुस्स	मानुष्य
पभाअ	प्रभात	जीविअ	जीवित
सामाइअ	सामायिक	दिणअ	दिन
सुत्त	सूत्र, आगम	भक्खण	भक्षण
कल्लाण	कल्याण	जग	जगत्, संसार
अज्जव	आर्जव	नयण	नयन
कारण	हेतु	गुण	गुण
वेर	वैर	देव	देवता

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
तत्त	तत्त्व, पदार्थ	कारागिह	कारागृह, जेल
अट्टज्झाण	आर्तध्यान	कम्मायाण	कर्मादान
पअ	पद, पैर	सुमण	सुमनस्
अंग	आचारांगादि सूत्र, शरीरावयव	सम्म	शर्मन्, सुख
		चम्म	चर्मन्, चमड़ा
जम्म	जन्म	माहप्प	माहात्म्य
साहज्ज	साहाय्य	मिहुण	मिथुन
ठाण	स्थान	किच्च	कृत्य, कार्य
रज्ज	राज्य	वरिस	वर्ष
गहण	गहन	वित्त	वित्त, धन
सुपत्त	सुपात्र	पिंजर	पिंजरा
अत्तवयण	आप्तवचन	गयण	गगन
अज्झत्थ, अज्झप्प	अध्यात्म	दाम	माला
		नह	नभः, आकाश
		सेय	श्रेय, अच्छा
अकज्ज	अकार्य	वय	वयः उम्र
अग्ग	अग्र, आगे	मत्त	मात्र
कयन्न	कदन्न	पुव्वरत्तावरत्त	मध्यरात्रि
दव्व	द्रव्य	अज्झत्थिय	अध्यवसित, अध्यवसाय
मंस	मांस		
महव्वय	महाव्रत	वास=वर्ष	भत्त=भक्त, टंक

इकारान्त—नपुंसकलिंग

(८) अच्छि (अक्षि)=आँख

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अच्छिं, अच्छि	अच्छीणि, अच्छीइ, अच्छीइँ
द्वि.	अच्छि	,, ,, ,,
स.	हे अच्छि	,, ,, ,,

शेष रूप 'इसि' शब्द के समान हैं।

एवम्

दहि=दधि तथा उकारान्त धणु=धनुष आदि के रूप भी 'अच्छि' शब्द के समान जानना चाहिये।



ऋकारान्त—पुल्लिग

(९) पिउ, पिअर (पितृ)= पिता

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	पिआ, पिअरो	पिअरा, पिअउ, पिअओ, पिअवो,
द्वि.	पिअर	पिउणो, पिऊ, पिअरा, पिअरे, पिउणो, पिऊ
तृ.	पिअरेण, पिअरेण पिउणा	पिअरेहि, पिअरेहि, पिअरेहिँ पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ
च.	पिअराय, पिअरस्स पिउणो पिउस्स	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं

	एकवचन	बहुवचन
पं,	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअराहिन्तो, पिअरा पिउणो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिन्तो,	पिअरत्तो, पिअराओ, पिअराउ, पिअराहि, पिअरेहि, पिअराहिन्तो, पिअरेहिन्तो, पिअरासुन्तो, पिअरेसुन्तो, पिउत्तो, पिऊओ, पिऊउ, पिऊहिन्तो, पिऊसुन्तो.
ष.	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स.	पिअराण, पिअराणं, पिऊण, पिऊणं
स.	पिअरे, पिअरम्मि, पिउम्मि.	पिअरेसु पिअरेसुं, पिऊसु, पिऊसुं.
सं.	हे पिअर, पिअरो, पिअरा, हे पिअ, पिअरं	हे पिअरा, पिअउ, पिअओ, पिअवो, पिउणो, पिऊ.

एवम्—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
भाउ, भाअर	= भ्रातृ, भाई	जामाउ, जामाअर	= जामातृ, जमाई

(१०) कत्तु, कत्तार (कर्तृ)= कर्त्ता, करने वाला।

	ए. व.	ब. व.
प्र.	कत्ता, कत्तारो	कत्तारा, कत्तउ, कत्तओ, कत्तवो, कत्तुणो कत्तू
द्वि.	कत्तारं	कत्तारा, कत्तारे, कत्तुणो, कत्तू
तृ.	कत्तारेण, कत्तारेणं, कत्तुणा	कत्तारेहि, कत्तारेहिं, कत्तारेहिँ, कत्तूहि, कत्तूहिं, कत्तूहिँ
च.	कत्ताराय, कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स	कत्ताराण, कत्ताराण, कत्तूण, कत्तूणं
पं.	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहि, कत्ताराहिन्तो, कत्तारा, कत्तुणो, कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तू-हिन्तो	कत्तारत्तो, कत्ताराओ, कत्ताराउ, कत्ताराहि, कत्तारेहि, कत्ताराहिन्तो, कत्तारेहिन्तो, कत्तारासुन्तो, कत्तारेसुन्तो, कत्तुत्तो, कत्तूओ, कत्तूउ, कत्तू-हिन्तो, कत्तूसुन्तो
ष.	कत्तारस्स, कत्तुणो, कत्तुस्स	कत्ताराण, कत्ताराणं, कत्तूण, कत्तूणं
स.	कत्तारे, कत्तारम्मि, कत्तुम्मि	कत्तारेसु, कत्तारेसुं, कत्तूसु, कत्तूसु
सं.	हे कत्तार, कत्तारो, कत्तारा, हे कत्त.	हे कत्तारा, कत्तउ, कत्तओ, कत्तवो, कत्तुणो, कत्तू.

शब्द		अर्थ
भत्तु, भत्तार	=	भर्तृ, पति

सूचना— 'माआ, माइ, माउ' इनके रूप क्रमशः 'माला, बुद्धि तथा धेनु' शब्दों के समान होते हैं। किन्तु उकारान्त 'माउ' शब्द के प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधन के एकवचन में उकारान्त के रूप नहीं होते हैं।



अन्नन्त पुल्लिंग

(११) बम्ह, बम्हाण (ब्रह्मन्) = ब्रह्मा

	ए. व.	ब. व.
प्र.	बम्ह, बम्हो, बम्हाणो	बम्हाणो, बम्हा, बम्हाणा
द्वि.	बम्हणं, बम्हं, बम्हाणं	बम्हाणो, बम्हा, बम्हे, बम्हाणा, बम्हाणो
तृ.	बम्हणा, बम्हेण, बम्हेणं बम्हाणेण, बम्हाणेणं	बम्हेहि, बम्हेहिं, बम्हेहिँ, बम्हाणेहि, बम्हाणेहिं, बम्हाणेहिँ
च.	बम्हणो, बम्हाय, बम्हस्स, बम्हाणाय, बम्हाणस्स	बम्हाण, बम्हाणं, बम्हाणाण, बम्हाणाणं
पं.	बम्हाणो, बम्हत्तो,	बम्हत्तो, बम्हाओ, बम्हाउ,

	एकवचन	बहुवचन
	बम्हाओ बम्हाउ,बम्हा-हिन्तो,बम्हा,बम्हाणत्तो, बम्हाणाओ, बम्हाणाउ, बम्हाणाहि, बम्हाणा हिन्तो, बम्हाणा.	बम्हाहिन्तो, बम्हासुन्तो, बम्हा-णत्तो, बम्हाणाओ, बम्हाणाउ, बम्हाणाहि, बम्हाणेहि, बम्हाणा-हिन्तो, बम्हाणेहिन्तो, बम्हाणा-सुन्तो, बम्हाणेसुन्तो.
ष.	बम्हणो, बम्हस्स, बम्हाणस्स.	बम्हाण, बम्हाणं, बम्हाणाण, बम्हाणाणं.
स.	बम्हे, बम्हम्मि, बम्हाणे, बम्हाणम्मि.	बम्हेसु, बम्हेसुं, बम्हाणेसु, बम्हाणेसुं.
सं.	हे बम्ह, बम्हो, बम्हा, हे बम्हाण, बम्हाणो, बम्हाणा.	हे बम्हाणो, बम्हा, हे बम्हाणा.

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जुव, जुवाण	युवन्, युवक	उच्छ, उच्छाण	ऊक्षन्, बैल
अद्ध, अद्धाण	अध्वन्, मार्ग	स, साण	श्वन्, कुत्ता
गाव, गावाण	ग्रावन्, पत्थर	पूस, पूसाण	पूषन्, सूर्य
मुद्ध, मुद्धाण	मूर्धन्, मस्तक		



(१२) अप्प अप्पाण (आत्मन्) = आत्मा

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अप्पा, अप्पो, अप्पाणो.	अप्पाणो, अप्पा, अप्पाणा.
द्वि.	अप्पणं, अप्पं, अप्पाणं.	अप्पाणो, अप्पा, अप्पे, अप्पाणा, अप्पाणे.
तृ.	अप्पणा, अप्पणिआ, अप्पणइया, अप्पेण, अप्पेणं, अप्पाणेण, अप्पाणेणं.	अप्पेहि, अप्पेहिं, अप्पेहिँ, अप्पाणेहि, अप्पाणेहिं, अप्पाणेहिँ.
च.	अप्पणो, अप्पाय, अप्पस्स, अप्पाणाय, अप्पाणस्स.	अप्पाण, अप्पाणं, अप्पाणाण, अप्पाणाणं.
पं.	अप्पाणो, अप्पत्तो, अप्पाओ अप्पाउ, अप्पाहि, अप्पाहिन्तो, अप्पा, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणा.	अप्पत्तो, अप्पाओ, अप्पाउ, अप्पाहि अप्पेहि, अप्पाहिन्तो, अप्पेहिन्तो, अप्पासुन्तो, अप्पेसुन्तो, अप्पाणत्तो, अप्पाणाओ, अप्पाणाउ, अप्पाणाहि, अप्पाणेहि, अप्पाणाहिन्तो, अप्पाणेहिन्तो, अप्पाणासुन्तो, अप्पाणेसुन्तो.
ष.	अप्पणो, अप्पस्स, अप्पाणस्स.	अप्पाण, अप्पाणं, अप्पाणाण, अप्पाणाणं.
स.	अप्पे, अप्पम्मि, अप्पाणे, अप्पाणम्मि.	अप्पेसु, अप्पेसुं, अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं.

	एकवचन	बहुवचन
सं.	हे अप्प, अप्पो, अप्पा, हे अप्पाण, अप्पाणो, अप्पाणा.	हे अप्पाणो, अप्पा, हे अप्पाणा.

एवम्

अत्त, अत्ताण (आत्मन्) = आत्मा.

---

(१३) राअ, राआण (राजन्) = राजा

	ए. व.	ब. व.
प्र.	राआ, राओ, राआणो.	राइणो, राआणो, राआ, राआणा
द्वि.	राइण, राअ, राआण.	राइणो, राआणो, राआ, राए, राआणा, राआणे.
तृ.	राइणा, रण्णा, राअणा, राएण, राएणं, राआणेण, राआणेणं.	राईहि, राईहिं, राईहिँ, राएहि, राएहिं, राएहिँ, राआणेहि, राआणेहिं, राआणेहिँ.
च.	राइणो, रण्णो, राअणो, राआय, राअस्स, राआणाय, राआणस्स.	राईण, राईणं, राइण, राइणं, राआण, राआणं, राआणाण, राआणाणं.
पं.	राइणो, रण्णो, राआणो, राअत्तो, राआओ,	राइत्तो, राईओ, राईउ, राईहिन्तो, राइसुन्तो, राअत्तो,

	एकवचन	बहुवचन
	राअाउ, राअाहि, राअाहिन्तो, राअा, राअाणत्तो, राअाणाओ, राअाणाउ, राअाणाहि, राअाणाहिन्तो, राअाणा.	राअाउ, राअाहि, राएहि, राअाहिन्तो, राएहिन्तो, राअासुन्तो, राएसुन्तो, राअाणत्तो, राअाणाओ, राअाणाउ, राअाणाहि, राअाणेहि, राअाणाहिन्तो, राअाणेहिन्तो, राअाणासुन्तो, राअाणेसुन्तो.
ष.	राइणो, रण्णो, राअणो, राअस्स, राअाणस्स.	राईण, राईणं, राइण, राइणं, राअाण, राअाणं, राअाणाण, राअाणाणं.
स.	राइम्मि, राए, राअम्मि, राअाणे, राअाणम्मि.	राईसु, राईसुं, राएसु, राएसुं, राअाणेसु, राअाणेसुं.
सं.	हे राअ, राओ, राअा, हे राअाण, राअाणो, राअाणा.	हे राइणो, राअाणो, राअा, हे राअाणा.

——:0.——

सर्वनाम शब्द

अकारान्त पुल्लिग

(१४) सव्व (सर्व) = सब

	ए. व.	ब. व.
प्र.	सव्वो	सव्वे
द्वि	सव्वं	सव्वा, सव्वे
तृ.	सव्वेण, सव्वेणं	सव्वेहि, सव्वेहिं, सव्वेहिँ
च.	सव्वाय, सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
पं.	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वाहिन्तो, सव्वा.	सव्वत्तो, सव्वाओ, सव्वाउ, सव्वाहि, सव्वेहि, सव्वाहिन्तो, सव्वेहिन्तो, सव्वासुन्तो, सव्वेसुन्तो.
ष.	सव्वस्स	सव्वेसिं, सव्वाण, सव्वाणं
स.	सव्वस्सि, सव्वत्थ, सव्वहिं, सव्वे, सव्वम्मि	सव्वेसु, सव्वेसुं
सं.	हे सव्व, सव्वो, सव्वा.	हे सव्वे.

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अण्ण	अन्य, दूसरा	कंअर	कतर, कौनसा (दो में से एक)
एग	एक	इअर	इतर, दूसरा



व्यञ्जनान्त—शब्द

(१५) क (किम्) = कौन

	ए. व.	ब. व.
प्र.	को	के
द्वि.	कं	का, के
तृ.	किणा, केण, केणं	केहि, केहिं, केहिँ
च.	कास, कस्स	कास, केसि, काण, काणं
प.	कम्हा, किणो, कीस, कत्तो, काओ, काउ, काहि, काहिन्तो, का	कत्तो, काओ, काउ, काहि, केहि, काहिन्तो, केहिन्तो, कासुन्तो, केसुन्तो
ष.	कास, कस्स	कास, केसि, काण, काणं
स.	काहे, काला, कइया, कस्सि, कत्थ, कहिं, के, कम्मि	केसु, केसुं



(१६) ज (यद्) = जो

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	जो	जे
द्वि.	जं	जा, जे

तृ	जिणा, जेण, जेणं	जेहि, जेहिं, जेहिँ
च.	जास, जस्स	जास, जेसिं, जाण, जाणं
पं.	जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जाहिन्तो, जा	जत्तो, जाओ, जाउ, जाहि, जेहि, जाहिन्तो, जेहिन्तो, जासुन्तो, जेसुन्तो
ष.	जास, जस्स	जास, जेसि, जाण, जाणं
स.	जाहे, जाला, जइआ, जस्सिं, जत्थ, जहि, जे, जम्मि.	जेसु, जेसुं

(१७) त (तद्) = वह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	सो, स	ते, णे
द्वि.	तं, णं	ता, ते, णा, णे
तृ	तिणा, तेण, तेणं, णिणा, णेण, णेणं	तेहि, तेहिं, तेहिँ, णेहि, णेहिं, णेहिँ.
च.	तास, तस्स, से	तास, तेसिं सिं, ताण, ताणं
प.	तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, ताहिन्तो, ता	तत्तो, ताओ, ताउ, ताहि, तेहि, ताहिन्तो, तेहिन्तो, तासुन्तो, तेसुन्तो
ष.	तास, तस्स, से	तास, तेसिं, सिं, ताण, ताणं

स.	ताहे, ताला, तइया,	तेसु, तेसुं.
	तस्सि, तत्थ, तहिं, ते,	
	तम्मि.	



(१८) एअ (एतद्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	एसो, एस, इणं, इणमो	एए
द्वि.	एअं	एआ, एए
तृ.	एइणा, एएण, एएणं	एएहि, एएहिं, एएहिँ
च.	से, एअस्स	सिं, एएसिं, एआण, एआणं
पं.	एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एआहिन्तो, एआ	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहि, एआहिन्तो, एएहिन्तो, एआसुन्तो, एएसुन्तो
ष.	से, एअस्स	सि, एएसि, एआण, एआणं
स.	अअम्मि, ईअम्मि, एअम्मि, एअस्सि, एत्थ, एए.	एएसु, एएसुं.



(१९) अमु (अदस्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	अय, इमो	इमे
द्वि.	इणं, इमं, णं	इमा, इमे, णा, णे
तृ.	इमिणा, इमेण, इमेणं, णिणा, णेण, णेणं	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ णेणि, णेहिं, णेहिँ
च.	अस्स, इमस्स, से	सि, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पं.	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमाहिन्तो, इमा	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमेहि, इमाहिन्तो, इमेहिन्तो, इमासुन्तो, इमेसुन्तो
ष.	अस्स, इमस्स, से	सि, इमेसिं, इमाण, इमाणं
सं.	अस्सि, इमस्सि, इमम्मि, इमे, इह.	इमेसु, इमेसुं.



(२०) अमु (अदस्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	अह, अमू	अमउ, अमओ, अमवो, अमुणो, अमू
द्वि.	अमुं	अमुणो, अमू
तृ.	अमुणा	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ

	एकवचन	बहुवचन
च.	अमुणो, अमुस्स	अमूण, अमूणं
पं.	अमुणो, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
ष.	अमुणो, अमुस्स.	अमूण, अमूणं.
स.	अयम्मि, इमम्मि, अमुम्मि, अमुंसि.	अमूसु, अमूसुं.



आकारान्त स्त्रीलिंग

'सव्व' आदि शब्दों से स्त्रीलिंग में आप् प्रत्यय लगाने पर 'सव्वा' आदि शब्द तैयार होते हैं, जिनके रूप 'माला' शब्द के समान होते हैं, जैसे— सव्वा, अण्णा, कअरा, इअरा, एगा इत्यादि ।



व्यञ्जनान्त – स्त्रीलिंग

(२१) का (किम्) = कौन

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	का	कीआ, कीओ, कीउ, की, काओ, काउ, का

	एकवचन	बहुवचन
द्वि.	कं	कीआ, कीओ, कीउ, की, काओ, काउ, का
तृ.	कीअ, कीआ, कीइ, कीए, काअ, काइ, काए	कीहि, कीहिं, कीहिँ, काहि, काहिं, काहिँ
च.	किस्सा, कीसे, कास, कीअ, कीआ, कीइ, कीए, काअ, काइ, काए	केसिं, कास, काण, काणं
पं.	कीअ, कीआ, कीइ, कीए, कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, काअ, काइ, काए, कम्हा, कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो	कित्तो, कीओ, कीउ, कीहिन्तो, कीसुन्तो, कत्तो, काओ, काउ, काहिन्तो, कासुन्तो
ष.	किस्सा, कीसे, कास, कीअ, कीआ, कीइ, कीए, काअ, काइ, काए	केसिं, कास, काण, काणं
स.	कीअ, कीआ, कीइ, कीए काहिं, काअ, काइ, काए	कीसु, कीसुं, कासु, कासुं

—:0:—

(२२) जा (यद्) = जो

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	जा	जीआ, जीओ, जीउ, जी जाओ, जाउ, जा
द्वि.	जं	,,
तृ.	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जीहि, जीहिं, जीहिँ, जाहि, जाहिं, जाहिँ
च.	जिस्सा, जीसे, जास, जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जेसिं, जाण, जाणं
पं.	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जाअ, जाइ, जाए, जम्हा, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो	जित्तो, जीओ, जीउ, जीहिन्तो, जीसुन्तो, जत्तो, जाओ, जाउ, जाहिन्तो, जासुन्तो
ष.	जिस्सा, जीसे, जास, जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाअ, जाइ, जाए	जेसिं, जाण, जाणं
स.	जीअ, जीआ, जीइ, जीए, जाहिं, जाअ, जाइ, जाए.	जीसु, जीसुं, जासु, जासुं

(२३) सा (तद्) = वह

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	सा, णा	तीआ, तीओ, तीउ, ती, ताओ, ताउ, ता
द्वि.	तं, णं	तीआ, तीओ, तीउ, ती, ताओ, ताउ, ता
तृ.	तीअ, तीआ, तीइ तीए, ताअ, ताइ, ताए, णाअ, णाइ, णाए	तीहि, तीहिं, तीहिँ, ताहि, ताहिं, ताहिँ, णाहि, णाहिं, णाहिँ
च.	तीस्सा, तीसे, तास, से, तीअ, तीआ, तीइ, तीए, ताअ, ताइ, ताए	सिं, तेसिं, तास, ताण, ताणं
पं.	तीअ, तीआ, तीइ, तीए, तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, ताअ, ताइ, ताए, तो, तम्हा, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो	तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो, तत्तो, ताओ, ताउ, ताहिन्तो, तासुन्तो
ष.	तिस्सा, तीसे, तास, से, तीअ, तीआ, तीइ, तीए, ताअ, ताइ, ताए	सिं, तेसिं, तास, ताण, ताणं
स.	तीअ, तीआं, तीइ, तीए, ताहि, ताअ, ताइ, ताए.	तीसु, तीसुं, तासु, तासुं.



(२४) एई एआ (एतद्) = यह

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	एई, एईआ एसा, एस, इणं, इणमो	एईआ, एईओ, एईउ, एई, एआओ एआउ, एआ
द्वि.	एइं, एअ	एईआ, एईओ, एईउ, एई, एआओ, एआउ, एआ
तृ.	एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एआअ, एआइ, एआए	एईहि, एईहिं, एईहिँ, एआहि, एआहिं, एआहिँ
च.	एईअ, एईआ, एईइ, एईए, से, एआअ, एआइ, एआए	एईण, एईणं, सिं, एआण.एआणं
पं.	एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो, एआअ, एआइ, एआए, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो.	एइत्तो, एईओ, एईउ, एईहिन्तो, एईसुन्तो, एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहिन्तो, एआसुन्तो
ष.	एईअ, एईआ, एईइ, एईए, से, एआअ, एआइ, एआए.	एईण, एईणं, सिं, एआण, एआणं.
स.	एईअ, एईआ, एईइ, एईए, एआअ, एआइ, एआए.	एईसु, एईसुं, एआसु, एआसुं.



(२५) इमी, इमा (इदम्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	इमी, इमीआ इमा, इमिआ	इमीआ, इमीओ, इमीउ, इमी इमाओ, इमाउ, इमा
द्वि.	इमि इमं, इण, णं	इमीआ, इमीओ, इमीउ, इमी, इमाओ, इमाउ, इमा
तृ.	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए,णाअ,णाइ,णाए	इमीहि, इमीहिं, इमीहिँ, इमाहि, इमाहि, इमाहिँ, णाहि, णाहिं, णाहिँ
च.	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
पं.	इमीअ, इमीआ, इमीइ, इमीए,इमित्तो,इमीओ, इमीउ, इमीहिन्तो, इमाअ, इमाइ, इमाए, इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो.	इमित्तो, इमीओ, इमीउ, इमी- हिन्तो,इमीसुन्तो,इमत्तो,इमाओ, इमाउ, इमाहिन्तो, इमासुन्तो.
ष.	इमीअ,इमीआ,इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए.	इमीण, इमीणं, इमेसिं, इमाण, इमाणं
स.	इमीअ,इमीआ,इमीइ, इमीए, इमाअ, इमाइ, इमाए.	इमीसु, इमीसुं, इमासु, इमासुं.



(२६) अमु (अदस्) = यह

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	अह, अमू	अमूओ, अमूउ, अमू
द्वि.	अमुं	,, ,, ,,
तृ.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूहि, अमूहिं, अमूहिँ
च.	,, ,, ,,	अमूण, अमूणं
पं.	,, ,, ,, अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो	अमुत्तो, अमूओ, अमूउ, अमूहिन्तो, अमूसुन्तो
ष.	अमूअ, अमूआ, अमूइ, अमूए	अमूण, अमूणं
स.	,, ,, ,,	अमूसु, अमूसुं.



अकारान्त-नपुंसकलिंग

(२७) सव्व (सर्व) = सब

	ए. व.	ब. व.
प्र.	सव्वं	सव्वाणि, सव्वाइं, सव्वाइँ
द्वि.	सव्वं	,, ,, ,,
सं.	हे सव्वं.	हे ,, ,, ,,

शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं।

एवं— अण्ण, कयर आदि के रूप भी जानना चाहिये।



व्यञ्जनान्त—नपुंसकलिंग

(२८) किं (किम्) = क्या

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	किं	काणि, काइं, काइँ
द्वि.	किं	" " "

शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं ।



(२९) ज (यद्) = जो

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	जं	जाणि, जाइं, जाइँ
द्वि.	जं	" " "

शेष रूप पुंल्लिग के समान होते है ।



(३०) त (तद्) = वह

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	तं, णं	ताणि, ताइं, ताइँ, णाणि, णाइं, णाइँ
द्वि.	तं, णं	" " " " " "

शेष रूप पुंल्लिग के समान होते हैं ।

(३१) एअ (एतद्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	एअं, एस, इणं, इणमो	एआणि, एआइं, एआइँ
द्वि.	एअं.	" " "

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

(३२) इम (इदम्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	इदं, इणं, इणमो	इमाणि, इमाइं, इमाइँ.
द्वि.	" " "	" " "

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

(३३) अमु (अदस्) = यह

	ए. व.	ब. व.
प्र.	अह, अमुं	अमूणि, अमूइं, अमूइँ.
द्वि.	अमुं.	" " "

शेष रूप पुल्लिग के समान होते हैं।

(३४) युष्मद् = तुम

	ए. व.	ब. व.
प्र.	तं, तुं, तुमं, तुवं, तुह	भे, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुज्झ, तुम्ह, तुय्हे, उय्हे
द्वि.	त, तु, तुमं, तुवं, तुह, तुमे, तुए	वो, तुज्झ, तुब्भे, तुम्हे, तुज्झे, तुय्हे, उय्हे, भे
तृ.	भे, दि, दे, ते, तइ, तए, तुमं, तुमइ, तुमए, तुमे, तुमाइ	भे, तुब्भेहिं, तुम्हेहिं, तुज्झेहिं, उज्झेहि, उम्हेहि, तुय्हेहिं, उय्हेहिं
च.	तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुह, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुब्भ. तुम्ह, तुज्झं, तुब्भाण, तुब्भाणं, तुम्हाण, तुम्हाणं, तुज्झाण, तुज्भाणं, तुवाण, तुवाणं, तुमाण, तुमाणं, तुहाण, तुहाणं, उम्हाण, उम्हाणं
पं.	तइत्तो, तईओ, तईउ, तईहिन्तो, तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ, तुवाहि, तुवाहिन्तो, तुवा, तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ, तुमाहि,	तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भेहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भेहिन्तो, तुब्भासुन्तो, तुब्भेसुन्तो, तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हेहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हेहिन्तो,

	एकवचन	बहुवचन
	तुमाहिन्तो, तुमा, तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुहाहि, तुहाहिन्तो, तुहा, तुब्भत्तो, तुब्भाओ, तुब्भाउ, तुब्भाहि, तुब्भाहिन्तो, तुब्भा, तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहि, तुम्हाहिन्तो, तुम्हा, तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झाहिन्तो, तुज्झा, तुय्ह, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तहिन्तो	,तुम्हासुन्तो, तुम्हेसुन्तो, तुज्झत्तो, तुज्झाओ, तुज्झाउ, तुज्झाहि, तुज्झेहि, तुज्झाहिन्तो, तुज्झेहिन्तो, तुज्झासुन्तो, तुज्झेसुन्तो, तुय्हत्तो, तुय्हाओ, तुय्हाउ, तुय्हाहि, तुय्हेहि, तुय्हाहिन्तो, तुय्हेहिन्तो, तुय्हासुन्तो, तुय्हेसुन्तो, उय्हत्तो, उय्हाओ, उय्हाउ, उय्हाहि, उय्हेहि, उय्हाहिन्तो, उय्हेहिन्तो, उय्हासुन्तो, उय्हेसुन्तो, उम्हत्तो, उम्हाओ, उम्हाउ, उम्हाहि, उम्हेहि, उम्हाहिन्तो, उम्हेहिन्तो, उम्हासुन्तो, उम्हेसुन्तो
ष.	तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, उब्भ, उम्ह, उज्झ, उय्ह	तु, वो, भे, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ, तुब्भं, तुम्हं, तुज्झ, तुब्भाण, तुब्भाणं, तुम्हाण, तुम्हाणं, तुज्झाण, तुज्झाणं, तुवाण, तुवाणं, तुमाण, तुमाणं, तुहाण, तुहाणं, उम्हाण, उम्हाणं.

	ए. व.	ब. व.
स.	तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुवस्सि, तुवत्थ, तुवहिं, तुमम्मि, तुमस्सि, तुमत्थ, तुमहि, तुहम्मि,तुहस्सि,तुहत्थ, तुहहिं,तुब्भम्मि,तुब्भस्सि, तुब्भत्थ, तुब्भहिं, तुम्हम्मि, तुम्हस्सि, तुम्हत्थ, तुम्हहि, तुज्झम्मि, तुज्झस्सि, तुज्झत्थ, तुज्झहि.	तुसु, तुसुं, तुवेसु, तुवेसुं, तुमेसु, तुमेसुं, तुहेसु, तुहेसुं, तुब्भेसु, तुब्भेसुं, तुम्हेसु, तुम्हेसुं, तुज्झेसु, तज्झेसुं, तुवसु तुवसुं, तुमसु, तुमसुं, तुहसु, तुहसुं, तुब्भसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुम्हसुं, तुज्झसु, तुज्झसुं, तुब्भासु, तुब्भासुं, तुम्हासु, तम्हासुं, तुज्झासु, तुज्झासुं.



(३५) अस्मद् = मैं

	एकवचन	बहुवचन
प्र.	म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अह, अहय	अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं, भे
द्वि.	णे, णं, मि, अम्मि, अम्ह, मम्ह, मं, मम, मिमं, अह	अम्हे, अम्हो, अम्ह, णे
तृ.	मि, मे, ममं, ममए, ममाइ,मइ,मए,मयाइ,णे	अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, णे

	एकवचन	बहुवचन
च.	मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्ह	णे, णो. मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, अम्हाणं, ममाण, ममाणं, महाण, महाणं, मज्झाण, मज्झाणं
पं.	मइत्तो, मईओ, मईउ, मईहिन्तो, ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममाहिन्तो, ममा, महत्तो, महाओ, महाउ, महाहि, महाहिन्तो, महा मज्झत्तो, मज्झाओ, मज्झाउ, मज्झाहि, मज्झाहिन्तो मज्झा	ममत्तो, ममाओ, ममाउ, ममाहि, ममेहि, ममाहिन्तो, ममेहिन्तो, ममासुन्तो, ममेसुन्तो, अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ, अम्हाहि, अम्हेहि, अम्हाहिन्तो, अम्हेहिन्तो, अम्हासुन्तो, अम्हेसुन्तो
ष.	मे, मइ, मम, मह, महं, मज्झ, मज्झं, अम्ह, अम्ह	णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, अम्हाण, ममाण, ममाणं, महाण, महाणं, मज्झाण, मज्झाणं
स.	मि, मइ, ममाइ, मए, मे, अम्हम्मि, अम्हस्सि, अम्हत्थ, अम्हहिं, ममम्मि, ममस्सि, ममत्थ, ममहि, महम्मि, महस्सि, महत्थ, महहिं, मज्झम्मि, मज्झस्सि, मज्झत्थ, मज्झहिं.	अम्हेसु, अम्हेसुं, ममेसु, ममेसुं, महेसु, महेसु, मज्झेसु, मज्झेसुँ, अम्हसु, अम्हसुं, ममसु, ममसुं, महसु, महसुं, मज्झसु, मज्झसुं, अम्हासु, अम्हासुं.

संख्यावाचक शब्द

बहुवचनान्त

स्वरान्त तथा व्यञ्जनान्त – स्त्रीलिंग

(३६) दो, वे (द्वि) = दो

बहुवचन

प्र. दुवे, दोण्णि, दुण्णि वेण्णि, विण्णि, दो, वे.
द्वि. „ „ „ „ „ „
तृ. दोहि, दोहिं, दोहिँ, वेहि, वेहिं, वेहिँ.
च, दोण्ह, दोण्हं, वेण्ह, वेण्हं, दुण्ह, दुण्हं, विण्ह, विण्हं.
पं. दुत्तो, दोओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो, वित्तो, वेओ, वेउ, वेहिन्तो, वेसुन्तो.
ष. दोण्ह, दोण्हं, वेण्ह, वेण्ह, दुण्ह, दुण्हं, विण्ह, विण्हं.
स. दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं.

——:0:——

(३७) ती (त्रि)=तीन

ब. व.

प्र. तिण्णि.
द्वि. „
तृ. तीहि, तीहिं, तीहिँ.

(३८) चउ (चतुर्)=चार

ब. व.

प्र. चत्तारो, चउरो, चत्तारि.
द्वि. „ „ „
तृ. चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ.

बहुवचन	बहुवचन
च. तीण्ह, तीण्हं.	च. चउण्ह, चउण्हं.
पं. तित्तो, तीओ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो.	पं. चउत्तो, चऊओ, चउओ, चऊउ, चउउ, चऊहिन्तो, चउहिन्तो, चऊसुन्तो, चउसुन्तो,.
ष. तीण्ह, तीण्हं.	ष. चउण्ह, चउण्हं.
स. तीसु, तीसुं.	स. चऊसु, चऊसुं, चउसु, चउसुं.



पंच (पञ्चन्) = पांच

ब. व.

प्र. पंच.

द्वि. पंच.

तृ. पंचहि, पंचहिं, पंचहिँ.

च. पंचण्ह, पंचण्हं.

पं. पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहि, पंचेहि, पंचाहिन्तो, पंचेहिन्तो, पंचासुन्तो, पंचेसुन्तो.

ष. पंचण्ह, पंचण्हं.

स. पंचसु, पंचसुं.



एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
छ (षष्)	छः	तेरस, तेरह (त्रयोदश)	= तेरह
सत्त (सप्त)	सात	चउद्दस, चउदह (चतुर्दश)	=चौदह
अट्ठ (अष्टन्)	आठ	पन्नरस, पन्नरह (पंचदश)	=पन्द्रह
नव, णव (नवन्)	नौ	सोलस, सोलह (षोडश)	=सोलह
दह, दस (दशन्)	दस	सत्तरस सत्तरह- (सप्तदश)	= सत्तरह
एआरस, एआरह (एकादश)	ग्यारह	अट्ठारस, अट्ठारह- (अष्टादश)	= अठारह
बारस, बारह (द्वादश)	=बारह		



कइ (कति) = कितना

बहुवचन

प्र. कइ.

द्वि. कइ.

तृ. कईहि, कईहिं, कईहिँ.

च. कइण्ह, कइण्हं.

पं. कइत्तो, कईओ, कईउ, कईहिन्तो, कईसुन्तो.

पं. कइण्ह, कइण्हं.

स. कईसु, कईसुं.

——0——

वीसा (विंशति) = वीस

	ए. व.	ब. व.
प्र.	वीसा.	वीसाओ, वीसाउ, वीस.
द्वि.	वीसं.	,, ,, ,,
तृ.	वीसाअ, वीसाइ. वीसाए.	वीसाहि, वीसाहिं, वीसाहिँ.
च.	,, ,, ,,	वीसाण, वीसाणं.
पं.	,, ,, ,, वीसात्तो, वीसाओ, वीसाउ, वीसाहिन्तो.	वीसात्तो, वीसाओ, वीसाउ, वीसाहिन्तो, वीसासुन्तो.
ष.	वीसाअ, वीसाइ, वीसाए.	वीसाण, वीसाणं.
स.	,, ,, ,,	वीसासु, वीसासुं.
सं	हे वीसा.	हे वीसाओ, वीसाउ, वीसा.



शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
एगूणवीसा	उन्नीस	सत्तवीसा	सत्ताईस
एगवीसा	इक्कीस	अट्ठावीसा	अट्ठाईस
दुवीसा	बाईस	एगूणतीसा	उन्तीस
तेईसा	तेईस	तीसा	तीसा
चउवीसा	चौबीस	एगतीसा	इकतीस
पण्णवीसा (पंचवीसा)=पच्चीस		दुतीसा, दोतीसा	बत्तीस
छव्वीसा (छवीसा)	छब्बीस	तेतीसा	तेतीस

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चउतीसा	चौंतीस	सत्तचतालीसा	सैतालीस
पण्णतीसा (पंचतीसा)	पैंतीस	अडआलीसा	अड़तालीस
छत्तीसा	छत्तीस	एगूणवन्ना	उनचास
सत्ततीसा	सैंतीस	पन्नासा	पचास
अडतीसा	अडतीस	एगावन्ना	इक्यावन
एगूणचत्तालीसा	उन्तालीस	दोवन्ना	बावन
चत्तालीसा	चालीस	तेवन्ना	तिरेपन
एगचत्तालीसा	इकतालीस	चउवन्ना	चौपन
बायाला	बयालीस	पणवन्ना	पचपन
तेआलीसा	तेतालीस	छवन्ना	छप्पन
चउआलीसा	चवालीस	सत्तावन्ना	सत्तावन
पण्णचत्तालीसा	पैतालीस	अट्ठावन्ना (अडवन्ना)=	अट्ठावन
छचत्तालीसा	छियालीस		



सट्ठि (षष्ठि) = साठ

	ए. व.	ब. व.
प्र.	सट्ठी	सट्ठीओ, सट्ठीउ, सट्ठी.
द्वि.	सट्ठि	,,　,,　,,

	ए. व.	ब. व.
तृ.	सट्ठीअ,सट्ठीआ,सट्ठीइ,सट्ठीए.	सट्ठीहि, सट्ठीहिं, सट्ठीहिँ.
च.	,, ,, ,, ,,	सट्ठीण, सट्ठीणं.
पं.	,, ,, ,, ,,	सट्ठित्तो, सट्ठीओ, सट्ठीउ.
	सट्ठित्तो,सट्ठीओ,सट्ठीउ,सट्ठीहिन्तो.	सट्ठीहिन्तो, सट्ठीसुन्तो.
ष.	सट्ठीअ,सट्ठीआ,सट्ठीइ,सट्ठीए	सट्ठीण, सट्ठीणं.
स.	,, ,, ,, ,,	सट्ठीसु, सट्ठीसुं.

एवम्

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
एगूणसट्ठि	उनसठ	एगसत्तरि	एकहत्तर
एगसट्ठि	इकसठ	दोसत्तरि	बहत्तर
दोसट्ठि	बासठ	तेसत्तरि,तेवत्तरि	तिहत्तर
तेसट्ठि	तिरेसठ	चउसत्तरि	चौहत्तर
चउसट्ठि	चौसठ	पण्णसत्तरि	पचहत्तर
पण्णसट्ठि	पेंसठ	छस्सत्तरि	छिहत्तर
छसट्ठि	छयासठ	सत्तसत्तरि	सतहत्तर
सत्तसट्ठि	सड़सठ	अडसत्तरि	अठहत्तर
अडसट्ठि	अड़सठ	एगूणासीइ	उनासी
एगणसत्तरि	उनहत्तर	असीइ	अस्सी
सत्तरि	सत्तर	एगासीइ	इक्यासी

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
दोसाइ	बयासी	एगणवइ	इकानवे
तेसीइ	तिरासी	दोणवइ	बानवे
चउरासीइ	चौरासी	तेणवइ	तिरानवे
पचासीइ	पिचासी	चउणवइ	चौरानवे
छासीइ	छियासी	पणणवइ	पिचानवे
सत्तासीइ, सगसीइ	सतासी	सछण्णवइ	छियानवे
अठासीइ	अठासी	त्ताणवह	सत्तानवे
एगूणणवइ	नवासी	अट्ठाणवइ	अठानवे
णवइ	नब्बे	णवणवइ	निन्यानवे



सय (शत) = सौ

	एकबचन	बहुवचन
प्र.	सयं.	सयाणि, सयाइं, सयाइँ.
द्वि.	सयं.	,, ,, ,,
सं.	हे सयं.	,, ,, ,,

शेष रूप 'नेत्त' शब्द के समान होते है ।



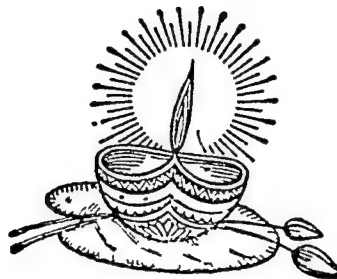
सूचना—निम्नोक्त विशेषण शब्दों के रूप अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त पुंल्लिग में जिण, इसि, एवं गुरुवत् और स्त्रीलिग में 'आ' या 'ई' प्रत्यय लगाने पर क्रमशः माला और वाणोवत् तथा नपुसकलिंग में नेत्त, दहि एवं धणुवव् चलेगे।

विशेषण शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पद्धर	सीधा	वव्वर	वर्वर, जंगली, मूर्ख
अलमंजुल	आलसी	मिलाण	म्लान, मुरझाया हुआ
इड्ढिमन्त	धनवान्	पुलईय	रोमाचित हुआ
विउल	विपुल, ज्यादा	पयट्ट	प्रवृत्त हुआ
उज्जाविय	विकास पाता हुआ	पसविर	उत्पादक
पत्तड	सुन्दर	उम्मीलण	व्यक्त करने वाला
परज्झ	पराधीन	पक्खिय	पाक्षिक
विरूव	विपरीत, विरूप	अबीअ	अद्वितीय
अहिल्ल	धनवान्	पन्नत्त	प्रज्ञप्त, आज्ञापित
कुरुल	चतुर	अणुव्वइय	अणूव्रतयुक्त
कालय	ठग, धूर्त	सिक्खावइय	शिक्षाव्रत युक्त
निकिट्ठ	निकृष्ट, अधम	दुइज्जमाण	चलता हुआ
पहिअ	पथिक, राहगीर		

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
हट्ठतुट्ठ	हृष्ठतुष्ट, सतुष्ट	सव्वघाई	सब की घात करने वाला
अणवयग्ग	अनन्त	लहु	लघु, छोटा
कलयदि	प्रख्यात	मिउ	मृदु, कोमल
गामिल्ल	ग्राम्य, ग्राम निवासी	तरुण	जवान, नया
पुरिल्ल	पुरवासी	सावज्ज / सावज्झ	सावद्य दोष रहित
अप्पुल्ल	आत्मिय		
वल्लह	वक्लभ, प्रिय	सुह	शुभ, श्रेष्ठ
किस	कृश, दुर्बल	असुद्ध	अशुद्ध
णिवट्ट	लौटा हुआ	णोरअ	निर्मल
पसत्थ	प्रशस्त, श्रेष्ठ	दीन	गरीब
समत्त	समस्त, सब	अणाह	अनाथ
हिअ	हित, शुभ	ठिअ	स्थित
मिअ	मित, परिमित	समत्थ	समर्थ, शक्त
महुर	मधुर, मीठा	पर	अन्य, दूसरा
अप्प	अल्प या थोड़ा	सरल	निष्कपटी
सुहुम्	सूक्ष्म	वर	श्रेष्ठ
भमिर	घुमने के स्वभाव वाला	भविय	भव्य
		सेट्ठ	श्रेष्ठ
केरिस	किस प्रकार, कैसा	विकअ	विकृत

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
चण्ड	भयंकर	णिरवराह	निर्दोष
सफल	सार्थक	विविह	विविध
उन्नअ	उन्नत, उच्च	समप्पणीय	सोंपने योग्य
अहिअ	अधिक	रम्म	रम्य, सुन्दर
सुणिउण	चतुर	बीभच्छ	निन्द्य
दिण्ण	दत्ता, दिया हुआ	तिव्व	तीव्र, तीक्ष्ण
उचिअ	योग्य	पुण्ण	पूर्ण
इट्ठ	इष्ट, प्रिय	मुत्त	मुक्त
भयंअर	भयानक	रसाल	रसयुक्त
सअल	सकल, सब	कुलीण	कुलीन
सावराह	सापराध,	कुरूप	खराब रूप



अथ – धातुरूपाणि

वर्तमान-काल

(१) पढ (पठ) = पढ़ना

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	पढइ, पढए.	पढन्ति, पढन्ते, पढिरे.
म. पु.	पढसि, पढसे.	पढह पढित्था.
उ. पु.	पढामि, पढमि.	पढामो, पढिमो, पढमो, पढामु, पढिमु, पढमु, पढाम, पढिम, पढम.

एकार – पक्षे

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु,	पढेइ.	पढेन्ति, पढेन्ते, पढेइरे.
म. पु.	पढेसि.	पढेह, पढेइत्था.
उ. पु.	पढेमि.	पढेमो, पढेमु, पढेम.



(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	पढउ.	पढन्तु.
म. पु.	पढसु, पढहि, पढज्जसु. पढेज्जहि, पढेज्जे, पढ.	पढह.
उ. पु.	पढामु, पढिमु, पढमु.	पढामो, पढिमो, पढमो.



एकार – पक्षे

	ए व.	ब. व.
प्र. पु.	पढेउ.	पढेन्तु.
म. पु.	पढेसु, पढेहि.	पढेह.
उ. पु.	पढेमु.	पढेमो.

---

(३) भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	पढीअ.	
म. पु.	,,	
उ. पु.	,,	

---:0:---

(४) भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब व.
प्र. पु.	पढिहिइ, पढिहिए.	पढिहिन्ति, पढिहिन्ते, पढिहिरे.
म. पु.	पढिहिसि, पढिहिसे	पढिहिह, पढिहित्था.
उ. पु.	पढिस्स, पढिस्सामि, पढिहामि, पढिहिमि.	पढिस्सामो, पढिहामो, पढिहिमो. पढिस्सामु, पढिहामु, पढिहिमु, पढिस्साम, पढिहाम, पढिहिम, पढिहिस्सा, पढिहित्था.

एवं एकार पक्ष में भी समझना चाहिए ।



सूचना :— कृ तथा दा धातु के उत्तम पुरुष के एक वचन में 'हं' प्रत्यय विशेष होता है । 'कृ' धातु को भूतकाल और भविष्यत् काल में 'का' आदेश हो जाता है। जैसे— भविष्यत् में— काहिइ—काहिन्ति. काहिसि—काहिह. काहं, काहिमि—काहिमो. इत्यादि । एवं—दा ।

भूतकाल में— कासी, काही, काहीअ ।



(५) क्रियातिपत्ति (लृङ् लकार)

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	पढेज्ज, पढेज्जा.	पढेज्ज, पढेज्जा.
म. पु.	,, ,,	,, ,,
उ पु.	,, ,,	,, ,,



सूचना:— क्रियातिपत्ति में सभी धातुओं से न्तो और माणो प्रत्यय भी होते है, प्रत्यय लगने पर उनके रूप जिण शब्द के समान होते है । जैसे— पढन्तो, पढमाणो ।



एवम्—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
पड (पत्)	गिरना	हुण (हु)	हवन करना
बुज्झ (बुध्)	जानना	थुण (स्तु)	स्तुति करना
रक्ख (रक्ष्)	रक्षा करना	भव, हव (भू)	होना
वय (वद्)	बोलना	पुण (पू)	पवित्र करना
वस (वस्)	रहना	जय, जिण (जि)	जीतना
लह (लभ्)	प्राप्त करना	बीह (भी)	डरना
वड्ढ (वर्ध्)	बढ़ना	किण (क्री)	खरीदना
अइच्छ (गम्)	जाना	सुण, हण (श्रु)	सुनना
इच्छ (इष्)	चाहना	धुण, धुव (धू)	कपाना
गिज्झ (गृध्)	आसक्त होना	लूण (लू)	काटना
चर (चर्)	चलना	कुण, कर (कृ)	करना
खिव (क्षिप्)	फेंकना	हर (हृ)	हरना, चुराना
वह (वह्)	ले जाना	भञ्ज (भुज्)	खाना
रम (रम्)	क्रीड़ा करना	धर (धृ)	धारण करना
णव (नम्)=नमस्कार करना		सह (सह्)	सहन करना
तव (तप्)	तपना	साह (साध्)	साधना
पिअ (पा)	पीना	परिहर (परिहृ)	त्यागना
चिट्ठ (स्था)	ठहरना	सिक्ख (शिक्ष्)	सीखना
चिण (चि)	चुनना	गण्ह (ग्रह्)	ग्रहण करना

शब्द	अर्थ
चय (त्यज्)	त्यागना
पणव (प्र+नम्)	नमना
पवड्ड (दे.)	सोना
जुज्झ (युध्)	युद्ध करना
कीड (क्रीड्)	क्रीडा करना
णियच्छ (नि+यम्)=	नियन्त्रण करना
पवत्त (प्र+वृत्)=	प्रवृति करना
आयर (आ+चर्) =	आचरण करना
वाछ (वाञ्छ्)	चाहना
मुअ (मुच्)	छोडना
पास (दृश्)	देखना
रुव, रोव (रुद्)	रोना
सद्दह (श्रद्+धा,=	श्रद्धा करना
कुप्प (कुप्)	क्रोध करना
खल (स्खल्)=	गिरना, पड़ना, भूलना
लब (लम्ब्)	लम्बा करना
अज्ज (अर्ज्)	इकट्ठा करना

शब्द	अर्थ
उवएस (उप+दिश्) =	उपदेश देना
चित (चित्)	चितन करना
विसिलेस (वि+श्लिष्)=	अलग करना
णिओअ (नि+युज्) =	जोड़ना
अच्छ (आस्)	बैठना
पूस पुष्)	पोपण करना
पराजय (परा+जि) =	पराजय करना
सिज्झ मिध्)	सिद्ध होना
छिन्द (छिद्)	छेदना
अवरह (अप+राध्) =	अपराध करना
भिन्द (भिद्)	भेदना
उववज्ज (उप+पद्) =	उत्पन्न होना
वलग्ग (आ+रुह्)	चढना
णिरिक्ख (निर+ईक्ष्)=	निरीक्षण करना

शब्द	अर्थ
उल्लस (उत्+लस)=	विकसित होना
पमोअ (प्र+मुद्)=	प्रसन्न होना
अ लव (आ+लप्) =	आलाप सलाप करना
गुंज (गुञ्ज्)=	गुञ्जारव करना
आकरिस (आ+कृष्)=	आकर्षित करना
पीड (पीड्)	दुःख देना
उट्ठ (उत्+स्था)	उठना
पयत् (प+यत्)=	प्रयत्न करना
जिम्म (जिम्)	खाना
णिरुन्ध (नि+रुध्)	रोकना
सक्क (शक्)	सकना
परिभस (परि+भ्रश् =	भ्रष्ट होना
कह (कथ्)	कहना
चल (चल)	चलना
पुच्छ पृच्छ्)	पूछना

शब्द	अर्थ
दड [दंड्]	दड देना
खम [क्षम्]	क्षमा करना
सतूस [सम्+तुष्]=	संतुष्ट होना
मण [मन्]	मानना
भम [भ्रम्]	घुमना
सोह [शुभ्]	शोभना
वट्ट [वृत्]	वर्तमान रहना
अणुजाण [अनु+ज्ञा]=	आज्ञा देना
अइवाअ [अति+पात्]=	हिंसा करना
रंज [रज्]	रक्त होना
कप [कप्]	कांपना
विअस [वि+कस्]=	विकसित होना
निअ [दृश्]	देखना
सुरह [सुरभ]	सुगधित करना



२ गच्छ (गम्) = जाना

(१) वर्तमान – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	गच्छइ, गच्छए.	गच्छन्ति, गच्छन्ते, गच्छिरे.
म. पु.	गच्छसि, गच्छसे.	गच्छह, गच्छित्था,
उ. पु.	गच्छामि, गच्छमि.	गच्छामो, गच्छिमो, गच्छमो.
		गच्छामु, गच्छिमु, गच्छमु.
		गच्छाम, गच्छिम, गच्छम.

एकार – पक्षे

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	गच्छेइ.	गच्छेन्ति, गच्छेन्ते, गच्छेइरे.
म. पु.	गच्छेसि.	गच्छेह, गच्छेइत्था.
उ. पु.	गच्छेमि.	गच्छेमो, गच्छेमु, गच्छेम.

---

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छउ.	गच्छन्तु.
म. पु.	गच्छसु, गच्छहि,	गच्छह.
	गच्छेज्जसु, गच्छेज्जहि,	
	गच्छेज्जे, गच्छ.	
उ. पु.	गच्छामु, गच्छिमु, गच्छमु.	गच्छामो, गच्छिमो, गच्छमो.

एकार – पक्षे

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	गच्छेउ.	गच्छेन्तु.
म. पु.	गच्छेसि, गच्छेहि.	गच्छेह.
उ. पु.	गच्छेमु.	गच्छेमो.



(३) भूतकाल

	ए. ब.	ब. व.
प्र. पु.		गच्छीअ.
म. पु.		,,
उ. पु.		,,

——:0.——

(४) भविष्यत् – काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गच्छिहि, गच्छिइ, गच्छिहिए, गच्छिए.	गच्छिहिन्ति, गच्छिन्ति, गच्छिहिन्ते, गच्छिन्ते, गच्छिहिरे, गच्छिरे.
म. पु.	गच्छिहिसि, गच्छिसि, गच्छिहिसे, गच्छिसे.	गच्छिहिह, गच्छिह, गच्छिहित्था, गच्छित्था.

उ. पु.	गच्छं, गच्छिस्स, गच्छिस्सामि, गच्छिहामि, गच्छिहिमि, गच्छिमि.	गच्छिस्सामो, गच्छिहामो, गच्छिहिमो, गच्छिमो, गच्छिस्सामु, गच्छिहामु, गच्छिहिमु, गच्छिमु, गच्छिस्साम, गच्छिहाम, गच्छिहिम, गच्छिम, गच्छिहिस्सा, गच्छिहित्था.

एवं एकार पक्ष में भी समझना चाहिये ।

सूचना :— नीचे दी हुई धातुओं को भविष्यत् काल के प्रत्ययो के पूर्व ये आदेश होते है तथा 'गच्छ' के भविष्यत् के समान इनके भी रूप होते है ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सोच्छ [श्रु]	सुनना	रोच्छ [रुद्]	रोना
वेच्छ [विद्]	जानना	दच्छ [दृश्]	देखना
मोच्छ [मुच]	छोड़ना	वोच्छ [वच्]	बोलना
भोच्छ [भुज्]	खाना	भेच्छ [भिद्]	भेदना
छेच्छ [छिद्]	छेदना		

---

(५) क्रियातिपत्ति (लृङ्-लकार)

	एकवचन		बहुवचन	
प्र. पु.	गच्छेज्ज,	गच्छेज्जा.	गच्छेज्ज,	गच्छेज्जा.
म. पु.	,,	,,	,,	,,
उ पु.	,,	,,	,,	,,

---

३. ठा (स्था) = ठहरना

(१) वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ठाइ.	ठान्ति, ठान्ते, ठाइरे.
म. पु.	ठासि.	ठाह, ठाइत्था.
उ. पु.	ठामि	ठामो, ठामु, ठाम.

——:0:——

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाउ.	ठान्तु.
म. पु.	ठासु, ठाहि.	ठाह.
उ. पु.	ठामु.	ठामो.

——:0:——

(३) भूत - काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.		ठासी, ठाही, टाहीअ.
म. पु.		,, ,, ,,
उ. पु.		,, ,, ,,

——:0:——

(४) भविष्यत् – काले

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाहिइ	ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिरे.
म. पु.	ठाहिसि	ठाहिह, ठाहित्था.
उ. पु.	ठास्सं, ठास्सामि, ठाहामि, ठाहिमि.	ठास्सामो, ठाहामो, ठाहिमो. ठास्सामु, ठाहामु, ठाहिमु, ठास्साम, ठाहाम, ठाहिम, ठाहिस्सा, ठाहित्था.

---

(५) क्रियातिपत्ति [लृङ् लकार]

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाज्ज, ठाज्जा	ठाज्ज, ठाज्जा
म. पु.	,, ,,	,, ,,
उ. पु.	,, ,,	,, ,,

एवं—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
भा [भी]	डरना	णे [नी]	लेजाना
पया [प्र+या]=	प्रयाण करना	उड्डे [उत्+डी]	उड़ना
झा [ध्यै]	ध्यान करना	दे [दा]	देना
णण्हा [स्ना]	स्नान करना	हो [भू]	होना
चे [चि]	चुनना		

---

१. वर्तमान – काल

ठा (स्था) = ठहरना

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाज्जइ, ठाज्जाइ	ठाज्जन्ति, ठाज्जान्ति, ठाज्जन्ते, ठाज्जान्ते, ठाज्जिरे, ठाज्जइरे.
म. पु.	ठाज्जसि, ठाज्जासि	ठाज्जह, ठाज्जाह, ठाज्जित्था, ठाज्जाइत्था.
उ. पु.	ठाज्जमि, ठाज्जामि	ठाज्जमो, ठाज्जामो, ठाज्जमु, ठाज्जामु, ठाज्जम, ठाज्जाम.

आज्ञार्थ और विध्यार्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाज्जउ, ठाज्जाउ	ठाज्जन्तु, ठाज्जान्तु.
म. पु.	ठाज्जसु, ठाज्जासु, ठाज्जहि, ठाज्जाहि.	ठाज्जह, ठाज्जाह.
उ. पु.	ठाज्जमु, ठाज्जामु	ठाज्जमो, ठाज्जामो.

---

३. भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाज्जहिइ, ठाज्जाहिइ	ठाज्जहिन्ति, ठाज्जाहिन्ति, ठाज्जहिन्ते, ठाज्जाहिन्ते, ठाज्जहिरे, ठाज्जाहिरे.
म. पु.	ठाज्जहिसि, ठाज्जाहिसि	ठाज्जहिह, ठाज्जाहिह, ठाज्जहित्था, ठाज्जाहित्था.
उ. पु.	ठाज्जस्सं, ठाज्जास्सं, ठाज्जस्सामि, ठाज्जास्सामि, ठाज्जहामि, ठाज्जाहामि, ठाज्जहिमि, ठाज्जाहिमि.	ठाज्जस्सामो, ठाज्जास्सामो, ठाज्जहामो, ठाज्जाहामो, ठाज्जहिमो, ठाज्जाहिमो, ठाज्जस्सामु, ठाज्जास्सामु, ठाज्जहामु, ठाज्जाहामु, ठाज्जहिमु, ठाज्जाहिमु, ठाज्जस्साम, ठाज्जास्साम, ठाज्जहाम, ठाज्जाहाम, ठाज्जहिम, ठाज्जाहिम, ठाज्जहिस्सा, ठाज्जाहिस्सा, ठाज्जहित्था, ठाज्जाहित्था.

एवं—अकारान्त धातुओं को छोड़कर अन्य सभी धातुओं के रूप 'वर्तमान, आज्ञार्थ, विध्यर्थ और भविष्यत् काल में ही होते हैं, अन्य कालों में नही ।

पूर्वोक्त 'ज्ज, ज्जा' प्रत्यय विकल्प से होने के कारण स्वतत्र भी प्रयुक्त होते हैं सभी धातुओं के तीनों पुरुष और दोनों वचनों में। अकारान्त धातुओं के अकार को एकार होता है प्रत्ययों के लगने पर।

जैसे:— पढेज्ज, पढेज्जा। ठाज्ज, ठाज्जा।

प्रेरणार्थक

सूचना:— धातुओं को प्रेरणार्थक बनाना हो तो 'अ, ए, आव, आवे' ये चार आदेश 'णि' के स्थानीय प्रत्ययों के पूर्व यदि अकार हो तो उसको आकार हो जाता है।

— -:0. —

२. वर्तमान – काल

(१) पढ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	पाढइ, पाढेइ, पढावइ, पढावेइ, पाढए, पाढेए, पढावए, पढावेए	पाढन्ति, पाढेन्ति, पढावन्ति, पढावेन्ति, पाढन्ते, पाढेन्ते, पढावन्ते, पढावेन्ते, पाढिरे, पाढेइरे, पढाविरे, पढावेइरे.
म. पु.	पाढसि, पाढेसि, पढावसि, पढावेसि, पाढसे, पाढेसे, पढावसे, पढावेसे	पाढह, पाढेह, पढावह, पढावेह, पाढित्था, पाढेइत्था, पढावित्था, पढावेइत्था

उ. पु.	पाढमि, पाढेमि, पढावमि, पढावेमि	पाढमो, पाढेमो, पढावमो, पढावेमो, पाढमु, पाढेमु, पढावमु, पढावेमु, पाढम, पाढेम, पढावम, पढावेम.

——:0:——

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु	पाढउ, पाढेउ, पढावउ, पढावेउ	पाढन्तु, पाढेन्तु, पढावन्तु, पढावेन्तु
म. पु.	पाढसु, पाढेसु, पढावसु, पढावेसु, पाढहि, पाढेहि, पढावहि, पढावेहि, पाढेज्जसु, पढेइज्जसु, पढावेज्जसु, पढावेइज्जसु, पाढेज्जहि, पाढेइज्जहि, पढावेज्जहि, पढावेइज्जहि, पाढेज्जे, पाढेइज्जे, पढावेज्जे, पढावेइज्जे, पाढ, पाढे, पढाव, पढावे.	पढावह, पढावेह
उ. पु.	पाढमु, पाढेमु, पढावमु, पढावेमु.	पाढमो, पाढेमो, पढावमो, पढावेमो.

————

(३) भूतकाल

	एकवचन		बहुवचन	
प्र. पु,	पाढीअ,	पाढेईअ	पढावीअ,	पढावेईअ.
म. पु.	,,	,,	,,	,,
उ. पु.	,,	,,	,,	,,

——:0:——

(४) भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	पाढिहिर, पाढाविहिर, पाढेहिइ, पढावेहिइ, पाढिहिए, पाढेहिए, पढाविहिए, पढावेहिए.	पाढिहिन्ति, पाढेहिन्ति, पढाविहिन्ति, पढावेहिन्ति, पाढिहिन्ते, पाढेहिन्ते, पढाविहिन्ते, पढावेहिन्ते, पाढिहिरे, पाढेहिरे, पढाविहिरे, पढावेहिरे.
म. पु.	पाढिहिसि, पाढेहिसि, पढाविहिसि, पढावेहिसि, पाढिहिसे, पाढेहिसे, पढाविहिसे, पढावेहिसे.	पाढिहिह, पाढेहिह, पढाविहिह, पढावेहिह, ; पाढिहित्था, पाढेहित्था, पढाविहित्था, पढावेहित्था.
उ. पु,	पाढिस्सं, पाढेस्सं, पढाविस्सं, पढावेस्सं, पाढिस्सामि, पाढेस्सामि, पढा-	पाढिस्सामो, पाढेस्सामो, पढाविस्सामो, पढावेस्सामो, पाढिस्सामु, पाढेस्सामु, पढाविस्सामु,

विस्सामि, पढावेस्सामि, पाढिहामि, पाढेहामि, पढाविहामि, पढावेहामि, पाढिहिमि, पाढेहिमि, पढाविहिमि, पढावेहिमि.

पढावेस्सामु, पाढिस्साम, पाढेस्साम, पढाविस्साम, पढावेस्साम, पाढिहामो, पाढेहामो, पढाविहामो, पढावेहामो, पाढिहामु, पाढेहामु, पढाविहामु, पढावेहामु, पाढिहाम, पाढेहाम, पढाविहाम, पढावेहाम, पाढिहिमो, पाढेहिमो, पढाविहिमो, पढावेहिमो, पाढिहिमु, पाढेहिमु, पाढविहिमु, पढावेहिमु, पाढिहिम, पाढेहिम, पाढविहिम, पढावेहिम, पाढिहिस्सा, पाढेहिस्सा, पढाविहिस्सा, पढावेहिस्सा, पाढिहित्था, पाढेहित्था, पढाविहित्था, पढावेहित्था.



(५) क्रियातिपत्ति

	एकवचन		बहुवचन	
प्र. पु.	पाढेज्ज,	पाढेज्जा.	पढावेज्ज,	पढावेज्जा.
म. पु.	,,	,,	,,	,,
उ. पु.	,,	,,	,,	,,



पाढन्तो, पाढेन्तो, पढावन्तो, पढावेन्तो, पाढम.णो, पाढवमाणो, पढावेमाणो । इनके रूप ' जिण ' के समान जानना चाहिये ।

सूचना :—इस तरह की जितनी धातुएं हैं उनके प्रेरणार्थक रूप इसी प्रकार के होते है ।



२. ठा

(१) वतमान काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ठाअइ, ठाएइ, ठाआवइ, ठाआवेइ.	ठाअन्ति, ठाएन्ति, ठाआवन्ति, ठाआवेन्ति, ठाअन्ते, ठाएन्ते, ठाआवन्ते, ठाआवेन्ते, ठाइरे, ठाएइरे, ठाआविरे, ठाआवेइरे.
म. पु.	ठाअसि, ठाएसि, ठाआवसि, ठाआवेसि.	ठाअह, ठाएह, ठाआवह, ठाआवेह, ठाइत्था, ठाएइत्था, ठाआवित्था, डाआवेइत्था.
उ. पु.	ठाअमि, ठाएमि, ठाआवमि, ठाआवेमि.	ठाअमो, ठाएमो, ठाआवमो, ठाआवेमो, ठाअमु, ठाएमु, ठाआवमु, ठाआवेमु, ठाअम, ठाएम, ठाआवम, ठाआवेम.

——:0:——

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाअउ, ठाएउ, ठाआवउ, ठाआवेउ.	ठाअन्तु, ठाएन्तु, ठाआवन्तु, ठाआवेन्तु.
म. पु.	ठाअसु, ठाएसु, ठाआवसु, ठाआवेसु, ठाअहि, ठाएहि, ठाआवहि, ठाआवेहि.	ठाअह, ठाएह, ठाआवह, ठाआवेह.
उ. पु.	ठाअमु, ठाएमु, ठाआवमु, ठाआवेमु.	ठाअमो, ठाएमो, ठाआवमो, ठाआवेमो.

(३) भूतकाल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाअसी, ठाएसी, ठाआवसी, ठाआवेसी, ठाआवेही, ठाअहीअ, ठाएहीअ.	ठाअही, ठाएही, ठाआवही, ठाआवहीअ, ठाआवेहीअ.
म. पु.	,, ,, ,,	,, ,, ,,
उ. पु.	,, ,, ,,	,, ,, ,,

(४) भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाइहिइ, ठाएहिइ, ठाआविहिइ, ठाआवेहिइ.	ठाइहिन्ति, ठाएहिन्ति, ठाआविहिन्ति, ठाआवेहिन्ति, ठाइहिन्ते, ठाएहिन्ते, ठाआविहिन्ते,

	ए. व.	ब. व.
		ठाआवेहिन्ते, ठाइहिरे, ठाएहिरे, ठाआविहिरे, ठाआवेहिरे.
म. पु.	ठाइहिसि, ठाएहिसि, ठाआविहिसि, ठाआवेहिसि.	ठाइहिह, ठाएहिह, ठाआविहिह, ठाआवेहिह, ठाइहित्था, ठाएहित्था, ठाआविहित्था, ठाआवेहित्था.
उ. पु.	ठाइस्सं, ठाएस्सं, ठाआविस्सं, ठाआवेस्सं, ठाइस्सामि, ठाएस्सामि, ठाआविस्सामि, ठाआवेस्सामि, ठाइहामि, ठाएहामि, ठाआविहामि, ठाआवेहामि, ठाइहिमि, ठाएहिमि, ठाआविहिमि, ठाआवेहिमि.	ठाइस्सामो, ठाएस्सामो, ठाआविस्सामो, ठाआवेस्सामो, ठाइस्सामु, ठाएस्सामु, ठाआविस्सामु, ठाआवेस्सामु, ठाइस्साम, ठाएस्साम, ठाआविस्साम, ठाआवेस्साम, ठाइहामो, ठाएहामो, ठाआविहामो, ठाआवेहामो, ठाइहामु, ठाएहामु, ठाआविहामु, ठाआवेहामु, ठाइहाम, ठाएहाम, ठाआविहाम, ठाआवेहाम, ठाइहिमो, ठाएहिमो, ठाआविहिमो, ठाआवेहिमो, ठाइहिमु, ठाएहिमु, ठाआविहिमु, ठाआवेहिमु, ठाइहिम, ठाएहिम, ठाआविहिम,

ए. व.	ब. व.
	ठाआवेहिम, ठाइहिस्सा, ठाए-हिस्सा, ठाआविहिस्सा, ठाआवे-हिस्सा, ठाइहित्था, ठाएहित्था, ठाआविहित्था, ठाआवेहित्था.



(५) क्रियातिपत्ति

	ए. व.		ब. व.	
प्र. पु.	ठाएज्ज,	ठाएज्जा.	ठाआवेज्ज,	ठाआवेज्जा.
म. पु.	,,	,	,,	,,
उ. पु.	,,	,,	,,	,,



ठाअन्तो, ठाएन्तो, ठाआवन्तो, ठाआवेन्तो, ठाअमाणो, ठाएमाणो, ठाआवमाणो, ठाआवेमाणो । इनके रूप 'जिण' के समान होते है ।

एवं— अन्य स्वरान्त धातुओं के भी रूप समझना चाहिये ।



कुछ आदेश रूप ण्यन्त धातुएं.

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
भमाड (भ्रम्+णि) =	घूमाना	राव (रंज्+णि)=	रंजन कराना
दाव, दस (दृश्+णि =	दिखाना	णासव (नश्+णि) =	नाश कराना
दूम दू+णि) =	दुःखी करना	जव (या+णि)=	समय बिताना
सिह (स्पृह्+णि)	चाहना		

उपर्युक्त आदेश धातुओं को विकल्प से होते है । अतः पक्ष में मूल धातुएं भी रहती हैं । उनके रूप 'ण्यन्त पढ्' धातु के समान ही होते है ।



आदेश धातु के रूप

(१) वर्तमान-काल

भमाड (भ्रम्+णि) = घूमाना

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भमाडइ, भमाडए.	भमाडन्ति, भमाडन्ते, भमाडिरे.
म. पु.	भमाडसि, भमाडसे.	भमाडह, भमाडित्था.
	भमाडामि, भमाडमि.	भमाडामो, भमाडिमो, भमाडमो, भमाडामु, भमाडिमु, भमाडमु, भमाडाम, भमाडिम, भमाडम.

एवं—एकार पक्ष में भी जानना चाहिये ।



आज्ञार्थ और विध्यार्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु	भमाडउ.	भमाडन्तु.
म. पु.	भमाडसु, भमाडहि, भमाडेज्जसु, भमाडेज्जहि, भमाडेज्जे, भमाड.	भमाडह.
उ. पु.	भमाढामु, भमाडिमु, भमाडमु.	भमाडामो, भमाडिमो, भमाडमो.

एवं— एकार पक्ष में भी समझना ।



(३) भूतकाल

	ए. व.	ब. व.
प्र. म. उ. पु	भमाडीअ.	



(४) भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	भमाडिहिइ, भमाडिहिए.	भमाडिहिन्ति, भमाडिहिन्ते, भमाडिहिरे.

	एकवचन	बहुवचन
म. पु,	भमाडिहिसि, भमाडिहिसे.	भमाडिहिह, भमाडिहित्था.
उ. पु.	भमाडिस्सं,भमाडिस्सामि, भमाडिहामि,भमाडिहिमि.	भमाडिस्सामो, भमाडिहामो, भमाडिहिमो, भमाडिस्सामु, भमाडिहामु, भमाडिहिमु, भमाडिस्साम, भमाडिहाम, भमाडिहिम, भमाडिहिस्सा, भमाडिहित्था.

एवं— एकार पक्ष में भी समझना चाहिये ।

——:0:——

(५) क्रियातिपत्ति

	एकवचन	बहुवचन
प्र. म. उ. पु.	भमाडेज्ज, भमाडेज्जा.	

———

भमाडन्तो, भमाडमाणो. इनके रूप 'जिणवत्' होते हैं।

——:0:——

भाव - कर्म

(१) वर्तमान-काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	पढीअइ, पढीअए, पढिज्जइ, पढिज्जए.	पढीअन्ति, पढीअन्ते, पढीइरे, पढिज्जन्ति, पढिज्जन्ते, पढिज्जिरे.
म. पु.	पढीअसि, पढीअसे पढिज्जसि, पढिज्जसे.	पढीअह, पढीइत्था, पढिज्जह, पढिज्जित्था.
उ. पु.	पढीअमि, पढीआमि, पढिज्जमि, पढिज्जामि.	पढीअमो, पढीआमो, पढीइमो, पढीअमु, पढीआमु, पढीइमु, पढीअम, पढीआम, पढीइम, पढिज्जमो, पढिज्जामो, पढिज्जिमो, पढिज्जमु, पढिज्जामु, पढिज्जिमु, पढिज्जम, पढिज्जाम, पढिज्जिम.

सूचना :— जब वर्तमान, आज्ञार्थ और विध्यर्थ में अकार को एकार होता है तब वर्तमान में— पढीएइ, पढीएन्ति, पढिज्जेइ, पढिज्जेन्ति तथा आज्ञार्थ और विध्यर्थ में पढीएउ, पढिज्जेउ. इत्यादि रूप भी होते है ।

——:0:——

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	पढीअउ, पढिज्जउ.	पढीअन्तु, पढिज्जन्तु.
म. पु.	पढीअसु, पढीअहि, पढीएज्जसु, पढीइज्जसु, पढीएज्जहि, पढीइज्जहि, पढीएज्जे, पढीइज्जे, पढीअ, पढिज्जसु, पढिज्जहि, पढिज्जेज्जसु, पढिज्जिज्जसु, पढिज्जेज्जहि, पढिज्जिज्जहि, पढिज्जेज्जे, पढिज्जिजे, पढिज्ज.	पढीअह, पढिज्जह.
उ. पु.	पढीअमु, पढीआमु, पढीइमु, पढिज्जमु, पढिज्जामु, पढिज्जिमु.	पढीअमो, पढीआमो, पढीइमो. हढिज्जमो, पढिज्जामो, पढिज्जिमो.

---

(३) ह्यस्तन – भूतकाल

	एकवचन		बहुवचन	
प्र. पु.	पढीअईअ,	पढीईअ.	पढिज्जईअ,	पढिज्जीअ.
म. पु.	,,	,,	,,	,,
उ. पु.	,,	,,	,,	,,

सूचना :— उपर्युक्त रूप ह्यस्तन भूत (लङ् लकार) में होते है । शेष (परोक्ष और अद्यतन) भूत काल के रूप कर्तरि ' भूत के समान जानना चाहिये ।

——:0:——

(४) भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु	पढिहिइ, पढिहिए.	पढिहिन्ति, पढिहिन्ते, पढिहिरे.

शेष मध्यम तथा उत्तम पुरुष के दोनों वचनों में रूप पूर्ववत् जानना ।

——.0:——

(५) क्रियातिपत्ति

	ए व.	ब. व.
प्र. म. उ. पु	पढेज्ज, पढेज्जा.	

——·0·——

पढन्तो, पढमाणो इनके रूप जिणवत् ।

——:0:——

अन्य ऐसी धातुओं के रूप भी इसी के समान जानना ।

(१) वर्तमान काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ठाईअइ, ठाइज्जइ.	ठाईअन्ति, ठाईअन्ते, ठाईइरे, ठाइज्जन्ति, ठाइज्जन्ते, ठाइज्जिरे.
म. पु.	ठाईअसि, ठाइज्जसि.	ठाईअह, ठाईइत्था, ठाइज्जह, ठाइज्जित्था.
उ. पु.	ठाईअमि, ठाईआमि, ठाइज्जमि, ठाइज्जामि.	ठाईअमो, ठाईआमो, ठाईइमो, ठाईअमु, ठाईआमु, ठाईइमु, ठाईअम, ठाईआम, ठाईइम, ठाइज्जमो, ठाइज्जामो, ठाइज्जिमो, ठाइज्जमु, ठाइज्जामु, ठाइज्जिमु, ठाइज्जम, ठाइज्जाम, ठाइज्जिम.

---

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाईअउ, ठाइज्जउ.	ठाईअन्तु, ठाइज्जन्तु.
म. पु	ठाईअसु, ठाईअहि, ठाइज्जसु, ठाइज्जहि.	ठाईअह, ठाइज्जह.
उ. पु.	ठाईअमु, ठाईआमु, ठाईइमु, ठाइज्जमु, ठाइज्जामु, ठाइज्जिमु.	ठाईअमो, ठाईआमो, ठाईइमो, ठाइज्जमो, ठाइज्जामो, ठाइज्जिमो.

एत्व पक्ष में— ठाईएउ, ठाइज्जेउ. इत्यादि रूप होते है।

---

(३) ह्यस्तन – भूतकाल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाईअसी, ठाईअही, ठाईअहीअ.	ठाइज्जसी, ठाइज्जही, ठाइज्जहीअ.
म. पु.	,, ,,	,, ,, ,,
उ. पु.	,, ,,	,, ,, ,,

उपर्युक्त रूप ह्यस्तन भूत (लङ् लकार) में होते है। शेष (परोक्ष तथा अद्यतन) भूतकाल के रूप कर्तरि के समान जानना चाहिये ।



(४) भविष्यत् – काल

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	ठाहिइ.	ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिरे.

शेष— मध्यम तथा उत्तम पुरुष के दोनो वचनों मे रूप कर्तरि के समान जानना चाहिये ।



(५) क्रियातिपत्ति

	ए. व.	ब. व.
प्र. म. उ. पु.	ठाज्ज, ठाज्जा.	

ठान्तो, ठामाणो. इनके रूप जिणवत् ।

——:0:——

भावकर्म में कुछ विशेष धातुओं के रूप

(१) वर्तमान – काल

चिव्व (चि)

	ए. व.	ब. व.
प्र. पु.	चिव्वइ, चिव्वए,	चिव्वन्ति, चिव्वन्ते, चिव्विरे.
म. पु.	चिव्वसि, चिव्वसे,	चिव्वह, चिव्वित्था.
उ. पु.	चिव्वामि, चिव्वमि.	चिव्वामो, चिव्विमो, चिव्वमो, चिव्वामु, चिव्विमु, चिव्वमु, चिव्वाम, चिव्विम, चिव्वम.

एत्व पक्ष में— चिव्वेइ, चिव्वेन्ति इत्यादि ।

---

(२) आज्ञार्थ और विध्यर्थ

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु	चिव्वउ.	चिव्वन्तु.
म पु.	चिव्वसु, चिव्वहि, चिव्वेज्जसु, चिवेज्जहि, चिव्वेज्जे, चिव्व.	चिव्वह.
उ पु.	चिव्वामु, चिव्विमु, चिव्वमु.	चिव्वामो, चिव्विमो, चिव्वमो.

एवं— एत्व पक्ष में भी जनना ।

——:0:——

(३) भूतकाल

	ए. व.	ब. व.
प्र. म. उ पु.	चिव्वीअ.	



(४) भविष्यत् – काल

	एकवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चिव्विहिइ, चिव्विहिए,	चिव्विहिन्ति, चिव्विहिन्ते, चिव्विहिरे.
म. पु.	चिव्विहिसि, चिव्विहिसे,	चिव्विहिह, चिव्विहित्था.
उ. पु.	चिव्विस्स चिव्विस्सामि, चिव्विहामि, चिव्विहिमि,	चिव्विस्सामो, चिव्विहामो, चिव्विहिमो. चिव्विस्सामु, चिव्विहामु, चिव्विहिमु, चिव्विस्साम, चिव्विहाम, चिव्विहिम, चिव्विहिस्सा, चिव्विहित्था.

एवं – एत्व पक्ष मे भी जानना चाहिये ।



(५) क्रियातिपत्ति

	ए. व.	ब. व.
प्र. म. उ. पु.	चिव्वेज्ज, चिव्वेज्जा.	



चिव्वन्तो, चिव्वमाणो. इनके रूप जिणवत् ।

पक्ष में— मूल धातुओं के रूप 'पढ' धातु के समान होते है । जैसे— चिणीअइ, चिणिज्जइ, इत्यादि ।

अकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों के पुल्लिग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिग में तथा ऋकारान्त, नकारान्त, सर्वनाम और संख्यावाचक शब्दों के रूप और विशेषण शब्द तथा त्रिलिग शब्द ।

धातुओं के सामान्य रूप प्रेरणार्थक तथा भाव-कर्म के पांच लकारों में सभी रूप ।

—:0:—

एवम्— च्यादि धातुओं के भाव-कर्म में 'य' के स्थान पर द्विरुक्त 'व्व' आदेश विकल्प से हो जाता है और दीर्घ धातुओं को ह्रस्व हो जाता है ।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जिव्व	जि	धुव्व	धू
सुव्व	श्रु	लुव्व	लू
हुव्व	हु	पुव्व	पू
थुव्व	स्तु		



निम्नलिखित धातुएं विकल्प से भावकर्म में ही होती है। इनसे भावकर्म सम्बन्धी जो 'य' होता उसका लोप हो जाता है तथा इनके रूप 'चिव्व' के समान ही होते है।

प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत
छुप्प	छुप्	गम्म	गम्
दीस	दृश्	हस्स	हस्
वुच्च	वच्	भण्ण	भण्
डज्झ	दह्	रुव्व	रुद्
बज्झ	बन्ध्	सिप्प	स्निह्
हीर	हृ	वुब्भ	वह्
कीर	कृ	लिब्भ	लिह्
जीर	जृ	रुब्भ	रुध्
तीर	तृ	लब्भ	लभ्
विढप्प	अर्ज्	कत्थ	कथ
हम्म	हन्	भुज्ज	भुज्
खम्म	खन्	घेप्प	ग्रह्
दुब्भ	दुह्	छिप्प	स्पृश्
चिम्म	चि	आढप्प	आ+रभ्
णव्व, णज्ज	ज्ञा	सिप्प	सिच्



पक्ष में मूल धातुओं के रूप भी 'पढ' धातु के समान होते है। जैसे— छुप्पीअइ, छुप्पिज्जइ इत्यादि।

॥ इति धातु रूपाणि ॥

परिशिष्ट

शब्द-कोश

अ (च) अ. और
अअ (अज) पु. बकरा
अइ (अति) अ. बहुत, ज्यादा
अइ – अ संभावना अर्थ में
अइ (अति) उप. सीमा से बहार, उल्लघन, उत्कर्ष, अतिशय
अइच्छ – दे. धा. जाना, गमन करना
अइवाअ (अति+पात्) धा० हिसा करना
अइसरिअ (ऐश्वर्य, न. पराक्रम
अईव (अतीव) अ. अत्यन्त, ज्यादा
अकज्ज (अकार्य) न. न करने लायक काम
अकासि – अ. निषेध, नही
अग्ग (अग्र) न. आगे
अग्गि (अग्नि) पु. अग्नि
अच्छ (आस्) धा. बैठना
अच्छ (दे.) न. जल्दी, तुरन्त
अच्छि (अक्षि) न. नेत्र, आँख
अज्ज (अद्य) अ. आज
अज्ज अर्ज्) धा. इकट्ठा करना, प्राप्त करना
अज्जव (आर्जव) न. मृदुता
अज्झत्थ (अध्यात्म) न. आत्म-तत्त्व संबंधी
अज्झत्थिय (अध्यवसित)· न. अध्यवसाय, परिणाम
अज्झप्प (अध्यात्म) न. अध्यात्म, आत्मतत्त्व संबंधी
अज्झवसाअ (अध्यवसाय) पु. परिणाम
अट्टज्झाण (आर्त्तध्यान) न० बुरा ध्यान
अट्ठ (अर्थ) पु. अर्थ, धन, वस्तु, प्रयोजन
अट्ठ (अष्टन्) सं. वा. आठ
अट्ठारस (अष्टादश) सं. वा. अट्ठारह
अडणी (दे.) स्त्री. मार्ग, रास्ता

अण – अ. निषेध, नहीं

अणवयग्ग (अनवदग्र) त्रि. अनंत

अणाह (अनाथ) वि. अनाधार, निराधार

अणु (अनु) उप. पीछे

अणुजाण (अनु+ज्ञा) धा० आज्ञा देना, संमति देना

अणुव्वग्ग (अणुव्रतिक) त्रि० अणुव्रती

अण्ण (अन्य) स. दूसरा

अण्णहा–अ. अन्यथा, नहीं तो

अण्णो (दे.) स्त्री. देराणी, २ नणंद, ३ भूवा

अत्त (आत्मन्) पु. आत्मा, स्वयं

अत्तावयण (आप्तवचन) न० प्रामाणिक वचन

अत्थरिअ (दे.) पु. नौकर

अद्ध (अध्वन्) पु. मार्ग, रास्ता

अद्धाण(अध्वन्) पु. मार्ग, रास्ता

अनालम्भ (अनारम्भ) त्रि० आरम्भ का अभाव

अन्तरबल – न. आत्म-बल, मनोबल

अन्तिअ (अन्तिक) न. समीप, पास

अप्पणो – अ. स्वयं, अपना

अप्प (आत्मन्) पु. आत्मा

अप्प (अल्प) वि. थोड़ा

अप्पसाहग (आत्म-साधक) पु. आत्मार्थी

अप्पाण (आत्मन्) पु. आत्मा

अप्पुल्ल (आत्मिक) वि. आत्म सम्बन्धी

अबीअ (अद्वितीय) त्रि. अकेला

अब्भुदअ (अभ्युदय) पु. उन्नति, वृद्धि

अम्मो (आश्चर्य) अ. आश्चर्य

अम्हे (अस्मान्) स. हम को

अम्हे (वय) स. हम, हम सब

अरि (अरि) पु. शत्रु, दुश्मन

अरे– अ. सबोधन, कलह

अलमंजुल (दे.) त्रि. आलस्य

अलं– अ. निषेध, नही, बस

अलकार (अलकार) पु. गहना, आभूषण

अलाहि – अ. निषेध, नही

अलि (अलि) पु. भ्रमर, भंवरा

अव (अव) उ. नीचे, निश्चय

अवत्था [अवस्था] स्त्री. वय, उम्र, दशा

अवयासिणी [दे.] स्त्री. नाक को रस्सी

अवराह [अप+राध्] धा. अपराध करना

अवलिअ [दे] न. झूठ मिथ्या, असत्य

अव्वो – अ. सूचना, दुख, संभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद तथा पश्चाताप

अस [अस्] धा होना

असगय [दे] न. वस्त्र

असुद्ध [असुद्ध] वि. अशुद्ध, मैला

अस्स [अश्व] पु. घोड़ा

अह [दे.] न० दुख

अहम्म [अधर्म] पु. धर्म विरुद्ध कार्य

अहं – स० मैं

अहिअल [दे०] पु० गुस्सा

अहिअ [अधिक] वि० अधिक

अहि [अधि] उप. ऊपर, अधिकार

अहि [अभि] उप. तरफ, पास, बारबार

अहिल्ल [दे०] त्रि. धनवान्

अहुणा [अधुना] अ इस समय, अब

अंग [अङ्ग] न. आचारांगादि सूत्र, शरीर अवयव

अंगुलि [अंगुलि] स्त्री. अगुली

अंजलि [अंजलि] पु.स्त्री. हथेली, अंजलि

अंधआर [अंधकार] पु. अंधेरा

आ.

आआर [आचार] पु. आचार

आइच्च [आदित्य] पु० सूर्य

आ [आ] उप. सीमा, अवधि थोडा, अभिव्याप्ति, उलटा

आएस [आदेश] पु. हुक्म, आदेश

आ+करिस [आ+कृष्] धा. खींचना

आकारि [आ+कृ+णि] धा. बुलाना

आ+गच्छ [आ+गम्] धा० आना

आगास [आकाश] न आकाश

आच्छाअ [आ+छद्+णि] धा. ढांकना, दबाना

आढप्प [आ+रभ्] धा. आरम्भ करना
आणंद [आनन्द] पु आनन्द
आणंदाराम [आनन्दाराम] पु० आनन्द रूप बगीचा
आम– अ. स्वीकार, अभ्युपगम
आ+यर [आ+चर्]धा.आचरण करना
आयरिअ [आचार्य] पु. साधु गण के नायक
आरणाल [दे] न० कमल
आलम्पित [आलम्बित] त्रि. आश्रित
आलव [आ+लप्] धा. आललाप-संलाप-करना, बोलना
आलस्स[आलस्य]न.आलस्य, सुस्ती
आवण [आपण] पु. दुकान, बाजार
आवत्ति [आपत्ति] स्त्री. पुनरावृत्ति

इ

इ – अ. पादपूर्ति में इसका प्रयोग होता है
इअर [इतर] स. अन्य, दूसरा
इच्छ [इष्]धा. इच्छा करना, चाहना
इट्ठ [इष्ट] वि० इच्छित, प्रिय
इड्ढिमन्त [ऋद्धिमत्] त्रि० धनवान्
इतरहा [इतरथा]अ. अन्यथा, नहीं
इत्थ [इत्थ] अ. इस तरह, ऐसे
इत्थी [स्त्री] स्त्री. अंगना, स्त्री
इन्दिअ [इन्द्रिय] न. चक्षु आदि इन्द्रिय
इर – अ० सभावना, निश्चय
इरमंदिर [दे] पु० ऊंट
इल्ल [दे.] पु० चपरासी
इव – अ. इवार्थक, सादृश्य, तुल्य
इसि [ऋषि] पु. धर्मगुरु, साधु, मुनि
इहरा— अ० अन्यथा

ई

ईस– [दे०] न० खील
ईसर [ईश्वर] पु. ईश्वर, प्रभु
ईसा [ईर्ष्या] स्त्री. ईर्ष्या

उ

उ- [तु] अ० तो
उअ- अ० देखो
उचिअ [उचित] वि० योग्य
उच्चिणिरी [उच्चेत्री] स्त्री. चुनने वाली
उच्छ [उक्षन्] पु० बैल
उच्छंग [उत्संग] पु० गोद
उच्छाण [उक्षन्] पु० बैल
उज्जम [उद्यम] न० उद्यम, यत्न
उज्जाढिय[दे.] वि. विकसित
उज्जाण [उद्यान] न. बगीचा
उज्जोमिआ [दे.] स्त्री. किरण
उज्झस [दे.] पु० उद्यम
उज्झित [उज्झित] त्रि० त्यागा हुआ
उज्झोअ [उद्योत] पु. प्रकाश
उट्ठ [उत्+स्था] धा. उठना
उड्डे [उत्+डी] धा. उड़ना
उत्तरज्झयण [उत्तराध्ययन] न. उत्तराध्ययन सूत्र
उद् [उत्] उप. ऊपर, उदय, विशेष
उदअ [उदय] पु० उदय, प्रादुर्भाव
उदायण[उदायन]पु. महावीर स्वामी के समय में कौशाम्बी का राजा
उन्नअ [उन्नत] त्रि० ऊंचा
उम्मीलण [उन्मीलन] त्रि० खोलना
उल्लस (उत्+लस्) धा. प्रकट होना, प्रगट करना
उव (उप) उप. पास में
उवएस (उप+दिश्) धा. उपदेश देना
उवंग (उपाङ्ग) न. उववाइ आदि सूत्र
उवज्झाय (उपाध्याय) पु० शास्त्र शिक्षक
उववज्ज (उप+पद्) धा० उत्पन्न होना
उवस्सय (उपाश्रय) पु. धर्म-स्थान

ऊ

ऊ अ.–गर्हा, आक्षेप, विस्मय, सूचना
ऊ (उप) उप. समीप, पास

ए

एकारस (एकादश) सं. वा. ग्यारह
एक्कसरिअं अ. इस समय, अब
एग (एक) स. एक, कोई भी
एग (एक) सं. वा एक
एगुणबीसा (एकोनविंशति) सं० वा० उन्नीस
एण्हि अ. – इस समय, अब
एत्ताहे अ.– इस समय, अब
एत्थ (अत्र) अ. यहां
एवं अ.– इस प्रकार

ओ

ओ अ. – सूचना, पश्चाताप
ओअण (ओदन) न. भात
ओ (अव) उप. नीचे, निश्चय
ओ (उप) उप. पास, समीप
ओसह (औषध) न. दवाई,

क

क (किम्) स. क्या, प्रश्न अर्थ में
कअर (कतर) स. दो में से एक
कइ (कति) स. कितने
कइअव (कैतव) न. कपट
कज्ज (कार्य) न. कार्य, काम
कण्ण (कर्ण) न. कान
कतकपट (कृतकपट) त्रि. कपट करने वाला
कत्तार (कर्तृ) त्रि. करने वाला
कत्तु (कर्तृ) त्रि. करने वाला
कत्थ (कथ्) धा० कहना, बोलना
कफाड (दे) पु० गुफा
कमलावई स्त्री. कमलावती
कम्म (कर्म) न. ज्ञानावरणीय आदि आठ कर्म
कम्मआण (कर्मादान) न० त्यागने योग्य कर्म
कम्हिअ (दे.) पु. माली
कयन्न (कदन्न) न. खराब भोजन
कयली (कदली) स्त्री. केला
कयावि (कदापि) अ. कभी भी
कर (कर) पु. हाथ
कर (कृ) धा. करना
करि (करि) पु. हाथी
करडा (दे.) स्त्री. भ्रमर, भँवरा

कलय (दे) पु. सुवर्णकार, सोनार
कलयंदि (दे.) त्रि. प्रख्यात
कल्लाण (कल्याण) न. श्रेय
कव्व (काव्य) न. कविता
कसाअ (कषाय) पु. क्रोधादि कषाय
कह (कथ्) धा. कथन करना, कहना
कहं (कथं) अ. कैसे, किस प्रकार
कहा (कथा)स्त्री. कथा वार्ता
कंचणार (काञ्चनार)पु एक वृक्ष विशेष
कंटअ (कंटक) पु. काँटा
कंदोट्ट (दे.) न. कमल
कंप (कम्प्, धा. काँपना, धूजना
कामभोअ (कामभोग) पु. इन्द्रिय के विषय भोग
कारण (कारण) न. हेतु, कारण
कारागिह (कारागृह) न. कैद-खाना, जेल
काल (काल) पु. समय
कालय (दे.) त्रि. धूर्त, ठग
किण (क्री) धा. खरीदना
किणो– अ. प्रश्न अर्थ में
किच्च (कृत्य) न. कार्य
किन्तु– अ. परन्तु
किर– अ. संभावना, निश्चय
किरण (किरण) पु. किरण
किरिआ (क्रिया)स्त्री. क्रिया, अनुष्ठान
किल– अ. संभावना, निश्चय
किलेस (क्लेश) पु. झगड़ा, कलह, दुःख
किवा (कृपा) स्त्री कृपा, मेहरवानी
किविण (कृपणं) पु. लोभी, कंजुस
किस (कृश) वि. पतला
किसीवल कृपीवल) पु. किसान
किंकर (किङ्कर) पु. नोकर
कीड (क्रीड्) धा. क्रीडा करना
कीर (कृ) धा. करना
कुडुंब (कुटुम्व) न. परिवार
कुढार (कुठार) पु. कुल्हाड़ी
कुण (कृ) धा. करना
कुप्प (कुप्) धा. क्रोध करना

कुरुल (दे.) त्रि. चतुर
कुरूव (कुरूप) वि. खराब रूप
कुलीण (कुलीन) वि. खानदान
कुसल (कुशल) पु० चतुर मनुष्य
केअई (केतकी) स्त्री. केतकी
केआर (केदार) पु. क्यारी
केरिस (कीदृश) त्रि किस प्रकार
कोणिअ– पु. श्रेणिक राजा का पुत्र, कोणिक
कोसल्ल (कौशल्य) न. आरोग्य, कुशलता
कोहग्गि (क्रोधाग्नि) पु. क्रोध रूपी अग्नि
कोहसत्तु (क्रोधशत्रु) पु. क्रोध रूपी शत्रु

ख

खच्चोल (दे.) पु. बाघ
खत्तिअ (क्षत्रिय) पु. क्षत्रिय
खम (क्षम्) धा. क्षमा करना, सहन करना
खमा (क्षमा) स्त्री. सहनशीलता
खम्म (खन्) धा. खोदना
खल (स्खल्) धा. अटकना
खलु– अ. निश्चय
खंधक (स्कन्धक) पु जैन-शास्त्र में आये हुए एक आचार्य का नाम
खिप्पामेव (क्षिप्रमेव) अ. शीघ्र, जल्दी
खिव (क्षिप्) धा. फेंकना
खु– अ० निश्चय
खेअ (खेद) पु. परिश्रम, विषाद, खेद

ग

गअ (गज) पु. हाथी
गइ (गति) स्त्री. नरक आदि चार गति
गच्छ (गम्) धा. जाना, गमन करना
गण्ह (ग्रह्) धा. ग्रहणकरना, लेना
गणिआ (गणिका) स्त्री. वेश्या
गम्म (गम्) धा. जाना, चलना
गयण (गगन) न. आकाश

गरीअ (गरीयस्) पु. अतिशय, गुरु, मोटा
गव्व (गर्व) पु. अभिमान, मद, घमण्ड
गहण (गहन) न. कठिन
गामिल्ल (ग्राम्य) वि. ग्रामवासी
गाव (ग्रावन्) पु. पत्थर
गावाण (ग्रावन्) पु. पत्थर
गावी (गो) स्त्री० गाय
गाहा (गाथा) स्त्री. श्लोक, गाथा
गिज्झ (गृध्) आसक्त होना, तल्लीन होना
गिम्ह (ग्रीष्म) पु. गरमी की मोसम
गिरि (गिरि) पु. पहाड़, पर्वत
गिह (गृह) न. घर, मन्दिर
गिहत्थ (गृहस्थ) पु. गृहस्थ, साहुकार
गिहासम (गृहाश्रम) पु. गृहस्था-श्रम
गिहिणी (गृहिणी) स्त्री. गृह-स्वामिनी
गुण (गुण) पु. न. गुण
गुरु (गुरु) पु. गुरु, धर्म मार्ग को बताने वाला
गुंज (गुञ्ज्) धा. गुंजना
गोवच्छ (गोवत्स) पु. बछड़ा
गोवाल (गोपाल) पु. गोपाल, ग्वाला

घ

घेप्प (ग्रह्) धा. ग्रहण करना, स्वीकार करना

च

चउ (चतुर्) सं. वा. चार
चउद्दस (चतुर्दश) सं. वा. चौदह
चमू (चमू) स्त्री. सैना, लश्कर
चम्म (चर्मन्) न. चमडी, चमडा
चय (त्यज्) धा. त्यागना, छोडना
चर (चर्) धा. चलना, फिरना
चल (चल्) धा. चलना
चिट्ठ (स्था) धा. ठहरना, स्थिर रहना
चिण (चि) धा. इकट्ठा करना, चुनना
चिम्म (चि) धा. इकट्ठा करना, वीनना

चिंत (चिंत्) धा. चिंतना, विचारना

चिर– अ. चिरकाल

चुलुक्क (चौलुक्य) पु. चौलुक्य वंश

चे (चि) धा. इकट्ठा करना, चुनना

चे (चेत्) अ. यदि, तो

चेअ– अ. निर्धारण, निश्चय

चेडग (चेटक) पु. विशाला नगरी का राजा, भगवान् महावीर स्वामी के मामा

चोर (चोर) पु. लुटेरा, चोर

चंड (चण्ड) वि० भयकर, विकराल

चंडाल (चण्डाल) पु. चडाल

च्च– अ. निर्धारण, निश्चय

च्चिअ–अ. निर्धारण, निश्चय

च्चेअ– अ. निर्धारण, निश्चल

छ

छ (षट्) सं. वा. छे, छह

छिन्द (छिन्द्) धा. छेदना, काटना

छिप्प (स्पृश्` धा. स्पर्श करना, छुना

छुप्प (छुप्) धा. स्पर्श करना, छुना

छुहा (क्षुधा) स्त्री. भूख

ज

जग (जगत्) न. दुनिया, ससार

जण (जन) पु मनुष्य, नर

जणवअ(जनपद)पु. देश,जनपद

जन्तु (जन्तु) पु. जीव, जन्तु

जम (यम) पु. यमराज, परमाधामी देव

जम्म (जन्मन्) न. जन्म, उत्पत्ति

जय (जि) धा जीतना

जयन्ती– स्त्री. उदायन राजा की भुवा, महावीर स्वामी की बड़ी श्राविका

जरा (जरा) स्त्री. वृद्धावस्था, वुढ़ापा

जल (जल) न. जल, पानी

जव (या+णि) धा. समय विताना

जव (यव, पु. जव, धान्य विशेप

जस (यशस्) पु. यश, कीर्ति
जहा (यथा) अ. जैसे, जिस प्रकार
जाइ [जाति] स्त्री. जाति
जानाअर [जामातृ] पु. जवांई
जामाउ [जामातृ] पु. जवांई
जाव [यावत्] अ. जबतक
जिण [जिन] पु. तीर्थंकर, जिनेश्वर
जिण [जि] धा. जीतना, विजय पाना
जिणदास [जिनदास] पु. एक मनुष्य का नाम, एक श्रावक
जिम्म [जिम्] धा. खाना, भोजन करना
जीर [जॄ] धा. जीर्ण होना, क्षय होना
जीव [जीव] पु. जीव, आत्मा
जीवणिकाय [जीवनिकाय] पु. जीव समुदाय
जीविअ [जीवित] न. जिंदगी, जीवन
जीहा [जिह्वा] स्त्री. जीभ
जुज्झ [युध्] धा. युद्ध करना, लड़ाई करना
जुद्ध [युद्ध] न. लड़ाई
जुव [युवन्] पु. जवान मनुष्य, तरुण
जुवाण [युवन्] पु. जवान मनुष्य, तरुण
जे– अ. पादपूर्ति में प्रयोग होता है
जोणि [योनि] स्त्री. उत्पत्ति का स्थान
जोह [योध] पु. योद्धा

झ

झगिति – अ. संप्रति अर्थ में, इस समय
झा [ध्यै] धा. ध्यान करना, चिन्तन करना

ठ

ठा [स्था] धा. खडा रहना, स्थिर रहना
ठाण [स्थान] न. स्थान, ठिकाना
ठिअ [स्थित] वि. खड़ा हुआ

ड

डज्झ [दह्] धा. जलना, जलाना

ण

णरअ [नरक] पु. नरक, दुःख का स्थान
ण [न] अ. नहीं
णइ– अ. निर्धारण, निश्चय
णई [नदी] स्त्री. नदी
णज्ज [ज्ञा] धा. जानना,
णणंदा [ननान्दृ] स्त्री. नणंद, पति की बहन
णतुअ [नप्तृक] पु. दोहिता, लड़की का लड़का
णत्थि [नास्ति–न+अस्ति] धा. नही है
णयर [नगर] न. शहर
णर [नर] पु. मनुष्य
णरिन्द [नरेन्द्र] पु. राजा
णव [नम्] धा. प्रणाम करना, नमस्कार करना
णवर–अ. केवल, इतना विशेष
णवरि– अ. आनन्तर्य अर्थ में
णव [नवन्] सं. वा. नव, नो
णवि– अ. विपरीत अर्थ में
णव्व [ज्ञा] धा. जानना, समझना
णाइजण [ज्ञातिजन] पु. संबधी
णाइ– अ. निषेध, नहीं इन अर्थ में
णाण [ज्ञान] न. ज्ञान, विज्ञान
णामहेय [नामधेय] न. नाम
णासव [नश्+णि] धा. नाश करना
णासिआ [नासिका] स्त्री. नाक
णि [नि] उप. आदेश, नीचे
णिओअ [नि+युज्] धा. जोड़ना
णिच्च [नित्य] अ. सदा
णिजवह [निजवध] पु. स्वयं की घात
णिन्दा [निन्दा] स्त्री. निन्दा, अपवाद
णियच्छ [नि+यम्] धा. कब्जे में करना, रोकना
णियम [नियम] पु. कायदा, मर्यादा
णिर् [निः] उप. विना, वहार, दूर
णिरवराह [निरपराध] त्रि. निरपराधी, अपराध रहित
णिरिक्ख [निर्+ईक्ष्] धा. देखना

णिरिक्खण (निरीक्षण) न. अवलोकन
णिरुन्ध (नि+रुध्) धा. रोकना
णिवट्ट (नि+वृत्त) वि. निवृत्त होना
णिव (नृप) पु. राजा
णिसेह (निषेध) पु. निषेध, नही
णीइ (नीति) स्त्री. न्यायमार्ग, नीति
णीरअ (नीरजः) वि रज रहित
णे (नी) धा. ले जाना
णेत्त (नेत्र) न. आंख
णेह (स्नेह) पु. प्रेम, प्रीति
ण्हा (स्ना) धा. स्नान करना, नहाना

त

त (तद्) स० वह
तए (त्वया) स. युष्मद् शब्द के तृतीया का एकवचन, तेरे द्वारा
तडाअ (तडाग) पु. सरोवर, तलाब
तत्त (तत्त्व) न. पदार्थ, सार
तप्परिणाम (तत्परिणाम) पु. उसका परिणाम
तरणि (तरणि) पु. सूर्य
तरु (तरु) पु. झाड़, वृक्ष
तरुण (तरुण) वि. जवान, नवयुवक
तव (तप्) धा. तप करना,
तविंधण (तपइन्धन) न० तपस्या रूपी इन्धन
तहवि (तथापि) अ. तो भी
तहा (तथा) अ. जिस प्रकार, वैसे
त–अ. वाक्य के उपन्यास अर्थ में
ताअ (तात) पु. पिता, बाप
ताव (तावत्) अ. तब तक
ति (इति) अ. समाप्ति, इस प्रकार
ति (त्रि) स. वा. तीन
तित्थअर (तीर्थंकर) पु. जैन शासन के नायक
तिव्व (तीव्र) त्रि. तीक्ष्ण, तेज
तीर (तृ) धा. तैरना, पार करना
तुब्भे (यूयं) स. तुम सब
तुमं (त्वं) स. तू

तुम्हे (युष्मान्) स. तुम को, तुम सब को
तेअ (तेजः) न. प्रकाश
तेण (स्तेन) पु. चौर लुटेरा
ते (तव) स. युष्मद् शब्द के षष्ठी का एकवचन, तेरा
तेरस (त्रयोदश) सं. वा. तेरह

थ

थुण (स्तु) धा. स्तुति करना
थू– अ. तिरस्कार अर्थ में

द

दक्खरस (द्राक्षारस) पु. दाख
दया (दया) स्त्री. दया, अनुकंपा
दर– अ. थोड़ा, ईषत्
दरवलिअ (दे.) त्रि भोगा हुआ
दव्व (द्रव्य) न. द्रव्य, धन
दस (दशन्) सं. वा दश
दहि (दधि) न. दही
दंड (दंड्) धा. दण्ड देना
दंस (दृश्+णि) धा. दिखाना
दंसण (दर्शन) न. दर्शन
दाण (दान) न. दान
दाम (दामन्) न. माला
दाव (दृश्+णि) धा. दिखाना
दिट्ठि (दृष्टि) स्त्री. दृष्टि, नजर
दिणअ (दिन) न. दिवस, दिन
दिण्ण (दत्त) वि. दिया हुआ
दीण (दीन) वि गरीब, अनाश्रित
दीस (दृश्) धा. देखना
दुग्गुण (दुर्गुण) पु. अवगुण, दोष
दुज्जण (दुर्जन) पु. दुर्जन, दुष्ट
दुद्दसा (दुर्दशा) स्त्री. दुर्दशा
दुब्भ (दुह्) धा. दुहना
दुर् (दुः) उप. दुष्ट, निन्दा, कठिन आदि
दुवालस (द्वादश) स. वा. बारह
दुह (दुःख) न. क्लेश, अशांति
दुहिआ (दुःखिता) स्त्री. दुःखित स्त्री
दुइज्जमाण– त्रि. चलता हुआ
दूम (दू+णि) धा. दुःख देना
दे– अ. संमुखी करण, सखि का आमंत्रण अर्थ में
दे (दा) धा. देना
देव (देव) पु. न. देव
देवर (देवर) पु. देवर, पति का छोटा भाई
देवी (देवी) स्त्री. देवांगना

देह (देह) पु शरीर
दो (द्वि) सं. वा दो
दोवारिअ (दौवारिक) पु द्वार-पाल
दोस (दोष) पु. अवगुण

ध

धअ (ध्वजा) पु. ध्वजा, पताका
धण (धन) न. दौलत, द्रव्य
धणु (धनुः)न. धनुष
धन्न (धान्य) न. धान्य
धम्म (धर्म) पु. धर्म, न्यायमार्ग
धम्मणिट्ठ (धर्मनिष्ट) पु धर्म-परायण, धर्म मे विश्वास रखने वाला
धर (धृ) धा. धारण करना
धिइ (धृति) स्त्री. धीरज, धैर्य
धीर (धीर) पु. धैर्यवान् पुरुष
धीवर (धीवर) पु. मछुआ
धुण (धू) धा. काँपना धुनना
धुत्त (धूर्त) पु. धूर्त, ठग
धुव (धू) धा. काँपना, धुनना
धुवं (ध्रुवं) अ. निश्चय
धूया (दुहितृ) स्त्री. पुत्री

न

नयण (नयन) पु. न. आँख
नह (नभस्)न. आकाश, गगन
निअ (दृश्) धा. देखना
निक्किट्ठ (निकृष्ट) त्रि. निकृष्ट, अधम
निवास (निवास) पु. रहने का स्थान
निशादपन्न (निशातप्रज्ञ) त्रि. कुशाग्र बुद्धिवाला
निहि (निधि) पु. स्त्री. भंडार, खजाना

प

पअ (पद) न. पैर
पआस (प्रकाश) पु. प्रकाश, उजाला
पइ (पति) पु स्वामी, पति
प (प्र) उप. प्रारम्भ, उत्कर्ष, आगे
पउत्तव्व (प्रयोक्तव्य) त्रि० प्रयोग करने योग्य
पअ्ढ (दे.) न. घर, मकान
पक्ख (पक्षन्) पु. पाँख

पक्खि [पक्षिन्] पु. पक्षी

पक्खिय [पाक्षिक] त्रि. पक्खी, पखवाड़ा

पच्चह [दे.] पु. सूर्य

पच्छा [पश्चात्] अ. पीछे

पट्टइल्ल [दे.] पु. गांव का मुखिया, पटेल

पड [पत्] धा. गिरना

पडि[प्रति]उप. सामने, उलटा

पडिसमय [प्रतिसमय] न. प्रत्येक समय, क्षण-क्षण

पडुय [दे.] पु. भैंसा

पढ [पठ् [धा. पढ़ना, पाठ करना

पणव [प्र+नम्]धा. नमस्कार करना

पणीअ [प्रणीत] न. सरस, रस सहित

पत्त [पात्र] न. भाजन. बर्तन, योग्य, अधिकारी, पातरा

पत्तड [दे.] त्रि. सुन्दर

पत्तेअं– अ. प्रत्येक, हरएक

पत्थाव [प्रस्ताव] पु. अवसर सुझाव

पद्धर [दे.] त्रि. सीधा

पन्नत्त [प्रज्ञप्त] त्रि. प्ररूपणा किया हुआ

पन्नरस[पंचदश]सं. वा. पन्दरह

पभाअ [प्रभात] न. प्रातःकाल, सुबह

पमाअ [प्रमाद] पु. आलस

पमोअ [प्र+मुद्] धा. खुश होना, प्रसन्न होना

पमोअ [प्रमोद] पु. खुशी, प्रसन्नता

पय [पद] न० पैर

पयट्ट [प्रवृत्त] त्रि प्रवृत्त हुआ

पयडि [दे.] स्त्री. मार्ग, रास्ता

पयत [प्र+यत्] धा० प्रयत्न करना

पया[प्र+या]धा प्रयाण करना, जाना

पर [पर] वि० अन्य, दूसरा

परएस [परदेश] पु० परदेश, दिशावर

परज्झ [दे०] त्रि० पराधीन

परभव [परभव] पु० आने वाला भव

परमत्थ(परमार्थ) पु. परोपकार
परलोअ (परलोक) पु. आने वाला भव
परा (परा) उप. उल्टापन, पीछे
पराअ (पराग) पु. फूल का रज कण
पराजय (परा+जि) धा. पराजीत करना
परिक्खा (परीक्षा) स्त्री. परीक्षा
परित्थी (परस्त्री) स्त्री. दूसरे की स्त्री
परिभंस (परि+भ्रंस) धा. भ्रष्ट होना
परिहर (परि+हृ) धा. परिहरण करना, त्यागना, दूर करना
परोप्पर(परस्पर) अ. आपस में
पलाय– (दे.) पु. चोर
पल्लव (पल्लव) पु. कोमल पत्ता
पवड्ढ (दे.) धा. सोना, शयन करना
पवण (पवन) पु. वायु, एक राजा का नाम
पवत्त (प्र+वृत्) धा. प्रवृत्ति करना
पव्वअ (पर्वत) न. पहाड़, पर्वत
पवाह (प्रवाह) पु. प्रवाह
पसग(प्रसग)पु. प्रस्ताव, अवसर
पसत्थ (प्रशस्त) वि. श्रेष्ठ, प्रशसा पात्र
पसविर (प्रसवशील) त्रि. उत्पादक
पसाअ (प्रसाद) पु. कृपा, महरबानी
पसारि (प्र+सृ+णि) धा० प्रसार करना, फैलाना, लम्बा करना
पसु (पशु) पु. पशु, जानवर
पह पथ) पु. रास्ता, मार्ग, पंथ
पहाव (प्रभाव) पु. प्रताप, तेज
पहिअ (पथिक) त्रि. मुसाफिर राहगीर
पहु (प्रभु) पु. समर्थ, शक्त
पंकय (पकज) न० कमल
पंखुडिआ (दे.) स्त्री. पंखुडी, फूल की पत्ती
पंच (पंचन्) सं. वा. पांच
पंडिअ (पंडित) पु. विद्वान्
पाअ (पाद) पु पैर, चरण

पाउरण (दे०) न० कवच
पाउस (प्रावृष्) पु. चौमासा, वर्षाऋतु
पाडिएक्कं– अ. प्रत्येक, हरेक
पाडिक्कं– अ. प्रत्येक, हरेक
पाढग (पाठक) पु. पढ़ाने वाला, अध्यापक
पाण (प्राण) पु. प्राण, जीवन
पायस (पायस) न. खीर, दूधपाक
पालक– वि. ना. स्कन्धकमुनि का बैरी, एक पापी ब्राह्मण
पास (दृश्) धा. देखना
पासाअ (प्रासाद) पु. महल, हवेली
पिंगला– वि० ना० भर्तृहरि राजा की स्त्री
पिंजर (पिंजर) न० पींजरा
पि– अ० भी
पिअ (पा) धा० पीना
पिअर (पितृ) पु. पिता, बाप
पिउ (पितृ) पु० पिता, बाप
पिउत्था (पितृस्वसा) स्त्री० पिता की बहन
पिउसिआ (पितृस्वसा) स्त्री. पिता की बहिन
पिव–अ. इवार्थक, तुल्य, सादृश्य
पिवासा (पिपासा) स्त्री. प्यास, तृषा
पीइ (प्रीति) स्त्री. प्रेम, स्नेह
पीड (पीड्) धा. दुःख देना, पीड़ा देना
पीणिमा (पीनत्व) स्त्री. पुष्टता, मोटापन
पुच्छ (पृच्छ्) धा. पूछना,
पुण (पू) धा. पवित्र करना
पुण (पुनः) अ० बारबार
पुणरुत्तं–अ. दो बार कहा हुआ
पुण्ण (पूर्ण) वि० पूरा
पुत्त (पुत्र) पु० पुत्र, लड़का
पुप्फरस (पुष्परस) पु० फूलों का रस
पुरा–अ. पहले, आगे, प्राचीन, पुराना
पुरिल्ल (पौर) वि. नागरिक, नगर में रहने वाला
पुरिस (पुरुष) पु. मनुष्य, नर, आदमी

पुलइअ [पुलकित] वि. रोमांचित, प्रसन्न
पुव्वकम्म [पूर्वकर्म] न. पूर्व भवों के कर्म
पुव्वरत्तावरत्त[पूर्वरात्र्यपररात्र] न० मध्यरात्रि
पुव्वि [पूर्व] अ आगे, पहले
पूस [पुष्] धा. पोषण करना, पालना
पूस [पूषन्] पु० सूर्य
पूसाण [पूषन्] पु० सूर्य

फ

फल [फल] न० फल

ब

बज्झ [बन्ध्] धा. बाँधना
बन्धु [बन्धु] पु. भाई
बम्हण [ब्राह्मण] पु. ब्राह्मण, द्विज
बल[बल] न. सैन्य, बल, शक्ति
बले-अ निर्धारण तथा निश्चय अर्थ मे
बहिं [बहिस्] अ० बहार
बहु [बहु] वि. ज्यादा, अधिक
बारस [द्वादश] सं. वा. बारह
बाल[बाल]पु. बालक, अज्ञानी
बाला [बाला] स्त्री. बालिका, लड़की
बाहिं- अ० बहार अर्थ में
बाहिरं- अ० बहार अर्थ में
बीभच्छ [बीभत्स] वि. निन्द्य, खराब
बीह [भी[धा० डरना
बुज्झ [बुध्] धा. जानना, समझना
बुद्धि [बुद्धि] स्त्री० मति
बोह [बोध [पु० उपदेश

म

भअ [भय] न० भय, डर
भक्खण [भक्षण] न. खाना
भगिणि [भगिनी] स्त्री. बहिन
भण्ण [भण्] धा. कहना, बोलना
भत्त [भक्त] न. टक
भत्त [भक्त] न. सेवक, अनुचर
भत्तहरि- वि. ना. भर्तृहरि नाम का राजा

भत्तार [भर्तृ] पु० पति
भत्ति [भक्ति] स्त्री. भक्ति, बहुमान
भत्तिज्जअ [भ्रातृज] पु. भतीजा
भत्तु [भर्तृ] पु. पति
भम [भ्रम्] धा घूमना, फिरना
भमर [भ्रमर] पु. भँवरा
भमाड [भ्रम्+णि] धा. घुमाना, भ्रमण कराना
भमिर [भ्रमिष्णु] वि. घुमने के स्वभाव वाला
भयंअर [भयंकर] वि. भयानक
भर [भर] पु. समूह
भव [भू] धा. होना
भव [भव] पु. जन्म, संसार
भविअजण [भव्यजन] पु. योग्य मनुष्य
भविअ [भव्य] वि. भव्य
भसल [भ्रमर] पु. भँवरा
भा [भी] धा० डरना
भाअर [भ्रातृ] पु. भाई
भाउ [भ्रातृ] पु. भाई
भाउजाया [भ्रातृजाया] स्त्री. भाभी
भाणु [भानु] पु. सूर्य
भिन्द [भिद्] धा. भेदन करना, काटना
भुज्ज [भुज्] धा. खाना, पालन करना
भूवइ [भूपति] पु० राजा
भोअ [भोग] पु. इन्द्रिय विषय
भोअण [भोजन] न. भोजन

म

मंस [मांस] न. मांस
मइरा [मदिरा] स्त्री. मद्य, शराब
मए [मया] अस्मद् शब्द के तृतीया का एकवचन, मेरे द्वारा
मग्ग [मार्ग] पु. रास्ता
मच्चु [मृत्यु] पु. मृत्यु, मोत
मज्झे [मध्ये] अ. मध्य में, बीच में
मण [मन्] धा. मानना, स्वीकारना
मण [मनस्] न. अंतःकरण, हृदय

मणिअं (मनाक्), अ. थोडा
मणे–अ. विचार करने अर्थ में
मणोरह (मनोरथ) पु इच्छा, कल्पना
मत्त (मात्र) न. मात्र
ममभाव (ममभाव) पु. ममत्व
मयण (मदन) पु. मदन, काम विकार
महव्वय (महाव्रत) न. साधु के पांच महाव्रत
महापुरिस (महापुरुष) पु० महात्मा पुरुष
महावीर– वि. ना. चोवीसवें तीर्थंकर का नाम
महिमा (महिमन्) पु. स्त्री. गौरव
महिला (महिला) स्त्री. स्त्री
महुर (मधुर) वि. मीठा
मा (मा) अ. निपध, नहीं, मत, अलग
माअरा (मातृ) स्त्री. माता, देवी
माआ (मातृ) स्त्री. माता, जननी
माआपिअर (मातापितर) पु. माँ, बाप
माइ (मातृ) स्त्री. माता, जननी
माइ– अ० निषेध, नहीं
माउ (मातृ) स्त्री. माता, जननी
माण (मान) न. अभिमान
माणुस्स (मानुष्य) न. मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्यपन
मामि–अ. सखी को आमंत्रण अर्थ में
माया (माया) स्त्री. कपट
मारि (मृ+णि) धा. मरवाता है, मारता है
मालारी (मालाकारी) स्त्री. मालण
माला (माला) स्त्री. माला
मास (मास) पु. महीना
माहप्प (माहात्म्य) पु० न० माहात्म्य
मिअ (मित) वि. परिमित
मिउ (मृदु) वि. कोमल
मियावइ (मृगावती) वि. ना. उदायण राजा की माता
मिलाण (म्लान) त्रि. मुरझाया हुआ

मिव अ. तुल्य, सादृश्य, इवार्थक
मिहुण (मिथुन) न.संयोग, काम भोग
मुअ (मुच्) धा. छोड़ना
मुक्ख (मोक्ष) पु. मुक्ति
मुणि (मुनि) पु. साधु, संयमी
मुत्त (मुक्त) वि. मुक्त, छुटकारा
मुत्ति (मुक्ति) स्त्री. मोक्ष, कल्याण
मुद्दिआ (मुद्रिका) स्त्री. सिक्का,
मुद्ध (मूर्धन्) पु. मस्तक
मुद्धाण (मूर्धन्) पु. मस्तक
मुसा (मृषा) स्त्री. झूठ, मिथ्या
मुह (मुख) न. मुख
मूल (मूल) पु. आद्यभाग, आदि-कारण, जड़
मेत्ती (मैत्री) स्त्री. मित्रता, प्रेम
मेह (मेघ) पु० बादल
मोअअ (मोदक) पु. लड्डू
मोक्ख (मोक्ष) पु. मुक्ति
मोरउल्ला– अ. वृथा, व्यर्थ

य

यंत्तणा (यंत्रणा) स्त्री. पीलने का यंत्र, घाणी
यय (जगत्) न. दुनिया, संसार
य (यद्) स० जो

र

रंज (रंज्) धा. क्रीड़ा करना, प्रसन्न करना
र– अ० पादपूर्ति अर्थ में
रअ (रजस्) धूल, रजकण
रक्ख (रक्ष्) रक्षा करना, पालन करना
रज्ज (राज्य) न. राज्य
रज्जु (रज्जु) स्त्री. रस्सी, डोरी
रत्तिआ (रात्रि) स्त्री. रात, रात्रि
रम (रम्) धा. क्रीड़ा करना, खेलना
रम्म (रम्य) वि. रमणीक
रस (रस) पु स्वाद, स्वाद-युक्त
रसाल (रसाल) वि. रसयुक्त
रह (रथ) पु. रथ
रहस्स (रहस्य) न. गुप्त बात
राअ (राजन्) पु. भूपति, राजा

राश्राण (राजन्) पु. भूपति, राजा
राईसर (राजेश्वर) पु. महाराज
राम–वि. ना. रामचन्द्र सूर्यवंश के प्रसिद्ध राजा
राव (रंज्+णि) धा. रजन कराना
रावण–वि. ना. लका का राजा
रिसि (ऋषि) पु. धर्मगुरु, साधु, मुनि
रीइ (रीति) स्त्री. श्राचार
रुब्भ (रुध्) धा. रोकना
रुव (रुद्) धा. रोना, श्राँसु डालना
रुवग (रूप्यक) न. रुपैया
रुव्व (रुद्) धा. रोना
रे– श्र. सम्बोधन, कलह
रोव (रुद्) धा. रोना

ल

लंब (लम्ब्) धा. लम्बा करना नीचे करना
लक्ख (लक्ष) सं. वा. लाख
लखमण–वि. ना. रामचन्द्रजी का छोटा भाई
लच्छी (लक्ष्मी) स्त्री. लक्ष्मी
लज्जा (लज्जा) स्त्री. लाज, शर्म
लब्भ (लभ्) धा. पाना
लय (लय) पु. साम्यावस्था
लवली (लवली) स्त्री. लता विशेप
लह (लभ्) धा. पाना
लहिद (रहित) त्रि. सिवाय, रहित
लहु (लघु) वि. छोटा
लाच (राजन्) पु. राजा
लिब्भ (लिह्) धा. चाटना
लुण (लू) धा. छेदना, काटना
लुम्बी (लुम्बी) स्त्री. केले के श्रग्र भाग में लटका हुश्रा फूल
लेस (लेश) पु. थोड़ा, श्रंश
लोश्र (लोक) पु. दुनिया
लोह (लोभ) पु० लोभ

व

व–श्र. तुल्य, इवार्थक, सादृश्य
वश्रण (वदन) न० मुख

वच्छ [वृक्ष] पु० झाड़, वृक्ष
वच्छर [वत्सर] पु० वर्ष
वट्ट [वृत्] धा० वर्तना, विद्यमान होना
वड्ढ [वृध्] धा० बढ़ना
वण [वन] न० जंगल
वणप्फइ [वनस्पति] पु. हरी वनस्पति
वणिआ [वनिता] स्त्री. स्त्री
वणे– अ० निश्चय, विकल्प, अनुकम्पा
वत्थ [वस्त्र] न० कपड़ा
वय [वद्] धा. बोलना, कहना
वय [वयस्] न. उमर, आयु
वयण [वचन] पु. न. शब्द, वाणी, वचन
वइ [वर] वि. प्रधान, श्रेष्ठ
वरिस [वर्ष] न. वर्ष, संवत्सर
वल [वल्] धा० लौटना
वलग्ग [आ+रुह्[धा. चढ़ना
वल्लह [वल्लभ] वि० प्रिय, वत्सल
वव्वर [वर्बर] त्रि. जंगली, मूर्ख
वस [वस्] धा. रहना, वसना
वह [वह्] धा. लेजाना, ढोना
व्व–अ. इवार्थक, तुल्य, सादृश्य
वांछ [वाञ्छ्] धा. इच्छा करना
वा– अ० अथवा, और
वाउ [वायु] पु० वायु, हवा
वागरण [व्याकरण] न. व्याकरण, भाषाशास्त्र
वणिअ [वणिज्] पु. व्यापारी, बनीया
वावार [व्यापार] पु० उद्योग
वास [वर्ष] न० वर्ष
वि [अपि] अ० भी
वि [उप] उप. विशेष, विरह, विहार
विअ-अ इवार्थक, तुल्य, सादृश्य
वि+अस [वि+कस्] धा. विकास पाना
विआर [विकार] पु. विकृति
विआर [विचार] पु मनोभाव
विउल [विपुल] त्रि. ज्यादा
विकअ [विकृत] वि. विकार
विघस्टण [विघट्टन] न. अलग करना

विजअ (विजय) पु. विजय
विज्जा (विद्या) स्त्री. ज्ञान, विद्या
विढप्प (अर्ज्) धा. इकट्ठा करना
विणय (विनय) पु० नम्रता,
विणा (विना) अ० बिना
विणेअ (विनेय) पु० विनीत शिष्य
वित्त (वित्त) न. लक्ष्मी, पैसा, धन
वित्थर (विस्तार) पु. विस्तार, खुलासा
विभाअ (विभाग) पु. अलग अलग भाग
विरह (विरह) पु. वियोग
विरूव (विरूप) त्रि. बदरूप
विलया (वनीता) स्त्री. स्त्री
विव–अ इवार्थक, तुल्य, सादृश्य
विवज्यिदकशाअ (विवर्जितकषाय) त्रि. क्रोधादि रहित
विवाह (विवाह) पु. शादी, लग्न
विविह (विविध) वि. नाना-प्रकार
विसिलेस (वि+श्लिष) धा० अलग करना
विस्सास (विश्वास) पु. भरोसा, निष्ठा
विहि (विधि) पु. ब्रह्मा
वीर (वीर) पु. महावीर स्वामी
वोसा (विंशति) सं. वा. बीस
वुच्च (वच्) धा. बोलना, कहना
वुब्भ (वह्) धा. लेजाना, वहन करना
वे (द्वि) सं. वा. दो
वेर (वैर) न. वेरभाव, दुश्मनाई
वेव्व– अ. आमत्रण अर्थ में
वेव्वे–अ. भय निवारण, विपाद अर्थ में
वेस (वेप) पु. पहिनावा

श

श (स्व) त्रि. स्वयं
शलश्शदी (सरस्वती) स्त्री. विद्या की अधिष्ठात्री देवी

स

सं (सम्) उप. साथ, संगति, अच्छी तरह
संअम (संयम) पु. संयम

संग (सङ्ग) पु० सहवास, संगति,
संघ (संघ) पु. समुदाय
संजम (संयम) पु. संयम
संतोस (संतोष) पु. तृष्णा का अभाव
संपेहेत्ता (संप्रेक्ष्य) अ. विचार करके
संरम्भ (संरम्भ) पु. कोप का आडंबर
संसार (संसार) पु. जगत्
संसारसाअर (संसारसागर) पु. संसाररूपी समुद्र
स (श्वन्) पु. कुत्ता
सअ (शत) सं. वा. सो, एकसो
सअल (सकल) वि. सर्व, सब, सम्पूर्ण
सकंकण (सकंकण) वि. कंकण सहित
सक्क (शक्) धा. शकना
सगास (सकाश) पु. पास, नजदीक
सग्गइ (सद्गति) स्त्री. ऊँची गति, देवादिगति
सच्च (सत्य) न० सत्य
सच्चवाइ (सत्यवादिन्) पु० सत्य बोलनेवाला
सज्जण (सज्जन) पु० योग्य मनुष्य
सज्झाय (स्वाध्याय) पु. पुनरावर्तन, स्वाध्याय
सट्ठि (षष्ठि) सं. वा. साठ
सणिअं (शनैः) अ० धीरे-धीरे
सत्त (सप्त) सं. वा. सात
सत्तरस (सप्तदश) सं.वा. सतरह
सत्ति (शक्ति) स्त्री. सत्ता, सामर्थ्य
सत्थ (शास्त्र) न. प्रवचन, आगम
सद्द (शब्द) पु. शब्द, ध्वनि
सद्+दह (श्रद्+धा) धा श्रद्धा करना, आस्था रखना
सद्दावेत्ता (शब्दापयित्वा) अ. बुला करके
सन्त (सत्) व. कृ. विद्यमान
सपइ (सपदि) अ. इस समय
सफल (सफल) वि. सार्थक
सभा (सभा) स्त्री. सभा, परिषदा

संतूस [सम्+तुष्] धा. संतोष करना
समण [श्रमण] पु. साधु, संयमी
समणोवासअ [श्रमणोपासक] पु. श्रावक, साधुओ की उपासना करने वाला
समत्थ [समर्थ] वि. समर्थ
समप्पणीय [समर्पनीय] वि. सोपने लायक
सभय [स्वमत] न. अपना मत
समत्त [समस्त] वि. सभी, समस्त
सम्म [शर्मन्] न. सुख
समिद्धि [समृद्धि] स्त्री. वैभव, ऋद्धि
समूह [समूह] न समुदाय
सयं [स्वयं] अ. स्वय, अपना
सया [सदा] अ. हमेशा, सदा
सयाणीय [शतानीक] वि. ना. उदायन राजा के पिता शतानीक राजा
सर [सरस्] न० तालाव
सर [शर] पु. वाण
सरअ [शरत्] पु. शरद ऋतु
सरल [सरल] वि० सरल, निष्कपट, भोला
सवण [श्रवण] न. श्रवण, कान
सव्व [सर्व] स. समस्त, सव
सव्वघाइ [सर्वघातिन्] वि. सवकी घात करने वाला
सह [सह] अ. साथ
सह [सह्] धा. सहन करना
सहस्स [सहस्र] सं. वा. हजार
सहस्साणीय [सहस्रानीक] वि. ना. उदायन राजा के दादा
सहिरत्तण [सहिष्णुता] पु. सहनशीलता
साण [श्वन्] पु. कुत्ता
सामाइअ [सामायिक] न. सामायिकव्रत
सामि [स्वामिन्] पु. मालिक
सारहि [सारथि] पु रथ हाकने वाला
साला [शाला] स्त्री. पाठशाला
सावज्ज-सावज्झ [सावद्य] वि. दोप सहित
सावराह [सापराध] वि. अपराध सहित

साह [साध्] धा. साधना, सिद्ध करना

साहज्ज [साहाय्य] न. मदद, सहायता

साहु [साधु] पु. आत्मिक कार्य साधक

सिक्ख [शिक्ष्] धा. सिखना, पढ़ना

सिक्खा [शिक्षा] स्त्री. शिक्षा, अध्ययन

सिक्खावइय [शिक्षाव्रतिक] त्रि. शिक्षाव्रत से युक्त

सिग्घं [शीघ्रं] अ. शीघ्र, जल्दी

सिज्झ [सिध्] धा. सिद्ध होना

सिणाण [स्नान] न. नहाना, स्नान करना

सिप्प [सिच्] धा. सींचना

सिप्प [स्निह्] धा. प्रेम करना

सिर [शिरः] न. मस्तक

सिरि [श्री] स्त्री. लक्ष्मी, पैसा, शोभा, कान्ति

सिसु [शिशु] पु. बालक, बच्चा

सिस्स [शिष्य] पु. अनुयायी, चेला

सिह [स्पृह्+णि] धा. इच्छा करानां

सिहर [शिखर] पु. चोटी

सीअ [शीत] न० ठंडी

सीया [सीता] वि. ना. रामचन्द्र जी की पत्नी

सीस [शिष्य] पु. अनुयायी,

सुकअ [सुकृत] न. अच्छा कार्य

सुकइ [सुकृति] पु० भाग्यशाली, अच्छा कार्य करने वाला

सुगइ [सुगति] स्त्री. अच्छी गति

सुट्ठु [सुष्ठु] अ. अच्छा, सुन्दर

सुण [श्रु] धा. सुनना

सुणिउण [सुनिपुण] वि० चतुर

सुत्त [सूत्र] न. शास्त्र, सिद्धांत, आगम

सुपत्त [सुपात्र] न० सत्पात्र

सुबुद्धि [सुबुद्धि] स्त्री. सुबुद्धि, अच्छी बुद्धि

सुभिक्ख (सुभिक्ष) न सुकाल
सुमण (सुमनस्) न. पुष्प, फूल
सुरह (सुरभ) नाम धा. सुगधी करना
सुवण्ण (सुवर्ण) न. सोना, स्वर्ण
सुवुट्ठि (सुवृष्टि) स्त्री. अच्छी वृष्टि
सुह (सुख) न. शांति, आनंद
सुह (शुभ) वि. शुभ, श्रेष्ठ
सुहुम (सूक्ष्म) वि. बारीक
सेट्ठ (श्रेष्ठ) वि. उत्तम, प्रधान
सेट्ठि (श्रेष्ठि) पु साहूकार, सेठ
सेणिअ (श्रेणिक) पु. विशेष नाम, कोणिक राजा के पिता
सेय (श्रेयस्) न कल्याण
सोरट्ठ (सौराष्ट्र) पु. सौराष्ट्रदेश
सोलस (षोडश) सं. वा. सोलह
सोह (शुभ्) धा. शोभित होना
सोहा (शोभा) स्त्री. शोभा, सुन्दरता

ह

हट्ठतुट्ठ (हृष्टतुष्ट (संतुष्ट, प्रसन्न
हण (श्रु) धा. सुनना
हणुमन्त (हनुमत्) पु. हनुमान, पवन राजा का पुत्र
हत्थ (हस्त) पु. हाथ
हत्थि (हस्ती) पु हाथी
हत्थिणाउर (हस्तिनापुर) त्रि. ना. एक नगर का नाम
हद्धी (हाधिक्) अ. खेद, धिक्कार
हन्द– अ. लेवो इस अर्थ में
हन्दि– अ. विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय तथा सत्य अर्थ में
हम्म (हन्) धा. मारना
हर (हृ) धा. चुराना, ले जाना
हरे– अ. आक्षेप, संभाषण, रति-कलह
हला– अ. सखी को आमन्त्रण करने अर्थ में
हले– अ. सखी को आमन्त्रण करने के अर्थ में
हव (भू) धा. होना
हस्स (हस्) धा. हंसना

हिअ (हित) वि. शुभ
हितपक (हृदयक) न. हृदय
हियअ (हृदय) न. हृदय
हिर– अ. संभावना, निश्चय
हीर (हृ) धा. चुराया गया
हुं– अ. दान, प्रश्न तथा निवारण अर्थ में
हु–अ. निश्चय, वितर्क, संभावना, विस्मय
हुण (हु) धा. हवन करना
हेउ (हेतु) पु. कारण
हेट्ठ (अधः) अ. नीचे
हो (भू) धा. होना

